NATYA-SAPTAK
PART I








साहित्य

नाट्य-सप्तक

प्रथम खण्ड

प्रेरणा से वे कब प्रथम बार नाटक-रचना में प्रवृत्त हुए यह बात जानने का कौतूहल बहुत ही स्वाभाविक है। 'जीवनस्मृति' से ज्ञात होता है कि शान्तिनिकेतन की धूप से अभिषिक्त मैदान में बैठ कर बालक कवि ने 'पृथ्वीराज पराजय' नामक एक रौद्र-रसात्मक नाटक लिखा था। यह नाटक बाद में उपलब्ध नहीं रहा। रवीन्द्रनाथ के जीवनीकार प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का अनुमान है कि परवर्ती युग में रचित 'रुद्रचण्ड' नाटक 'पृथ्वीराज पराजय' का रूपान्तर मात्र है। इस लुप्त उदाहरण को छोड़ देने पर 'वाल्मीकिप्रतिभा' नामक गीतिनाट्य को उनकी प्रथम नाटक-रचना की प्रचेष्टा कहा जा सकता है। पहले जिस घरेलू वातावरण का उल्लेख किया गया है 'वाल्मीकिप्रतिभा' के साथ उसका संबंध है। विद्वज्जनसमागम नाम की एक सभा बीच-बीच में जोड़ासाँको की ठाकुर-हवेली में बैठती थी। उसी सभा के मनोरंजन के हेतु इस चिर-सरस गीतिनाट्य की रचना हुई थी। रवीन्द्रनाथ के इसके प्रधान कारीगर होने पर भी विहारीलाल, ज्योतिरिन्द्रनाथ, तथा अक्षय चौधुरी के हाथ का काम इस रचना में मिल जाता है। उस समय के लिखे हुए अधिकांश नाट्यकारों के अधिकांश नाटक कब के सूख कर रसविहीन हो विदा ले चुके हैं, किन्तु बीस साल के युवक द्वारा रचित यह नाटक अब भी अम्लान है। जब भी इसका अभिनय होता है दर्शकों की कमी नहीं होती।

मधुसूदन दत्त ने प्रथम बँगला काव्य की रचना कर अपने बन्धु को लिखा था कि शेर ने रक्त का स्वाद पा लिया है——अब भला छुटकारा कहाँ? प्रथम नाटक की रचना के बाद रवीन्द्रनाथ की स्थिति भी कुछ इसी प्रकार की हुई। कुछ ही वर्षों के भीतर 'रुद्रचण्ड', 'कालमृगया', 'प्रकृतिर प्रतिशोध', 'नलिनी' एवं 'मायार खेला' उन्होंने लिख डाले। 'रुद्रचण्ड' नाटक का नायक रुद्रचण्ड दस्यु है। नागरिक सभ्यता और राजपद के विरुद्ध उसका निदारुण विक्षोभ नाटक में प्रकट हुआ है। नाटक में दो चरित्र और हैं——रुद्रचण्ड की बालिका कन्या अमिया तथा चाँद कवि। इस नाटक को यदि हम स्मरण न

रख सकें तो भी कोई हानि नहीं—किन्तु इस बालिका को और इस कवि को भूलने से काम नहीं चलेगा। ये दोनों परवर्ती नाटकों में नाना नामों से और अन्त में सर्वनामों में रूपान्तरित हो कर समाविष्ट होते चले गए हैं।

'कालमृगया' नाटक परवर्ती युग में 'वाल्मीकिप्रतिभा' के साथ युक्त हो गया है।

'मायार खेला' गीतिनाट्य है। 'वाल्मीकिप्रतिभा' और इसमें प्रभेद इतना ही है कि पहले में घटना-विन्यास तथा चरित्र-सृष्टि पर अधिक जोर दिया गया है और 'मायार खेला' में वह चेष्टा नहीं की गई है—सुर के धागे में हृदयावेग को पिरो देना ही इसका उद्देश्य रहा है।

रचना की दृष्टि से 'प्रकृतिर प्रतिशोध' अपक्व होने पर भी यहाँ सबसे पहली बार रवीन्द्रनाथ ने अपने जीवनतत्त्व को प्रकाशित करने की चेष्टा की है। 'प्रकृतिर प्रतिशोध' की बालिका 'रुद्रचण्ड' की अमिया का रूपान्तर है।

यहाँ आ कर रवीन्द्रनाथ के जीवन का नाटक-रचना में शिक्षा प्राप्त करने का यह पर्व खतम होता है। नाटकीय गति, घटना-विन्यास तथा चरित्र-परिकल्पना, सुर का नाटकीय भावप्रकाश के उपाय-रूप में नियोग, यहाँ तक कि वनदेवियों तथा मायाकुमारियों के गमनागमन में नृत्य का आभास, सभी कुछ इन नाटकों में प्राप्त हो जाता है। परवर्ती युग के विभिन्न प्रकार के नाटकों में इन समस्त गुणों का विकास तथा परिणति देखने को मिल जाएगी इसलिए इस समय को मैंने शिक्षा प्राप्त करने का पर्व कहा है।

२

'मायार खेला' रचना के कुछ समय बाद ही प्रकाशित 'राजा ओ रानी', 'विसर्जन' तथा 'चित्राङ्गदा' में रवीन्द्रनाथ की नाटक-लेखनी ने मानो पूर्ण शक्ति प्राप्त कर ली। 'चित्राङ्गदा' की आलोचना को

यथास्थान के लिए स्थगित कर बाकी दो के संबंध में हम अपना वक्तव्य पहले कह लेते हैं। 'राजा ओ रानी' और 'विसर्जन' पाँच अंक युक्त शेक्सपियरीय ढंग के त्रासदी नाटक हैं। 'विसर्जन' पूर्वतन उपन्यास 'राजर्षि' के कुछ अंशों का नाटचकृत रूप है। बहुत-से लोग 'विसर्जन' को रवीन्द्रनाथ का श्रेष्ठ त्रासदी नाटक समझते हैं। परन्तु मेरी धारणा दूसरे ढंग की है। थोड़ी बहुत तकनीक की त्रुटि रहने पर भी विशुद्ध मानव-रस के प्राचुर्य के कारण 'राजा ओ रानी' मुझे श्रेष्ठतर लगता है। रवीन्द्रनाथ ने परवर्ती युग में, काफी समय बीत जाने पर इन तकनिकी त्रुटियों को संशोधित कर लेने के उद्देश्य से 'तपती' नाटक लिखा था। हम लोगों को नवीन नाटक अवश्य मिला—किन्तु 'राजा ओ रानी' को श्रेष्ठतर रूप मिला या नहीं इसमें सन्देह है।

इस पर्व में कवि ने तीन प्रहसनों की रचना की थी। उनमें 'प्रजापतिर निर्बन्ध' ने 'चिरकुमार सभा' नाम से परवर्ती युग में जन-प्रियता अर्जित की है। साधारण जनों के विचार में यही उनका श्रेष्ठ प्रहसन है। मेरी व्यक्तिगत रुचि 'वैकुण्ठेर खाता' के प्रति है। इसकी रसपरिधि संकीर्ण किन्तु गंभीर है; इसके पात्र संख्या में थोड़े होने पर भी सुस्पष्ट एवं सजीव हैं; इसकी हँसी निरन्तर अश्रु के साथ लग कर चलती हुई अन्तिम दृश्य में जिस अपरूप प्रहसन की सृष्टि करती है उसमें हास्य और आँखों के पानी ने हाथ मिलाया है। बहुजनों के अभिनन्दन से वंचित यह प्रहसन रवीन्द्रनाथ की एक निर्दोष सृष्टि है।

इस पर्व के अन्तर्गत रवीन्द्रनाथ ने और एक श्रेणी के नाटकों की रचना की है जिन्हें काव्यनाटच कहा जा सकता है। इन रचनाओं में कवि की लेखनी और नाटचकार की लेखनी एकत्र हो गई है, यद्यपि इन नाटकों का वैशिष्टच यह है कि यहाँ कवि का दायित्व सोलह आने स्वीकृत होने पर भी नाटचकार के दायित्व को हलका बना दिया गया है। इसीलिए बहुत-से लोग इनको नाटचकाव्य कहना चाहते हैं अर्थात् उन लोगों के मतानुसार इन नाटकों का वास्तविक स्थान काव्य-क्षेत्र में है। यह बात यथार्थ नहीं ज्ञात होती, इनमें काव्य के

गुण अधिक होने पर भी इनका ठाट नाटक का है––और नाटकीय परिणति का अभाव भी इन नाटकों में नहीं है। 'गान्धारीर आवेदन', 'कर्णकुंती संवाद', 'नरकवास', 'विदाय अभिशाप' प्रभृति रचनाओं को अलिखित पञ्चाङ्क त्रासदी के आखिरी अंक के रूप में देखने की चेष्टा करने पर इनका यथार्थ रूप तथा रस का संप्रेषण स्पष्ट हो जाता है।

'सती' तथा 'मालिनी' में नाटक का रूप अपेक्षाकृत स्पष्ट है यद्यपि इनकी भी प्रधान सम्पदा काव्य है।

'लक्ष्मीर परीक्षा' एक सार्थक परीक्षा है। 'क्षणिका' काव्य में श्रव्य विधा के द्वारा कवि जो काम करवा लेना चाहते थे––उसी काम को सार्थकतर ढंग से उन्होंने इस नाटक में करवा लिया है।

३

इसी समय रवीन्द्रनाथ के अध्यात्म जीवन में एक महत् परिवर्तन प्रारम्भ हो गया था––और यह स्वाभाविक था कि इसकी छाप उनकी सब प्रकार की रचनाओं पर पड़ती, यहाँ तक कि नाटकों पर भी। मानव जीवन में ऋतु-क्रम का प्रभाव तथा प्रतिक्रिया इस बार उनके नाटकों का उपादान बन बैठा और 'शारदोत्सव', 'राजा', 'अचलायतन', 'फाल्गुनी' प्रभृति नाटकों का जन्म हुआ। घर के उत्सव आदि की माँग पूरी करने के लिए वे जैसे नाटक लिखते थे इस बार वैसी माँग शान्तिनिकेतन विद्यालय की ओर से आई। इसीलिए हम देखेंगे कि इस समय के बहुत-से नाटक जैसे 'शारदोत्सव', 'अचलायतन', 'फाल्गुनी' स्त्री-भूमिकाहीन हैं। उन दिनों शान्तिनिकेतन में छात्राओं का दाखिला नहीं होता था––और देश का वातावरण भी मिश्र अभिनय के अनुकूल नहीं था। इसी समय इन्होंने 'प्रायश्चित्त' तथा 'डाकघर' की भी रचना की।

'प्रायश्चित्त' पूर्वलिखित 'बउठाकुरानीर हाट' का नाट्य रूप है। धनञ्जय वैरागी का चरित्र इसकी प्रधान सम्पदा है। हिंसा-प्रतिरोध की वाणी ले कर वह उपस्थित हुआ। गांधी के आविर्भाव से पहले

धनञ्जय वैरागी का आविर्भाव मानो प्रभात से पूर्व प्रभात-पक्षी का आगमन था।

'डाकघर' रवीन्द्रनाथ का सर्वोत्तम नाटक है। नाटक की रचना बहुत कुछ परियों की कहानी के ढाँचे में ढली हुई है। इसकी विस्तृत आलोचना यथासमय करेंगे।

'राजा' नाटक को प्रतीकात्मक नाटक कहा जाता है। 'राजा' तथा 'अचलायतन' में भारतीय साधना के दो प्रधान तत्त्वों का योग है। दास्य, सख्य तथा मधुर रस की साधना में मधुर रस की साधना सबसे कठिन है—इसीका निदर्शन है सुरङ्गमा, ठाकुरदा तथा सुदर्शना के चरित्र में, विशेषरूप से सुदर्शना के मानसिक द्वन्द्व में। 'अचलायतन' में ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग तथा भक्तिमार्ग के चित्र प्रदर्शित किए गए हैं—वहाँ कहा गया है कि इनका समन्वय ही जीवन की यथार्थ सिद्धि है। 'फाल्गुनी' नाटक में कवि ने दिखाया है कि विश्वप्रकृति में जो लीला चल रही है वही लीला रूपान्तरित हो कर मानव प्रकृति में भी प्रसारित हो रही है। वसन्त और यौवन ही सत्य है, शीत और जरा दृष्टि का भ्रममात्र है। 'शारदोत्सव' में कवि का वक्तव्य है कि यह जो जगत् अनन्त सौन्दर्य तथा सुधा के द्वारा मानव को ऋणी बनाए हुए है—मानव उस ऋण का परिशोध दुःख को पा कर ही कर सकता है। दुःख की पूंजी से सौन्दर्य का ऋणशोध करने पर ही आनन्दलाभ संभव हो सकता है।

इसके उपरान्त 'मुक्तधारा' तथा 'रक्तकरबी' कवि के उल्लेख-योग्य नाटक हैं। 'शारदोत्सव' से ले कर 'फाल्गुनी' तक नाटक का विषय है मानव के साथ ईश्वर का संबंध और मानव के साथ प्रकृति का संबंध। 'मुक्तधारा' और 'रक्तकरबी' में जो व्यक्ति दिखाई पड़ता है वह है सामाजिक मानव। यहाँ संघर्ष है व्यक्ति के साथ सामाजिक व्यवस्था का। अभिजित् और रंजन उस व्यक्ति के प्रतिनिधि हैं जिनका क्रमशः रुद्धधारा तथा यन्त्रदानव से द्वन्द्व छिड़ गया है। कवि का वक्तव्य है कि यन्त्र की सहायता द्वारा यन्त्र को पराभूत

करने से यन्त्र की ही जय घोषित होती है। अपने प्राणों द्वारा यन्त्र को आघात पहुँचाना होगा——उससे प्रारम्भ में प्राणों की हानि होने पर भी आखिरकार यन्त्र का प्रभाव शिथिल हो आता है। अभिजित् मर गया परन्तु मुक्तधारा का बाँध भी टूट गया। रंजन भी मरा है परन्तु यन्त्र-नगरी की भित्ति भी हिल उठी है। इन दोनों नाटकों में कवि ने एक आधुनिक जटिल समस्या पर विचार किया है।

४

'नटीर पूजा' नाटक १९२६ में प्रकाशित हुआ। कहानी का चयन एक बौद्ध जातक से किया गया है। नाटक का शिल्पमूल्य काफी ऊँचे स्तर का है——किन्तु इस नाटक की देन कुछ और भी है। मेरा ऐसा विश्वास है कि 'नटीर पूजा' नृत्यनाट्य में परवर्ती युग में लिखित नृत्यनाट्यों की धारणा बीजाकार में निहित है। इस धारणा ने अनुकूल क्षेत्र तथा दृष्टान्त का समर्थन कवि के जावाद्वीप के भ्रमणकाल में दृष्ट नृत्यनाट्यकला से प्राप्त किया है। नृत्यनाट्य की धारणा कवि के मस्तिष्क में थी——यदि अभाव था तो केवल सजीव नृत्य नाट्यकला के उदाहरण का। जावाद्वीप ने उस उदाहरण को ला उपस्थित किया। रवीन्द्रनाथ के जीवन के अन्तिम दिनों की सार्थकतम नाटक-रचना की धारा नृत्यनाट्य के इस जलप्रवाह-पथ में प्रवाहित हुई है। 'चित्राङ्गदा', 'चण्डालिका', 'श्यामा' तथा 'तासेर देश' नृत्यनाट्य रवीन्द्र-नाट्य-प्रतिभा की अन्तिम तथा सार्थकतम सृष्टि हैं। नाट्य-प्रतिभा शब्द में शायद यह नूतन शिल्पकला का सर्वाङ्गीण रूप प्रकाशित नहीं हो पाया। क्योंकि इसमें आ कर सम्मिलित हुआ है काव्य, स्वर, नाट्य तथा नृत्य का चतुरंग प्रवाह। आशा करता हूँ, यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि इन नृत्य-नाटकों में रवीन्द्र शिल्पकला का तथा रवीन्द्र की बहुमुखी प्रतिभा का प्रकाश हुआ है।

५

यथासंभव संक्षेप में रवीन्द्र नाट्य-प्रवाह का एक परिचय प्रस्तुत किया जा चुका है। अब फलोपलब्धि के संबंध में प्रासंगिक मन्तव्य भी संक्षेप में पूरा कर लें।

रवीन्द्रनाथ के नाटक बीच बीच में पेशेवर रंगमंच पर खेले गए हैं, किसी-किसी नाटक ने, जैसे 'चिरकुमार सभा' और 'शेष रक्षा', सामयिक रूप से लोकप्रियता भी प्राप्त की है। फिर भी कहना पड़ेगा कि पेशेवर रंगमंच की गति-प्रकृति के साथ रवीन्द्र नाटचप्रवाह का कभी भी मेल नहीं हो पाया है। क्यों? शायद दर्शक उस स्तर तक पहुँचने में समर्थ नहीं हुए हैं। फिर पेशेवर रंगमंच पर जो नाटक प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं उनकी सृष्टि पेशेवर अभिनेता तथा रंगमंच के समुद्र-मंथन में होती है यानी वह सारी वस्तु एक प्रकार से समवेत-शिल्प की सृष्टि-रचना होती है। रवीन्द्रनाथ के नाटकों का जन्म निभृत में हुआ, नहीं तो पारिवारिक परिवेश में;––यह चीज़ उनकी अपनी प्रचेष्टा की सृष्टि है। इसलिए इसकी वास्तविक सम्पदा काव्य रस है।

बहुत-से समालोचक ऐसे हैं जो नाटक के साहित्यिक मूल्य को नितान्त गौण समझते हैं, उनके मत में दर्शकों को आनन्द का परिवेशन करना ही नाटक का एकमात्र उद्देश्य है। यह मत हम ग्रहण नहीं कर सकते। नाटक मुख्यतया साहित्य है और उसी रूप में इसकी आलोचना होनी चाहिए।

इस दृष्टि से विचार करने पर हम देखेंगे कि रवीन्द्रनाथ के नाटकों का मूल्य असीम है। रवीन्द्रनाथ से पहले भी गीतिनाट्यों की रचना हुई है तथापि उनके प्रारम्भिक युग में लिखित 'वाल्मीकिप्रतिभा' और 'मायार खेला' अब तक उपभोग्य हैं, मनोरंजन के क्षेत्र में भी उनके मूल्यों की हानि नहीं हुई है।

'राजा ओ रानी' और 'विसर्जन' बँगला साहित्य के श्रेष्ठ त्रासदी नाटक हैं।

बंगला नाट्य साहित्य में प्रहसनों की संख्या की कमी नहीं है। किन्तु 'चिरकुमार-सभा' के समान मार्जित, सूक्ष्म, सर्वजन-उपभोग्य प्रहसन और दूसरा नहीं है--इसकी प्रतिष्ठा जैसी व्यापक है वैसी ही सहज है इसकी ग्रहणीयता।

उनके रचित काव्य-नाटक जैसे 'चित्राङ्गदा', 'गान्धारीर आवेदन', 'कर्णकुंती संवाद', 'नरकवास' प्रभृति रवीन्द्र साहित्य की श्रेष्ठ सम्पदा हैं। इस क्षेत्र में उनका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं है।

'शारदोत्सव', 'फाल्गुनी' प्रभृति ऋतु-नाटच-क्रम में, 'डाकघर', 'राजा', 'मुक्तधारा', 'रक्तकरबी' प्रभृति प्रतीकात्मक नाटचक्रम में उन्होंने नवीन धारा का प्रवर्तन किया है, केवल बँगला साहित्य में ही नहीं, संभवतः भारतीय साहित्य में भी।

और जीवन की अन्तिम अवस्था में लिखित नृत्यनाटक उनकी अपनी मौलिक सृष्टि हैं--इस क्षेत्र में वे नए मार्ग का निर्माण कर गए हैं।

काव्य और कहानी के अतिरिक्त नाटच रस में रवीन्द्र प्रतिभा का सुष्ठुतम प्रकाश प्राप्त होता है, और नाटक के श्रेणी-वैचित्र्य तथा नव्य-नूतन धारा-प्रवर्तन में उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय मिलता है।

प्रमथनाथ बिशि

विसर्जन (१८९०)

रवीन्द्रनाथ द्वारा लिखित 'राजर्षि' उपन्यास के प्रथम अंश को ग्रहण कर 'विसर्जन' नाटक की रचना हुई है। और फिर 'राजर्षि' उपन्यास का भावसूत्र भी तो स्वप्न द्वारा प्राप्त हुआ है। रेलगाड़ी में सफ़र करते हुए कवि ने स्वप्न देखा कि एक बालिका मानो रक्त के स्रोत को देख कर प्रश्न कर रही है, इतना खून क्यों, इतना खून क्यों ? इस प्रश्न को त्रिपुरा राजवंश की कथा के साथ मिला कर उन्होंने 'राजर्षि' उपन्यास की रचना की। उसके उपरान्त ठाकुर परिवार के युवकों के अनुरोध से उपन्यास के कुछ अंश को ग्रहण कर उन्होंने 'विसर्जन' नाटक लिख डाला। यह सच बात है कि बार-बार अभिनय की सुविधा के लिए नाटक में नाना प्रकार के गौण परिवर्तन घटित हुए हैं, किन्तु कवि के अन्यान्य नाटकों की तरह इसका सर्वांगीण रूपान्तर नहीं हुआ है। ठीक इसके एक साल पहले 'राजा ओ रानी' नाटक लिखा गया था। एक साल के भीतर ही नाटकीय रचना विधि तथा नाटकीय संयम की काफ़ी उन्नति हुई है, 'राजा ओ रानी' में रचना विधि का जो शैथिल्य तथा प्रगीतात्मक उच्छ्वास का जो आधिक्य दिखाई पड़ता है—'विसर्जन' में यह दोष काफ़ी कम हो गया है। प्रधान नरनारियों के चरित्र सुपरिकल्पित तथा उनकी सीमाएँ सुनिर्दिष्ट हैं और घटना-विन्यास अप्रतिहत गति से नाटकीय नियमों की रक्षा करता हुआ चरम परिणति को पहुँचता है। बहुतों द्वारा इसे बँगला के त्रासदी नाटकों का श्रेष्ठ निदर्शन समझना पूर्णत: निरर्थक नहीं है।

इसकी मर्मकथा का विश्लेषण करते हुए कवि ने कहा है कि प्रेम और शौर्य के बीच इसकी मूल वस्तु निहित है। देवमन्दिर में बलि दिए हुए पशु की रक्त-धारा को देख कर एक बालिका प्रश्न करती है, इतना खून क्यों—इस प्रश्न ने राजा गोविन्दमाणिक्य की अभ्यस्त दृष्टि पर से संस्कार की यवनिका उठा फेंकी—राजा के हृदय में विश्वप्रेम का आविर्भाव हो गया। राजा के आदेश से देवमन्दिर में पशु-बलि निषिद्ध हो गई। इस घटना का अवलम्बन ले कर नाटक की ट्रैजेडी सघन होती चली है। मन्दिर का पुरोहित रघुपति प्रचण्ड व्यक्तित्वशाली मनुष्य है। देवता के प्रताप को आत्मसात् कर वह राजा का प्रतिद्वन्द्वी बन बैठा। कहना व्यर्थ होगा कि रानी, मन्त्री, राजभ्राता तथा राज्य के अधिवासीगण पुरोहित के समर्थक थे क्योंकि उनके हृदय में प्रेम का आविर्भाव जो नहीं हुआ था।

प्रेम और प्रताप के द्वन्द्व से विभ्रान्त-चित्त गोविन्दमाणिक्य का मन विदीर्ण हो कर दीर्घ निश्वास के साथ प्रवाहित हुआ है—

ए संसारे विनय कोथाय? महादेवी,
यारा करे विचरण तव पदतले
ताराओ शेखे नि हाय कत क्षुद्र तारा!
हरण करिया लये तोमार महिमा
आपनार देहे बहे, एत अहङ्कार!

(महादेवी, इस संसार में विनय कहाँ? जो लोग तुम्हारे आश्रय में रहते हैं, उन्होंने भी विनय नहीं सीखी, हाय कितने क्षुद्र हैं वे! तुम्हारी महिमा हरण कर अपनी देह पर उसे धारण करना चाहते हैं। कितना अहंकार है उन्हें!)

आखिरकार रघुपति का अहङ्कार चूर्ण हो जाता है। उसके हृदय में प्रेम का आविर्भाव होता है—किन्तु इसके लिए मन्दिर के सेवक, रघुपति के पालित पुत्र जयसिंह को अपने प्राणों का विसर्जन करना पड़ता है। इस विसर्जन के कारण झंझामुक्त निर्मल वातावरण में राजा और रानी का मेल हो जाता है, रघुपति और अपर्णा का भी, जिस भिखारी लड़की को जयसिंह ने प्रेम किया था—और नररक्त-सेवी जड़ पाषाण-देवता को रघुपति स्वयं विसर्जित कर उसके स्थान पर प्रेम की प्रतिष्ठा करते हैं। नाटक के दो प्रधान चरित्र रानी और रघुपति, व्यक्तिगत वेदना के आघात से, इतना खून क्यों प्रश्न के उत्तर को, अपने-अपने अन्तर में प्रतिध्वनित सुनते हैं।

चित्राङ्गदा (१८९२)

महाभारत में वर्णित मणिपुर की राजदुहिता चित्राङ्गदा तथा अर्जुन की कहानी अतिशय संक्षिप्त है जो दो एक साधारण मन्तव्य के भीतर ही निबद्ध है। मूल कहानी के शुष्क कंकाल को रवीन्द्रनाथ की लेखनी के इन्द्रजाल ने अपूर्व लावण्य तथा अमर जीवन प्रदान किया है। दोनों को मिला कर पढ़ने से कवि की सृजन-शक्ति हमें विस्मित कर देती है।

'चित्राङ्गदा' नाट्याकार में लिखित होने पर भी वस्तुतः काव्य है। नाटक की गति में तीव्रता और ऋजुता, घटना-स्रोत की क्षिप्रता और लक्ष्याभिमुखता की जो आशा की जाती है—'चित्राङ्गदा' में उसका अभाव प्रकट हुआ है। इसीलिए

नाटक के संबंध में पूर्वसंस्कार को परित्याग कर इसे काव्य-रूप की दृष्टि से परखने पर इसकी असामान्यता क्षण भर में प्रस्फुटित हो उठती है। तरुण कवि की प्रतिभा से इन्द्रियग्राह्य जगत् रंग, रस, रूप में इस प्रकार सरस तथा सजीव हो उठा है कि पाठक को सावधानी से पैर बढ़ाने पड़ते हैं, कहीं ऐसा न हो कि नील सरोवर के पानी में गिर पड़े तथा अच्छी तरह देखने में भी वह संकोच करता है, कहीं ऐसा न हो कि चित्राङ्गदा तथा अर्जुन के प्रेमलीला-क्षेत्र की ओर उसकी आँखें चली जायँ। इन्द्रियग्राह्य जगत् का इस प्रकार का उज्ज्वल तथा स्पर्श-कातर चित्र शायद कालिदास के काव्य के अतिरिक्त और किसी भी भारतीय काव्य में अंकित नहीं हुआ है।

किन्तु इसकी सर्वश्रेष्ठ सम्पदा चित्राङ्गदा का चरित्र है—अर्थात् चरित्र का विवर्तन और परिणति। आखिरी दृश्य में अर्जुन को आत्मपरिचयदान के उपलक्ष्य में वह सगर्व घोषणा करती है—

आमि चित्राङ्गदा।
देवी नहि, नहि आमि सामान्या रमणी।
पूजा करि राखिबे माथाय, सेओ आमि
नइ; अवहेला करि पुषिया राखिबे
पिछे, सेओ आमि नहि। यदि पार्श्वे राख
मोरे संकटेर पथे, दुरूह चिन्तार
यदि अंश दाओ, यदि अनुमति कर
कठिन व्रतेर तव सहाय हइते,
यदि सुखे दुःखे मोरे कर सहचरी,
आमार पाइबे तबे परिचय।

(मैं देवी नहीं हूँ, सामान्य नारी भी नहीं——मैं तो चित्राङ्गदा हूँ। मैं ऐसी नहीं हूँ जिसको तुम पूजनीय बना कर रख सको और न ऐसी हूँ जिसकी तुम अवहेलना कर सको। यदि तुम संकट के मार्ग पर मुझे अपना साथी बनाओ, यदि दुरूह चिन्ता का कुछ भाग मुझे भी वहन करने दो, यदि अपने कठिन व्रत में सहायता पहुँचाने के लिए मुझे अनुमति दो, यदि तुम अपने सुख दुःख की मुझे सहचरी बनाओ, तभी तुम मेरा परिचय पा सकोगे।)

यह स्वर जिसका है वह पौराणिक नारी नहीं, सम्पूर्ण रूप से आधुनिका नारी है। इस आधुनिका नारी की कीर्ति तथा कण्ठस्वर से परवर्ती रवीन्द्र साहित्य पूर्ण है। 'चित्राङ्गदा' में उसका प्रथम निःसंशय आविर्भाव होता है। इसीलिए काव्य-विचार की सीमा के बाहर सामाजिक इतिहास के क्षेत्र में भी इस नाटक

का अपना एक स्थान है। Chitra नाम से अंग्रेजी में अनूदित हो कर इस काव्य ने लोकप्रियता प्राप्त की है। वह शायद इसी कारण। विदेशी पाठकगण भारतीय कवि की लेखनी की पौराणिक नारी को देखने की आशा से आ कर आधुनिक नारी को देख कर विस्मित हो गए हैं।

चिरकुमार-सभा (१९००-१९०१)

आरम्भ से ही इस पुस्तक का प्रचलन 'चिरकुमार-सभा' तथा 'प्रजापतिर निर्बन्ध' इन दो नामों से होता रहा है। इस प्रहसन की रचना सबसे पहले संलाप-बहुल उपन्यास के आकार में की गई थी। बाद में अर्थात् १९२५ के समय पेशेवर रंगमंच के आग्रह पर कवि ने इसको संपूर्ण नाटक के आकार में बदल दिया—और तब पेशेवर रंगमंच पर अभिनीत हो कर नाटक ने प्रभूत लोकप्रियता अर्जित की। यथार्थतः इसी को रवीन्द्रनाथ के नाटक का प्रथम मञ्च-साफल्य कहा जा सकता है। दीर्घकाल तक निरन्तर इसका अभिनय चलता रहा। उसके बाद भी जब कभी इसका अभिनय हुआ, दर्शकों का अभाव नहीं रहा। शौक़िया नाटक मण्डलियाँ तो अब भी अवसर मिलते ही इस प्रहसन का अभिनय करती हैं।

इस लोकप्रियता का क्या कारण है? प्रथम कारण है नाटक की मूल घटना का रसपूर्ण सहज संप्रेषण। आदर्शवादी नवयुवकों के एक दल ने देश तथा समाज को उन्नत बनाने की इच्छा से चिरकुमार रहने की मनोकामना प्रकट की है—और चुपके चुपके चिरकुमार-सभा का एक भूतपूर्व सदस्य—जो अब स्वयं विवाहित है तथा अपनी दो अविवाहित सालियों की शादी के विषय में उद्विग्न है, उनका ध्यानभंग करने का आयोजन कर रहा है। दर्शक के चित्त में इस प्रकार की घटना का संप्रेषण जैसा सहज है उसी प्रकार व्यापक भी है। दूसरा कारण, चिरकुमार-सभा के प्रवीण सभापति चन्द्रमाधव बाबू, उक्त सभा के भूतपूर्व सदस्य अक्षय और उसके श्वशुरालय के दूर सम्पर्कीय संबंधी रसिक प्रभृति सजीव पात्र हैं। तीसरा कारण है—संलाप की असि-क्रीडा। चतुर्थ कारण—हास्यरस तथा श्लेष का मुहुर्मुहु स्फुलिंग-वर्षण; तथा पंचम कारण है—नाटक में प्रयुक्त रवीन्द्र संगीत का इन्द्रजाल।

बँगला साहित्य में प्रहसनों का अभाव नहीं है। किन्तु सब ओर से विचार करने पर 'चिरकुमार-सभा' को सर्वोच्च आसन पर स्थान देना पड़ता है। रुचि की स्थूलता, घटना की अशालीनता, संलाप का अमार्जित रूप आदि बहुधा प्रहसन के दोष बन जाते हैं। 'चिरकुमार-सभा' इन सभी दोषों से मुक्त है—और इसके

जो विशिष्ट गुण हैं वे इतने दुर्लभ हैं कि सच पूछिए तो अन्य प्रहसनों में मिलते ही नहीं हैं। और इस अति-लघु घटना-प्रवाह के बीच में भी बड़े सहज रूप में रवीन्द्रजीवनतत्त्व संमिश्रित है। प्रकृति ऋण––मानव प्रकृति के ऋण से उऋण हुए बिना अन्य साधना के हेतु अग्रसर होने पर प्रकृति देवराज इन्द्र की भाँति ध्यानभंग करने के उद्देश्य से उर्वशियों को भेजती है। 'प्रकृतिर प्रतिशोध' नाटक में जिस तत्त्व की व्याख्या गंभीर रूप में की गई है––यहाँ पर उसका प्रयोग लघुरूप में हुआ है यद्यपि दोनों तत्त्व मूलतः एक ही हैं।

उत्सर्ग

श्रीमान सुरेन्द्रनाथ ठाकुर
प्राणाधिकेषु

तोरि हाते बाँधा खाता तारि श-खानेक पाता
अक्षरेते फेलियाछि ढेके,
मस्तिष्ककोटरवासी चिन्ताकीट राशि राशि
पदचिह्न गेछे येन रेखे।
प्रवासे प्रत्यह तोरे हृदये स्मरण करे
लिखियाछि निर्जन प्रभाते,
मने करि अवशेषे शेष हले फिरे देशे
जन्मदिने दिब तोर हाते।

वर्णनाटा करि शोन् एका आमि, गृहकोण,
कागज-पत्तर छड़ाछड़ि।
दशदिके बइगुलि सञ्चय करिछे धुलि,
आलस्ये येतेछे गड़ागड़ि।

श्रीमान—(बंगाल में अपने से छोटों के लिये इस शब्द का व्यवहार होता है); **सुरेन्द्रनाथ ठाकुर**—रवीन्द्रनाथ के भतीजे।

तोरि......खाता—तुम्हारे ही हाथों की बँधी हुई कॉपी; **तारि......पाता**—उसीके सौ पन्नों को; **अक्षरेते......ढेके**—अक्षरों से ढँक (भर) दिया है; **गेछे......रेखे**—जैसे रख गए हैं; **प्रवासे**—प्रवास में; **प्रत्यह**—प्रतिदिन; **तोरे**—तुम्हें; **करे**—कर; **लिखियाछि**—लिखा है; **मने......हाते**—सोचता हूँ अन्त में समाप्त होने पर देश लौट जन्मदिवस पर तुम्हारे हाथों में दूँगा।

वर्णनाटा......शोन्—वर्णन करता हूँ, सुनो; **एका आमि**—मैं अकेला; **गृहकोण**—घर का कोना; **छड़ाछड़ि**—बिखरा हुआ; **दशदिके**—दश दिशाओं में; **बइगुलि**—किताबें; **करिछे**—कर रही हैं; **येतेछे गड़ागड़ि**—लोट रहे हैं, लुढक रहे हैं;

शय्याहीन खाटखाना एक पाशे देय थाना,
प्रकाशिया काठेर पांजर।
तारि 'परे अविचारे याहा-ताहा भारे भारे
स्तूपाकारे सहे अनादर।

चेये देखि जानालाय खालखाना शुष्कप्राय
माझे माझे बेधे आछे जल,
एक धारे राश राश अर्धमग्न दीर्घ बाँश,
तारि 'परे बालकेर दल।
धरे माछ, मारे ढेला— सारादिन करे खेला
उभचर मानवशावक।
मेयेरा माजिछे गात्र अथवा काँसार पात्र
सोनार मतन झक् झक्।

उत्तरे येतेछे देखा पड़ेछे पथेर रेखा
शुष्क सेइ जलपथ-माझे—
बहु कष्टे डाक छाड़ि चलेछे गोरुर गाड़ि,
झिनि झिनि घन्टा तारि बाजे।

खाटखाना—खटिया; **एक पाशे**—एक ओर; **देय थाना**—डटी हुई है; **प्रकाशिया......पाँजर**—लकड़ी के पञ्जर को दिखलाती हुई; **तारि......अनादर**—बिना सोचे-समझे (जमा की गईं) ढेर की ढेर ऐसी-वैसी चीजें स्तूपाकार में अनादर सह रही हैं।

चेये......जानालाय—खिड़की से देखता हूँ; **खालखाना**—नहर; **शुष्क-प्राय**—प्रायः सूखी; **माझे माझे**—बीच-बीच में; **बेधे.......जल**—जल रुका हुआ है; **एक धारे**—एक ओर; **राश**—स्तूप; **बाँश**—बाँस; **तारि......दल**—उसीके ऊपर लड़कों का दल; **धरे माछ**—मछलियाँ पकड़ता है; **उभचर**—जल स्थल दोनों में विचरण करने वाला; **मेयेरा......गात्र**—स्त्रियाँ शरीर मल (धो) रही हैं; **सोनार मतन**—सोने के समान।

येतेछे देखा—दिखलाई पड़ रहा है; **पड़ेछे**—पड़ी है; **सेइ**—उसी; **डाक छाड़ि**—चीत्कार करती हुई; **गोरुर गाड़ि**—बैल गाड़ी; **तारि**—उसीका;

केह द्रुत केह धीरे केह याय नतशिरे,
केह याय बुक फुलाइया,
केह जीर्ण टाट्टु चड़ि चलियाछे तड़बड़ि
दुइ धारे दु पा दुलाइया।

परपारे गाये गाय अभ्रभेदी महाकाय
स्तब्धच्छाय वट-अशत्थेरा,
स्निग्ध वन-अङ्के तारि सुप्तप्राय सारि सारि
कुँड़ेगुलि बेड़ा दिये घेरा—
विहङ्गे मानवे मिलि आछे होथा निरिबिलि,
घनश्याम पल्लवेर घर—
सन्ध्यावेला होथा हते भेसे आसे वायुस्रोते
ग्रामेर विचित्र गीतस्वर।

पूर्वप्रान्ते वनशिरे सूर्योदय धीरेधीरे,
चारि दिके पाखिर कूजन।
शङ्खघण्टा क्षणपरे दूर मन्दिरेर घरे
प्रचारिछे शिवेर पूजन।

केह—कोई; **याय**—जाता है; **केह......फुलाइया**—कोई छाती फुला कर जाता है; **जीर्ण**—दुबला; **टाट्टु**—टट्टू; **चड़ि**—चढ़ कर; **चलियाछे**—चला है; **तड़बड़ि**—जल्दी-जल्दी; **दुइ......दुलाइया**—दो ओर दो पैरों को झुलाए हुए।

पर पारे—दूसरे किनारे; **गाये गाय**—एक दूसरे से सटे हुए; **अशत्थेरा**—अश्वत्थ (पीपल) के वृक्ष; **सारि**—पंक्ति; **कुँड़ेगुलि**—(घास-फूस से छायी हुई गरीबों की) झोंपड़ियाँ; **बेड़ा......घेरा**—बाड़े से घिरी हुई हैं; **विहङ्गे......निरिबिलि**—पक्षी और मनुष्य मिल कर वहाँ निर्विघ्न (वास करते) हैं; **होथा हते**—वहाँ से; **भेसे आसे**—तिरता आता है।

पाखिर—पक्षी का; **क्षणपरे**—क्षण भर बाद; **प्रचारिछे**—घोषणा कर रहा है;

ये प्रत्युषे मधुमाछि बाहिराय मधु याचि
कुसुमकुञ्जेर द्वारे द्वारे।
सेइ भोरवेला आमि मानसकुहरे नामि
आयोजन करि लिखिबारे।

लिखिते लिखिते माझे पाखि-गान काने बाजे,
मने आने काल पुरातन—
ओइ गान, ओइ छवि, तरुशिरे राङा रवि
ओरा प्रकृतिर नित्यधन।
आदिकवि वाल्मीकिरे एइ समीरण धीरे
भक्तिभरे करेछे वीजन,
ओइ मायाचित्रवत् तरुलता छायापथ
छिल ताँर पुण्य तपोवन।

राजधानी कलिकाता तुलेछे स्पर्धित माथा,
पुरातन नाहि घेँषे काछे।
काष्ठ लोष्ट्र चारि दिक, वर्तमान-आधुनिक
आड़ष्ट हइया येन आछे।
'आज' 'काल' दुटि भाइ मरितेछे जन्मियाइ,
कलरव करितेछे कत।

ये—जिस; **प्रत्युषे**—प्रभात में; **मधुमाछि**—मधुमक्खी; **बाहिराय**—बाहर होती है; **याचि**—याचना करती हुई; **सेइ**—उसी; **कुहरे**—गह्वर में; **नामि**—उतरता हूँ; **करि**—करता हूँ; **लिखिबारे**—लिखने का।

आने—लाता है; **ओइ**—वही; **छवि**—चित्र; **राङा**—लाल; **ओरा**—वे; **वाल्मीकिरे**—वाल्मीकि को; **भक्ति भरे**—भक्ति से भर; **करेछे**—किया है; **वीजन**—व्यजन; **छिल**—था; **ताँर**—उनका।

कलिकाता—कलकत्ता; **तुलेछे**—उठाया है; **माथा**—सिर; **पुरातन...... काछे**—पुरातन पास नहीं फटकता; **लोष्ट्र**—मिट्टी का ढेला; **आड़ष्ट**—जड़; **हइया**—हो; **येन आछे**—जैसे हैं; **दुटि**—दो; **भाइ**—भाई; **मरितेछे**—मर रहे हैं; **जन्मियाइ**—जन्म लेते ही; **करितेछे**—कर रहे हैं; **कत**—कितना;

निशिदिन धुलि प'ड़े दितेछे आच्छन्न करे
चिरसत्य आछे येथा यत ।

जीवनेर हानाहानि, प्राण निये टानाटानि,
मत निये वाक्यबरिषन,
विद्या निये राताराति पुँथिर प्राचीर गाँथि
प्रकृतिर गण्डि-विरचन,
केवलि नूतने आश, सौन्दर्येते अविश्वास,
उन्मादना चाहि दिन-रात——
से-सकल भुले गिये कोणे बसे खाता निये
महानन्दे काटिछे प्रभात ।

दक्षिणेर बारान्दाय बेड़ाइ मुग्धेर प्राय,
अपराह्ने पड़े तरुच्छाया——
कल्पनार धनगुलि हृदयदोलाय दुलि
प्रतिक्षणे लभितेछे काया ।
सेवि बाहिरेर वायु बाड़े ताहादेर आयु,
भोग करे चाँदेर अमिय——

प'ड़े—पड़ कर; **दितेछे......करे**—आच्छन्न किए दे रही है; **आछे**—है; **येथा**—जहाँ; **यत**—जितना ।

हानाहानि—घात-प्रतिघात; **निये**—ले कर; **टानाटानि**—खींचतान; **बरिषन**—वर्षण; **पुँथिर**—पोथी का; **गाँथि**—निर्माण कर; **गण्डि**—वेष्टन-रेखा, घेरा; **केवलइ**—अविरत; **आश**—आशा; **सौन्दर्येते**—सौन्दर्य में; **से**—वह; **कोणे......निये**—कोने में बैठ खाता (लिखने की कॉपी) ले कर; **काटिछे**—कट रहा है ।

बारान्दाय—बरामदे में; **बेड़ाइ......प्राय**—विभोर-सा हो कर घूमता हूँ; **पड़े**—पड़ती है; **धनगुलि**—धन; **दोलाय**—झूले में; **दुलि**—झूल कर; **लभितेछे**—प्राप्त कर रहे हैं; **सेवि......आयु**—बाहर की हवा का सेवन कर उनकी आयु बढ़ती है; **भेद करि**—भेदन कर; **जीवन......प्रिय**—जीवन का

भेद करि मोर प्राण जीवन करिया पान
हइतेछे जीवनेर प्रिय ।

एत तारा जेगे आछे निशिदिन काछे काछे,
एत कथा कय शत स्वरे,
ताहादेर तुलनाय आर-सबे छायाप्राय
आसे याय नयनेर 'परे ।
आज सब हल सारा, बिदाय लयेछे तारा,
नूतन बेँधेछे घरबाड़ि--
एखन स्वाधीन बले बाहिरे ऐसेछे चले
अन्तरेर पितृगृह छाड़ि ।

ताइ एतदिन परे आजि निजमूर्ति धरे
प्रवासेर विरहवेदना,
तोदेर काछेते येते तोदिके निकटे पेते
जागितेछे एकान्त वासना ।
सम्मुखे दाँड़ाब यबे 'की एनेछ' बलि सबे
यद्यपि शुधास हासिमुख,

पान कर जीवन के लिये प्रिय बन रहे हैं ।

एत......आछे—वे सब इतने जाग्रत हैं; **काछे**—निकट; **एत......स्वर**—सैंकड़ों स्वरों में इतनी बातें कहते हैं; **ताहादेर......परे**—उनकी तुलना में और सभी छाया के समान हैं (जो) आँखों के सामने आते जाते हैं; **हल**—हुआ; **सारा**—समाप्त; **बिदाइ......तारा**—उन्होंने बिदाई ले ली है; **नूतन......बाड़ि**—नया घर-द्वार बाँधा (निर्माण किया) है; **एखन**—अब; **बाहिरे......छाड़ि**—पितृगृह को छोड़ (वे सब कल्पनाएं) बाहर चली आई हैं ।

ताइ—इसीलिये; **एतदिन परे**—इतने दिन बाद; **तोदेर......येते**—तुम सबों के निकट जाने की; **तोदिके......पेते**—तुम सबों को निकट पाने की; **जागितेछे**—जाग रही है; **सम्मुखे......यबे**—सम्मुख (जा कर) जब खड़ा होऊँगा; **की एनेछ**—क्या लाए हो; **बलि**—कह कर; **सबे**—तुम सब; **शुधास**—पूछते हो; **हासिमुख**—मुख पर हँसी लिए हुए;

खाताखानि बेर क'रे बलिब 'ए पाता भ'रे
आनियाछि प्रवासेर सुख'।

सेइ छवि मने आसे— टेबिलेर चारि पाशे
गुटिकत चौकि टेने आनि,
शुधु जन दुइ-तिन, ऊर्ध्वे ज्वले केरोसिन,
केदाराय बसि ठाकुरानी।
दक्षिणेर द्वार दिये वायु आसे गान निये,
केँपे केँपे उठे दीपशिखा।
खाता हाते सुर क'रे अबाधे येतेछि प'ड़े,
केह नाइ करिबारे टीका।

घण्टा बाजे, बाड़े रात, फुराय ब'येर पात,
बाहिरे निस्तब्ध चारि धार—
तोदेर नयने जल करे आसे छलछल्
शुनिया काहिनी करुणार।

खाताखानि.....बलिब—खाता बाहर (निकाल) कर कहूँगा; **ए......सुख**—पन्ने भर कर प्रवास का यह आनन्द ले आया हूँ।

सेइ......आसे—वही चित्र मन में आता है; **टेबिलेर......आनि**—टेबिल के चारों ओर कुछ चौकियाँ खींच लाता हूँ; **शुधु**—केवल; **जन......तिन**—दो-तीन जने; **ज्वले**—जलता है; **केदाराय**—आरामकुर्सी पर; **बसि**—बैठी हैं; **दिये**—से, हो कर; **आसे**—आती है; **निये**—ले कर; **केँपे......उठे**—काँप-काँप उठती है; **हाते**—हाथ में; **सुर क'रे**—स्वर के साथ, सस्वर; **अबाधे....प'ड़े**—बिना किसी बाधा के पढ़ता जा रहा हूँ; **केह......टीका**—कोई टीका-टिप्पणी करने वाला नहीं है।

बाड़े—बढ़ती है; **फुराय......पात**—किताब के पन्ने समाप्त होते हैं; **बाहिरे**—बाहर; **चारि धार**—चारों ओर; **तोदेर......करुणार**—करुण कहानी सुन कर तुम सबों की आँखों में छल-छल कर आँसू आते हैं;

ताइ देखे शुते याइ, आनन्देर शेष नाइ,
काटे रात्रि स्वप्न-रचनाय--
मने मने प्राण भरि अमरता लाभ करि
नीरव से समालोचनाय।

तार परे दिन-कत केटे याय एइमत,
तार पर छापाबार पाला।
मुद्रायन्त्र हते शेषे बाहिराय भद्रवेशे,
तार परे महा झालापाला।
रक्तमांस-गन्ध पेये क्रिटिकेरा आसे धेये,
चारि दिके करे काड़ाकाड़ि।
केह बले, "ड्रामाटिक बला नाहि याय ठिक,
लिरिकेर बड़ो बाड़ाबाड़ि।"

शिर नाड़ि केह कहे, "सब-सुद्ध मन्द नहे,
भालो ह'त आरो भालो हले।"

ताइ....याइ--उसे ही देख सोने जाता हूँ; **आनन्देर......नाइ**--आनन्द का अन्त नहीं; **काटे......रचनाय**--स्वप्न की रचना में रात कटती है; **लाभ करि**--प्राप्त करता हूँ; **से**--उस; **समालोचनाय**--समालोचना से।

तार परे--उसके बाद; **दिन-कत**--कितने दिन; **केटे......एइमत**--इसी तरह (दिन) कट जाते हैं; **छापाबार पाला**--छपाने की बारी; **हते**--से; **शेषे**--अन्त में; **बाहिराय**--बाहर निकलता है (प्रकाशित होता है); **भद्रवेशे**--भद्रवेश में; **झालापाला**--(कानों को बहरा कर देने वाले शब्द) कोहराम, चिल्ल-पों; **पेये**--पा कर; **आसे धेये**--दौड़े आते हैं; **चारि....काड़ाकाड़ि**--चारों ओर खींचतान करते हैं; **केह बले**--कोई कहता है; **ड्रामाटिक.....ठिक**--ठीक ड्रामाटिक नहीं कहा जा सकता; **लिरिकेर......बाड़ाबाड़ि**--लिरिक की मात्रा में अति की गई है।

शिर......कहे--सिर हिला कर कोई कहता है; **सब......नहे**--कुल मिला कर बुरा नहीं; **भालो....हले**--अच्छा होता और अच्छा होने पर; **बले**--कहता है;

केह बले, "आयुहीन बाँचिबे दु-चारि दिन,
चिरदिन रबे ना ता ब'ले।"
केह बले, "ए बहिटा लागिते पारित मिठा
ह'त यदि अन्य कोनोरूप।"
यार मने याहा लय सकलेइ कथा कय,
आमि शुधु बसे आछि चुप।

ल'ये नाम, ल'ये जाति विद्वानेर मातामाति,
ओ-सकल आनिस ने काने।
आइनेर लौह-छाँचे कविता कभु ना बाँचे,
प्राण शुधु पाय ताहा प्राणे।
हासिमुखे स्नेहभरे सँपिलाम तोर करे,
बुझिया पड़िबि अनुरागे।
के बोझे के नाइ बोझे भावुक ता नाहि खोँजे
भालो यार लागे तार लागे।
—रविकाका

बाँचिबे—बचेगा, जीवित रहेगा; **रबे ना**—नहीं रहेगा; **ता ब'ले**—इसीलिये; **ए**—यह; **बहिटा**—ग्रन्थ, पुस्तक; **लागिते......मिठा**—मीठा लग सकता था; **ह'त......रूप**—अगर किसी दूसरे प्रकार का होता; **यारा......कय**—जिसके मन में जो आता है, सभी (वही) कहते हैं; **आमि......चुप**—मैं ही बस चुप बैठा हुआ हूँ।

ल'ये......मातामाति—नाम और जाति ले कर विद्वान पागल हैं; **ओ...... काने**—उन सब पर कान न देना; **आइनेर......बाँचे**—आईन (नियम) के लौह साँचे में कविता कभी नहीं बचती; **प्राण......प्राणे**—वह तो बस प्राण को प्राण से मिलती है; **सँपिलाम.....करे**—तेरे हाथों में मैंने सौंपा; **बुझिया.....अनुरागे**—समझ कर अनुराग के साथ पढ़ना; **के......बोझे**—कौन समझता है कौन नहीं समझता; **ता......खोँजे**—इसकी खोज नहीं करता; **भालो......लागे**—जिसे अच्छा लगता है उसे (अच्छा) लगता है।

नाटकेर पात्रगण

गोविन्दमाणिक्य	त्रिपुरार राजा
नक्षत्रराय	गोविन्दमाणिक्येर कनिष्ठ भ्राता
रघुपति	राजपुरोहित
जयसिंह	रघुपतिर पालित राजपुत युवक, राजमन्दिरेर सेवक
चाँदपाल	देओयान
नयनराय	सेनापति
ध्रुव	राजपालित बालक
मन्त्री	
पौरगण	
गुणवती	महिषी
अपर्णा	भिखारिनी

देओयान—दीवान

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

मन्दिर

गुणवती

गुणवती । मार काछे की करेछि दोष ! भिखारि ये
सन्तान विक्रय करे उदरेर दाये,
तारे दाओ शिशु—पापिष्ठा ये लोकलाजे
सन्तानेरे वध करे, तार गर्भे दाओ
पाठाइया असहाय जीव । आमि हेथा
सोनार पालङ्कें महारानी, शत शत
दास दासी सैन्य प्रजा ल'ये बसे आछि
तप्त वक्षे शुधु एक शिशुर परश
लालसिया, आपनार प्राणेर भितरे
आरेकटि प्राणाधिक प्राण करिबारे
अनुभव—एइ वक्ष, एइ बाहु दुटि,
एइ कोल, एइ दृष्टि दिये, विरचिते
निबिड़ जीवन्त नीड़, शुधु एकटुकु
प्राणकणिकार तरे ! हेरिबे आमारे
एकटि नूतन आँखि प्रथम आलोके,

मार......दोष—माँ के निकट क्या अपराध किया है; **भिखारि......शिशु**—उदर के लिये जो भिखारी सन्तान विक्रय करता है उसे शिशु (सन्तान) देती हो; **ये**—जो; **लोकलाजे**—लोकलज्जा से; **सन्तानेरे......करे**—सन्तान का वध करती है; **तार.....जीव**—उसके गर्भ में असहाय जीव भेज देती हो; **आमि**—मैं; **हेथा**—यहाँ; **सोनार पालङ्कें**—सोने के पलंग पर; **ल'ये**—ले कर; **बसे आछि**—बैठी हुई हूँ; **शुधु**—केवल; **परश**—स्पर्श; **लालसिया**—लोलुप हो कर, लोभी हो कर; **आरेकटि**—और एक; **एइ**—इस; **कोल**—गोद; **दिये**—द्वारा; **तरे**—लिये; **हेरिबे**—देखेगी; **आमारे**—मुझे; **एकटि**—एक;

फुटिबे आमारि कोले कथाहीन मुखे
अकारण आनन्देर प्रथम हासिटि !
कुमारजननी मातः, कोन् पापे मोरे
करिलि वञ्चित मातृस्वर्ग हते ?

[रघुपतिर प्रवेश

प्रभु,
चिरदिन मा'र पूजा करि। जेने शुने
किछु तो करि नि दोष। पुण्येर शरीर
मोर स्वामी महादेवसम—तबे कोन्
दोष देखे आमारे करिल महामाया
निःसन्तानश्मशानचारिणी ?

रघुपति। मा'र खेला
के बुझिते पारे बलो ? पाषाणतनया
इच्छामयी, सुख दुःख ताँरि इच्छा। धैर्य
धरो। एबार तोमार नामे मा'र पूजा
हबे। प्रसन्न हइबे श्यामा।

गुणवती। ए वत्सर
पूजार बलिर पशु आमि निजे दिब।

फुटिबे......हासिटि—मेरी ही गोद में अनबोलते मुख में अकारण आनन्द की प्रथम हँसी खिलेगी; **कोन् पापे**—किस पाप से; **मोरे**—मुझे; **करिलि**—किया; **हते**—से।

मा'र......करि—माँ की पूजा करती हूँ; **जेने......दोष**—जानबूझ कर तो कोई अपराध नहीं किया; **करिल**—किया।

मा'र......बलो—माँ की लीला कौन समझ सकता है, बोलो; **ताँरि**—उन्हीं की; **एबार......हबे**—इस बार तुम्हारे नाम से माँ की पूजा होगी; **हइबे**—होगी; **श्यामा**—माँ काली।

ए......दिब—इस वर्ष पूजा की बलि के पशु मैं स्वयं दूंगी; **करिनु मानत**—मने मन्नत की; **मा......महिष**—माँ यदि सन्तान दें तो प्रत्येक वर्ष उन्हें

करिनु मानत, मा यदि सन्तान देन
वर्षे वर्षे दिब ताँरे एक-शो महिष,
तिन शत छाग।

रघुपति। पूजार समय हल।

[उभयेर प्रस्थान

[गोविन्दमाणिक्य अपर्णा ओ जयसिंहेर प्रवेश

जयसिंह। की आदेश महाराज?

गोविन्द। क्षुद्र छागशिशु
दरिद्र ए बालिकार स्नेहेर पुत्तलि,
तारे नाकि केड़े आनियाछ मा'र काछे
बलि दिते? ए दान कि नेबेन जननी
प्रसन्न दक्षिण हस्ते?

जयसिंह। केमने जानिब,
महाराज, कोथा हते अनुचरगण
आने पशु देवीर पूजार तरे।—हाँ गा,
केन तुमि काँदितेछ? आपनि नियेछे
यारे विश्वमाता, तार तरे क्रन्दन कि
शोभा पाय?

अपर्णा। के तोमार विश्वमाता! मोर
शिशु चिनिबे ना तारे। मा-हारा शावक

एक सौ भैंसे (बलि) दूँगी; **तिन......छाग**—तीन सौ बकरे; **हल**—हुआ।

छागशिशु—बकरी का बच्चा; **ए**—इस; **पुत्तलि**—प्रतिमूर्ति; **तारे......दिते**—उसे माँ के पास बलि देने के लिये छीन लाए हो; **ए......नेबेन**—इस दान को लेंगी क्या।

केमने जानिब—कैसे जानूँ; **कोथा हते**—कहाँ से; **आने**—लाते हैं; **पूजार तरे**—पूजा के लिये; **केन.....काँदितेछ**—तुम क्यों रो रही हो; **आपनि.....पाय**—जिसे माँ ने स्वयं लिया है उसके लिये रोना क्या शोभा देता है।

के—कौन; **तोमार**—तुम्हारी; **मोर......तारे**—मेरा बच्चा उसे नहीं पहचानेगा; **मा......मायेरे**—मातृहीन छौना अपनी माँ को नहीं जानता;

जाने ना से आपन मायेरे। आमि यदि
वेला करे आसि, खाय ना से तृणदल,
डेके डेके चाय पथपाने—कोले क'रे
निये तारे, भिक्षा-अन्न कय जने भाग
करे खाइ। आमि तार माता।

जयसिंह। महाराज,
आपनार प्राण-अंश दिये, यदि तारे
बाँचाइते पारिताम, दिताम बाँचाये।
मा ताहारे नियेछेन—आमि तारे आर
फिराब केमने?

अपर्णा। मा ताहारे नियेछेन?
मिछे कथा! राक्षसी नियेछे तारे!

जयसिंह। छि छि,
ओ कथा एनो ना मुखे।

अपर्णा। मा, तुमि नियेछ
केड़े दरिद्रेर धन! राजा यदि चुरि
करे, शुनियाछि नाकि, आछे जगतेर
राजा—तुमि यदि चुरि करो, के तोमार
करिबे विचार! महाराज, बलो तुमि—

आमि.....दल—मैं अगर देर से आती हूँ तो वह घास नहीं खाता; **डेके.....पाने**—पुकारता हुआ रास्ते की ओर देखता है; **कोले......तारे**—उसे गोद में ले कर; **आमि......माता**—मैं उसकी माँ हूँ।

आपनार—अपना; **दिये**—दे कर; **तारे**—उसे; **बाँचाइते पारिताम**—बचा सकता; **दिताम बाँचाये**—बचा देता; **मा......नियेछेन**—माँ ने उसे ले लिया है; **आमि......केमने**—मैं उसे अब कैसे लौटाऊँगा।

मिछे कथा—झूठी बात; **नियेछे**—लिया है; **ओ......मुखे**—वह बात ओठों पर न लाना; **तुमि......धन**—तुमने दरिद्र का धन छीन लिया है; **चुरि करे**—चोरी कर; **शुनियाछि नाकि**—सुना है कि; **आछे**—है; **के......विचार**—तुम्हारा कौन न्याय करेगा; **बलो**—बोलो।

गोविन्द। वत्से, आमि वाक्यहीन—एत व्यथा केन,
एत रक्त केन, के बलिया दिबे मोरे ?

अपर्णा। एइ-ये सोपान बेये रक्तचिह्न देखि
ए कि तारि रक्त ? ओरे बाछनि आमार !
मरि मरि, मोरे डेके केँदेछिल कत,
चेये छिल चारि दिके व्याकुल नयने,
कम्पित कातर वक्षे—मोर प्राण केन
येथा छिल सेथा हते छुटिया एल ना ?

प्रतिमार प्रति

जयसिंह। आजन्म पूजिनु तोरे, तबु तोर माया
बुझिते पारि ने। करुणाय काँदे प्राण
मानवेर, दया नाइ विश्वजननीर !

जयसिंहेर प्रति

अपर्णा। तुमि तो निष्ठुर नह—आँखि-प्रान्ते तव
अश्रु झरे मोर दुखे। तबे एस तुमि,
ए मन्दिर छेड़े एस। तबे क्षम मोरे,
मिथ्या आमि अपराधी करेछि तोमाय।

एत......केन—इतनी व्यथा क्यों; **के......मोरे**—कौन मुझे बतलाएगा।

एइ......रक्त—यह जो सीढ़ी पर रक्त का चिह्न देख रही हूँ, यह क्या उसीका रक्त है; **बाछनि**—वत्स; **मरि मरि**—बलि-बलि जाना, अथवा निछावर होना; **मोरे......कत**—मुझे पुकारता हुआ कितना रोया था; **चेये.....नयने**—व्याकुल नयनों से चारों ओर देखा था; **वक्षे**—वक्ष से, हृदय से; **मोर......ना**—मेरे प्राण जहाँ थे वहाँ से दौड़े क्यों नहीं आए।

पूजिनु तोरे—तुम्हें पूजा था; **तबु.....ने**—तो भी तुम्हारी माया समझ नहीं सका; **करुणाय......मानवेर**—करुणा से मानव के प्राण रोते हैं; **नाइ**—नहीं है।

तुमि......नह—तुम तो निष्ठुर नहीं हो; **आँखि......दुखे**—तुम्हारी आँखों की कोर से मेरे दुःख पर आँसू झरते हैं; **तबे......तुमि**—तो फिर तुम चले आओ; **ए**—इस; **छेड़े**—छोड़ कर; **क्षम**—क्षमा करो; **मोरे**—मुझे; **मिथ्या...... तोमाय**—ग़लत ही मैंने तुम्हें अपराधी बनाया।

प्रतिमार प्रति

जयसिंह। तोमार मन्दिरे ए की नूतन संगीत
ध्वनिया उठिल आजि, हे गिरिनन्दिनी,
करुणाकातर कण्ठस्वरे! भक्तहृदि
अपरूप वेदनाय उठिल व्याकुलि।——
हे शोभने, कोथा याब ए मन्दिर छेड़े?
कोथाय आश्रय आछे?

जनान्तिक हइते

गोविन्द। येथा आछे प्रेम।

[प्रस्थान

जयसिंह। कोथा आछे प्रेम! ——
अयि भद्रे, एस तुमि
आमार कुटिरे। अतिथिरे देवीरूपे
आजिके करिब पूजा करियाछि पण।

[जयसिंह ओ अपर्णार प्रस्थान

द्वितीय दृश्य

राजसभा

राजा रघुपति ओ नक्षत्ररायेर प्रवेश
सभासद्गण उठिया

सकले। जय होक महाराज!

तोमार.....आजि—तुम्हारे मन्दिर में आज यह कौन-सा नया संगीत ध्वनित हो उठा; **हृदि**—हृदय; **वेदनाय**—वेदना से; **उठिल व्याकुलि**—व्याकुल हो उठा; **कोथा......छेड़े**—इस मन्दिर को छोड़ कर कहाँ जाऊँगा; **कोथाय......आछे**—कहाँ आश्रय है। **हइते**—से।

येथा......प्रेम—जहाँ प्रेम है।

कोथा—कहाँ; **एस......कुटिरे**—तुम मेरी कुटिया में आओ; **अतिथिरे......पण**—देवी रूप में अतिथि की आज पूजा करूँगा (मैंने) दृढ़ संकल्प किया है।

उठिया—उठ कर। **होक**—हो।

रघुपति। राजार भाण्डारे
एसेछि बलिर पशु संग्रह करिते।
गोविन्द। मन्दिरेते जीवबलि ए वत्सर हते
हइल निषेध।
नयनराय। बलि निषेध!
मन्त्री। निषेध!
नक्षत्रराय। ताइ तो! बलि निषेध!
रघुपति। ए कि स्वप्ने शुनि?
गोविन्द। स्वप्न नहे प्रभु! एतदिन स्वप्ने छिनु,
आज जागरण। बालिकार मूर्ति धरे
स्वयं जननी मोरे बले गियेछेन,
जीवरक्त सहे ना ताँहार।
रघुपति। एतदिन
सहिल की करे? सहस्र वत्सर ध'रे
रक्त करेछेन पान, आजि ए अरुचि!
गोविन्द। करेन नि पान। मुख फिरातेन देवी
करिते शोणितपात तोमरा यखन।

राजार......करिते—राजा के भाण्डार में बलि का पशु संग्रह करने आया हूँ।

मन्दिरेते......निषेध—इस वर्ष से मन्दिर में जीव बलि निषिद्ध हुई।

ताइ तो—(विस्मय, हतबुद्धिता इत्यादि सूचक)

ए......शुनि—यह क्या स्वप्न में सुनता हूँ।

नहे—नहीं; **एतदिन......छिनु**—इतने दिन स्वप्न में (देख रहा) था; **बालिकार......गियेछेन**—बालिका की मूर्ति धारण कर जननी मुझसे स्वयं कह गई हैं; **जीवरक्त......ताँहार**—जीवरक्त उन्हें सह्य नहीं।

एतदिन......करे—इतने दिन कैसे सह्य हुआ; **ध'रे**—से; **करेछेन**—किया है; **ए**—यह।

करेन......पान—पान नहीं किया; **फिरातेन**—फिरा लेतीं; **करिते...... यखन**—तुमलोग जब रक्तपात करते।

रघुपति। महाराज, की करिछ भालो करे भेवे
देखो। शास्त्रविधि तोमार अधीन नहे।
गोविन्द। सकल शास्त्रेर बड़ो देवीर आदेश।
रघुपति। एके भ्रान्ति, ताहे अहङ्कार! अज्ञ नर,
तुमि शुधु शुनियाछ देवीर आदेश,
आमि शुनि नाइ?
नक्षत्रराय। ताइ तो, की बलो मन्त्री,
ए बड़ो आश्चर्य! ठाकुर शोनेन नाइ?
गोविन्द। देवी-आज्ञा नित्यकाल ध्वनिछे जगते।
सेइ तो बधिरतम ये जन से वाणी
शुनेओ शुने ना।
रघुपति। पाषण्ड, नास्तिक तुमि!
गोविन्द। ठाकुर, समय नष्ट हय। याओ एबे
मन्दिरेर काजे। प्रचार करिया दियो
पथे येते येते, आमार त्रिपुरराज्ये
ये करिबे जीवहत्या जीवजननीर
पूजाच्छले, तारे दिब निर्वासनदण्ड।

की......देखो—क्या कर रहे हो, अच्छी तरह विचार कर देखो; **नहे**—नहीं है।

शास्त्रेर बड़ो—शास्त्र से बड़ा।

एके......अहङ्कार—एक तो भ्रान्ति, तिसपर अहंकार; **तुमि......आदेश**—केवल तुम्हीं ने देवी का आदेश सुना है; **आमि......नाइ**—मैंने नहीं सुना।

ताइ......मन्त्री—यही तो, क्या कहते हो मन्त्री; **ठाकुर......नाइ**—ठाकुर (पुरोहित) ने नहीं सुना।

ध्वनिछे—ध्वनित हो रही है; **सेइ......ना**—वही लोग तो सबसे अधिक बहरे हैं जो उस वाणी को सुन कर भी नहीं सुनते।

पाषण्ड—पाखण्डी।

समय......हय—समय नष्ट होता है; **याओ......काजे**—अब मन्दिर के कार्य के लिए जाओ; **प्रचार......येते**—रास्ते में जाते जाते प्रचार कर देना; **ये करिबे**—जो करेगा; **पूजाच्छले**—पूजा के बहाने; **तारे दिब**—उसे दूँगा।

रघुपति। एइ कि हइल स्थिर?

गोविन्द। स्थिर एइ।

उठिया

रघुपति। तबे

उच्छन्न! उच्छन्न याओ!

छुटिया आसिया

चाँदपाल। हाँ हाँ! थामो! थामो!

गोविन्द। बोसो चाँदपाल। ठाकुर, बलिया याओ।

मनोव्यथा लघु करे याओ निज काजे।

रघुपति। तुमि कि भेबेछ मने त्रिपुर-ईश्वरी

त्रिपुरार प्रजा? प्रचारिबे ताँर 'परे

तोमार नियम? हरण करिबे ताँर

बलि? हेन साध्य नाइ तव, आमि आछि

मायेर सेवक।

[प्रस्थान

नयनराय। क्षमा करो अधीनेर

स्पर्धा महाराज। कोन् अधिकारे, प्रभु,

जननीर बलि—

चाँदपाल। शान्त हओ सेनापति।

एइ......स्थिर—क्या यही निश्चय हुआ।

तबे......याओ—तब नाश हो, तुम्हारा नाश हो।

छुटिया आसिया—दौड़ता हुआ आ कर। **थामो**—रुको।

बोसो—बैठो; **बलिया याओ**—कहते जाओ।

तुमि......प्रजा—तुमने क्या मन में समझ रखा है कि देवी त्रिपुर-ईश्वरी त्रिपुरा (राज्य) की प्रजा हैं; **प्रचारिबे......नियम**—उनके ऊपर अपना नियम चलाओगे; **हरण......बलि**—उनके निमित्त बलि को बन्द करोगे; **हेन......तव**—तुम्हारी इतनी हिम्मत नहीं; **आमि......सेवक**—मैं माँ का सेवक (यहाँ बैठा) हूँ।

अधीनेर—अधीन की; **कोन् अधिकारे**—किस अधिकार से।

हओ—होओ।

मन्त्री। महाराज, एकेबारे करेछ कि स्थिर?
आज्ञा आर फिरिबे ना?

गोविन्द। आर नहे मन्त्री,
विलम्ब उचित नहे विनाश करिते
पाप।

मन्त्री। पापेर कि एत परमायु हबे?
कत शत वर्ष धरे ये प्राचीन प्रथा
देवताचरणतले वृद्ध हये एल,
से कि पाप हते पारे?

राजार निरुत्तरे चिन्ता

नक्षत्रराय। ताइ तो हे मन्त्री,
से कि पाप हते पारे?

मन्त्री। पितामहगण
एसेछे पालन क'रे यत्ने भक्तिभरे
सनातन रीति। ताँहादेर अपमान
तार अपमाने।

राजार चिन्ता

नयनराय। भेबे देखो महाराज,
युगे युगे ये पेयेछे शतसहस्रेर

एकेबारे......स्थिर—क्या एकदम निश्चय कर लिया है; **आज्ञा......ना**—आज्ञा क्या लौटाई नहीं जाएगी।

आर नहे—और नहीं; **करिते**—करने में।

पापेर......हबे—पाप की क्या इतनी परमायु होगी; **हये एल**—हो आई; **से......पारे**—वह क्या पाप हो सकता है।

एसेछे.....क'रे—पालन करते आए हैं; **ताँहादेर.....अपमाने**—उस (रीति) के अपमान से उनका अपमान है।

भेबे देखो—विचार कर देखो; **ये पेयेछे**—जिसने पाया है;

भक्तिर सम्मति, ताहारे करिते नाश
तोमार की आछे अधिकार।

सनिश्वासे

गोविन्द। थाक् तर्क!
याओ मन्त्री, आदेश प्रचार करो गिये—
आज हते बन्ध बलिदान।

[प्रस्थान

मन्त्री। एकि हल!
नक्षत्रराय। ताइ तो हे मन्त्री, ए की हल! शुनेछिनु
मगेर मन्दिरे बलि नेइ, अवशेषे
मगेते हिन्दुते भेद रहिल ना किछु।
की बल हे चाँदपाल, तुमि केन चुप?
चाँदपाल। भीरु आमि क्षुद्र प्राणी, बुद्धि किछु कम,
ना बुझे पालन करि राजार आदेश।

तृतीय दृश्य

मन्दिर

जयसिंह

जयसिंह। मा गो, शुधु तुइ आर आमि! ए मन्दिरे
सारादिन आर केह नाइ—सारा दीर्घ

ताहारे......अधिकार—उसे नष्ट करने का तुम्हें क्या अधिकार है।

थाक्—रहने दो; **याओ**—जाओ; **आदेश......गिये**—जा कर आदेश की घोषणा करो; **हते**—से; **बन्ध**—बन्द। **एकि हल**—यह क्या हुआ।

शुनेछिनु—सुना था; **मग**—ब्रह्मदेश वा आराकान राज्य; **मगेते...... किछु**—मग और हिन्दू में कुछ भेद नहीं रहा; **की बल**—क्या कहते हो; **तुमि...... चुप**—तुम क्यों चुप हो।

ना बुझे—समझे बिना; **करि**—करता हूँ।

शुधु......आमि—केवल तू और मैं; **ए मन्दिरे**—इस मन्दिर में; **आर...... नाइ**—और कोई नहीं;

दिन ! माझे माझे के आमारे डाके येन ।
तोर काछे थेके तबु एका मने हय !

नेपथ्ये गान

आमि एकला चलेछि ए भवे,
आमाय पथेर सन्धान के कबे ?

जयसिंह । मा गो, ए की माया ! देवतारे प्राण देय
मानवेर प्राण ! एइमात्र छिले तुमि
निर्वाक् निश्चल—उठिले जीवन्त हये
सन्तानेर कण्ठस्वरे सजाग जननी !

[गान गाहिते गाहिते अपर्णार प्रवेश

आमि एकला चलेछि ए भवे,
आमाय पथेर सन्धान के कबे ?
भय नेइ, भय नेइ, याओ आपन मनेइ
येमन एकला मधुप धेये याय
केवल फुलेर सौरभे ।

जयसिंह । केवलि एकेला ! दक्षिण बातास यदि
वन्ध हये याय, फुलेर सौरभ यदि
नाहि आसे, दश दिक जेगे ओठे यदि

माझे......येन—बीच बीच में जैसे कोई मुझे पुकारता है; **तोर......हय**—तेरे निकट रहते भी अकेला मालूम होता है ।

आमि......भवे—मैं इस संसार में अकेली चल पड़ी हूँ; **आमाय**—मुझको; **के कबे**—कौन कहेगा ।

ए की माया—यह कैसी माया है; **देवतारे......प्राण**—मानव के प्राण देवता को प्राण प्रदान करते हैं; **एइ.....निश्चल**—अभी तक तुम निःशब्द निश्चल थीं; **उठिले......हये**—जीवन्त हो उठीं ।

नेइ—नहीं; **याओ......मनेइ**—अपने मन से ही जाओ; **येमन**—जैसे; **धेये याय**—दौड़ कर जाता है ।

बन्ध......याय—बन्द हो जाय; **नाहि.....आसे**—नहीं आवे;

दशटि सन्देह-सम, तखन कोथाय
सुख, कोथा पथ ? जान कि एकेला कारे
बले ?

अपर्णा। जानि। यबे बसे आछि भरा मने—
दिते चाइ, निते केह नाइ !

जयसिंह। सृजनेर
आगे देवता येमन एका ! ताइ बटे !
ताइ बटे ! मने हय ए जीवन बड़ो
बेशि आछे—यत बड़ो तत शून्य, तत
आवश्यकहीन।

अपर्णा। जयसिंह, तुमि बुझि
एका ! ताइ देखियाछि, काङाल ये जन
ताहारो काङाल तुमि। ये तोमार सब
निते पारे, तारे तुमि खुँजितेछ येन।
भ्रमितेछ दीनदुःखी सकलेर द्वारे।
एतदिन भिक्षा मेगे फिरितेछि—कत
लोक देखि, कत मुखपाने चाइ, लोके

दशटि—दस; **तखन**—तब; **कोथाय**—कहाँ; **जान......बले**—जानती हो अकेला किसे कहते हैं।

जानि—जानती हूँ; **यबे......मने**—जब भरे हुए मन से बैठी रहती हूँ; **दिते चाइ**—देना चाहती हूँ; **निते......नाइ**—लेने वाला कोई नहीं।

सृजनेर आगे—सृजन के पहले; **येमन**—जैसे; **एका**—अकेला; **ताइ बटे**—सचमुच वही; **बेशि**—अधिक; **आछे**—है; **यत**—जितना; **तत**—उतना।

बुझि—लगता है, शायद; **ताइ......तुमि**—इसीलिये देखा है, जो मनुष्य कंगाल है उससे भी (अधिक) तुम कंगाल हो; **ये......येन**—जो तुम्हारा सब कुछ ले सके, जैसे तुम उसे खोज रहे हो ; **एतदिन**—इतने दिन से; **मेगे**—माँगती; **फिरितेछि**—फिरती हूँ; **कत......देखि**—कितने लोगों को देखती हूँ; **कत...... चाइ**—कितने (लोगों)के मुख की ओर निहारती हूँ; **लोके......तरे**—(सब) लोग समझते हैं कि शायद केवल भिक्षा के लिये;

भाबे शुधु बुझि भिक्षातरे—दूर हते
देय ताइ मुष्टिभिक्षा क्षुद्र दयाभरे।
एत दया पाइ ने कोथाओ—याहा पेये
आपनार दैन्य आर मने नाहि पड़े।

जयसिंह। यथार्थ ये दाता, आपनि नामिया आसे
दानरूपे दरिद्रेर पाने, भूमितले।
येमन आकाश हते वृष्टिरूपे मेघ
नेमे आसे मरुभूमे—देवी नेमे आसे
मानवी हइया, यारे भालोबासि तार
मुखे। दरिद्र ओ दाता, देवता मानव
समान हइया याय।—
ओइ आसिछेन
मोर गुरुदेव।

अपर्णा। आमि तबे सरे याइ
अन्तराले। ब्राह्मणेरे बड़ो भय करि।
की कठिन तीव्र दृष्टि! कठिन ललाट
पाषाणसोपान येन देवीमन्दिरेर।

[प्रस्थान

जयसिंह। कठिन? कठिन बटे। विधातार मतो।
कठिनता निखिलेर अटल निर्भर।

[रघुपतिर प्रवेश

हते—से; **देय ताइ**—इसीलिये देते हैं; **एत......पड़े**—इतनी दया कहीं भी नहीं मिली जिसे पा कर अपने दैन्य का फिर ध्यान न आता।

ये—जो; **आपनि......पाने**—दान के रूप में अपने आप ही दरिद्र की ओर झुक आता है; **येमन**—जैसे; **नेमे आसे**—झुक आता है; **हइया**—हो कर; **यारे......मुखे**—जिसे प्यार करता हूँ उसके मुख पर; **हइया याय**—हो जाते हैं।

ओइ आसिछेन—वह आते हैं।

आमि......याइ—तो फिर मैं हट जाऊँ; **ब्राह्मणेरे......करि**—ब्राह्मण से अत्यन्त भय खाती हूँ; **की**—कैसी।

बटे—अवश्य ही; **निर्भर**—भरोसा।

पा धुइबार जल प्रभृति अग्रसर करिया

जयसिंह। गुरुदेव!

रघुपति। याओ, याओ!

जयसिंह। आनियाछि जल।

रघुपति। थाक, रेखे दाओ जल।

जयसिंह। वसन।

रघुपति। के चाहे

वसन!

जयसिंह। अपराध करेछि कि?

रघुपति। आबार!

के नियेछे अपराध तव?—

घोर कलि

एसेछे घनाये। बाहुबल राहुसम

ब्रह्मतेज ग्रासिबारे चाय—सिंहासन

तोले शिर यज्ञवेदी-'परे। हाय हाय,

कलिर देवता, तोमराओ चाटुकार

सभासद्‌सम, नतशिरे राज-आज्ञा

बहितेछ? चतुर्भुजा, चारि हस्त आछ

जोड़ करि! वैकुण्ठ कि आबार नियेछे

केड़े दैत्यगण? गियेछे देवता यत

आनियाछि—लाया हूँ।

थाक—ठहर (रहने दे); **रेखे......जल**—रख दो जल।

के चाहे—कौन चाहता है।

अपराध......कि—अपराध किया है क्या।

आबार—फिर; **के......तव**—किसने तुम्हारा अपराध माना है; **एसेछे घनाये**—घनीभूत हो आया है; **ग्रासिबारे चाय**—ग्रास करना चाहता है; **तोले**—उठाता है; **तोमराओ**—तुमलोग भी; **नतशिरे**—सिर झुकाए; **बहितेछ**—वहन कर रहे हो; **आछ**—हो; **वैकुण्ठ......दैत्यगण**—क्या दैत्यों ने फिर वैकुण्ठ छीन लिया है; **गियेछे**—गए हैं; **यत**—जितने;

रसातले ? शुधु, दानवे मानवे मिले
विश्वेर राजत्व दर्पे करितेछे भोग ?
देवता ना यदि थाके, ब्राह्मण रयेछे।
ब्राह्मणेर रोषयज्ञे दण्ड सिंहासन
हविकाष्ठ हबे।

जयसिंहेर निकट गिया सस्नेहे

वत्स, आज करियाछि
रुक्ष आचरण तोमा-'परे—चित्त बड़ो
क्षुब्ध मोर।

जयसिंह। की हयेछे प्रभु !

रघुपति। की हयेछे !
शुधाओ अपमानित त्रिपुरेश्वरीरे।
एइ मुखे केमने बलिब की हयेछे !

जयसिंह। के करेछे अपमान ?

रघुपति। गोविन्दमाणिक्य।

जयसिंह। गोविन्दमाणिक्य ! प्रभु, कारे अपमान ?

रघुपति। कारे ! तुमि, आमि, सर्वशास्त्र, सर्वदेश,
सर्वकाल, सर्वदेशकाल-अधिष्ठात्री
महाकाली, सकलेरे करे अपमान

शुधु—केवल; **दानवे......मिले**—दानव मानव मिल कर; **करितेछे**—कर रहे हैं; **देवता......रयेछे**—अगर देवता न रहें, ब्राह्मण (तो) हैं; **हबे**—होगा; **गिया**—जा कर; **करियाछि**—किया है; **तोमा-'परे**—तुम्हारे ऊपर।

की हयेछे—क्या हुआ है।

शुधाओ—पूछो; **त्रिपुरेश्वरीरे**—देवी त्रिपुरेश्वरी से; **एइ......हयेछे**—इस मुँह से कैसे कहूँगा, क्या हुआ है।

के......अपमान—किसने अपमान किया है।

कारे—किसका।

सकलेरे—सब का; **करे**—करता है;

क्षुद्र सिंहासने बसि। मा'र पूजा-बलि
निषेधिल स्पर्धाभरे।

जयसिंह। गोविन्दमाणिक्य!

रघुपति। हाँ गो, हाँ, तोमार राजा गोविन्दमाणिक्य!
तोमार सकल-श्रेष्ठ––तोमार प्राणेर
अधीश्वर! अकृतज्ञ! पालन करिनु
एत यत्ने स्नेहे तोरे शिशुकाल हते,
आमा-चेये प्रियतर आज तोर काछे
गोविन्दमाणिक्य?

जयसिंह। प्रभु, पितृकोले बसि
आकाशे बाड़ाय हात क्षुद्र मुग्ध शिशु
पूर्णचन्द्र-पाने––देव, तुमि पिता मोर,
पूर्णशशी महाराज गोविन्दमाणिक्य।
किन्तु ए की बकितेछि! की कथा शुनिनु!
मायेर पूजार बलि निषेध करेछे
राजा? ए आदेश के मानिबे?

रघुपति। ना मानिले
निर्वासन।

जयसिंह। मातृपूजाहीन राज्य हते
निर्वासन दण्ड नहे। ए प्राण थाकिते
असम्पूर्ण नाहि रबे जननीर पूजा।

बसि—बैठ कर; **मा'र**—माँ की; **निषेधिल**—निषेध किया।

तोमार—तुम्हारा; **पालन......हते**—शिशुकाल से इतने यत्न और स्नेह से तेरा पालन किया; **आमा-चेये**—मेरी अपेक्षा; **तोर काछे**—तेरे निकट।

कोले—गोद में; **बाड़ाय हात**—हाथ बढ़ाता है; **पाने**—ओर; **ए......बकितेछि**—यह क्या बक रहा हूँ; **की......शुनिनु**—कैसी बात सुनी; **मायेर**—माँ की; **करेछे**—किया है; **ए......मानिबे**—यह आदेश कौन मानेगा।

ना मानिले––न मानने पर।

हते–से; **नहे**–नहीं; **ए....थाकिते**–इन प्राणों के रहते; **नाहि रबे**–नहीं रहेगी।

चतुर्थ दृश्य

अन्तःपुर

गुणवती ओ परिचारिका

गुणवती। की बलिस? मन्दिरेर दुयार हइते
रानीर पूजार बलि फिराये दियाछे?
एक देहे कत मुण्ड आछे तार? के से
दुरदृष्ट?

परिचारिका। बलिते साहस नाहि मानि—

गुणवती। बलिते साहस नाहि? ए कथा बलिलि
की साहसे? आमा-चेये कारे तोर भय?

परिचारिका। क्षमा करो।

गुणवती। काल सन्धेवेला छिनु रानी;
काल सन्धेवेला वन्दीगण करे गेछे
स्तव, विप्रगण करे गेछे आशीर्वाद,
भृत्यगण करजोड़े आज्ञा लये गेछे—
एकरात्रे उलटिल सकल नियम?
देवी पाइल ना पूजा, रानीर महिमा

की बलिस—क्या कहती है; **दुयार हइते**—द्वार से; **फिराये दियाछे**—लौटा दिया है; **एक.....तार**—एक शरीर में कितने सिर हैं उसके; **के से**—कौन है वह; **दुरदृष्ट**—अभागा।

बलिते......मानि—बताने का साहस नहीं होता।

बलिते......नाहि—बोलने का साहस नहीं; **ए......साहसे**—किस साहस से (तूने) यह बात कही; **आमा.....भय**—मुझसे (अधिक) तुझे किसका भय है।

काल—कल; **सन्धेवेला**—शाम को; **छिनु**—थी; **करे गेछे**—कर गए हैं; **लये गेछे**—ले गए हैं; **एकरात्रे**—एक रात में; **उलटिल**—उलट गए; **पाइल**—पाई;

अवनत? त्रिपुरा कि स्वप्नराज्य छिल?
त्वरा करे डेके आन् ब्राह्मण-ठाकुरे।

[परिचारिकार प्रस्थान

[गोविन्दमाणिक्येर प्रवेश

गुणवती। महाराज, शुनितेछ? मार द्वार हते
आमार पूजार बलि फिराये दियेछे।

गोविन्द। जानि ताहा।

गुणवती। जान तुमि? निषेध कर नि
तबु? ज्ञातसारे महिषीर अपमान?

गोविन्द। तारे क्षमा करो प्रिये!

गुणवती। दयार शरीर
तव, किन्तु महाराज, ए तो दया नय—
ए शुधु कापुरुषता! दयाय दुर्बल
तुमि, निज हाते दण्ड दिते नाहि पारो
यदि, आमि दण्ड दिब। बलो मोरे के से
अपराधी।

गोविन्द। देवी, आमि। अपराध आर
किछु नहे, तोमारे दियेछि व्यथा एइ
अपराध।

छिल—था; **त्वरा......ठाकुरे**—ब्राह्मण-देवता को शीघ्र बुला ला।

शुनितेछ—सुन रहे हो; **मार......दियेछे**—माँ के द्वार से मेरी पूजा की बलि लौटा दी है।

जानि ताहा—वह जानता हूँ।

जान तुमि—जानते हो तुम; **निषेध......तबु**—तो भी निषेध नहीं किया; **ज्ञातसारे......अपमान**—(तुम्हारे) जानते रानी का अपमान।

तारे—उसे।

ए......कापुरुषता—यह तो दया नहीं है, यह केवल कापुरुषता है; **निज...... दिब**—अपने हाथों अगर दण्ड न दे सको (तो) मैं दण्ड दूँगी; **बलो......से**—मुझे बताओ वह कौन है।

गुणवती। की वलिछ महाराज!

गोविन्द। आज

हते, देवतार नामे जीवरक्तपात

आमार त्रिपुरराज्ये हयेछे निषेध।

गुणवती। काहार निषेध?

गोविन्द। जननीर।

गुणवती। के शुनेछे?

गोविन्द। आमि।

गुणवती। तुमि? महाराज, शुने हासि आसे।

राजद्वारे एसेछेन भुवन-ईश्वरी

जानाइते आवेदन!

गोविन्द। हेसो ना महिषी!

जननी आपनि एसे सन्तानेर प्राणे

वेदना जानायेछेन, आवेदन नहे।

गुणवती। कथा रेखे दाओ महाराज! मन्दिरेर

वाहिरे तोमार राज्य। येथा तव आज्ञा

नाहि चले, सेथा आज्ञा नाहि दियो।

आर......नहे—और कुछ नहीं; **तोमारे**—तुम्हें; **दियेछि**—दिया है; **एइ**—यही।

की वलिछ—क्या कहते हो।

काहार—किसका।

के शुनेछे—किसने सुना है।

शुने......आसे—सुन कर हँसी आती है; **राजद्वारे......आवेदन**—राजा के दरवाज़े पर भुवन-ईश्वरी प्रार्थना करने आईं थीं (प्रार्थिनी बन कर आईं थीं)।

हेसो ना—हँसो मत; **जननी......नहे**—माँ ने अपने आप आ कर सन्तान के प्राणों में व्यथा जताई है, प्रार्थना नहीं।

कथा......महाराज—रहने दो (अपनी) बात महाराज; **मन्दिरेर...... राज्य**—मन्दिर के बाहर तुम्हारा राज्य है; **येथा......दियो**—जहाँ तुम्हारी आज्ञा (शासन) न चले, वहाँ आज्ञा मत देना।

गोविन्द। मा'र
आज्ञा, मोर आज्ञा नहे।
गुणवती। केमने जानिले ?
गोविन्द। क्षीण दीपालोके गृहकोणे थेके याय
अन्धकार; सब पारे, आपनार छाया
किछुते घुचाते नारे दीप। मानवेर
बुद्धि दीपसम, यत आलो करे दान
तत रेखे देय संशयेर छाया। स्वर्ग
हते नामे यबे ज्ञान, निमेषे संशय
टुटे। आमार हृदये संशय किछुइ
नाइ।
गुणवती। शुनियाछि, आपनार पापपुण्य
आपनार काछे। तुमि थाको आपनार
असंशय निये—आमारे दुयार छाड़ो,
आमार पूजार बलि आमि निये याइ
आमार मायेर काछे।
गोविन्द। देवी, जननीर
आज्ञा पारि ना लङ्घिते।

मा'र......नहे—माँ की आज्ञा है, मेरी आज्ञा नहीं।

केमने जानिले—कैसे जाना।

क्षीण......अन्धकार—क्षीण दीप के प्रकाश में घर के कोने का अन्धकार रह (ही) जाता है; **सब.....दीप**—सब कर सकता है (लेकिन) दीप अपनी छाया दूर नहीं कर सकता; **यत......छाया**—जितना आलोक प्रदान करता है उतना ही सन्देह की छाया छोड़ जाता है; **स्वर्ग......ज्ञान**—स्वर्ग से जब ज्ञान उतरता (अवतीर्ण होता) है; **निमेषे......टुटे**—क्षण भर में संशय दूर हो जाता है; **किछुइ नाइ**—कुछ भी नहीं है।

शुनियाछि—सुना है; **आपनार......काछे**—अपना पाप पुण्य अपने पास रहता है; **तुमि......निये**—तुम अपना असंशय ले कर रहो; **आमारे.....काछे**—मेरा द्वार छोड़ो, अपनी माँ के निकट मैं पूजा की बलि ले जाऊँ।

जननीर......लङ्घिते—माँ की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता।

गुणवती। आमिओ पारि ना
मा'र काछे आछि प्रतिश्रुत। सेइमत
यथाशास्त्र यथाविधि पूजिब ताँहारे।
याओ, तुमि याओ!

गोविन्द। ये आदेश महारानी!

[प्रस्थान

[रघुपतिर प्रवेश

गुणवती। ठाकुर, आमार पूजा फिराये दियेछे
मातृद्वार हते!

रघुपति। महारानी, मा'र पूजा
फिरे गेछे, नहे से तोमार। उञ्छवृत्त
दरिद्रेर भिक्षालब्ध पूजा, राजेन्द्राणी,
तोमार पूजार चेये न्यून नहे। किन्तु,
एइ बड़ो सर्वनाश, मा'र पूजा फिरे
गेछे। एइ बड़ो सर्वनाश, राजदर्प
क्रमे स्फीत हये, करितेछे अतिक्रम
पृथिवीर राजत्वेर सीमा—बसियाछे
देवतार द्वार रोध करि, जननीर
भक्तदेर प्रति दुइ आँखि राङाइया।

आमिओ......ना—मैं भी नहीं कर सकती; **मा'र......प्रतिश्रुत**—माँ के निकट प्रतिज्ञाबद्ध हूँ; **सेइमत**—उसी प्रकार; **पूजिब ताँहारे**—उन्हें पूजूँगी; **याओ**—जाओ।

ये—जो।

ठाकुर......हते—(ब्राह्मण) देवता, माँ के द्वार से मेरी पूजा लौटा दी है।

फिरे गेछे—लौट गई है; **नहे......तोमार**—वह तुम्हारी नहीं है; **उञ्छवृत्त**—(खेत काट लेने के बाद खेत में इधर-उधर पड़े हुए दाने से जीविका-निर्वाह करने वाला); **चेये**—अपेक्षा; **नहे**—नहीं है; **एइ**—यही; **क्रमे**—क्रमशः, **हये**—हो कर; **करितेछे**—कर रहा है; **बसियाछे**—बैठा है; **रोध करि**—अवरुद्ध कर; **जननीर......राङाइया**—माँ के भक्तों के प्रति दोनों आँखें लाल कर।

गुणवती। की हबे ठाकुर!

रघुपति। जानेन ता महामाया।

एइ शुधु जानि—ये सिंहासनेर छाया
पड़ेछे मायेर द्वारे, फुत्कारे फाटिबे
सेइ दम्भमञ्चखानि जलबिम्बसम।
युगे युगे राजपितापितामह मिले
ऊर्ध्व-पाने तुलियाछे ये राजमहिमा
अभ्रभेदी क'रे, मुहूर्ते हइया याबे
धूलिसात्, वज्रदीर्ण, दग्ध, झंझाहत।

गुणवती। रक्षा करो, रक्षा करो प्रभु!

रघुपति। हा हा! आमि
रक्षा करिब तोमारे! ये प्रबल राजा
स्वर्गे मर्ते प्रचारिछे आपन शासन
तुमि ताँरि रानी! देव-ब्राह्मणेरे यिनि—
धिक, धिक् शतबार! धिक् लक्षबार!
कलिर ब्राह्मणे धिक्! ब्रह्मशाप कोथा!
व्यर्थ ब्रह्मतेज शुधु वक्षे आपनार
आहत वृश्चिक-सम आपनि दंशिछे!
मिथ्या ब्रह्म-आड़म्बर!

की.....ठाकुर—क्या होगा (ब्राह्मण) देवता।

जानेन......महामाया—सो तो महामाया (महाकाली) जानें; **ये......द्वारे**—जिस सिंहासन की छाया माँ के द्वार पर पड़ी है; **फाटिबे**—फटेगा; **सेइ**—वही; **दम्भमञ्चखानि**—दम्भ का सिंहासन; **ऊर्ध्व-पाने**—ऊपर की ओर; **तुलियाछे**—ऊँचा उठाया है; **हइया याबे**—हो जाएगी।

आमि......तोमारे—मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा; **ताँरि**—उन्हीं की; **देव-ब्राह्मणेरे**—देवब्राह्मणों को; **यिनि**—जिन्होंने; **लक्षबार**—लाखों बार; **कलिर ब्राह्मणे**—कलियुग के ब्राह्मण को; **कोथा**—कहाँ; **शुधु**—केवल; **आपनार**—अपने; **आपनि**—स्वयं; **दंशिछे**—दंशन कर रहा है; **आड़म्बर**—गर्व।

पैता छिँड़िते उद्यत

गुणवती। की कर! की कर
देव! राखो, राखो, दया करो निर्दोषीरे!

रघुपति। फिराये दे ब्राह्मणेर अधिकार।

गुणवती। दिव।
याओ प्रभु, पूजा करो मन्दिरेते गिये,
हबे नाको पूजार व्याघात।

रघुपति। ये आदेश
राज-अधीश्वरी! देवता कृतार्थ हल
तोमारि आदेश-बले, फिरे पेल पुन
ब्राह्मण आपन तेज! धन्य तोमराइ,
यतदिन नाहि जागे कल्कि-अवतार!

[प्रस्थान

[गोविन्दमाणिक्येर पुनःप्रवेश

गोविन्द। अप्रसन्न प्रेयसीर मुख, विश्वमाझे
सब आलो सब सुख लुप्त करे राखे।
उन्मना-उत्सुक-चित्ते फिरे फिरे आसि।

गुणवती। याओ, याओ, एस ना गृहे। अभिशाप
आनियो ना हेथा।

पैता......उद्यत—यज्ञोपवीत (जनेऊ) तोड़ने को उद्यत।

की कर—क्या करते हो।

फिराये दे—लौटा दे।

दिब—दूँगी; **मन्दिरेते गिये**—मन्दिर में जा कर; **हबे.....व्याघात**—पूजा में विघ्न नहीं होगा।

ये—जो; **हल**—हुए; **तोमारि......बले**—तुम्हारे ही आदेश के बल से; **फिरे.....पुन**—फिर से पाया; **तोमराइ**—तुम्हीं लोग; **यतदिन**—जितने दिन।

आलो—आलोक; **चित्ते**—चित्त से; **फिरे......आसि**—लौट-लौट कर आता हूँ।

याओ—जाओ; **एस ना**—मत आना; **आनियो......हेथा**—यहाँ न लाना।

गोविन्द। प्रियतमे, प्रेमे करे
अभिशाप नाश, दया करे अकल्याण
दूर। सतीर हृदय हते प्रेम गेले
पतिगृहे लागे अभिशाप।—याइ तबे
देवी!

गुणवती। याओ! फिरे आर देखायो ना मुख।

गोविन्द। स्मरण करिबे यबे, आबार आसिब।

[प्रस्थानोन्मुख

पाये पड़िया

गुणवती। क्षमा करो, क्षमा करो नाथ! एतइ कि
हयेछ निष्ठुर, रमणीर अभिमान
ठेले चले याबे? जान ना कि प्रियतम,
व्यर्थ प्रेम देखा देय रोषेर धरिया
छद्मवेश? भालो, आपनार अभिमाने
आपनि करिनु अपमान—क्षमा करो!

गोविन्द। प्रियतमे, तोमा-'परे टुटिले विश्वास
सेइ दण्डे टुटित जीवनबन्ध। जानि
प्रिये, मेघ क्षणिकेर, चिरदिवसेर
सूर्य।

प्रेमे......नाश—प्रेम अभिशाप का नाश करता है; **गेले**—जाने पर; **याइ तबे**—तो फिर चलूँ। **फिरे......मुख**—लौट कर मुख न दिखाना।

स्मरण......आसिब—जब याद करोगी, फिर आऊँगा।

पाये पड़िया—पैरों पड़ कर।

एतइ.....निष्ठुर—क्या इतने निष्ठुर हो गए हो; **रमणीर.....याबे**—रमणी के अभिमान (मान) को ठेल कर चले जाओगे; **जान......प्रियतम**—क्या तुम नहीं जानते प्रियतम; **व्यर्थ......वेश**—असफल प्रेम रोष (क्रोध) का छद्मवेश धारण कर दिखाई देता है; **भालो**—अच्छा; **करिनु**—किया।

तोमा......बन्ध—यदि तुम पर से विश्वास हट जाता तो उसी क्षण जीवन के बन्धन टूट जाते; **जानि**—जानता हूँ; **मेघ......सूर्य**—मेघ क्षणिक होता है, सूर्य चिरन्तन।

गुणवती। मेघ क्षणिकेर। ए मेघ काटिया
याबे, विधिर उद्यत वज्र फिरे याबे,
चिरदिवसेर सूर्य उठिबे आबार
चिरदिवसेर प्रथा जागाये जगते,
अभय पाइबे सर्वलोक—भुले याबे
दु दण्डेर दुःस्वपन। सेइ आज्ञा करो।
ब्राह्मण फिरिया पाक निज अधिकार,
देवी निज पूजा, राजदण्ड फिरे याक
निज अप्रमत्त मर्त-अधिकार-माझे।

गोविन्द। धर्महानि ब्राह्मणेर नहे अधिकार।
असहाय जीवरक्त नहे जननीर
पूजा। देवतार आज्ञा पालन करिते
राजा विप्र सकलेरइ आछे अधिकार।

गुणवती। भिक्षा, भिक्षा चाइ! एकान्त मिनति करि
चरणे तोमार प्रभु! चिरागत प्रथा
चिरप्रवाहित मुक्त समीरण-सम,
नहे ता राजार धन—ताओ जोड़करे
समस्त प्रजार नामे भिक्षा मागितेछे
महिषी तोमार। प्रेमेर दोहाइ मानो
प्रियतम! विधाताओ करिबेन क्षमा
प्रेम-आकर्षण-वशे कर्तव्येर त्रुटि।

ए......याबे—ये मेघ कट जाएंगे; **विधिर**—विधि (ब्रह्मा) का; **फिरे याबे**—लौट जाएगा; **उठिबे**—उदय होगा; **आबार**—फिर; **जागाये**—जगा कर; **पाइबे**—पाएंगे; **भुले याबे**—भूल जाएगा; **दु**—दो; **सेइ**—वही; **फिरिया**—वापस; **पाक**—पाए; **याक**—जाए।

नहे—नहीं है; **करिते**—करने का; **सकलेरइ**—सभी का; **आछे**—है।

चाइ—चाहती हूँ; **मिनति**—विनती; **करि**—करती हूँ; **चरणे तोमार**—तुम्हारे चरणों में; **ता**—वह; **ताओ**—उसे भी; **जोड़करे**—हाथ जोड़ कर; **मागितेछे**—माँग रही है; **विधाताओ**—विधाता भी; **करिबेन**—करेंगे।

गोविन्द । एइ कि उचित महारानी ? नीच स्वार्थ,
निष्ठुर क्षमतादर्प, अन्ध अज्ञानता,
चिररक्तपाने स्फीत हिंस्र वृद्ध प्रथा—
सहस्र शत्रुर साथे एका युद्ध करि;
श्रान्तदेहे आसि गृहे नारीचित्त हते
अमृत करिते पान; सेथाओ कि नाइ
दयासुधा ? गृहमाझे पुण्यप्रेम बहे,
तारओ साथे मिशियाछे रक्तधारा ? एत
रक्तस्रोत कोन् दैत्य दियेछे खुलिया—
भक्तिते प्रेमेते रक्त माखामाखि हय,
क्रूर हिंसा दयामयी रमणीर प्राणे
दिये याय शोणितेर छाप ! ए शोणिते
तबु करिब ना रोध ?

मुख ढाकिया

गुणवती । याओ, याओ तुमि !

गोविन्द । हाय महारानी, कर्तव्य कठिन हय
तोमरा फिराले मुख ।

[प्रस्थान

काँदिया उठिया

गुणवती । ओरे अभागिनी,
एतदिन ए की भ्रान्ति पुषेछिलि मने !

एइ कि—यही क्या; **आसि**—आता हूँ; **सेथाओ......नाइ**—वहाँ भी क्या नहीं है; **तारओ साथे**—उसके भी साथ; **मिशियाछे**—मिली हुई है; **एत**—इतना; **कोन्**—कौन; **दियेछे खुलिया**—खोल दिया है; **माखामाखि**—परस्पर लेपन; **दिये याय**—दे जाती है; **ए......रोध**—क्या फिर भी इस शोणित को न रोकूं ? **मुख ढाकिया**—मुख ढँक कर।

कर्तव्य......मुख—तुमलोगों के मुँह फेर लेने से (हमलोगों का) कर्तव्य कठिन हो जाता है। **काँदिया उठिया**—क्रन्दन करती हुई।

एतदिन......मने—इतने दिनों तक (तूने) मन में यह कैसी भ्रान्ति पाल

छिल ना संशयमात्र, व्यर्थ हबे आज
एत अनुरोध, एत अनुनय, एत
अभिमान। धिक्, की सोहागे पुत्रहीना
पतिरे जानाय अभिमान! छाइ होक
अभिमान तोर! छाइ ए कपाल! छाइ
महिषीगरब! आर नहे प्रेमखेला,
सोहागक्रन्दन। बुझियाछि आपनार
स्थान—हय धूलितले नतशिर, नय
ऊर्ध्वफणा भुजङ्गिनी आपनार तेजे।

पञ्चम दृश्य

मन्दिर

[एकदल लोकेर प्रवेश

नेपाल। कोथाय हे, तोमादेर तिन-शो पाँठा, एक-शो-एक मोष? एकटा टिकटिकिर छेँड़ा नेजटुकु पर्यन्त देखबार जो नेइ। बाजनाबाद्यि गेल कोथाय, सब ये हाँ-हाँ करछे! खरचपत्र करे पूजो देखते एलुम, आच्छा शास्ति हयेछे!

रखी थी; **छिल ना**—नहीं था; **हबे**—होगा; **एत**—इतना; **पतिरे.....अभिमान**—पति से मान करे; **छाइ**—राख; **होक**—हो; **गरब**—गर्व; **आर नहे**—और नहीं; **बुझियाछि**—समझ गई हूँ; **आपनार**—अपना; **हय**—या तो; **नय**—नहीं तो।

लोकेर—लोगों का।

कोथाय......मोष—कहाँ हैं रे, तुम्हारे तीन सौ बकरे और एक सौ एक भैंसे; **मोष**—(महिष) भैंसा; **एकटा......नेइ**—किसी छिपकिली की कटी पूँछ तक देखने को नहीं मिलती; **बाजना......कोथाय**—बाजे-गाजे कहाँ; **सब...... करछे**—सर्वत्र झाँ-झाँ कर रहा है (सूना-सूना है); **खरच......एलुम**—खर्चा-पानी करके पूजा देखने आया; **आच्छा......हयेछे**—अच्छी सज़ा मिली।

गणेश। देख्, मन्दिरेर सामने दाँड़िये अमन करे बलिस ने। मा पाँठा पाय नि, एबार जेगे उठे तोदेर एक-एकटाके धरे धरे मुखे पुरबे।

हारु। केन! गेल बछरे बाछारा सब छिले कोथाय? आर, सेइ ओ-बछर, यखन व्रत साङ्ग करे रानीमा पूजो दियेछिल, तखन कि तोदेर पाये काँटा फुटेछिल? तखन एकबार देखे येते पारो नि? रक्ते ये गोमती राङा हये गियेछिल। आर, अलुक्षुने बेटारा एसेछिस आर मायेर खोराक पर्यन्त बन्ध हये गेल! तोदेर एक-एकटाके धरे मा'र काछे निवेदन करे दिले मनेर खेद मेटे।

कानु। आर भाइ, मिछे राग करिस। आमादेर कि आर बलबार मुख आछे! ता हले कि आर दाँड़िये ओर कथा शुनि!

हारु। ता या बलिस भाइ, अल्पेतेइ आमार राग हय से कथा सत्यि। सेदिन ओ व्यक्ति शाला पर्यन्त उठेछिल, तार बेशि यदि एकटा

देख्......ने—देख, मंदिर के सामने खड़ा हो कर ऐसा मत बोल; **मा......पुरबे**—माँ (काली) को पाठा (बकरा) नहीं मिल पाया, इस बार जगेंगी तो तुममें से एक-एक को पकड़-पकड़ कर मुख में भर लेगी।

केन—क्यों; **गेल......कोथाय**—पिछले साल बच्चू तुम सब कहाँ थे; **आर......दियेछिल**—और उस साल जब व्रत पूरा कर रानी माता ने पूजा चढ़ाई थी; **तखन......फुटेछिल**—उस समय क्या तुम सबों के पैरों में काँटे चुभ गए थे; **अलुक्षुने**—कुलक्षण; **बेटारा**—बेटे; **एसेछिस**—आए; **आर......गेल**—और माँ का भोजन तक बन्द हो गया; **तोदेर......मेटे**—तुममें से एक-एक को पकड़ कर माँ के निकट निवेदन कर देने पर (बलि दे कर) मन का खेद मिटेगा।

भाइ—भाई; **मिछे......करिस**—व्यर्थ नाराज हो रहे हो; **आमादेर...... आछे**—हमारा क्या अब और कुछ कहने का मुँह है; **ता.....शुनि**—ऐसा होता तो क्या हम इस तरह खड़े-खड़े उसकी बात सुनते।

ता......भाइ—अब (तू) जो कह भाई; **अल्पेतेइ......सत्यि**—जरा ही बात पर मुझे क्रोध आ जाता है यह बात सही है; **सेदिन**—उस दिन; **ओ**—वह; **शाला**—साला; **शाला......उठेछिल**—साला (कहने) तक पहुँचा था; **तार......बलत**—उससे अधिक यदि एक बात बोलता; **आमार......दित**—मेरे शरीर पर हाथ लगाता (प्रहार करता);

कथा बलत, किम्वा आमार गाये हात दित, माइरि बलछि, ता हले आमि—

नेपाल। ता, चल्-ना देखि, कार हाड़े कत शक्ति आछे।

हारु। ता, आय-ना। जानिस? एखानकार दफादार आमार मामातो भाइ हय!

नेपाल। ता, निये आय तोर मामाके सुद्ध निये आय, तोर दफादारेर दफा निकेश करे दिइ।

हारु। तोमरा सकलेइ शुनले!

गणेश ओ कानु। आर दूर कर् भाइ, घरे चल्। आज आर किछुते गा लागछे ना। एखन तोदेर तामाशा तुले राख्।

हारु। ए कि तामाशा हल? आमार मामाके निये तामाशा! आमादेर दफादारेर आपनार बाबाके निये—

गणेश ओ कानु। आर रेखे दे! तोर आपनार बाबाके निये तुइ आपनि मर्।

[सकलेर प्रस्थान

[रघुपति नयनराय ओ जयसिंहेर प्रवेश

रघुपति। मा'र 'परे भक्ति नाइ तव?

माइरि......आमि—कसम खा कर कहता हूँ वैसा होने पर मैं—।

ता......आछे—तो, चल ना, देखें, किसकी हड्डियों में कितना ज़ोर है।

ता......ना—तो, आ ना; **जानिस**—जानता है; **एखानकार......हय**—यहाँ का दफादार मेरा ममेरा भाई है।

ता......आय—तो, ले आ, अपने मामा तक को ले आ; **तोर......दिइ**—तेरे दफादार का दफा निकाल (सर्वनाश कर) दें।

तोमरा......शुनले—सुन लिया तुम सबने।

आज......ना—आज और कुछ अच्छा नहीं लगता; **एखन......राख्**—अब अपना तमाशा छोड़।

ए......हल—यह क्या तमाशा था; **आमार.....तामाशा**—मेरे मामा को ले कर तमाशा; **आमादेर......निये**—हमलोगों के दफादार के सगे बाप को ले कर।

आर......दे—बस रहने दे; **तोर......मर्**—अपने बाप को ले कर तू खुद ही मर।

मा'र......तव—(क्या) माँ पर तुम्हारी श्रद्धा नहीं।

नयनराय। हेन कथा
कार साध्य बले? भक्तवंशे जन्म मोर।
रघुपति। साधु, साधु! तबे तुमि मायेर सेवक,
आमादेरइ लोक।
नयनराय। प्रभु, मातृभक्त याँरा
आमि ताँहादेरइ दास।
रघुपति। साधु! भक्ति तव
हउक अक्षय। भक्ति तव बाहुमाझे
करुक सञ्चार अति दुर्जय शकति।
भक्ति तव तरवारि करुक शाणित,
वज्रसम दिक ताहे तेज। भक्ति तव
हृदयेते करुक बसति, पदमान
सकलेर उच्चे।
नयनराय। ब्राह्मणेर आशीर्वाद
व्यर्थ हइबे ना।
रघुपति। शुन तबे सेनापति,
तोमार सकल बल करो एकत्रित
मा'र काजे। नाश करो मातृविद्रोहीरे।
नयनराय। ये आदेश प्रभु! के आछे मायेर शत्रु?

हेन......बले—ऐसी बात, किसकी शक्ति है जो बोले।

साधु, साधु—धन्य, धन्य; **तबे......सेवक**—तब तुम माँ (काली) के (सच्चे) सेवक हो; **आमादेरइ लोक**—हमलोगों के (अपने ही) आदमी हो।

मातृभक्त......दास—जो माँ के भक्त हैं मैं उन्हीं का दास हूँ।

हउक—हो; **करुक**—करे; **शकति**—शक्ति; **तरवारि**—तलवार; **शाणित**—तेज, तीक्ष्ण।

दिक—दे; **ताहे**—उसे; **हृदयेते**—हृदय में; **करुक**—करे; **बसति**—बस्ती, आश्रय।

शुन तबे—तो फिर सुनो; **मातृविद्रोहीरे**—मातृविद्रोही को।

रघुपति। गोविन्दमाणिक्य।

नयनराय। आमादेर महाराज!

रघुपति। लये तव सैन्यदल, आक्रमण करो
तारे।

नयनराय। धिक् पाप-परामर्श! प्रभु, ए कि
परीक्षा आमारे?

रघुपति। परीक्षाइ बटे। कार
भृत्य तुमि, एबार परीक्षा हवे तार।
छाड़ो चिन्ता, छाड़ो द्विधा, काल नाहि आर—
त्रिपुरेश्वरीर आज्ञा हतेछे ध्वनित
प्रलयेर शृङ्गसम—छिन्न हये गेछे
आजि सकल बन्धन।

नयनराय। नाइ चिन्ता, नाइ
कोनो द्विधा। ये पदे रेखेछे देवी, आमि
ताहे रयेछि अटल।

रघुपति। साधु!

नयनराय। एत आमि
नराधम जननीर सेवकेर माझे
मोर 'परे हेन आज्ञा! आमि हब
विश्वासघातक! आपनि दाँड़ाये आछे
विश्वमाता हृदयेर विश्वासेर 'परे,

लये—ले कर; **तारे**—उस पर।

ए......आमारे—यह क्या मेरी परीक्षा है।

परीक्षाइ बटे—सचमुच परीक्षा ही है; **कार**—किसके; **एबार......तार**—इस बार (अब) इसकी परीक्षा होगी; **काल......आर**—अब और समय नहीं; **हतेछे**—हो रही है; **छिन्न......बन्धन**—आज सभी बन्धन छिन्न-भिन्न हो गए हैं।

कोनो—कोई भी; **ये......अटल**—जिस पद पर देवी ने रखा है, मैं उस पर अटल हूँ।

एत—इतना; **मोर 'परे**—मेरे ऊपर; **हेन**—ऐसी;

सेइ ताँर अटल आसन—आपनि ता
भाङिते बलिबे देवी आपनार मुखे ?
ताहा हले आज याबे राजा, काल देवी—
मनुष्यत्व भेङे पड़े याबे, जीर्णभित्ति
अट्टालिका-सम ।

जयसिंह । धन्य सेनापति, धन्य !

रघुपति । धन्य बटे तुमि । किन्तु ए की भ्रान्ति तव !
ये राजा विश्वासघाती जननीर काछे,
तार साथे विश्वासेर बन्धन कोथाय ?

नयनराय । की हइबे मिछे तर्के ? बुद्धिर विपाके
चाहि ना पड़िते । आमि जानि एक पथ
आछे—सेइ पथ विश्वासेर पथ । सेइ
सिधे पथ बेये चिरदिन चले याबे
अबोध अधम भृत्य ए नयनराय ।

[प्रस्थान

जयसिंह । चिन्ता केन देव ? एमनि विश्वासबले
मोराओ करिब काज । कारे भय प्रभु !
सैन्यबले कोन् काज ! अस्त्र कोन् छार !

आपनि.....आसन—हृदय के विश्वास पर स्वयं विश्वमाता खड़ी हैं, वही उनका अटल आसन है; **आपनि.....मुखे**—देवी स्वयं अपने मुख से उसे तोड़ने को कहेंगी; **ताहा......देवी**—तब तो आज राजा जाएगा, कल देवी; **मनुष्यत्व......याबे**—मनुष्यत्व चूर-चूर हो जाएगा ।

धन्य......तुमि—तुम सचमुच धन्य हो; **ए की**—यह कैसी; **ये**—जो; **तार साथे**—उसके साथ ।

की......तर्के—व्यर्थ तर्क से क्या होगा; **बुद्धिर......पड़िते**—बुद्धि के चक्कर में नहीं पड़ना चाहता; **जानि**—जानता हूँ; **आछे**—है; **सेइ**—वह; **सेइ...... याबे**—उसी सीधी राह पर बराबर चलता चला जाएगा ।

केन—क्यों; **एमनि**—इसी प्रकार; **मोराओ**—हमलोग भी; **करिब**—करेंगे; **कारे भय**—किसका भय; **सैन्यबले......काज**—सैन्यबल का क्या काम;

यार ’परे रयेछे ये भार, बल तार
आछे से काजेर। करिबइ मा’र पूजा
यदि सत्य मायेर सेवक हइ मोरा।
चलो प्रभु, बाजाइ मायेर डङ्का, डेके
आनि पुरवासीगणे, मन्दिरेर द्वार
खुले दिइ! —ओरे, आय तोरा, आय, आय,
अभयार पूजा हबे—निर्भये आय रे
तोरा मायेर सन्तान! आय पुरवासी!

[जयसिंह ओ रघुपतिर प्रस्थान

[पुरवासीगणेर प्रवेश

अक्रूर। ओरे, आय रे आय!

सकले। जय मा!

हारु। आय रे, मायेर सामने बाहु तुले नृत्य करि।

गान

उलङ्गिनी नाचे रणरङ्गे।
आमरा नृत्य करि सङ्गे।
दश दिक आँधार क’रे मातिल दिक्‌वसना,
ज्वले वह्निशिखा राङा-रसना,
देखे मरिबारे धाइछे पतङ्गे।

छार—राख; **यार......काजेर**—जिस पर जिस काम का भार है उसमें उसे पूरा करने का बल है; **करिबइ......पूजा**—माँ की पूजा करके रहूँगा; **मायेर सेवक**—माँ का सेवक; **हइ**—हों; **मोरा**—हमलोग; **बाजाइ**—बजाएं; **डेके आनि**—बुला लावें; **पुरवासिगणे**—पुरवासियों को; **खुले दिइ**—खोल दें; **हबे**—होगी।

मायेर......करि—माँ के संमुख हाथ उठा कर नृत्य करें।

उलङ्गिनी—विवस्त्रा; **करि**—करें; **दश......वसना**—दसों दिशाओं को अंधकार कर दिक्‌वसना (विवस्त्रा) मत्त हो गई; **ज्वले**—जल रही है; **राङा-रसना**—लाल जिह्वा; **देखे**—देख कर; **मरिबारे**—मरने के लिये; **धाइछे पतङ्गे**—पतङ्ग दौड़ रहे हैं;

काली केश उड़िल आकाशे,
रवि सोम लुकालो तरासे।
राङा रक्तधारा झरे कालो अङ्गे,
त्रिभुवन काँपे भुरुभङ्गे।

सकले। जय मा!

गणेश। आर भय नेइ।

कानु। ओरे, सेइ दक्षिणद'र मानुषगुलो एखन गेल कोथाय?

गणेश। मायेर ऐश्वर्य बेटादेर सइल ना। तारा भेगेछे।

हारु। केवल मायेर ऐश्वर्य नय, आमि तादेर एमनि शासिये दियेछि, तारा आर एमुखो हबे ना। बुझले अक्रूरदा, आमार मामातो भाइ दफादारेर नाम करबा-मात्र तादेर मुख चुन हये गेल।

अक्रूर। आमादेर निताइ सेदिन तादेर खुब कड़ा कड़ा दुटो कथा शुनिये दियेछिल। ओइ यार सेइ छुँचोपारा मुख सेइ बेटा तेड़े उत्तर दिते एसेछिल; आमादेर निताइ बलले, "ओरे, तोरा दक्षिणदेशे थाकिस, तोरा उत्तरेर की जानिस? उत्तर दिते एसेछिस, उत्तरेर जानिस की?" शुने आमरा हेसे के कार गाये पड़ि।

उड़िल—उड़े; **लुकालो**—छिप गए; **तरासे**—त्रास से, भय से; **राङा**—लाल; **भुरुभङ्गे**—भ्रूभंगी से।

आर......नेइ—अब कोई डर नहीं।

ओरे......कोथाय—दक्षिण वाले लोग सब गए कहाँ।

मायेर......भेगेछे—बेटों को माँ का ऐश्वर्य सह्य नहीं हुआ, वे सब भाग गए।

नय—नहीं; **आमि......दियेछि**—मैंने उन सबों को ऐसा दण्ड देने का भय दिखाया है; **तारा......ना**—वे अब इधर मुँह नहीं करेंगे; **बुझले**—समझे; **करबा-मात्र**—करते ही; **तादेर......गेल**—उन सबों का चेहरा पीला पड़ गया।

आमादेर......दियेछिल—अपने निताई ने उस दिन उन सबों को दो-चार कड़ी-कड़ी बातें सुना दी थीं; **ओइ......एसेछिल**—वही जिसका मुँह छछुन्दर जैसा है वही बेटा भड़क कर उत्तर देने आया था; **बलले**—बोला; **तोरा......जानिस**—तुम सब दक्षिण देश में रहते हो, तुम लोग उत्तर की बात क्या जानो; **उत्तर......एसेछिस**—उत्तर देने आए हो; **शुने......पड़ि**—सुन कर हमलोग हँसते हँसते लोट-पोट हो गए।

गणेश। इदिके ऐ भालोमानुषटि, किन्तु निताइयेर सङ्गे कथाय आँटबार जो नेइ।

हारु। निताइ आमार पिसे हय।

कानु। शोनो एकबार कथा शोनो। निताइ आबार तोर पिसे हल कबे?

हारु। तोमरा आमार सकल कथाइ धरते आरम्भ करेछ। आच्छा, पिसे नय तो पिसे नय। ताते तोमार सुखटा की हल? आमार हल ना ब'ले कि तोमारइ पिसे हल?

[रघुपति ओ जयसिंहेर प्रवेश

रघुपति। शुनलुम सैन्य आसछे। जयसिंह, अस्त्र निये तुमि एइखाने दाँड़ाओ। तोरा आय, तोरा एइखाने दाँड़ा! मन्दिरेर द्वार आगलाते हबे। आमि तोदेर अस्त्र एने दिच्छि।

गणेश। अस्त्र केन ठाकुर?

रघुपति। मायेर पूजो बन्ध करबार जन्ये राजार सैन्य आसछे।

हारु। सैन्य आसछे! प्रभु, तबे आमरा प्रणाम हइ।

इदिके—इस ओर; **ऐ**—वह; **किन्तु......नेइ**—किन्तु निताई से बातचीत में डटे रहना किसी के वस की बात नहीं।

निताइ......हय—निताई मेरा फूफा लगता है।

शोनो......शोनो—सुनो, जरा इसकी बात सुनो; **निताइ......कबे**—निताई तेरा फूफा कब से हुआ?

तोमरा......करेछे—तुमलोग मेरी हर बात पकड़ने लग गए हो; **आच्छा...... नय**—अच्छा, फूफा नहीं तो न सही; **ताते......हल**—उससे तुम्हें क्या आनन्द हुआ; **आमार......हल**—मेरा नहीं हुआ इसीलिये क्या तुम्हारा फूफा हुआ।

शुनलुम......आसछे—सुना, सेना आ रही है; **निये**—ले कर; **एइखाने**— यहाँ; **दाँड़ाओ**—खड़े हो जाओ; **तोरा......दाँड़ा**—तुम लोग आओ, यहाँ खड़े हो जाओ; **आगलाते हबे**—रोकना होगा, रक्षा करनी होगी; **आमि......दिच्छि**— मैं तुमलोगों को अस्त्र ला देता हूँ।

केन—क्यों।

मायेर......आसछे—माँ की पूजा बन्द करने के लिये राजा की फौज आ रही है।

तबे......हइ—तो फिर हमारा नमस्कार है (अर्थात् हमलोग चलते हैं)।

कानु। आमरा क'जना, सैन्य एले की करते पारब ?

हारु। करते सबइ पारि—किन्तु सैन्य एले एखेने जायगा हबे कोथाय ? लड़ाइ तो परेर कथा, एखाने दाँड़ाब कोन्‌खाने ?

अक्रूर। तोर कथा रेखे दे। देखछिस ने प्रभु रागे काँपछेन ? ता ठाकुर, अनुमति करेन तो आमादेर दलबल समस्त डेके निये आसि।

हारु। सेइ भालो। अमनि आमार मामातो भाइके डेके आनि। किन्तु, आर एकटुओ विलम्ब करा उचित नय।

[सकलेर प्रस्थानोद्यम

सरोषे

रघुपति। दाँड़ा तोरा !

करजोड़े

जयसिंह। येते दाओ प्रभु—प्राणभये भीत एरा
बुद्धिहीन, आगे हते रयेछे मरिया।
आमि आछि मायेर सैनिक। एक देहे
सहस्र सैन्येर बल। अस्त्र थाक् पड़े।
भीरुदेर येते दाओ।

आमरा......पारब—हमलोग हैं ही कितने, सेना के आने पर हमलोग क्या कर सकेंगे।

करते.....कोन्‌खाने—कर तो सब कुछ सकते हैं लेकिन सेना के आने पर यहाँ जगह कहाँ होगी ? लड़ाई तो बाद की बात है, यहाँ खड़े कहाँ होंगे ?

तोर......दे—रहने दे अपनी बात; **देखछिस......काँपछेन**—देख नहीं रहा है प्रभु क्रोध से काँप रहे हैं; **ता......आसि**—देवता, आदेश दें तो अपने दल-बल को बुला लाऊँ।

सेइ भालो—यही अच्छा (होगा); **अमनि......आनि**—वैसे ही अपने ममेरे भाई को बुला लाऊँ; **किन्तु......नय**—लेकिन अब थोड़ा भी विलम्ब करना उचित नहीं।

दाँड़ा तोरा—तुम लोग ठहरो।

येते दाओ—जाने दो; **एरा**—ये सब; **आगे......मरिया**—पहले से ही मरे हुए हैं; **अस्त्र......पड़े**—अस्त्र पड़ा रहे; **भीरुदेर**—कायरों को।

स्वगत

रघुपति। से-काल गियेछे।
अस्त्र चाइ, अस्त्र चाइ—शुधु भक्ति नय।

प्रकाश्ये

जयसिंह, तबे बलि आनो, करि पूजा।

बाहिरे वाद्योद्यम

जयसिंह। सैन्य नहे प्रभु, आसिछे रानीर पूजा।

[रानीर अनुचर ओ पुरवासीगणेर प्रवेश

सकले। ओरे, भय नेइ—सैन्य कोथाय? मा'र पूजा आसछे।

हारु। आमरा आछि खबर पेयेछे, सैन्येरा शीघ्र ए दिके आसछे ना।

कानु। ठाकुर, रानीमा पूजो पाठियेछेन।

रघुपति। जयसिंह, शीघ्र पूजार आयोजन करो।

[जयसिंहेर प्रस्थान

[पुरवासीगणेर नृत्यगीत। गोविन्दमाणिक्येर प्रवेश

गोविन्द। चले याओ हेथा हते—निये याओ बलि।
रघुपति, शोन नाइ आदेश आमार?

रघुपति। शुनि नाइ।

गोविन्द। तबे तुमि ए राज्येर नह।

से......गियेछे—वह समय चला गया है; **चाइ**—चाहिए; **शुधु**—केवल; **नय**—नहीं; **आनो**—लाओ।

आमरा......ना—हमलोग (यहाँ) हैं (इसकी उन्हें) खबर मिल चुकी है, सैनिकगण शीघ्र इस ओर नहीं आ रहे हैं।

पाठियेछेन—भेजी है।

पुरवासीगणेर नृत्यगीत—नगरवासियों का नृत्यगीत।

चले......हते—यहाँ से चले जाओ; **निये याओ**—ले जाओ; **शोन नाइ**—सुना नहीं; **आमार**—मेरा।

शुनि नाइ—नहीं सुना।

तबे......नह—तब तुम इस राज्य के नहीं हो।

रघुपति । नहि आमि । आमि आछि येथा, सेथा एले
राजदण्ड खसे याय राजहस्त हते,
मुकुट धुलाय पड़े लुटे । के आछिस,
आन् मार पूजा ।

वाद्योद्यम

गोविन्द । चुप कर् ।

अनुचरेर प्रति

कोथा आछे
सेनापति, डेके आन् ! हाय रघुपति,
अवशेषे सैन्य दिये घिरिते हइल
धर्म ! लज्जा हय डाकिते सैनिकदल,
बाहुबल दुर्बलता कराय स्मरण ।

रघुपति । अविश्वासी, सत्यइ कि हयेछे धारणा
कलियुगे ब्रह्मतेज गेछे—ताइ एत
दुःसाहस ? याय नाइ । ये दीप्त अनल
ज्वलिछे अन्तरे, से तोमार सिंहासने
निश्चय लागिबे । नतुवा ए मनानले
छाइ करे पुड़ाइब सब शास्त्र, सब
ब्रह्मगर्व, समस्त तेत्रिश कोटि मिथ्या ।

नहि आमि—मैं नहीं हूँ; **आमि......येथा**—मैं जहाँ हूँ; **सेथा एले**—वहाँ आने पर; **खसे याय**—गिर जाता है; **हते**—से; **धुलाय**—धूल में; **पड़े लुटे**—गिर कर लोटता है; **के आछिस**—कौन है; **आन्**—ला ।

डेके आन्—बुला ला; **दिये**—द्वारा; **घिरिते हइल**—घेरना पड़ा; **कराय**—कराता है ।

सत्यि......गेछे—क्या सचमुच (तुम्हारी) धारणा हो गई है कि कलियुग में ब्रह्मतेज चला गया है; **ताइ एत**—इसीलिये इतना; **याय नाइ**—(ब्रह्मतेज) नहीं गया है; **ये**—जो; **ज्वलिछे**—जल रहा है; **से**—वह; **लागिबे**—लगेगा; **नतुबा**—नहीं तो; **ए......शास्त्र**—मन (अन्तर) की इस अग्नि में सब शास्त्रों को जला कर भस्म कर दूँगा; **तेत्रिश**—तैंतीस;

आज नहे महाराज, राज-अधिराज,
एइ दिन मने कोरो आर-एक दिन।

[नयनराय ओ चाँदपालेर प्रवेश

नयनेर प्रति

गोविन्द। सैन्य लये थाको हेथा निषेध करिते
जीवबलि।

नयनराय। क्षमा करो अधम किङ्करे।
अक्षम राजार भृत्य देवतामन्दिरे।
यतदूर येते पारे राजार प्रताप
मोरा छाया सङ्गे याइ।

चाँदपाल। थामो सेनापति,
दीपशिखा थाके एक ठाँइ, दीपालोक
याय वहुदूरे। राज-इच्छा येथा याबे
सेथा याब मोरा।

गोविन्द। सेनापति, मोर आज्ञा
तोमार विचाराधीन नहे। धर्माधर्म
लाभक्षति रहिल आमार, कार्य शुधु
तव हाते।

नयनराय। ए कथा हृदय नाहि माने।
महाराज, भृत्य बटे, तबुओ मानुष

एइ......दिन—आज के दिन को और एक दिन याद करना।

सैन्य......हेथा—सैनिकों को ले कर यहाँ रहो।

किङ्करे—किङ्कर को; **यतदूर......याइ**—जहाँ तक राजा का प्रताप जा सकता है हमलोग छाया के समान साथ जाते हैं।

थामो—ठहरो, रुको; **थाके......ठाँई**—एक स्थान पर रहती है; **याय**—जाता है; **राज......मोरा**—जहाँ राजा की इच्छा जाएगी वहीं हमलोग जाएँगे।

रहिल आमार—मेरे रहे; **शुधु**—केवल; **हाते**—हाथ में।

ए......माने—यह बात हृदय नहीं मानता; **भृत्य बटे**—भृत्य अवश्य हूँ; **तबुओ......आमि**—तो भी मैं मनुष्य हूँ;

आमि। आछे बुद्धि, आछे धर्म, आछ प्रभु,
आछेन देवता।

गोविन्द। तबे फेलो अस्त्र तव।
चाँदपाल, तुमि हले सेनापति, दुइ
पद रहिल तोमार। सावधाने सैन्य
लये मन्दिर करिबे रक्षा।

चाँदपाल। ये आदेश
महाराज!

गोविन्द। नयन, तोमार अस्त्र दाओ
चाँदपाले।

नयनराय। चाँदपाले? केन महाराज!
ए अस्त्र तोमार पूर्व राजपितामह
दियेछेन आमादेर पितामहे। फिरे
निते चाओ यदि, तुमि लओ। स्वर्गे आछ
तोमरा हे पितृपितामह, साक्षी थाको
एतदिन ये राजविश्वास पालियाछ
बहु यत्ने, साग्निकेर पुण्य अग्नि-सम,
यार धन तारि हाते फिरे दिनु आज
कलङ्कविहीन।

चाँदपाल। कथा आछे भाइ!

आछे—है; **आछ**—हो; **आछेन**—हैं।

तबे फेलो—तब फेंक दो; **तुमि हले**—तुम हुए।

दाओ चाँदपाले—चाँदपाल को दो।

केन—क्यों; **दियेछेन**—दिया है; **फिरे......लओ**—अगर लौटा लेना चाहते हो (तो) तुम लो; **तोमरा**—तुमलोग; **थाको**—रहो; **एतदिन**—इतने दिन; **ये**—जो; **पालियाछ**—पालन किया है; **साग्निक**—अग्निहोत्री (जो ब्राह्मण यज्ञाग्नि सर्वदा प्रज्वलित किए हुए रहता है); **पुण्य**—पवित्र; **यार...... आज**—जिसका धन था उसीके हाथों में आज लौटा दिया।

कथा......भाइ—(एक) बात है भाई।

नयनराय। धिक्!
चुप करो! ––महाराज, बिदाय हलेम।
[प्रणामपूर्वक प्रस्थान

गोविन्द। क्षुद्र स्नेह नाइ राजकाजे। देवतार
कार्यभार तुच्छ मानवेर 'परे, हाय
की कठिन!

रघुपति। एमनि करिया ब्रह्मशाप
फले, विश्वासी हृदय क्रमे दूरे याय,
भेङे याय दाँड़ाबार स्थान।

[जयसिंहेर प्रवेश

जयसिंह। आयोजन
हयेछे पूजार। प्रस्तुत रयेछे बलि।

गोविन्द। बलि कार तरे?

जयसिंह। महाराज, तुमि हेथा!
तबे शोनो निवेदन––एकान्त मिनति
युगलचरणतले, प्रभु, फिरे लओ
तव गर्वित आदेश। मानव हइया
दाँड़ायो ना देवीरे आच्छन्न करि––

रघुपति। धिक्!
जयसिंह, ओठो, ओठो! चरणे पतित

बिदाय हलेम––विदा हुआ।

क्षुद्र......राजकाजे––राजकार्य में क्षुद्र स्नेह (का स्थान) नहीं।

एमनि करिया––इसी तरह; **फले**––फलता है; **भेङे याय**––टूट (विनष्ट हो) जाता है; **दाँड़ाबार**––खड़े होने का।

कार तरे––किसके लिये।

तुमि हेथा––तुम यहाँ; **तबे शोनो**––तब सुनो; **फिरे लओ**––लौटा लो; **मानव......करि**––मानव हो कर देवी को आच्छन्न कर खड़े न होओ।

ओठो––उठो;

कार काछे ? आमि यार गुरु, ए संसारे
एइ पदतले तार एकमात्र स्थान।
मूढ़, फिरे देख्——गुरुर चरण धरे
क्षमा भिक्षा कर्। राजार आदेश निये
करिब देवीर पूजा, करालकालिका,
एत कि हयेछे तोर अधःपात ! थाक्
पूजा, थाक् बलि——देखिब राजार दर्प
कतदिन थाके। चले एस जयसिंह !

[रघुपति ओ जयसिंहेर प्रस्थान

गोविन्द। ए संसारे विनय कोथाय ? महादेवी,
यारा करे विचरण तव पदतले
ताराओ शेखे नि हाय कत क्षुद्र तारा !
हरण करिया लये तोमार महिमा
आपनार देहे बहे, एत अहङ्कार !

[प्रस्थान

कार काछे——किसके निकट; **आमि.....गुरु**——मैं जिसका गुरु हूँ; **निये**——ले कर; **एत......अधःपात**——क्या तेरा इतना अधःपतन हो चुका है; **थाक्**——रहे; **देखिब**——देखूँगा; **कतदिन थाके**——कितने दिन रहता है; **एस**——आओ।

यारा——जो लोग; **ताराओ**——वे लोग भी; **शेखेनि**——नहीं सीखा; **बहे**——वहन करते हैं।

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

मन्दिर

रघुपति जयसिंह ओ नक्षत्रराय

नक्षत्रराय। की जन्य डेकेछ गुरुदेव ?

रघुपति। काल रात्रे

स्वपन दियेछे देवी, तुमि हबे राजा।

नक्षत्रराय। आमि हब राजा ! हा हा ! बल की ठाकुर ?

राजा हब ? ए कथा नूतन शोना गेल !

रघुपति। तुमि राजा हबे।

नक्षत्रराय। विश्वास ना हय मोर।

रघुपति। देवीर स्वपन सत्य। राजटिका पाबे

तुमि, नाहिको सन्देह।

नक्षत्रराय। नाहिको सन्देह !

किन्तु, यदि नाइ पाइ ?

रघुपति। आमार कथाय

अविश्वास ?

नक्षत्रराय। अविश्वास किछुमात्र नेइ,

किन्तु दैवातेर कथा—यदि नाइ हय !

रघुपति। अन्यथा हबे ना कभु।

की......डेकेछ—किसलिये बुलाया है।

काल—कल; **हबे**—होओगे।

हब—होऊँगा; **बल......ठाकुर**—कहते क्या हो ठाकुर (देवता); **ए......गेल**—यह तो नई बात सुनाई पड़ी।

विश्वास......मोर—मुझे विश्वास नहीं होता।

राजटिका—राजतिलक; **नाहिको**—नहीं है।

आमार कथाय—मेरी बात में।

कभु—कभी।

नक्षत्रराय। अन्यथा हबे ना ?
देखो प्रभु, कथा येन ठिक थाके शेषे।
राजा हये मन्त्रीटारे देब दूर करे,
सर्वदाइ दृष्टि तार रयेछे पड़िया
आमा-'परे, येन से बापेर पितामह।
बड़ो भय करि तारे—बुझेछ ठाकुर ?
तोमारे करिब मन्त्री।

रघुपति। मन्त्रित्वेर पदे
पदाघात करि आमि।

नक्षत्रराय। आच्छा, जयसिंह
मन्त्री हबे। किन्तु, हे ठाकुर, सबइ यदि
जानो तुमि, बलो देखि कबे राजा हब।

रघुपति। राजरक्त चान देवी।

नक्षत्रराय। राजरक्त चान !

रघुपति। राजरक्त आगे आनो, परे राजा हबे।

नक्षत्रराय। पाब कोथा !

रघुपति। घरे आछे गोविन्दमाणिक्य।
ताँरि रक्त चाइ।

नक्षत्रराय। ताँरि रक्त चाइ !

कथा......शेषे—आखिर तक जिसमें बात ठीक रहे; **राजा......करे**—राजा होने पर मन्त्री को दूर कर दूँगा; **सर्वदाइ.....'परे**—उसकी दृष्टि सर्वदा मेरे ही ऊपर रहती है; **येन**—जैसे; **से**—वह; **बड़ो......तारे**—उससे (मैं) बहुत डरता हूँ; **बुझेछ**—समझ रहे हो; **तोमारे करिब**—तुम्हें बनाऊँगा।

सबइ......तुमि—यदि तुम सभी कुछ जानते हो; **बलो......हब**—बताओ तो सही मैं राजा कब होऊँगा।

चान—चाहती हैं।

आगे आनो—पहले लाओ; **परे......हबे**—बाद में राजा बनना।

पाब कोथा—पाऊँगा कहाँ।

घरे आछे—घर में है; **ताँरि......चाइ**—उन्हीं का रक्त चाहिए।

रघुपति । स्थिर
हये थाको जयसिंह, होयो ना चञ्चल ।—
बुझेछ कि ? शोनो तबे—गोपने ताँहारे
वध क'रे, आनिबे से तप्त राजरक्त
देवीर चरणे ।—
जयसिंह, स्थिर यदि
ना थाकिते पारो, चले याओ अन्य ठाँइ ।—
बुझेछ नक्षत्रराय ? देवीर आदेश,
राजरक्त चाइ—श्रावणेर शेष रात्रे ।
तोमरा रयेछ दुइ राजभ्राता—ज्येष्ठ
यदि अव्याहति पाय, तोमार शोणित
आछे । तृषित हयेछे यबे महाकाली,
तखन समय आर नाइ विचारेर ।

नक्षत्रराय । सर्वनाश ! हे ठाकुर, काज की राजत्वे !
राजरक्त थाक् राजदेहे, आमि याहा
आछि सेइ भालो ।

रघुपति । मुक्ति नाइ, मुक्ति नाइ
किछुतेइ ! राजरक्त आनितेइ हबे !

नक्षत्रराय । बले दाओ, हे ठाकुर, की करिते हबे ।

हये थाको—हो कर रहो; **होयो ना**—न होओ; **बुझेछ कि**—क्या समझा है; **शोनो तबे**—तब सुनो; **गोपने......क'रे**—गुप्त रीति से उनका वध कर; **आनिबे**—लाना; **से**—वह; **ना......पारो**—नहीं रह सकते; **चले......ठाँइ**—अन्यत्र चले जाओ; **यदि......पाय**—यदि छुटकारा पा जाय; **अव्याहति**—निष्कृति, रिहाई; **हयेछे**—हुई है; **यबे**—जब; **तखन......विचारेर**—तब विचार करने का समय नहीं ।

काज......राजत्वे—राज्य का क्या काम; **थाक्**—रहे; **आमि......भालो**—मैं यों ही भला ।

मुक्ति......किछुतेइ—किसी तरह भी मुक्ति नहीं; **आनितेइ हबे**—लाना ही होगा ।

रघुपति। प्रस्तुत हइया थाको। यखन या बलि
अविलम्बे करिबे साधन; कार्यसिद्धि
यतदिन नाहि हय, बन्ध रेखो मुख।
एखन बिदाय हओ।

नक्षत्रराय। हे मा कात्यायनी!

[प्रस्थान

जयसिंह। एकि शुनिलाम! दयामयी मातः, एकि
कथा! तोर आज्ञा! भाइ दिये भ्रातृहत्या!
विश्वेर जननी!—गुरुदेव! हेन आज्ञा
मातृ-आज्ञा ब'ले करिले प्रचार।

रघुपति। आर
की उपाय आछे बलो।

जयसिंह। उपाय! किसेर
उपाय प्रभु! हा धिक्! जननी, तोमार
हस्ते खड्ग नाइ? रोषे तव वज्रानल
नाहि चण्डी? तव इच्छा उपाय खुँजिछे,
खुँड़िछे सुरङ्गपथ चोरेर मतन
रसातलगामी? एकि पाप!

रघुपति। पापपुण्य
तुमि किवा जानो!

बले दाओ—बता दो; **की......हबे**—क्या करना होगा।

हइया—हो कर; **थाको**—रहो; **यखन......बलि**—जब जो कहूँ; **करिबे**—करना; **यतदिन......हय**—जब तक न हो; **बन्ध......मुख**—मुख बन्द रखो; **एखन......हओ**—अब विदा होओ।

ए......शुनिलाम—यह क्या सुन रहा हूँ; **एकि कथा**—यह कैसी बात है; **दिये**—द्वारा; **हेन**—ऐसी; **ब'ले**—कह कर; **करिले**—किया।

आर......बलो—और क्या उपाय है बताओ।

किसेर—किस बात का; **नाइ**—नहीं है; **खुँजिछे**—खोज रही है; **खुँड़िछे**—खोद रही है; **चोरेर मतन**—चोर की भाँति।

तुमि......जानो—तुम जानते ही क्या हो।

जयसिंह। शिखेछि तोमारि काछे।

रघुपति। तबे एस वत्स, आर-एक शिक्षा दिइ।
पापपुण्य किछु नाइ। के वा भ्राता, के वा
आत्मपर! के बलिल हत्याकाण्ड पाप!
ए जगत् महा हत्याशाला। जानो ना कि
प्रत्येक पलकपाते लक्षकोटि प्राणी
चिर आँखि मूदितेछे! से काहार खेला?
हत्याय खचित एइ धरणीर धूलि।
प्रतिपदे चरणे दलित शत कीट—
ताहारा की जीव नहे? रक्तेर अक्षरे
अविश्राम लिखितेछे वृद्ध महाकाल
विश्वपत्रे जीवेर क्षणिक इतिहास।
हत्या अरण्येर माझे, हत्या लोकालये,
हत्या विहङ्गेर नीड़े, कीटेर गह्वरे,
अगाध सागरजले, निर्मल आकाशे,
हत्या जीविकार तरे, हत्या खेलाच्छले,
हत्या अकारणे, हत्या अनिच्छार वशे—
चलेछे निखिल विश्व हत्यार ताड़ने
ऊर्ध्वश्वासे प्राणपणे, व्याघ्रेर आक्रमे
मृगसम, मुहूर्त दाँड़ाते नाहि पारे।

शिखेछि......काछे—तुम्हीं से सीखा है।

तबे एस—तब आओ; **आर......दिइ**—और एक शिक्षा दें; **किछु नाइ**—कुछ नहीं है; **के......भ्राता**—कौन भाई है; **आत्मपर**—अपना पराया; **के बलिल**—किसने कहा; **जानो ना कि**—जानते नहीं क्या; **पलक पाते**—पलकों के गिरने (के साथ); **मूदितेछे**—मूँद रहे हैं; **से......खेला**—यह किसका खेल है; **हत्याय**—हत्या से; **ताहारा......नहे**—वे क्या जीव नहीं हैं; **लोकालये**—मनुष्यों के निवास स्थल में; **जीविकार तरे**—जीविका के लिये; **ताड़ने**—प्रहार से; **आक्रमे**—आक्रमण से; **मुहूर्त......पारे**—पल भर भी नहीं ठहर सकता;

महाकाली कालस्वरूपिणी, रयेछेन
दाँड़ाइया तृषातीक्ष्ण लोलजिह्वा मेलि—
विश्वेर चौदिक बेये चिर रक्तधारा
फेटे पड़ितेछे, निष्पेषित द्राक्षा हते
रसेर मतन, अनन्त खर्परे ताँर—

जयसिंह। थामो, थामो, थामो—
मायाविनी, पिशाचिनी,
मातृहीन ए संसारे एसेछिस तुइ
मा'र छद्मवेश धरे रक्तपानलोभे?
क्षुधित विहङ्गशिशु अरक्षित नीड़े
चेये थाके मा'र प्रत्याशाय, काछे आसे
लुब्ध काक, व्यग्रकण्ठे अन्ध शावकेरा
मा मने करिया तारे करे डाकाडाकि,
हाराय कोमल प्राण हिंस्रचञ्चुघाते—
तेमनि कि तोर व्यवसाय? प्रेम मिथ्या,
स्नेह मिथ्या, दया मिथ्या, मिथ्या आर-सब,
सत्य शुधु अनादि अनन्त हिंसा! तबे
केन मेघ हते, झरे आशीर्वादसम
वृष्टिधारा दग्ध धरणीर वक्ष-'परे—

रयेछेन दाँड़ाइया—खड़ी हुई हैं; **मेलि**—निकाल कर; **चौदिक बेये**—चारों ओर से बहती हुई; **फेटे पड़ितेछे**—फटी पड़ रही है; **निष्पेषित......मतन**—अंगर से निचोड़े हुए रस के समान; **खर्परे ताँर**—उनके खप्पर में।

थामो—रुको, ठहरो; **मातृहीन......लोभे**—इस मातृहीन संसार में तू माँ का छद्मवेश धारण कर रक्तपान के लोभ से आई है; **चेये.....प्रत्याशाय**—माँ की प्रतीक्षा में टकटकी लगाए रहता है; **काछे आसे**—निकट आता है; **मा...... डाकाडाकि**—माँ समझ कर उसे पुकारने लगता है (चें चें करने लगता है); **हाराय**—गँवा देता है; **तेमनि......व्यवसाय**—वैसा ही क्या तेरा व्यवसाय (व्यवहार) है; **आर**—और; **शुधु**—केवल; **तबे.....हते**—तो फिर क्यों मेघ से; **'परे**—के ऊपर;

ग'ले आसे पाषाण हइते दयामयी
स्रोतस्विनी मरुमाझे––कोटि कण्टकेर
शिरोभागे, केन फुल ओठे विकशिया ?
छलना करेछ मोरे प्रभु ! देखितेछ
मातृभक्ति रक्तसम हृदय टुटिया
फेटे पड़े किना आमारि हृदय वलि
दिले मातृपदे। ओइ देखो हासितेछे
मा आमार स्नेहपरिहासवशे। बटे,
तुइ राक्षसी पाषाणी बटे, मा आमार
रक्तपिपासिनी ! निवि मा आमार रक्त,
घुचावि सन्तानजन्म ए जन्मेर तरे––
दिब छुरि बुके ? एइ शिरा-छेँड़ा रक्त
बड़ो कि लागिबे भालो ? ओरे, मा आमार
राक्षसी पाषाणी बटे ! डाकिछ कि मोरे
गुरुदेव ? छलना बुझेछि आमि तव।
भक्तहिया-विदारित एइ रक्त चाओ !
दियेछिले एइ-ये वेदना, तारि 'परे
जननीर स्नेहहस्त पड़ियाछे। दुःख
चेये सुख शतगुण। किन्तु, राजरक्त !

ग'ले आसे––गल कर आती है; **हइते**––से; **मरुमाझे**––मरुभूमि के बीच; **केन......विकशिया**––फूल क्यों खिल उठते हैं; **करेछ**––किया है; **देखितेछ**––देख रहे हो; **फेटे......किना**––फट पड़ता है या नहीं; **दिले**––देने पर; **ओइ देखो**––वह देखो; **हासितेछे**––हँस रही है; **बटे**––निश्चय ही, सत्य ही; **निबि......रक्त**––लेगी माँ मेरा रक्त; **घुचावि......तरे**––इस जन्म के लिये (अपनी) सन्तान का जीवन मिटा देगी; **दिब.....बुके**––छाती में छुरा (भोंक) लूँ; **एइ......भालो**––इस छिन्न धमनी का रक्त क्या बहुत अच्छा लगेगा; **डाकिछ......मोरे**––क्या मुझे बुला रहे हो; **बुझेछि**––समझ गया हूँ; **दियेछिले...... पड़ियाछे**––यह जो व्यथा दी थी उस पर माँ का स्नेहपूर्ण हाथ पड़ा है;

छिछि ! भक्तिपिपासिता माता, ताँरे बलो
रक्तपिपासिनी !

रघुपति । बन्ध होक बलिदान
तबे ।

जयसिंह । होक बन्ध ।––ना ना, गुरुदेव, तुमि
जानो भालोमन्द । सरल भक्तिर विधि
शास्त्रविधि नहे । आपन आलोके आँखि
देखिते ना पाय, आलोक आकाश हते
आसे । प्रभु, क्षमा करो, क्षमा करो दासे ।
क्षमा करो स्पर्धा मूढ़तार । क्षमा करो
नितान्त वेदनावशे उद्भ्रान्त प्रलाप ।
बलो प्रभु, सत्यइ कि राजरक्त चान
महादेवी ?

रघुपति । हाय वत्स, हाय ! अवशेषे
अविश्वास मोर प्रति ?

जयसिंह । अविश्वास ? कभु
नहे । तोमारे छाड़िले, विश्वास आमार
दाँड़ाबे कोथाय ? वासुकिर शिरश्च्युत
वसुधार मतो, शून्य हते शून्ये पाबे
लोप । राजरक्त चाय तबे महामाया,
से रक्त आनिब आमि । दिब ना घटिते
भ्रातृहत्या ।

ताँरे बलो––उसे कहते हो ।

बन्ध होक––बन्द हो; **तबे**––तब ।

भालोमन्द––भला बुरा; **नहे**––नहीं; **दासे**––दास को; **बलो**––बोलो; **सत्यइ......चान**––सत्य ही क्या राजरक्त चाहती हैं ।

कभु नहे––कभी नहीं; **तोमारे......कोथाय**––मेरा विश्वास तुम्हें छोड़ कर और टिकेगा भी कहाँ; **शून्य......लोप**––शून्य से शून्य में लोप हो जाएगा; **चाय**––चाहती है; **से......आमि**––तो मैं वह रक्त ला दूँगा; **दिब......हत्या**––भ्रातृ-

रघुपति। देवतार आज्ञा पाप नहे।
जयसिंह। पुण्य तबे, आमिइ से करिब अर्जन।
रघुपति। सत्य करे वलि, वत्स, तबे। तोरे आमि
भालोबासि प्राणेर अधिक--पालियाछि
शिशुकाल हते तोरे, मायेर अधिक
स्नेहे--तोरे आमि नारिब हाराते।
जयसिंह। मोर
स्नेहे घटिते दिब ना पाप, अभिशाप
आनिब ना ए स्नेहेर 'परे।
रघुपति। भालो भालो,
से कथा हइबे परे--कल्य हबे स्थिर।

[उभयेर प्रस्थान

द्वितीय दृश्य

मन्दिर

अपर्णा

गान

ओगो पुरवासी,
आमि द्वारे दाँड़ाये आछि उपवासी।

हत्या नहीं होने दूँगा।

पुण्य......अर्जन—तब मैं स्वयं ही उस पुण्य का अर्जन करूँगा।

सत्य......तबे—तब सत्य कहता हूँ वत्स; **तोरे......अधिक**—मैं तुझे प्राणों से भी अधिक प्यार करता हूँ; **पालियाछि......तोरे**—बचपन से तुझे पाला है; **तोरे......हाराते**—तुझे मैं खोने नहीं दूँगा।

मोर......'परे—अपने स्नेह के कारण मैं पाप नहीं होने दूँगा, इस स्नेह के ऊपर मैं अभिशाप नहीं आने दूँगा।

भालो......स्थिर—अच्छा, अच्छा, यह बात बाद में होगी, कल निश्चय होगा।

आमि......उपवासी—मैं उपवासिनी द्वार पर खड़ी हूँ।

अपर्णा। जयसिंह, कोथा जयसिंह ! केह नाइ
ए मन्दिरे। तुमि के दाँड़ाये आछ होथा
अचल मुरति—कोनो कथा ना बलिया
हरितेछ जगतेर सार-धन यत !
आमरा याहार लागि कातर काङाल
फिरे मरि पथे पथे, से आपनि एसे
तव पदतले करे आत्मसमर्पण !
ताहे तोर कोन् प्रयोजन ! केन तारे
कृपणेर धन-सम रेखे दिस पुँते
मन्दिरेर तले—दरिद्र ए संसारेर
सर्व व्यवहार हते करिया गोपन !
जयसिंह, ए पाषाणी कोन् सुख देय,
कोन् कथा बले तोमा-काछे, कोन् चिन्ता
करे तोमा-तरे—प्राणेर गोपन पात्रे
कोन् सान्त्वनार सुधा चिररात्रिदिन
रेखे देय करिया सञ्चित !—ओरे चित्त
उपवासी, कार रुद्ध द्वारे आछ बसे ?

केह......मन्दिरे—इस मन्दिर में कोई नहीं है; **तुमि......होथा**—तुम कौन वहाँ खड़ी हो; **मुरति**—मूर्ति; **कोनो......बलिया**—चुपचाप, बिना बोले; **हरितेछ**—हरण कर रही हो; **यत**—जितना; **आमरा......लागि**—हमलोग जिसके लिये; **काङाल**—कंगाल; **फिरे......पथे पथे**—सड़कों पर भटकते फिरते हैं; **से.....एसे**—वह स्वयं आ कर; **ताहे.....प्रयोजन**—उससे तुम्हें क्या प्रयोजन है (उसकी तुम्हें क्या आवश्यकता है); **केन तारे**—क्यों उसे; **रेखे......पुँते**—गाड़ रखती हो; **कोन्......देय**—कौन सुख देती है; **कोन्.....काछे**—तुमसे कौन-सी बात कहती है; **कोन्......तरे**—तुम्हारे लिये कौन-सी चिन्ता करती है; **रेखे देय**—रख देती है; **करिया**—कर; **कार......बसे**—किसके रुद्ध (बन्द) द्वार पर बैठे हो।

गान

ओगो पुरवासी,
आमि द्वारे दाँड़ाये आछि उपवासी।
हेरितेछि सुखमेला, घरे घरे कत खेला,
शुनितेछि सारावेला सुमधुर बाँशि।

[रघुपतिर प्रवेश

रघुपति। के रे तुइ ए मन्दिरे !

अपर्णा। आमि भिखारिनी।
जयसिंह कोथा ?

रघुपति। दूर ह एखान हते
मायाविनी ! जयसिंहे चाहिस काड़िते
देवीर निकट हते ओरे उपदेवी !

अपर्णा। आमा हते देवीर की भय ? आमि भय
करि तारे, पाछे मोर सब करे ग्रास !

[गाहिते गाहिते प्रस्थान

चाहि ना अनेक धन, रब ना अधिक क्षण,
येथा हते आसियाछि सेथा याब भासि——
तोमरा आनन्दे रबे नव नव उत्सवे,
किछु म्लान नाहि हबे गृहभरा हासि।

हेरितेछि—देख रही हूँ; **कत**—कितना; **शुनितेछि**—सुन रही हूँ; **बाँशि**—बाँसुरी।

के......मन्दिरे—कौन है रे तू इस मन्दिर में।

दूर.....हते—दूर हो यहाँ से; **चाहिस काड़िते**—काढ़ना (छीनना) चाहती है; **हते**—से; **उपदेवी**—(भूत, प्रेत आदि कोटि की)।

आमा......भय—मुझसे देवी को क्या डर ? **आमि......तारे**—मैं ही उससे डरती हूँ; **पाछे......ग्रास**—कहीं बाद में मेरा सब कुछ न ग्रस ले।

गाहिते गाहिते—गाते गाते।

चाहि ना—नहीं चाहती; **रब ना**—नहीं रहूँगी; **येथा......भासि**—जहाँ से आई हूँ वहीं तिरती चली जाऊँगी; **तोमरा.....रबे**—तुमलोग आनन्द से रहोगे; **किछु**—कुछ (तनिक भी); **हबे**—होगी।

तृतीय दृश्य

मन्दिरसम्मुखे पथ

जयसिंह

दूर होक चिन्ताजाल! द्विधा दूर होक!
चिन्तार नरक चेये कार्य भालो, यत
क्रूर, यतइ कठोर होक। कार्येर तो
शेष आछे, चिन्तार सीमाना नाइ कोथा—
धरे से सहस्र मूर्ति पलके पलके
बाष्पेर मतन; चारि दिके यतइ से
पथ खुँजे मरे, पथ तत लुप्त हये
याय। एक भालो अनेकेर चेये। तुमि
सत्य, गुरुदेव, तोमारि आदेश सत्य—
सत्यपथ तोमारि इङ्गितमुखे। हत्या
पाप नहे, भ्रातृहत्या पाप नहे, नहे
पाप राजहत्या!—सेइ सत्य, सेइ सत्य!
पापपुण्य नाइ, सेइ सत्य! थाक् चिन्ता,
थाक् आत्मदाह, थाक् विचार विवेक!—
कोथा याओ भाइ-सब, मेला आछे बुझि
निशिपुरे? कुकी रमणीर नृत्य हबे?
आमिओ येतेछि।—ए धराय कत सुख
आछे—निश्चिन्त आनन्दसुखे नृत्य करे

होक—हो; **चेये**—अपेक्षा; **यत**—जितना; **मतन**—भाँति; **चारि...... मरे**—वह चारों ओर ज्यों-ज्यों पथ खोजती फिरती है; **पथ......याय**—त्यों-त्यों पथ लुप्त होता जाता है; **एक......चेये**—अनेक (पथों) की अपेक्षा एक ही अच्छा।

कोथा......सब—भाई, तुमलोग कहाँ जा रहे हो; **मेला......बुझि**—शायद मेला है; **कुकी**—(त्रिपुरा अंचल की पहाड़ी जाति); **आमिओ येतेछि**—मैं भी जा रहा हूँ; **ए......आछे**—इस पृथ्वी पर कितना आनंद है;

नारीदल, मधुर अङ्गेर रङ्गभङ्ग
उच्छ्वसिया उठे चारि दिके, तटप्लावी
तरङ्गिणी-सम। निश्चिन्त आनन्दे सबे
धाय चारि दिक हते—उठे गीतगान,
बहे हास्यपरिहास, धरणीर शोभा
उज्ज्वल मुरति धरे। आमिओ चलिनु।

गान

आमारे के निबि भाइ, सँपिते चाइ
आपनारे।
आमार एइ मन गलिये काज भुलिये
सङ्गे तोदेर निये या रे।
तोरा कोन् रूपेर हाटे
चलेछिस भवेर बाटे,
पिछिये आछि आमि आपन भारे।
तोदेर ऐ हासिखुशि दिवानिशि
देखे मन केमन करे।
आमार एइ वाधा टुटे—
निये या लुटेपुटे—
पड़े थाक् मनेर बोझा घरेर द्वारे।

धाय......हते—चारों ओर से दौड़ कर आते हैं; **बहे**—बहता है; **मुरति**—मूर्ति; **चलिनु**—चला।

आमारे......भाइ—मुझे कौन लेगा (ग्रहण करेगा) भाई; **सँपिते...... आपनारे**—मैं अपने (आप) को सौंपना चाहता हूँ; **आमार......रे**—मेरे इस मन को विगलित कर सब काम-काज भुला कर अपने साथ लेते जाओ; **तोरा**—तुमलोग; **कोन्**—किस; **चलेछिस**—चले हो; **पिछिये......भारे**—मैं अपने ही बोझ के मारे पिछड़ गया हूँ; **तोदेर**—तुमलोगों की; **ऐ** (उच्चारण: ओइ)—वह; **देखे......करे**—देख कर मन न जाने कैसा हो जाता है; **आमार.....टुटे**—मेरे इस बन्धन को छिन्न-भिन्न कर; **निये......लुटेपुटे**—लूटाते पुटाते लिये जा। **पड़े......द्वारे**—घर के द्वार पर मन का बोझा पड़ा रहे;

येमन ऐ एक निमेषे वन्या एसे
भासिये ने याय पारावारे ।।
एत-ये आनागोना,
के आछे जानाशोना—
के आछे नाम ध'रे मोर डाकते पारे ?
यदि से बारेक एसे दाँड़ाय हेसे
चिनते पारि देखे तारे ।।

[दूरे अपर्णार प्रवेश

ओकि ओ अपर्णा, दूरे दाँड़ाइया केन !
शुनितेछ अवाक हइया, जयसिंह
गान गाहे ? सब मिथ्या, बृहत् वञ्चना,
ताइ हासितेछि—ताइ गाहितेछि गान ।
ओइ देखो पथ दिये ताइ चलितेछे
लोक निर्भावना, ताइ छोटो कथा निये
एतइ कौतुकहासि, एत कुतूहल,
ताइ एत यत्न भरे सेजेछे युवती ।
सत्य यदि ह'त, तबे ह'त कि एमन ?
सहजे आनन्द एत बहित कि हेथा ?

येमन.....पारावारे—जैसे उस एक निमेष में वन्या (बाढ़) आ कर समुद्र में बहा ले जाती है; **एत-ये......जानाशोना**—इतनी जो आवाजाही (है), कौन जाना पहचाना है; **के......पारे**—कौन है जो मेरा नाम ले कर मुझे बुला सके; **यदि..... तारे**—यदि वह एक बार आ कर हँस कर खड़ा हो जाय (तो) उसे देख कर पहचान सकता हूँ ।

दूरे......प्रवेश—दूर पर अपर्णा का प्रवेश ।

ओकि ओ—अरी यह क्या; **दूरे.....केन**—दूर क्यों खड़ी हो; **शुनितेछ**—सुन रही हो; **हइया**—हो कर; **गाहे**—गाता है; **ताइ हासितेछि**—इसीलिये हँस रहा हूँ; **गाहितेछि**—गा रहा हूँ; **ओइ......निर्भावना**—वह देखो इसीलिये लोग निश्चिन्त हो कर बढे चले जा रहे हैं; **ताइ.....हासि**—इसीलिये बात-बात पर इतना कौतुक, इतनी हँसी है; **सेजेछे**—साज किया है, सजी है; **ह'त**—होता; **तबे......एमन**—तब क्या ऐसा होता; **सहजे......हेथा**—सहज भाव से

ताहा हले वेदनाय विदीर्ण धराय,
विश्वव्यापी व्याकुल क्रन्दन थेमे गिये
मूक हये रहित अनन्तकाल धरि।
बाँशि यदि सत्यइ काँदित वेदनाय,
फेटे गिये संगीत नीरव हत तार।
मिथ्या बले ताइ एत हासि——श्मशानेर
कोले बसे खेला, वेदनार पाशे शुये
गान, हिंसा-व्याघ्रिणीर खरनखतले
चलितेछे प्रतिदिवसेर कर्मकाज!
सत्य हले एमन कि हत? हा अपर्णा,
तुमि आमि किछु सत्य नइ, ताइ जेने
सुखी हओ——विषण्ण विस्मये, मुग्ध आँखि
तुले केन रयेछिस चेये! आय सखी,
चिरदिन चले याइ दुइ जने मिले
संसारेर 'पर दिये, शून्य नभस्तले
दुइ लघु मेघखण्ड-सम।

[रघुपतिर प्रवेश

रघुपति। जयसिंह!

क्या यहाँ इतना आनन्द बहता; **ताहा हले**—वैसा होने पर; **वेदनाय**—वेदना से; **धराय**—धरा में; **थेमे गिये**—बंद हो कर; **हये**—हो कर; **रहित**—रहता; **धरि**—तक; **बाँशि......तार**—बाँसुरी यदि सत्य ही वेदना से क्रन्दन करती (तो) फट कर उसका संगीत नीरव हो जाता; **मिथ्या......हासि**—मिथ्या है इसीलिये इतनी हँसी है; **श्मशानेर......खेला**—श्मशान की गोद में बैठ कर क्रीड़ा; **पाशे शुये**—बगल में सो कर; **चलितेछे**—चल रहा है। **सत्य......हत**—सत्य होने पर क्या ऐसा होता; **ताइ......हओ**—यही जान कर सुखी होओ; **मुग्ध......चेये**—विमुग्ध आँखों से क्यों निहार रही हो; **आय**—आओ; **चले याइ**—चले जाएँ; **दुइ......मिले**—हम दोनों मिल कर; **संसारेर......दिये**—संसार से ऊपर उठ कर; **दुइ**—दो।

जयसिंह। तोमारे चिनि ने आमि। आमि चलियाछि
आमार अदृष्टभरे भेसे निज पथे,
पथेर सहस्र लोक येमन चलेछे।
तुमि के बलिछ मोरे दाँड़ाइते? तुमि
चले याओ——आमि चले याइ।

रघुपति। जयसिंह!

जयसिंह। ओइ तो सम्मुखे पथ चलेछे सरल——
चले याब भिक्षापात्र हाते, सङ्गे लये
भिखारिनी सखी मोर। के बलिल, एइ
संसारेर राजपथ दुरूह जटिल!
येमन क'रेइ याइ, दिवा-अवसाने
पँहुछिब जीवनेर अन्तिम पलके,
आचार विचार तर्क वितर्केर जाल
कोथा मिशे याबे। क्षुद्र एइ परिश्रान्त
नरजन्म समर्पिब धरणीर कोले——
दु-चारि दिनेर एइ समष्टि आमार,
दु-चारिटा भुलभ्रान्ति भय दुःखसुख,
क्षीण हृदयेर आशा, दुर्बलतावशे
भ्रष्ट भग्न ए जीवनभार, फिरे दिये
अनन्तकालेर हाते, गभीर विश्राम।

तोमारे.....आमि——मैं तुम्हें नहीं पहचानता; **भेसे**——तिरता हुआ; **लोक**——लोग; **येमन चलेछे**——जैसे चलते रहे हैं; **तुमि......दाँड़ाइते**——तुम कौन हो जो मुझे खड़ा रहने को कहते हो; **याओ**——जाओ; **चले याइ**——चला जाऊँ।

ओइ तो——वही तो; **चले याब**——चला जाऊँगा; **हाते**——हाथ में; **सङ्गे लये**——साथ में ले कर; **के बलिल**——किसने कहा; **एइ**——यह; **येमन......याइ**——जैसे भी जाऊँ; **दिवा-अवसाने**——दिन के अन्त में; **पँहुछिब**——पहुँचूंगा; **कोथा......याबे**——कहाँ विलीन हो जाएगा; **समर्पिब**——समर्पण करूँगा; **कोले**——गोद में; **फिरे......हाते**——अनन्तकाल के हाथों में लौटा कर;

एइ तो संसार ! की काज शास्त्रेर विधि,
की काज गुरुते !
प्रभु ! पिता ! गुरुदेव !
की बलितेछिनु ! स्वप्ने छिनु एतक्षण !
एइ से मन्दिर––ओइ सेइ महावट
दाँड़ाये रयेछे, अटल कठिन दृढ़
निष्ठुर सत्येर मतो। की आदेश देव !
भुलि नाइ की करिते हबे। एइ देखो––

छुरि देखाइया

तोमार आदेशस्मृति अन्तरे बाहिरे
हतेछे शाणित। आरो की आदेश आछे
प्रभु !

रघुपति। दूर करे दाओ ओइ बालिकारे
मन्दिर हइते।––मायाविनी, जानि आमि
तोदेर कुहक।––दूर करे दाओ ओरे !

जयसिंह। दूर करे दिब ? दरिद्र आमारि मतो
मन्दिर-आश्रित, आमारि मतन हाय
सङ्गीहीन, अकण्टक पुण्येर मतन
निर्दोष, निष्पाप, शुभ्र, सुन्दर, सरल,
सुकोमल, वेदनाकातर––दूर करे

एइ......गुरुते—यही तो संसार है, शास्त्रविधि की क्या ज़रूरत, गुरु का क्या प्रयोजन; **की बलितेछिनु**—क्या कह रहा था; **छिनु**––था; **एइ......मन्दिर**—यही वह मंदिर है; **ओइ......रयेछे**—वह रहा, वहाँ वह महावट खड़ा है; **भुलि......हबे**—मैं अपना कर्तव्य भूला नहीं हूँ; **छुरि देखाइया**—छुरी दिखा कर; **हतेछे शाणित**—पैनी हो रही है; **आरो की**—और भी कुछ।

दूर.....हइते—मन्दिर से उस लड़की को दूर कर दो; **जानि......कुहक**—जानता हूँ मैं तुमलोग की माया; **ओरे**––उसको।

दूर......दिब—दूर कर दूँ; **आमारि मतो**—मेरी ही भाँति;

दिते हबे ओरे ? ताइ दिब गुरुदेव !
चले या अपर्णा ! दयामाया स्नेहप्रेम
सब मिछे ! मरे या अपर्णा ! संसारेर
बाहिरेते किछुइ ना थाके यदि, आछे
तबु दयामय मृत्यु । चले या अपर्णा !

अपर्णा । तुमि चले एस जयसिंह, ए मन्दिर
छेड़े, दुइजने चले याइ ।

जयसिंह । दुइजने
चले याइ ! ए तो स्वप्न नय । एकबार
स्वप्ने मने करेछिनु स्वप्न ए जगत् ।
ताइ हेसेछिनु सुखे, गान गेयेछिनु ।
किन्तु सत्य ए ये । बोलो ना सुखेर कथा
आर, देखायो ना स्वाधीनता-प्रलोभन—
बन्दी आमि सत्य-कारागारे ।

रघुपति । जयसिंह,
काल नाइ मिष्ट आलापेर । दूर करे
दाओ ओइ बालिकारे ।

जयसिंह । चले या अपर्णा !

अपर्णा । केन याब !

जयसिंह । एइ नारी-अभिमान तोर ?

ताइ दिब—वही करूँगा; **चले या**—चली जा; **मिछे**—मिथ्या; **संसारेर......मृत्यु**—संसार के बाहर यदि और कुछ न भी रहे फिर भी दयामयी मृत्यु तो है।

तुमि......एस—तुम (भी) चले आओ; **छेड़े**—छोड़ कर; **याइ**—जाएं।

ए.....नय—यह तो स्वप्न नहीं है; **मने करेछिनु**—समझा था; **हेसेछिनु**—हँसा था; **गेयेछिनु**—गाया था; **किन्तु......ये**—किन्तु यह तो सत्य है; **आर**—और; **देखायो ना**—मत दिखलाना।

काल......आलापेर—मीठी बातों का समय नहीं है।

केन याब—क्यों जाऊँ।

अपर्णा। अभिमान किछु नाइ आर। जयसिंह,
तोमार वेदना, आमार सकल व्यथा
सब गर्व चेये बेशि। किछु मोर नाइ
अभिमान।

जयसिंह। तबे आमि याइ। मुख तोर
देखिब ना, यतक्षण रहिबि हेथाय।—
चले या अपर्णा!

अपर्णा। निष्ठुर ब्राह्मण, धिक्
थाक ब्राह्मणत्वे तव। आमि क्षुद्र नारी
अभिशाप दिये गेनु तोरे, ए बन्धने
जयसिंहे पारिबि ना बाँधिया राखिते।

[प्रस्थान

रघुपति। वत्स, तोलो मुख, कथा कओ एकवार!
प्राणप्रिय प्राणाधिक, आमार कि प्राणे
अगाध समुद्रसम स्नेह नाइ! आरो
चास? आमि आजन्मेर ब्रन्धु, दु दण्डेर
मायापाश छिन्न हये याय यदि, ताहे
एत क्लेश?

जयसिंह। थाक् प्रभु, बोलो ना स्नेहेर
कथा आर। कर्तव्य रहिल शुधु मने।
स्नेहप्रेम तरुलतापत्रपुष्पसम

मुख......हेथाय—जब तक यहाँ रहेगी में तेरा मुँह नहीं देखूँगा।

अभिशाप......तोरे—तुझे अभिशाप दे चली; **ए......राखिते**—इस बंधन में जयसिंह को बाँध कर नहीं रख पाओगे।

तोलो—उठाओ; **कओ**—कहो; **आमार......प्राणे**—मेरे प्राणों में; **आरो चास**—और चाहता है; **दु......यदि**—दो पल का मायाबंधन यदि छिन्न हो जाय; **ताहे.......क्लेश**—उससे इतना क्लेश।

बोलो......आर—स्नेह की बात अब और मत करो; **रहिल**—रह गया; **शुधु**—केवल;

धरणीर उपरेते शुधु, आसे-याय
शुकाय-मिलाय नव नव स्वप्नवत्।
निम्ने थाके शुष्क रूढ़ पाषाणेर स्तूप
रात्रिदिन, अनन्त हृदयभारसम।

[प्रस्थान

रघुपति। जयसिंह, किछुते पाइ ने तोर मन,
एत ये साधना करि नाना छले-बले।

चतुर्थ दृश्य

मन्दिरप्राङ्गण

जनता

गणेश। एबारे मेलाय तेमन लोक हल ना।

अक्रूर। एबारे आर लोक हबे की करे? ए तो आर हिंदुर राजत्व रइल ना। ए येन नबाबेर राजत्व हये उठल। ठाकरुनेर बलिइ बन्ध हये गेल, तो मेलाय लोक आसबे की!

कानु। भाइ, राजार तो ए बुद्धि छिल ना, बोध हय किसे ताके पेयेछे।

उपरेते—ऊपर; **आसे-याय**—आते जाते हैं; **शुकाय-मिलाय**—सूखते झरते रहते हैं; **निम्ने थाके**—नीचे बना रहता है।

किछुते......मन—किसी भी तरह तेरा मन नहीं मिलता; **एत......बले**—नाना छल-बल से इतनी साधना करता हूँ।

एबारे.....ना—इस बार मेले में लोगों की कुछ वैसी भीड़ नहीं हुई।

एबारे......करे—अब इस बार भीड़ होगी कैसे; **ए**—यह; **आर**—और; **राजत्व**—राज्य; **रइल ना**—नहीं रहा; **येन**—जैसे; **हये उठल**—हो उठा; **ठाकरुनेर.....गेल**—ठकुरानी (देवी) की बलि ही बन्द हो गई; **आसबे**—आएंगे।

छिल ना—नहीं थी; **बोध......पेयेछे**—लगता है उस पर कोई भूत सवार हो गया है।

अक्रूर। यदि पेये थाके तो कोन् मुसलमानेर भूते पेयेछे, नइले बलि उठिये देबे केन ?

गणेश। किन्तु याइ बलो, ए राज्येर मङ्गल हबे ना।

कानु। पुरुत-ठाकुर तो स्वयं बले दियेछेन, तिन मासेर मध्ये मड़के देश उच्छन्न याबे।

हारु। तिन मास केन, येरकम देखछि ताते तिन दिनेर भर सइबे ना। एइ देखो-ना केन, आमादेर मोधो एइ आड़ाइ बछर धरे व्यामोय भुगे भुगे बराबरइ तो बेंचे एसेछे, ऐ, येमन बलि बन्ध हल अमनि मारा गेल।

अक्रूर। ना रे, से तो आज तिन मास हल मरेछे।

हारु। नाहय तिन मासइ हल, किन्तु एइ बछरेइ तो मरेछे बटे।

क्षान्तमणि। ओ गो, ता केन, आमार भासुरपो, से ये मरबे के जानत। तिन दिनेर ज्वर--ऐ, येमनि कविराजेर बड़िटि खाओया अमनि चोख उल्टे गेल।

यदि......केन—यदि भूत सवार हुआ भी है तो कोई मुसलमान भूत सवार हुआ है, नहीं तो बलि की प्रथा क्यों उठा देता।

किन्तु......ना—किन्तु जो भी कहो, इस राज्य का मंगल नहीं होगा।

पुरुत—पुरोहित; **ठाकुर**—देवता; **बले दियेछेन**—कह चुके हैं; **तिन**—तीन; **मड़के**—महामारी से; **देश......याबे**—देश उजड़ जाएगा।

केन—क्यों; **येरकम देखछि**—जैसा देख रहा हूँ; **ताते**--उससे तो; **भर.....ना**—भार सह्य नहीं होगा; **एइ......केन**—यही देख लो न; **आमादेर..... गेल**—अपना मोधो (नाम) ढाई वर्षों से रोग का कष्ट भोगता-भोगता भी लगातार जीता चला आ रहा था, कि ज्यों ही बलि बन्द हुई त्यों ही चल बसा।

ना......मरेछे—अरे नहीं, उसे मरे तो आज तीन महीने हो गये।

नाहय.....बटे--चलो तीन महीने ही हो गए सही, लेकिन मरा तो इसी साल।

ता केन—इतना ही नहीं; **भासुरपो**—भसुर का पुत्र; **से......जानत**—वह मर जाएगा यह कौन जानता था; **येमनि......गेल**—जैसे ही वैद्यराज की गोली खाई वैसे ही आँखें उलट गईं।

गणेश। सेदिन मथुरहाटिर गञ्जे आगुन लागल, एकखानि चाला बाकि रइल ना!

चिन्तामणि। अत कथाय काज की! देखो-ना केन, ए बछर धान येमन सस्ता हयेछे एमन आर कोनोबार हय नि। ए बछर चाषार कपाले की आछे के जाने!

हारु। ऐ रे, राजा आसछे। सकालबेलातेइ आमादेर एमन राजार मुख देखलुम, दिन केमन याबे के जाने। चल्, एखान थेके सरे पड़ि।

[सकलेर प्रस्थान

[चाँदपाल ओ गोविन्दमाणिक्येर प्रवेश

चाँदपाल। महाराज, सावधाने थेको। चारि दिके
चक्षुकर्ण पेते आछि, राज-इष्टानिष्ट
किछु ना एड़ाय मोर काछे। महाराज,
तव प्राणहत्या-तरे गुप्त आलोचना
स्वकर्णे शुनेछि।

गोविन्द। प्राणहत्या! के करिबे?

चाँदपाल। बलिते संकोच मानि। भय हय, पाछे

चाला—(घास-फूस से निर्मित छप्पर); **बाकि**—बाकी।

अत......की—इतनी बातों का क्या प्रयोजन; **ए......नि**—इस साल धान जैसा सस्ता हुजा है वैसा और कभी नहीं हुआ; **ए......जाने**—इस साल खेतिहरों के भाग्य में क्या है कौन जाने।

ऐ......आसछे—अरे, वह राजा आ रहा है; **सकाल......जाने**—सबेरे सबेरे हमलोगों ने ऐसे राजा का मुँह देखा है, न जाने दिन कैसा बीतेगा; **चल..... पड़ि**—चल, यहाँसे खिसक चलें।

सावधाने थेको—सावधान रहो; **चारि......आछि**—चारों ओर आँख फैलाये, कान खोले खड़ा हूँ; **राज......काछे**—राज्य का हित-अहित कुछ भी मेरी दृष्टि से नही बच पाता; **तरे**—के लिये; **शुनेछि**—सुनी है।

के करिबे—कौन करेगा; **बलिते......मानि**—बताते संकोच होता है; **हय**—होता है; **पाछे**—बाद में;

सत्यकार छुरि चेये निष्ठुर संवाद
अधिक आघात करे राजार हृदये।

गोविन्द। असंकोचे बले याओ। राजार हृदय
सतत प्रस्तुत थाके आघात सहिते।
के करेछे हेन परामर्श?

चाँदपाल। युवराज
नक्षत्रराय।

गोविन्द। नक्षत्र!

चाँदपाल। स्वकर्णे शुनेछि
महाराज, रघुपति युवराजे मिले
गोपने मन्दिरे बसे स्थिर हये गेछे
सब कथा।

गोविन्द। दुइ दण्डे स्थिर हये गेल
आजन्मेर बन्धन टुटिते! हाय विधि!

चाँदपाल। देवतार काछे तव रक्त एने देबे—

गोविन्द। देवतार काछे! तबे आर नक्षत्रेर
नाइ दोष। जानियाछि, देवतार नामे
मनुष्यत्व हाराय मानुष। भय नाइ,
याओ तुमि काजे। सावधाने रब आमि।

[चाँदपालेर प्रस्थान

सत्यकार......चेये—सचमुच की छुरी की अपेक्षा।

बले याओ—कहते जाओ; **सहिते**—सहने के लिये; **के करेछे**—किसने किया है; **हेन**—ऐसा।

मिले—मिल कर; **बसे**—बैठ कर; **स्थिर......कथा**—सारी बात तय हो गई है।

हये गेल—हो गया; **टुटिते**—टूटना।

एने देबे—ला देगा।

जानियाछि—जान चुका हूँ; **देवतार......मानुष**—देवता के नाम पर मनुष्य, मनुष्यत्व खो देता है; **याओ**—जाओ; **रब**—रहूँगा।

रक्त नहे, फुल आनियाछि महादेवी!
भक्ति शुधु—हिंसा नहे, विभीषिका नहे।
ए जगते दुर्बलेरा बड़ो असहाय
मा जननी, बाहुबल बड़ोइ निष्ठुर,
स्वार्थ बड़ो क्रूर, लोभ बड़ो निदारुण,
अज्ञान एकान्त अन्ध—गर्व चले याय
अकातरे क्षुद्रेरे दलिया पदतले।
हेथा स्नेह-प्रेम अति क्षीण वृन्ते थाके,
पलके खसिया पड़े स्वार्थेर परशे।
तुमिओ, जननी, यदि खड्ग उठाइले
मेलिले रसना, तबे सब अन्धकार!
भाइ ताइ भाइ नहे आर, पति प्रति
सती वाम, बन्धु शत्रु, शोणिते पङ्किल
मानवेर वासगृह, हिंसा पुण्य, दया
निर्वासित। आर नहे, आर नहे, छाड़ो
छद्मवेश। एखनो कि हय नि समय?
एखनो कि रहिबे प्रलयरूप तव?
एइ-ये उठिछे खड्ग चारि दिक हते
मोर शिर लक्ष्य करि, मातः, एकि तोरि

आनियाछि—लाया हूँ; **शुधु**—केवल; **नहे**—नहीं; **दुर्बलेरा**—दुर्बल व्यक्ति; **गर्व**—गर्वोद्धत; **चले याय**—चला जाता है; **अकातरे**—बिना हिचकिचाहट के; **क्षुद्रेरे**—क्षुद्र, असहाय को; **दलिया**—रौंदता हुआ। **हेथा**—यहाँ; **थाके**—रहते हैं; **पलके......परशे**—स्वार्थ के स्पर्श से क्षण भर में झर पड़ते हैं; **तुमिओ**—तुम भी; **मेलिले रसना**—जिह्वा निकाली; **तबे**—तब; **भाइ......आर**—इसीलिये भाई अब भाई नहीं (रह गया); **शोणिते**—शोणित से; **आर नहे**—और नहीं; **छाड़ो**—छोड़ो; **एखनो......समय**—अब भी क्या समय नहीं हुआ; **रहिबे**—रहेगा; **एइ-ये**—यह जो; **उठिछे**—उठ रहा है; **एकि**—यह क्या; **हते**—से;

चारि भुज हते? ताइ हबे! तबे ताइ
होक। बुझि मोर रक्तपाते हिंसानल
निबे याबे। धरणीर सहिबे ना एत
हिंसा। राजहत्या! भाइ दिये भ्रातृहत्या!
समस्त प्रजार बुके लागिबे वेदना,
समस्त भायेर प्राण उठिबे काँदिया।
मोर रक्ते हिंसार घुचिबे मातृवेश,
प्रकाशिबे राक्षसी-आकार। एइ यदि
दयार विधान तोर, तबे ताइ होक!

[जयसिंहेर प्रवेश

जयसिंह। बल् चण्डी, सत्यइ कि राजरक्त चाइ?
एइ वेला बल्, बल् निज मुखे बल्
मानवभाषाय, बल् शीघ्र—सत्यइ कि
राजरक्त चाइ?

नेपथ्ये। चाइ।

जयसिंह। तबे महाराज,
नाम लह इष्टदेवतार। काल तव
निकटे एसेछे।

गोविन्द। की हयेछे जयसिंह?

जयसिंह। शुनिले ना निजकर्णे? देवीरे शुधानु

ताइ हबे—हो सकता है; **तबे......होक**—तो फिर वही हो; **बुझि**—लगता है, शायद; **निबे याबे**—बुझ जाएगी; **धरणीर.....हिंसा**—धरणी इतनी हिंसा सहन नहीं कर सकेगी; **दिये**—द्वारा; **बुके**—हृदय में; **उठिबे काँदिया**—रो उठेंगे; **घुचिबे**—मिट जाएगा; **प्रकाशिबे**—प्रकट होगा; **एइ**—यही।

सत्यइ—सचमुच ही; **चाइ**—चाहिए।

लह—लो; **एसेछे**—आ पहुँचा है।

की हयेछे—क्या बात है।

शुनिले ना—सुना नहीं; **देवीरे......चाइ**—मैंने देवी से पूछा, क्या सच-

सत्यइ कि राजरक्त चाइ—देवी निजे
कहिलेन 'चाइ'।

गोविन्द। देवी नहे जयसिंह,
कहिलेन रघुपति अन्तराल हते,
परिचित स्वर।

जयसिह। कहिलेन रघुपति ?
अन्तराल हते ?—नहे नहे, आर नहे !
केवलइ संशय हते संशयेर माझे
नामिते पारि ने आर ! यखनि कूलेर
काछे आसि, के मोरे ठेलिया देय येन
अतलेर माझे ! से ये अविश्वासदैत्य !
आर नहे ! गुरु होक किम्वा देवी होक,
एकइ कथा !—

छुरिका-उन्मोचन।......छुरि फेलिया

फुल ने मा ! ने मा ! फुल ने मा !
पाये धरि, शुधु फुल निये होक तोर
परितोष ! आर रक्त ना मा, आर रक्त
नय ! एओ ये रक्तेर मतो राङा, दुटि
जवाफुल ! पृथिवीर मातृवक्ष फेटे
उठियाछे फुटे, सन्तानेर रक्तपाते

मुच राजरक्त चाहिए; **निजे**—स्वयं; **कहिलेन**—कहा; **चाइ**—चाहिए।

नहे......नहे—नहीं, नहीं, अब और नहीं; **केवलइ**—अविरत; **नामिते..... आर**—और नहीं उतरना चाहता; **यखनि......माझे**—ज्यों ही किनारे के निकट आता हूँ त्यों ही न जाने कौन मानो अतल में मुझे ठेल देता है; **होक**—हो; **एकइ कथा**—एक ही बात है।

छुरिका-उन्मोचन—छुरी निकाल कर; **छुरि फेलिया**—छुरी फेंक कर।

फुल—फूल; **ने**—ले; **पाये धरि**—पैरों पड़ता हूँ; **शुधु**—केवल; **निये**—ले कर; **एओ......राङा**—यह भी तो रक्त की भाँति लाल है; **फेटे**—चीर कर; **उठियाछे फुटे**—प्रस्फुटित हो उठा है;

व्यथित धरार स्नेह-वेदनार मतो।
निते हबे! एइ निते हबे! आमि
नाहि डरि तोर रोष। रक्त नाहि दिब!
राङा' तोर आँखि! तोल् तोर खड़्ग! आन्
तोर श्मशानेर दल! आमि नाहि डरि।

[गोविन्दमाणिक्येर प्रस्थान

ए की हल हाय! देवी गुरु याहा छिल
एक दण्डे विसर्जन दिनु—विश्वमाझे
किछु रहिल ना आर!

[रघुपतिर प्रवेश

रघुपति। सकल शुनेछि
आमि। सब पण्ड हल। की करिलि, ओरे
अकृतज्ञ!

जयसिंह। दण्ड दाओ प्रभु!

रघुपति। सब भेङे
दिलि! ब्रह्मशाप फिराइलि अर्धपथ
हते! लङ्घिलि गुरुर वाक्य! व्यर्थ करे
दिलि देवीर आदेश! आपन बुद्धिरे
करिलि सकल हते बड़ो! आजन्मेर
स्नेहऋण शुधिलि एमनि करे!

निते हबे—लेना होगा; **एइ**—यही; **डरि**—डरता हूँ; **रोष**—क्रोध; **नाहि दिब**—नहीं दूँगा; **राङा**—लाल; **तोल**—उठा; **आन्**—ला; **ए......हल**—यह क्या हुआ; **याहा छिल**—जो कुछ भी था; **दिनु**—दे डाला; **किछु......आर**—अब कुछ भी नहीं बचा।

सब......हल—सब निष्फल हो गया; **पण्ड**—निष्फल, व्यर्थ; **की करिलि**—यह (तूने) क्या कर डाला। **दाओ**—दो।

सब......दिलि—सब कुछ नष्ट कर डाला; **फिराइलि**—लौटा दिया; **लङ्घिलि**—उल्लंघन कर डाला; **आपन बुद्धिरे**—अपनी बुद्धि को; **करिलि**—किया; **हते**—से; **शुधिलि**—चुकाया; **एमनि करे**—इसी प्रकार।

जयसिंह । दण्ड
दाओ पिता !
रघुपति । कोन् दण्ड दिब ?
जयसिंह । प्राणदण्ड ।
रघुपति । नहे। तार चेये गुरुदण्ड चाइ। स्पर्श
कर् देवीर चरण ।
जयसिंह । करिनु परश ।
रघुपति । बल् तबे, 'आमि एने दिब राजरक्त,
श्रावणेर शेष रात्रे देवीर चरणे ।'
जयसिंह । आमि एने दिब राजरक्त, श्रावणेर
शेष रात्रे देवीर चरणे ।
रघुपति । चले याओ ।

करिनु—कर लिया ।
आमि......दिब—मैं ला दूंगा ।
याओ—जाओ ।

तृतीय अङ्क

प्रथम दृश्य

मन्दिर

जनता । रघुपति ओ जयसिंह

रघुपति । तोरा एखाने सब की करते एलि ?

सकले । आमरा ठाकरुन दर्शन करते एसेछि ।

रघुपति । बटे ! दर्शन करते एसेछ ? एखनो तोमादेर चोखदुटो ये आछे से केवल बापेर पुण्ये । ठाकरुन कोथाय ? ठाकरुन ए राज्य छेड़े चले गेछेन । तोरा ठाकरुनके राखते पारलि कइ ? तिनि चले गेछेन ।

सकले । की सर्वनाश ! सेकि कथा ठाकुर ! आमरा की अपराध करेछि ।

निस्तारिणी । आमार बोनपो'र व्यामो छिल बलेइ या आमि क'दिन पूजो दिते आसते पारि नि ।

गोवर्धन । आमार पाँठा दुटो ठाकरुनकेइ देब बले अनेक दिन थेके मने करे रेखेछिलुम, एरइ मध्ये राजा बलि बन्ध करे दिले तो आमि की करब !

तोरा......एलि—तुम लोग यहाँ क्या करने आए हो ।

आमरा.....एसेछि—हमलोग देवी के दर्शन करने आए हैं ।

बटे......पुण्ये—अच्छा ! दर्शन करने आए हो; अगर अब भी तुमलोगों की दोनों आखें बची हुई हैं तो केवल बाप के पुण्य से; **छेड़े.....गेछेन**—छोड़ कर चली गई हैं; **तोरा.......कइ**—तुम लोग देवी को रख कहाँ पाये; **तिनि......गेछेन**—वे चली गईं ।

से......ठाकुर—यह कैसी बात (ब्राह्मण) देवता; **करेछि**—किया है ।

बोनपो'र—बहन के पुत्र (भानजे) को; **व्यामो**—रोग, व्याधि; **आमार.....
.....नि**—मेरा भानजा बीमार था इसीलिये मैं (इन) कुछ दिनों पूजा चढ़ाने नहीं आ सकी ।

आमार......करब—अपने दोनों बकरों को देवी की भेंट चढ़ा दूँगा, यह मैंने बहुत दिनों से मन ही मन तय कर रखा था, इसी बीच राजा ने बलि बन्द कर दी तो मैं क्या करूँ ।

हारु। एइ आमादेर गन्धमादन या मानत करेछिल ता माके देय नि बटे, किन्तु मा'ओ तो तेमनि ताके शास्ति दियेछेन। तार पिले बेड़े ढाक हये उठेछे—आज छ'टि मास बिछानाय प'ड़े। ता बेश हयेछे, आमादेरइ येन से महाजन, ताइ बले कि माके फाँकि दिते पारबे!

अक्रूर। चुप कर् तोरा। मिछे गोल करिस ने। आच्छा ठाकुर, मा केन चले गेलेन, आमादेर की अपराध हयेछिल?

रघुपति। मार जन्ये एक फोँटा रक्त दिते पारिस ने, एइ तो तोदेर भक्ति!

अनेके। राजार आज्ञा, ता आमरा की करब?

रघुपति। राजा के? मार सिंहासन तबे कि राजार सिंहासनेर नीचे? तबे एइ मातृहीन देशे तोदेर राजाके नियेइ थाक्, देखि तोदेर राजा की करे रक्षा करे।

सकलेर सभये गुन्गुन् स्वरे कथा

अक्रूर। चुप कर्।—सन्तान यदि अपराध क'रे थाके मा ताके दण्ड दिक, किन्तु एकेबारे छेड़े चले याबे ए कि मा'र मतो काज?

एइ......दियेछेन—इस अपने गन्धमादन ने जो मनौती की थी वह माँ को दे नहीं सका, यह तो ठीक है, लेकिन माँ ने उसे उसका वैसा ही दण्ड भी तो दिया है; **तार......उठेछे**—उसका प्लीहा बढ़ कर नगाड़ा हो उठा है; **आज......प'ड़े**—आज छ महीने से बिछौने पर पड़ा है; **ता......हयेछे**—चलो अच्छा हुआ; **आमादेरइ**—हमलोगों का ही; **येन**—जैसे; **ताइ......पारबे**—इसीलिये क्या वह माँ को चकमा दे पाएगा।

मिछे......ने—झूठमूठ शोर मत मचा; ; **आच्छा**—अच्छा; **मा.......हयेछिल**—माँ क्यों चली गईं, हमलोगों से क्या अपराध हुआ था।

मार......भक्ति—माँ के लिये एक बूँद रक्त नहीं दे सकते, बस यही तुम्हारी भक्ति है।

ता......करब—हमलोग क्या करें।

के—कौन; **तबे कि**—तब क्या; **तोदेर.....थाक्**—अपने राजा को ही ले कर रह; **देखि......करे**—देखें तुम्हारा राजा कैसे रक्षा करता है।

सन्तान.....काज—सन्तान यदि अपराध करे (तो) माँ उसे दण्ड दे, लेकिन एकदम छोड़ कर चली जाए यह क्या माँ के योग्य बात है;

बले दाओ की करले मा फिरबे।

रघुपति। तोदेर राजा यखन राज्य छेड़े याबे, मा'ओ तखन राज्ये फिरे पदार्पण करबे।

निस्तब्धभावे परस्परेर मुखावलोकन

रघुपति। तबे तोरा देखबि? एइखाने आय। अनेक दूर थेके अनेक आशा करे ठाकरुनके देखते एसेछिस, तबे एकबार चेये देख्।

मन्दिरेर द्वार-उद्‌घाटन। प्रतिमार पश्चाद्‌भाग दृश्यमान

सकले। ओकि! मार मुख कोन् दिके?

अक्रूर। ओरे, मा विमुख हयेछेन!

सकले। ओ मा, फिरे दाँड़ा मा! फिरे दाँड़ा मा! फिरे दाँड़ा मा! एक बार फिरे दाँड़ा! मा कोथाय! मा कोथाय! आमरा तोके फिरिये आनब मा। आमरा तोके छाड़ब ना। चाइ ने आमादेर राजा। याक राजा! मरुक राजा!

रघुपतिर निकट आसिया

जयसिंह। प्रभु, आमि कि एकटि कथाओ कब ना?

रघुपति। ना।

जयसिंह। सन्देहेर कि कोनो कारण नेइ?

रघुपति। ना।

बले......फिरबे—बताओ, क्या करने से माँ लौट सकती हैं।

तोदेर......याबे—तुम्हारा राजा जब राज्य छोड़ कर चला जाएगा; **मा'ओ**—माँ भी; **तखन**—तब।

तबे......देखबि—(अच्छा), तो तुमलोग देखोगे; **एइखाने**—यहाँ; **आय**—आ; **एसेछिस**—आए हो।

ओकि.....दिके—वह क्या, माँ का मुख किस ओर है।

फिरे.....मा—घूम कर खड़ी हो माँ; **आमरा.....मा**—हमलोग तुम्हें लौटा लाएँगे माँ; **चाइ ने**—नहीं चाहिए।

आसिया—आ कर।

आमि.....ना—में क्या एक बात भी न कहूँ।

सन्देहेर......नेइ—सन्देह का क्या कोई कारण नहीं।

जयसिंह। समस्तइ कि विश्वास करब ?

रघुपति। हाँ।

[अपर्णार प्रवेश

पार्श्वे आसिया

अपर्णा। जयसिंह ! एस जयसिंह, शीघ्र एस
ए मन्दिर छेड़े।

जयसिंह। विदीर्ण हइल वक्ष।

[रघुपति अपर्णा ओ जयसिंहेर प्रस्थान

[राजार प्रवेश

प्रजागण। रक्षा करो महाराज, आमादेर रक्षा
करो—माके फिरे दाओ !

गोविन्द। वत्सगण, करो
अवधान। सेइ मोर प्राणपण साध—
जननीरे फिरे एने देब।

प्रजागण। जय होक
महाराज, जय होक तव।

गोविन्द। एकबार
शुधाइ तोदेर, तोरा कि मायेर गर्भे
निस नि जनम ? मातृगण, तोमरा तो
अनुभव करियाछ कोमल हृदये
मातृस्नेहसुधा—बलो देखि मा कि नेइ ?
मातृस्नेह सब हते पवित्र प्राचीन;
सृष्टिर प्रथम दण्डे मातृस्नेह शुधु

समस्तइ.....करब—क्या इस सब पर विश्वास करूँ।

अवधान—मनोयोग; **जननीरे.....देव**—माँ को लौटा लाऊँगा। **होक**—हो।

शुधाइ तोदेर—तुम सबों से पूछूँ; **तोरा......जनम**—तुम सबों ने क्या माँ के गर्भ से जन्म नहीं लिया है; **तोमरा**—तुमलोगों ने; **करियाछ**—किया है; **बलो.....नेइ**—कहो तो सही क्या माँ नहीं हैं;

एकेला जागिया बसे छिल, नतनेत्रे
तरुण विश्वेरे कोले लये। आजिओ से
पुरातन मातृस्नेह रयेछे वसिया
धैर्येर प्रतिमा हये। सहियाछे कत
उपद्रव, कत शोक, कत व्यथा, कत
अनादर—चोखेर सम्मुखे भाये भाये
कत रक्तपात, कत निष्ठुरता, कत
अविश्वास—वाक्यहीन वेदना बहिया
तबु से जननी आछे बसे, दुर्बलेर
तरे कोल पाति, एकान्त ये निरुपाय
तारि तरे समस्त हृदय दिये। आज
की एमन अपराध करियाछि मोरा
यार लागि से असीम स्नेह चले गेल
चिरमातृहीन करे अनाथ संसार!
वत्सगण, मातृगण, बलो, खुले बलो—
की एमन करियाछि अपराध?

केहकेह। मा'र
बलि निषेध करेछ! बन्ध मा'र पूजा!

गोविन्द। निषेध करेछि बलि, सेइ अभिमाने
विमुख हयेछे माता! आसिछे मड़क,
उपवास, अनावृष्टि, अग्नि, रक्तपात—

एकेला—अकेला; **बसे छिल**—बैठा था; **विश्वेरे**—विश्व को; **कोले लये**—गोद में ले कर; **आजिओ**—आज भी; **रयेछे बसिया**—बैठा हुआ है; **हये**—हो कर; **सहियाछे**—सहा है; **कत**—कितना; **भाये भाये**—भाई भाई में; **बहिया**—वहन करती हुई; **तबु**—तो भी; **दुर्बलेर......पाति**—दुर्बल के लिए गोद बिछा कर; **एकान्त**—नितान्त; **ये**—जो; **तारि तरे**—उसी के लिए; **एमन**—ऐसा; **यार लागि**—जिसके लिये; **बलो**—बोलो।

केहकेह—कोई कोई; **करेछ**—किया है।

मड़क—महामारी;

मा तोदेर एमनि मा बटे ! दण्डे दण्डे
क्षीण शिशुटिरे स्तन्य दिये बाँचाइये
तोले माता, से कि तार रक्तपानलोभे ?
हेन मातृ-अपमान मने स्थान दिलि
यबे, आजन्मेर मातृस्नेहस्मृतिमाझे
व्यथा बाजिल ना ? मने पड़िल ना मा'र
मुख ?—'रक्त चाइ' 'रक्त चाइ' गरजन
करिछे जननी, अबोला दुर्बल जीव
प्राणभये काँपे थरथर—नृत्य करे
दयाहीन नरनारी रक्तमत्तताय—
एइ कि मायेर परिवार ? पुत्रगण,
एइ कि मायेर स्नेहछवि ?

प्रजागण । मूर्ख मोरा
बुझिते पारि ने ।

गोविन्द । बुझिते पार ना ! शिशु
दु दिनेर, किछु ये बोझे ना आर, सेओ
तार जननीरे बोझे । सेओ बोझे, भय
पेले निर्भय मायेर काछे; सेओ बोझे
क्षुधा पेले दुग्ध आछे मातृस्तने; सेओ
व्यथा पेले काँदे मार मुख चेये ।—तोरा

मा......बटे—तुम्हारी माँ क्या ऐसी ही माँ है; **बाँचाइये.....माता**—माँ बचा लेती है; **से......तार**—वह क्या उसके; **हेन**—ऐसा; **दिलि यबे**—जब दिया; **बाजिल ना**—ध्वनित नहीं हुई; **रक्त चाइ**—रक्त चाहिए; **अबोला**—मूक, निरीह; **एइ......परिवार**—यही क्या माँ का परिवार है; **स्नेहछवि**—स्नेहमूर्ति ।

बुझिते......ना—समझ नहीं सकते; **किछु......बोझे**—जो और कुछ नहीं समझता वह भी अपनी माँ को समझता (जानता) है; **पेले**—पाने पर; **काछे**—निकट; **काँदे**—रोता है; **मार.....चेये**—माँ का मुख देख कर;

एमनि कि भुले भ्रान्त हलि, माके गेलि
भुले ? बुझिते पारो ना माता दयामयी !
बुझिते पारो ना जीवजननीर पूजा
जीवरक्त दिये नहे, भालोबासा दिये !
बुझिते पारो ना—भय येथा मा सेखाने
नय, हिंसा येथा मा सेखाने नाइ, रक्त
येथा मा'र सेथा अश्रुजल ! ओरे वत्स,
की करिया देखाब तोदेर, की वेदना
देखेछि मायेर मुखे, की कातर दया,
की भर्त्सना अभिमान-भरा छलछल
नेत्रे ताँर ! देखाइते पारिताम यदि,
सेइ दण्डे चिनितिस आपनार माके ।
दया एल दीनवेशे मन्दिरेर द्वारे
अश्रुजले मुछे दिते कलङ्केर दाग
मा'र सिंहासन हते—सेइ अपराधे
माता चले गेल रोषभरे, एइ तोरा
करिलि विचार ?

[अपर्णार प्रवेश

प्रजागण । आपनि चाहिया देखो,
विमुख हयेछे माता सन्तानेर 'परे ।

तोरा......भुले—तुमलोग क्या भूल में पड़ कर ऐसे भ्रान्त हो गए कि माँ को भूल गए; **दिये**—दे कर; **नहे**—नहीं; **भालोबासा दिये**—प्रेम दे कर (प्रेम के द्वारा); **भय...... नय**—जहाँ भय है वहाँ माँ नहीं हैं; **की......तोदेर**—तुम्हें किस तरह दिखाऊँ; **की......मुखे**—माँ के मुख पर मैंने कैसी वेदना देखी है; **की......ताँर**—अभिमान (प्रियजन के त्रुटिपूर्ण आचरण के कारण मनोवेदना) से भरी उनकी छलछलायी आँखों में कैसी भर्त्सना है; **देखाइते......यदि**—यदि दिखा पाता; **सेइ......माके** उसी क्षण तुम अपनी माँ को पहचान लेते; **एल**—आई; **मुछे दिते**—पोंछ डालने के लिये; **करिलि**—किया ।

आपनि......देखो—स्वयं ही आँख उठा कर देखो ।

मन्दिरेर द्वारे उठिया

अपर्णा। विमुख हयेछे माता ! आय तो मा, देखि,
आय तो समुखे एकबार !

प्रतिमा फिराइया

एइ देखो
मुख फिरायेछे माता।

सकले। फिरेछे जननी !
जय होक ! जय होक !

सकले मिलिया गान

थाकते आर तो पारलि ने मा, पारलि कइ ?
कोलेर सन्तानेरे छाड़लि कइ ?
दोषी आछि अनेक दोषे, छिलि बसे क्षणिक रोषे,
मुख तो फिरालि शेषे, अभय चरण काड़लि कइ ?

[सकलेर प्रस्थान

[जयसिंह ओ रघुपतिर प्रवेश

जयसिंह। सत्य बलो, प्रभु, तोमारि ए काज ?

रघुपति। सत्य
केन ना बलिब ? आमि कि डराइ सत्य
बलिबारे ? आमारि ए काज। प्रतिमार
मुख फिराये दियेछि आमि। की बलिते
चाओ बलो। हयेछ गुरुर गुरु तुमि,

थाकते......कइ—माँ तुमसे और नहीं रहा गया, कहाँ रहा गया; **कोलेर ......कइ**—गोद की सन्तान को छोड़ कहाँ सकीं; **छिलि बसे**—बैठी हुई थीं; **शेषे**—अन्त में; **काड़लि कइ**—निकाला कहाँ।

सत्य.....काज—सत्य कहो, प्रभु, यह तुम्हारा ही काम है।

सत्य......बलिब—सत्य क्यों नहीं कहूँगा; **आमि......बलिबारे**—मैं क्या सच बोलते डरता हूँ; **आमारि.....काज**—यह मेरा ही काम है; **दियेछि**—दिया है; **की.....बलो**—क्या कहना चाहते हो, कहो; **हयेछ**—हुए हो; **गुरुर गुरु**—गुरु के गुरु;

की भर्त्सना करिवे आमारे? दिबे कोन्
उपदेश?

जयसिंह। बलिबार किछु नाइ मोर।

रघुपति। किछु नाइ? कोनो प्रश्न नाइ मोर काछे?
सन्देह जन्मिले मने मीमांसार तरे
चाहिबे ना गुरु-उपदेश? एत दूरे
गेछ? मने एतइ कि घटेछे विच्छेद?
मूढ़, शोनो। सत्यइ तो विमुख हयेछे
देवी, किन्तु ताइ ब'ले प्रतिमार मुख
नाहि फिरे। मन्दिरे ये रक्तपात करि
देवी ताहा करे पान, प्रतिमार मुखे
से रक्त उठे ना। देवतार असन्तोष
प्रतिमार मुखे प्रकाश ना पाय। किन्तु
मूर्खदेर केमने बुझाब! चोखे चाहे
देखिबारे, चोखे याहा देखिबार नय।
मिथ्या दिये सत्येरे बुझाते हय ताइ।
मूर्ख, तोमार आमार हाते सत्य नाइ।
सत्येर प्रतिमा सत्य नहे, कथा सत्य
नहे, लिपि सत्य नहे, मूर्ति सत्य नहे—

आमारे—मेरी; **दिबे**—दोगे; **बलिबार.....मोर**—मुझे कुछ नहीं कहना है।
किछु नाइ—कुछ नहीं; **मोर काछे**—मेरे निकट; **जन्मिले**—उत्पन्न होने पर; **तरे**—लिए; **चाहिबे ना**—नहीं माँगोगे; **एत.....गेछ**—(मुझसे) इतनी दूर चले गए हो; **मने......विच्छेद**—मन में क्या इतना विभेद (पार्थक्य) हो गया है; **शोनो**—सुनो; **सत्यइ**—सत्य ही; **ताइ ब'ले**—इसीलिये; **करि**—करता हूँ; **ताहा**—उसे; **करे**—करती है; **प्रकाश......पाय**—प्रकट नहीं होता; **केमने बुझाब**—कैसे समझाऊँ; **चोखे......नय**—उसे आँखों से देखना चाहते हैं जो आँखों से देखने की बात नहीं है; **दिये**—द्वारा; **मिथ्या......ताइ**—मिथ्या के द्वारा इसीलिये सत्य को समझाना पड़ता है; **तोमार......नाइ**—तुम्हारी हमारी मुठ्ठी में सत्य नहीं है;

चिन्ता सत्य नहे। सत्य कोथा आछे—केह
नाहि जाने तारे, केह नाहि पाय तारे।
सेइ सत्य कोटि मिथ्यारूपे चारि दिके
फाटिया पड़ेछे; सत्य ताइ नाम धरे
महामाया, अर्थ तार 'महामिथ्या'। सत्य
महाराज बसे थाके राज-अन्तःपुरे—
शत मिथ्या प्रतिनिधि तार, चतुर्दिके
मरे खेटे खेटे।—शिरे हात दिये, ब'से
ब'से भाबो—आमार अनेक काज आछे!
आबार गियेछे फिरे प्रजादेर मन।

जयसिंह। ये तरङ्ग तीरे निये आसे, सेइ फिरे
अकूलेर माझखाने टेने निये याय।
सत्य नहे, सत्य नहे, सत्य नहे—सबइ
मिथ्या! मिथ्या! मिथ्या! देवी नाइ प्रतिमार
माझे, तबे कोथा आछे? कोथाओ से नाइ!
देवी नाइ! धन्य धन्य धन्य मिथ्या तुमि!

द्वितीय दृश्य

प्रासादकक्ष

गोविन्दमाणिक्य ओ चाँदपाल

चाँदपाल। प्रजारा करिछे कुमन्त्रणा। मोगलेर
सेनापति चलियाछे आसामेर दिके
युद्ध-लागि, निकटेइ आछे, दुइ-चारि

केह......तारे—कोई उसे नहीं जानता; **केह......तारे**—कोई उसे नहीं पाता; **फाटिया पड़ेछे**—फट पड़ा है; **ताइ**—इसीलिये; **तार**—उसका; **बसे थाके**—बैठा रहता है; **खेटे खेटे**—मेहनत करते करते; **ब'से......भाबो**—बैठे बैठे सोचो।

निये आसे—ले आती है; **टेने......याय**—खींच ले जाती है; **कोथाओ...... नाइ**—वह (तो) कहीं भी नहीं है।

दिवसेर पथे—प्रजारा ताहारि काछ
पाठावे प्रस्ताव तोमारे करिते दूर
सिंहासन हते।

गोविन्द। आमारे करिबे दूर?
मोर 'परे एत असन्तोष?

चाँदपाल। महाराज,
सेवकेर अनुनय राखो—पशुरक्त
एत यदि भालो लागे निष्ठुर प्रजार
दाओ ताहादेर पशु, राक्षसी प्रवृत्ति
पशुर उपर दिया याक। सर्वदाइ
भये भये आछि कखन की हये पड़।

गोविन्द। आछे भय जानि चाँदपाल, राजकार्य
सेओ आछे। पाथार भीषण, तबु तरी
तीरे निये येते हबे। गेछे कि प्रजार
दूत मोगलेर काछे?

चाँदपाल। एतक्षणे गेछे।

गोविन्द। चाँदपाल, तुमि तबे याओ एइ वेला,
मोगलेर शिबिरेर काछाकाछि थेको—
यखन या घटे सेथा पाठायो संवाद।

ताहारि काछे—उसीके पास; **तोमारे**—तुम्हें; **हते**—से।

दाओ—दो; **ताहादेर**—उन्हें; **पशुर......याक**—पशु पर हो कर निकल जाय; **सर्वदाइ......पड़े**—बराबर डरा डरा-सा रहता हूँ कब क्या हो जाय।

आछे.....जानि—भय है मैं जानता हूँ; **सेओ आछे**—वह भी है; **पाथार**—समुद्र; **तबु**—फिर भी; **तरी......हबे**—नौका किनारे पर लगानी होगी; **गेछे कि**—गया है क्या; **काछे**—निकट।

एतक्षणे गेछे—अब तक चला गया होगा।

याओ—जाओ; **एइ वेला**—इसी समय, अभी; **काछाकाछि**—आस-पास; **थेको**—रहो; **यखन......संवाद**—जब जो हो उसकी खबर भेजना।

चाँदपाल। महाराज, सावधाने थेको हेथा प्रभु,
अन्तरे बाहिरे शत्रु।

[प्रस्थान

[गुणवतीर प्रवेश

गोविन्द। प्रिये, बड़ो शुष्क,
बड़ो शून्य ए संसार। अन्तरे बाहिरे
शत्रु। तुमि एसे क्षणेक दाँड़ाओ हेसे,
भालोबेसे चाओ मुखपाने। प्रेमहीन
अन्धकार षड़यन्त्र विपद विद्वेष
सबार उपरे होक तव सुधामय
आविर्भाव, घोर निशीथेर शिरोदेशे
निर्निमेष चन्द्रेर मतन। प्रियतमे,
निरुत्तर केन? अपराध-विचारेर
एइ कि समय? तृषार्त हृदय यबे
मुमूर्षुर मतो चाहे मरुभूमिमाझे
सुधापात्र हाते निये फिरे चले याबे?

[गुणवतीर प्रस्थान

चले गेले! हाय, दुर्वह जीवन!

[नक्षत्ररायेर प्रवेश

स्वगत

नक्षत्रराय। येथा याइ, सकलेइ बले, 'राजा हबे?'—

हेथा—यहाँ।

ए—यह; **एसे**—आ कर; **दाँड़ाओ**—खड़ी होओ; **हेसे**—हँस कर; **भालोबेसे**—प्यार कर (प्यार से); **चाओ**—देखो; **मुखपाने**—मुख की ओर; **सबार......होक**—सब के ऊपर हो; **केन**—क्यों; **अपराध......समय**—अपराध के विचार (न्याय) करने का क्या यही समय है; **यबे**—जब; **मतो**—भाँति; **चाहे**—देखे; **हाते......याबे**—हाथ में लिये चली जाओगी; **चले गेले**—(तुम) चली गई।

येथा......बले—जहाँ जाता हूँ सभी कहते हैं; **राजा हबे**—राजा होओगे;

'राजा हबे ?'—ए बड़ो आश्चर्य काण्ड। एका
वसे थाकि, तबु शुनि के येन बलिछे—
राजा हबे ? राजा हबे ? दुइ काने येन
बासा करियाछे दुइ टिये पाखि, एक
बुलि जाने शुधु—राजा हबे ? राजा हबे ?
भालो बापु, ताइ हब, किन्तु राजरक्त
से कि तोरा एने दिबि ?

गोविन्द। नक्षत्र !

नक्षत्र सचकित

नक्षत्र !
आमारे मारिबे तुमि ? बलो, सत्य बलो,
आमारे मारिबे ? एइ कथा जागितेछे
हृदये तोमार निशिदिन ? एइ कथा
मने निये मोर साथे हासिया बलेछ
कथा, प्रणाम करेछ पाये, आशीर्वाद
करेछ ग्रहण, मध्याह्ने आहारकाले
एक अन्न भाग करे करेछ भोजन
एइ कथा निये ? बुके छुरि देबे ? ओरे
भाइ, एइ बुके टेने नियेछिनु तोरे

एका......थाकि—अकेला बैठा रहता हूँ; **तबु......बलिछे**—तो भी सुनता हूँ कौन जैसे कहता है; **दुइ......पाखि**—दोनों कानों में जैसे दो सुग्गे वास करते हैं; **एक ....शुधु**—केवल एक बोली जानते हैं; **भालो**—अच्छा; **बापु**—(स्नेह संबोधन); **ताइ हब**—वही होऊँगा; **किन्तु......दिबि**—लेकिन वह राजरक्त क्या तुम ला दोगे।

आमारे मारिबे—मुझे मारोगे; **बलो**—बोलो; **एइ कथा**—यही बात; **एइ......कथा**—इसी बात को मन में रख मेरे साथ हँस कर बातें की हैं; **करेछ**—किया है; **पाये**—पैरों में; **बुके**—हृदय में, छाती में; **देबे**—दोगे, मारोगे; **एइ......तोरे**—इसी छाती में तुम्हें खींच लिया था;

ए कठिन मर्तभूमि प्रथम चरणे
तोर बेजेछिल यबे—एइ बुके टेने
नियेछिनु तोरे, येदिन जननी, तोर
शिरे शेष स्नेहहस्त रेखे, चले गेल
धराधाम शून्य करि—आज सेइ तुइ
सेइ बुके छुरि दिबि? एक रक्तधारा
बहितेछे दोँहार शरीरे, येइ रक्त
पितृपितामह हते बहिया एसेछे
चिरदिन भाइदेर शिराय शिराय—
सेइ शिरा छिन्न करे दिये सेइ रक्त
फेलिबि भूतले? एइ बन्ध करे दिनु
द्वार, एइ ने आमार तरवारि, मार्
अवारित वक्षे, पूर्ण होक मनस्काम!

नक्षत्रराय। क्षमा करो! क्षमा करो भाइ! क्षमा करो!

गोविन्द। एस वत्स, फिरे एस! सेइ वक्षे फिरे
एस! क्षमा भिक्षा करितेछ? ए संवाद
शुनेछि यखन, तखनि करेछि क्षमा।
तोरे क्षमा ना करिते अक्षम ये आमि।

नक्षत्रराय। रघुपति देय कुमन्त्रणा! रक्ष मोरे
तार काछ हते!

गोविन्द। कोनो भय नेइ भाइ!

यबे—जब; **येदिन**—जिस दिन; **सेइ तुइ**—वही तू; **बहितेछे**—बह रही है; **दोँहार**—दोनों के; **फेलिबि**—गिराएगा; **एइ......दिनु**—यह लो दरवाजा बन्द कर दिया; **एइ.....तरवारि**—यह ले मेरी तलवार; **अवारित**—मुक्त, बिना बाधा के; **होक**—हो।

फिरे एस—लौट आओ; **करितेछ**—माँग रहे हो; **शुनेछि**—सुना है; **यखन**—जब; **तखनि**—उसी समय; **तोरे......आमि**—तुम्हें क्षमा न करूँ, मुझमें ऐसी क्षमता कहाँ है।

देय—देता है।

तृतीय दृश्य

अन्तःपुरकक्ष

गुणवती

गुणवती। तबु तो हल ना। आशा छिल मने मने
कठिन हइया थाकि किछुदिन यदि
ताहा हले आपनि आसिबे धरा दिते
प्रेमेर तृषाय। एत अहंकार छिल
मने। मुख फिरे थाकि, कथा नाहि कइ,
अश्रुओ फेलि ने, शुधु शुष्क रोष, शुधु
अवहेला—एमन तो कतदिन गेल!
शुनेछि नारीर रोष पुरुषेर काछे
शुधु शोभा आभामय, ताप नाहि ताहे—
हीरकेर दीप्तिसम! धिक् थाक् शोभा!
ए रोष वज्रेर मतो ह'त यदि, तबे
पड़ित प्रासाद-'पर, भाङित राजार
निद्रा, चूर्ण ह'त राज-अहंकार, पूर्ण
ह'त रानीर महिमा! आमि रानी, केन
जन्माइले ए मिथ्या विश्वास! हृदयेर
अधीश्वरी तव—एइ मन्त्र प्रतिदिन
केन दिले काने? केन ना जानाले मोरे
आमि क्रीतदासी, राजार किङ्करी शुधु,
रानी नहि—ताहा हले आजिके सहसा
ए आघात, ए पतन सहिते ह'त ना!

तबु......ना—फिर भी तो नहीं हुआ; **हइया थाकि**—हो कर रहूँ; **ताहा हले**—ऐसा होने पर; **आपनि......तृषाय**—प्रेम की प्यास से अपने आप बँध जाएगा; **एत**—इतना; **छिल**—था; **कथा....कइ**—बात नहीं करती; **फेलि ने**—नहीं बहाए; **एमन.......गेल**—इसी तरह तो कितने दिन निकल गए; **ताहे**—उसमें; **थाक्**—रहे; **केन जन्माइले**—क्यों पैदा किया।

[ध्रुवेर प्रवेश

कोथा यास तुइ ?

ध्रुव। आमारे डेकेछे राजा।

[प्रस्थान

गुणवती। राजार हृदयरत्न एइ से बालक !
ओरे शिशु, चुरि करे नियेछिस तुइ
आमार सन्तानतरे ये आसन छिल।
ना आसिते आमार बाछारा, ताहादेर
पितृस्नेह-'परे तुइ बसाइलि भाग !
राजहृदयेर सुधापात्र हते, तुइ
निलि प्रथम अञ्जलि——राजपुत्र एसे
तोरइ कि प्रसाद पाबे ओरे राजद्रोही !——
मा गो महामाया, ए की तोर अविचार !
एत सृष्टि, एत खेला तोर——खेलाच्छले
दे आमारे एकटि सन्तान——दे जननी,
शुधु एइटुकु शिशु, कोलटुकु भ'रे
याय याहे। तुइ या बासिस भालो, ताइ
दिब तोरे।

[नक्षत्ररायेर प्रवेश

नक्षत्र, कोथाय याओ ? फिरे
याओ केन ? एत भय कारे तव ? आमि

कोथा.....तुइ—तू कहाँ जाता है।

आमारे.....राजा—मुझे राजा ने बुलाया है।

चुरि......तुइ—तूने चुरा लिया है; **सन्तानतरे**—सन्तान के लिये; **ये**—जो; **ना......बाछारा**—मेरे बच्चों के न आने से (सन्तान न होने से); **ताहादेर**—उनके; **तुइ......भाग**—तूने हिस्सा बँटा लिया; **निलि**—लिया; **एसे**—आ कर; **तोरइ**—तेरा ही; **एइटुकु**—इतना-सा; **कोल.....याहे**—जिससे गोद भर जाय; **तुइ......तोरे**—तुझे जो प्रिय हो मैं तुझे वही दूँगी।

कोथाय याओ—कहाँ जाते हो; **फिरे......केन**—लौटे क्यों जाते हो; **एत.....तव**—तुम्हें किसका इतना भय है।

नारी, अस्त्रहीन, बलहीन, निरुपाय,
असहाय—आमि कि भीषण एत?

नक्षत्रराय। ना, ना,
मोरे डाकियो ना।

गुणवती। केन, की हयेछे?

नक्षत्रराय। आमि
राजा नाहि हब।

गुणवती। नाइ हले। ताइ बले
एत आस्फालन केन?

नक्षत्रराय। चिरकाल बेँचे
थाक् राजा, आमि येन युवराज थेके
मरि।

गुणवती। ताइ मरो। शीघ्र मरो। पूर्ण होक
मनोरथ। आमि कि तोमार पाये ध'रे
रेखेछि बाँचिये?

नक्षत्रराय। तबे की बलिबे बलो।

गुणवती। ये चोर करिछे चुरि तोमारइ मुकुट
ताहारे सराये दाओ। बुझेछ कि?

नक्षत्रराय। सब
बुझियाछि, शुधु के से चोर बुझि नाइ।

मोरे.....ना—मुझे मत पुकारो।

केन.....हयेछे—क्यों, क्या बात है।

नाइ हले—न हुए सही।

आमि.....बाँचिये—मैंने क्या तेरे पैरों पड़ कर तुझे जीवित रखा है।

तबे......बलो—तब क्या कहती हो, कहो।

ये.....दाओ—जिस चोर ने तुम्हारे ही मुकुट की चोरी की है; **ताहारे..... दाओ**—उसे हटा दो, दूर कर दो।

सब......नाइ—सब समझ चुका हूँ, वह चोर कौन है केवल (यही) नहीं समझा।

गुणवती। ओइ-ये बालक ध्रुव। बाड़िछे राजार
कोले, दिने दिने उँचु हये उठितेछे
मुकुटेर पाने।

नक्षत्रराय। ताइ बटे! एतक्षणे
बुझिलाम सब। मुकुट देखेछि बटे
ध्रुवेर माथाय। आमि बलि शुधु खेला।

गुणवती। मुकुट लइया खेला? बड़ो काल-खेला।
एइ वेला भेङे दाओ खेला—नहे तुमि
से खेलार हइबे खेलेना।

नक्षत्रराय। ताइ बटे!
ए तो भालो खेला नय।

गुणवती। अर्धरात्रे आजि
गोपने लइया तारे देवीर चरणे
मोर नामे कोरो निवेदन। तार रक्ते
निबे याबे देवरोषानल, स्थायी हबे
सिंहासन एइ राजवंशे—पितृलोक
गाहिबेन कल्याण तोमार। बुझेछ कि?

नक्षत्रराय। बुझियाछि।

गुणवती। तबे याओ। या बलिनु करो।
मने रेखो, मोर नामे कोरो निवेदन।

बाड़िछे—बड़ा हो रहा है; **कोले**—गोद में; **दिने......पाने**—दिन पर दिन ऊँचा हो कर मुकुट की ओर बढ़ रहा है।

ताइ......सब—ठीक वही, अब सब समझ गया; **देखेछि**—देखा है; **आमि......खेला**—मैंने (उसे) केवल खेल समझा था।

लइया—ले कर; **काल-खेला**—सर्वनाशकारी खेल; **एइ वेला**—इसी समय; **नहे......खेलेना**—नहीं तो तुम उस खेल के खिलौने बन जाओगे।

ए......नय—यह खेल तो अच्छा नहीं है।

तारे—उसे; **कोरो**—करो; **तार......याबे**—उसके रक्त से बुझ जाएगी; **गाहिबेन**—गाएँगे।

तबे याओ—तो फिर जाओ; **या.....करो**—जो (मैंने) कहा है, करो;

नक्षत्रराय। ताइ हवे। मुकुट लइया खेला! ए की
सर्वनाश! देवीर सन्तोष, राज्यरक्षा,
पितृलोक—बुझिते किछुइ बाकि नेइ।

चतुर्थ दृश्य

मन्दिरसोपान

जयसिंह

जयसिंह। देवी, आछ, आछ तुमि। देवी, थाको तुमि।
ए असीम रजनीर सर्वप्रान्तशेषे
यदि थाको कणामात्र हये, सेथा हते
क्षीणतम स्वरे साड़ा दाओ, बलो मोरे
'वत्स, आछि!'—नाइ, नाइ, नाइ, देवी नाइ!
नाइ? दया करे थाको! अयि मायामयी
मिथ्या, दया कर्, दया कर् जयसिंहे,
सत्य हये ओठ्। आशैशव भक्ति मोर,
आजन्मेर प्रेम तोरे प्राण दिते नारे?
एत मिथ्या तुइ?—ए जीवन कारे दिलि
जयसिंह! सब फेले दिलि सत्यशून्य,
दयाशून्य, मातृशून्य सर्वशून्य-माझे!

[अपर्णार प्रवेश

अपर्णा, आबार एसेछिस? ताड़ालेम
मन्दिरबाहिरे, तबु तुइ अनुक्षण

बाकि—बाकी।

साड़ा—(आह्वान का) उत्तर; **नाइ**—नहीं है; **थाको**—रहो; **दया...... जयसिंहे**—जयसिंह पर दया कर; **हये ओठ्**—हो उठ; **आजन्मेर...... नारे**—मेरा जीवन भर का प्रेम तुझे प्राण नहीं दे सका (प्राणवान नहीं कर सका); **एत......तुइ**—तू इतनी मिथ्या है; **ए......दिलि**—यह जीवन किसे दिया; **सब.....दिलि**—सब फेंक दिया; **आबार एसेछिस**—फिर आई है; **ताड़ालेम**—भगाया; **तबु......मने**—तो भी दरिद्र के मन में सुख की

आशे-पाशे चारि दिके घुरिया बेड़ास
सुखेर दुराशा-सम दरिद्रेर मने?
सत्य आर मिथ्याय प्रभेद शुधु एइ! —
मिथ्यारे राखिया दिइ मन्दिरेर माझे
बहुयत्ने, तबुओ से थेकेओ थाके ना।
सत्येरे ताड़ाये दिइ मन्दिरबाहिरे
अनादरे, तबुओ से फिरे फिरे आसे।
अपर्णा, यास ने तुइ—तोरे आमि, आर
फिराब ना। आय, एइखाने बसि दोँहे।
अनेक हयेछे रात। कृष्णपक्षशशी
उठितेछे तरु-अन्तराले। चराचर
सुप्तिमग्न, शुधु मोरा दोँहे निद्राहीन।
अपर्णा, विषादमयी, तोरेओ कि गेछे
फाँकि दिये मायार देवता? देवताय
कोन् आवश्यक! केन तारे डेके आनि
आमादेर छोटोखाटो सुखेर संसारे?
तारा कि मोदेर व्यथा बुझे? पाषाणेर
मतो, शुधु चेये थाके! आपन भायेरे

दुराशा के समान तू आसपास चारों ओर घूमती फिरती है; **आर**—और; **मिथ्याय**—मिथ्या में; **शुधु एइ**—केवल यही है; **मिथ्यारे.....बहुयत्ने**—बड़े यत्न से मिथ्या को मन्दिर में बैठा देते हैं; **तबुओ......ना**—फिर भी यह रह कर भी नहीं रहती; **सत्येरे......आसे**—सत्य को मंदिर के बाहर अनादर-पूर्वक भगा देते हैं तो भी वह लौट आता है; **यास......तुइ**—तू मत जा; **तोरे......ना**—तुझे मैं और नहीं लौटाऊँगा; **आय......दोँहे**—आ, हम दोनों यहाँ बैठें; **हयेछे**—हो गई है; **उठितेछे**—उठ रहा है; **तोरेओ.....देवता**—क्या तुझे भी मायावी देवता ने धोखा दिया है; **देवताय......आवश्यक**—देवता की क्या ज़रूरत है; **केन....... संसारे**—क्यों उसे अपने छोटे मोटे सुखी संसार में हमलोग बुला लाते हैं; **तारा......बुझे**—वे क्या हमारी व्यथा समझते हैं; **पाषाणेर......थाके**—पाषाण के समान केवल निर्निमेष देखते रहते हैं; **आपन......तारे**—अपने भाई को

प्रेम हते वञ्चित करिया, सेइ प्रेम
दिइ तारे—से कि तार कोनो काजे लागे ?
ए सुन्दरी सुखमयी धरती हइते
मुख फिराइया, तार दिके चेये थाकि—
से कोथाय चाय ? तार काछे क्षुद्र बटे,
तुच्छ बटे, तबु तो आमार मातृधरा;
तार काछे कीटवत्, तबु तो आमार
भाइ; अवहेले अन्धरथचक्रतले
दलिया चलिया याय, तबु से दलित,
उपेक्षित, तारा तो आमार आपनार।
आय भाइ, निर्भये देवताहीन हये
आरो काछाकाछि सबे बेँधे बेँधे थाकि।
रक्त चाइ ? स्वरगेर ऐश्वर्य त्यजिया
ए दरिद्र धरातले ताइ कि एसेछ ?
सेथाय मानव नेइ, जीव नेइ केह,
रक्त नेइ, व्यथा पाबे हेन किछु नेइ—
ताइ स्वर्गे हयेछे अरुचि ? आसियाछ
मृगया करिते, निर्भयविश्वाससुखे

प्रेम से वञ्चित कर उसे (देवता को) वही प्रेम देते हैं; **से......लागे**—वह क्या उसके किसी काम आता है; **ए......चाय**—इस सुन्दर, आनंदमय पृथ्वी की ओर से मुख फिरा कर उसकी ओर देखते रहते हैं (लेकिन) वह (देवता) न जाने किस ओर देखता रहता है; **तार......धरा**—उसके निकट वह अवश्य ही क्षुद्र और तुच्छ है फिर भी तो वह हमारी धरती माता है; **तार.....भाइ**—उसके निकट कीट के समान है फिर भी तो वह मेरा भाई है; **अवहेले**—अवहेला से; **दलिया......याय**—कुचल कर चला जाता है; **तबु से**—फिर भी वह; **तारा...... आपनार**—वे तो मेरे अपने हैं; **आय**—आओ; **हये**—हो कर; **आरो...... थाकि**—और भी निकट हो कर सब परस्पर बँध कर रहें; **चाइ**—चाहिए; **ताइ......एसेछ**—क्या इसीलिये आई हो; **सेथाय**—वहाँ; **नेइ**—नहीं है; **व्यथा ......अरुचि**—जो व्यथा पाए ऐसा कुछ नहीं है इसीलिये स्वर्ग से अरुचि हो गई है; **आसियाछ......करिते**—शिकार खेलने आई हो;

येथा बासा बेँधे आछे मानवेर क्षुद्र
परिवार ?......अपर्णा, बालिका, देवी नाइ !

अपर्णा। जयसिंह तबे चले एस, ए मन्दिर
छेड़े।

जयसिंह। याब, याब, ताइ याब, छेड़े चले
याब। हाय रे अपर्णा, ताइ येते हबे।
तबु, ये राजत्वे आजन्म करेछि वास
परिशोध क'रे दिये तार राजकर
तबे येते पाब। थाक् ओ-सकल कथा।
देख् चेये गोमतीर शीर्ण जलरेखा
ज्योत्स्नालोके पुलकित—कलध्वनि तार
एक कथा शतबार करिछे प्रकाश।
आकाशेते अर्धचन्द्र पाण्डुमुखच्छवि
श्रान्तिक्षीण—बहुरात्रिजागरणे येन
पड़ेछे चाँदेर चोखे आधेक पल्लव
घुमभारे। सुन्दर जगत् ! हा अपर्णा,
एमन रात्रिर माझे देवी नाइ। थाक्
देवी। अपर्णा, जानिस किछु सुखभरा
सुधाभरा कोनो कथा ? शुधु ताइ बल् !
या शुनिले मुहूर्ते अतले मग्न हये

येथा—जहाँ; **बासा बेँधे**—घर बना कर; **आछे**—है।

तबे......छेड़े—तब चले आओ, इस मंदिर को छोड़ कर।

याब—जाऊँगा; **छेड़े.....याब**—छोड़ कर चला जाऊँगा; **येते हबे**—जाना होगा; **ये राजत्वे**—जिस राज्य में; **करेछि**—किया है; **परिशोध......पाब**—उसका राजकर चुकाने के बाद ही जा पाऊँगा; **थाक्......कथा**—रहने दो यह सब बात; **देख् चेये**—देखो; **शतबार**—सैकड़ों बार; **बहु......घुमभारे**—अधिक रात तक जगे रहने के कारण नींद के बोझ से चाँद की पलकें जैसे आधी झुक आयी हैं; **एमन**—ऐसी; **जानिस......कथा**—आनंद और सुधा से पूर्ण कोई बात जानती हो; **शुधु......बल्**—केवल वही कह; **या......ताप**—जिसे सुन कर क्षण

भुले याब जीवनेर ताप, मरण ये
कत मधुरतामय आगे हते पाब
तार स्वाद। अपर्णा, एमन किछु बल्
ओइ मधुकण्ठे तोर, ओइ मधु-आँखि
रेखे मोर मुखपाने, एइ जनहीन
स्तब्ध रजनीते, एइ विश्वजगतेर
निद्रामाझे, बल् रे अपर्णा, या शुनिले
मने हबे चारि दिके आर किछु नाइ,
शुधु भालोबासा भासितेछे, पूर्णिमार
सुप्तरात्रे रजनीगन्धार गन्धसम।

अपर्णा। हाय जयसिंह, बलिते पारि ने किछु——
बुझि मने आछे कत कथा।

जयसिंह। तबे आरो
काछे आय, मन हते मने याक कथा।
——ए की करितेछि आमि! अपर्णा, अपर्णा,
चले या मन्दिर छेड़े! गुरुर आदेश।

अपर्णा। जयसिंह, होयो ना निष्ठुर! बार बार
फिरायो ना! की सहेछि अन्तर्यामी जाने!

भर में अतल में निमग्न हो कर जीवन के ताप को भूल जाऊँ; **मरण......स्वाद**——मृत्यु कितनी मधुर है उसका कुछ अग्रिम स्वाद पा सकूँ; **एमन....बल्**——ऐसा कुछ कह; **ओइ......तोर**——अपने उस मधु कण्ठ से; **मुखपाने**——मुख की ओर; **रजनीते**——रजनी में; **या......नाइ**——जिसे सुन कर ऐसा लगेगा कि चारों ओर और कुछ नहीं; **शुधु......भासितेछे**——केवल प्यार तिर रहा है।

बलिते......किछु——कुछ कह नहीं सकती; **बुझि......कथा**——लगता है मन में कितनी बातें हैं।

तबे......आय——तो फिर और निकट आ; **मन......कथा**——मन से मन की बातें होने दो; **ए......आमि**——यह क्या कर रहा हूँ मैं; **चले......छेड़े**——मन्दिर छोड़ कर चली जा।

होयो ना——मत होओ; **फिरायो ना**——मत लौटाओ; **की सहेछि**——कितना सहा है; **जाने**——जानता है।

जयसिंह। तबे आमि याइ। एक दण्ड हेथा नहे।

[कियद्दूर गिया फिरिया

अपर्णा, निष्ठुर आमि? एइ कि रहिबे
तोर मने, जयसिंह निष्ठुर, कठिन!
कखनो कि हासिमुखे कहि नाइ कथा?
कखनो कि डाकि नाइ काछे? कखनो कि
फेलि नाइ अश्रुजल तोर अश्रु देखे?
अपर्णा, से सब कथा पड़िबे ना मने,
शुधु मने रहिबे जागिया जयसिंह
निष्ठुर पाषाण? येमन पाषाण ओइ
पाषाणेर छवि, देवी बलिताम यारे?——
हाय देवी, तुइ यदि देवी हइतिस,
तुइ यदि बुझितिस एइ अन्तर्दाह!

अपर्णा। बुद्धिहीन व्यथित ए क्षुद्र नारी-हिया,
क्षमा करो एरे। एइ बेला चले एस,
जयसिंह, एस मोरा ए मन्दिर छेड़े
याइ।

जयसिंह। रक्षा करो! अपर्णा, करुणा करो!
दया क'रे, मोरे फेले चले याओ। एक
काज बाकि आछे ए जीवने, सेइ होक
प्राणेश्वर——तार स्थान तुमि काड़ियो ना।

[द्रुत प्रस्थान

तबे......याइ——तो फिर मैं जाऊँ; **हेथा**——यहाँ।

गिया——जा कर; **फिरिया**——लौट कर।

एइ......मने——तेरे मन में क्या यही रहेगा; **कखनो कि**——कभी भी क्या; **कहि नाइ**——नहीं कहा; **डाकि......काछे**——पास नहीं बुलाया; **फेलि नाइ**——नहीं बहाया; **से......मने**——ये सारी बातें याद नहीं आएँगी; **येमन**——जैसे; **छवि**——तस्वीर, मूर्ति; **देवी......यारे**——जिसे देवी कहा करता था; **हइतिस**——होती; **बुझितिस**——समझती।

एरे——इसे; **एइ......एस**——इसी समय चले आओ; **याइ**——जायँ।

अपर्णा। शतबार सहियाछि, आज केन आर
नाहि सहे! आज केन भेङे पड़े प्राण!

पञ्चम दृश्य

मन्दिर

नक्षत्रराय रघुपति ओ निद्रित ध्रुव

रघुपति। केँदे केँदे घुमिये पड़ेछे। जयसिंह
एसेछिल मोर कोले अमनि शैशवे
पितृमातृहीन। सेदिन अमनि करे
केँदेछिल नूतन देखिया चारि दिक,
हताश्वास श्रान्त शोके अमनि करिया
घुमाये पड़ियाछिल सन्ध्या हये गेले
ओइखाने देवीर चरणे! ओरे देखे
तार सेइ शिशुमुख शिशुर क्रन्दन
मने पड़े।

नक्षत्रराय। ठाकुर, कोरो ना देरि आर—
भय हय कखन संवाद पाबे राजा।

रघुपति। संवाद केमन करे पाबे? चारि दिक
निशीथेर निद्रा दिये घेरा।

केँदे.....पड़ेछे—रोते रोते सो गया है; **एसेछिल**—आया था; **मोर कोले**—मेरी गोद में; **अमनि**—इसी तरह; **सेदिन......दिक**—उस दिन इसी तरह अपने चारों ओर नया (वातावरण) देख कर रोया था; **हये गेले**—हो जाने पर; **ओइखाने**—वहीं, उसी स्थान पर; **ओरे......पड़े**—उसे (बालक ध्रुव को) देख उसके (जयसिंह के) नन्हे चेहरे का बाल-क्रन्दन याद हो आता है।

ठाकुर......राजा—(ब्राह्मण) देवता, अब और देरी मत करो, भय है, कब राजा को खबर लग जाय।

संवाद......पाबे—खबर कैसे लगेगी; **दिये**—द्वारा।

नक्षत्रराय। एकबार
मने हल येन देखिलाम कार छाया!

रघुपति। आपन भयेर।

नक्षत्रराय। शुनिलाम येन कार
क्रन्दनेर स्वर!

रघुपति। आपनार हृदयेर।
दूर होक निरानन्द। एस पान करि
कारणसलिल। [मद्यपान
मनोभाव यतक्षण
मने थाके, ततक्षण देखाय बृहत्—
कार्यकाले छोटो हये आसे, बहु वाष्प
गले गिये एकबिन्दु जल। किछुइ ना,
शुधु मुहूर्तेर काज। शुधु शीर्णशिखा
प्रदीप निबाते यतक्षण। घुम हते
चकिते मिलाये याबे गाढ़तर घुमे
ओइ प्राणरेखाटुकु—श्रावणनिशीथे
बिजुलिझलक-सम, शुधु वज्र तार
चिरदिन बिँधे रबे राजदम्भ-माझे।
एस एस युवराज, म्लान हये केन

शुनिलाम—सुना; **येन**—जैसे; **कार**—किसका।

होक—हो; **एस......करि**—आओ पान करें; **कारणसलिल**—(तान्त्रिक साधना के उपकरण स्वरूप व्यवहार में लाया जाने वाला मद्य)।

एकबार......छाया—एक बार लगा जैसे किसी की छाया (मैंने) देखी।

यतक्षण......थाके—जितनी देर मन में रहता है; **देखाय**—दीखता है; **हये आसे**—हो आता है; **गले गिये**—गल कर; **किछुइ ना**—बस, कुछ नहीं; **शुधु......काज**—केवल एक क्षण का काम है; **निबाते**—बुझाते; **घुम......टुकु**—निद्रा से गाढ़तर निद्रा में वह प्राणरेखा क्षण मात्र में विलीन हो जाएगी; **बिँधे रबे**—विँधा रहेगा; **एस**—आओ; **म्लान.....पाशे**—म्लान हो कर एक ओर क्यों बैठे हुए हो;

बसे आछ एक पाशे—मुखे कथा नेइ,
हासि नेइ, निर्वापितप्राय ! एस, पान
करि आनन्दसलिल ।

नक्षत्रराय । अनेक विलम्ब
हये गेछे । आमि बलि, आज थाक् । काल
पूजा हबे ।

रघुपति । विलम्ब हयेछे बटे । रात्रि
शेष हये आसे ।

नक्षत्रराय । ओइ शोनो पदध्वनि ।

रघुपति । कइ ? नाहि शुनि ।

नक्षत्रराय । ओइ शोनो, ओइ देखो
आलो ।

रघुपति । संवाद पेयेछे राजा ! आर तबे
एक पल देरि नय । जय महाकाली !

खड्ग-उत्तोलन

[गोविन्दमाणिक्य ओ प्रहरीगणेर द्रुत प्रवेश
राजार निर्देशक्रमे प्रहरीर द्वारा रघुपति ओ नक्षत्रराय धृत हइल ।

गोविन्द । निये याओ कारागारे, विचार हइबे ।

मुखे......नेइ—ओठों पर बात नहीं, हँसी नहीं; **निर्वापितप्राय**—बुझा हुआ-सा; **करि**—करें ।

हये गेछे—हो गया है; **आमि......थाक्**—मैं कहता हूँ, आज रहने दो; **काल**—कल; **हबे**—होगी ।

हयेछे बटे—अवश्य हो गया है; **रात्रि......आसे**—रात समाप्त हो आई है ।

ओइ शोनो—वह सुनो; **कइ**—कहाँ; **नाहि शुनि**—सुनाई नहीं पड़ता ।

आलो—आलोक, प्रकाश ।

पेयेछे—पाया है; **आर......नय**—तो फिर अब और एक क्षण की भी देर ठीक नहीं ।

निर्देशक्रमे—आदेश के अनुसार; **धृत हइल**—पकड़े गए ।

निये याओ—ले जाओ; **विचार हइबे**—न्याय होगा ।

चतुर्थ अङ्क

प्रथम दृश्य

विचारसभा

गोविन्दमाणिक्य रघुपति नक्षत्रराय
सभासद्‌गण ओ प्रहरीगण

रघुपतिके

गोविन्द। आर-किछु बलिबार आछे?

रघुपति। किछु नाइ।

गोविन्द। अपराध करिछ स्वीकार?

रघुपति। अपराध?
अपराध करियाछि बटे। देवीपूजा
करिते पारि नि शेष—मोहे मूढ़ हये
विलम्ब करेछि अकारणे। तार शास्ति
दितेछेन देवी, तुमि उपलक्ष शुधु।

गोविन्द। शुन सर्वलोक, आमार नियम एइ—
पवित्र पूजार छले देवतार काछे
ये मोहान्ध दिबे जीवबलि, किम्वा तारि
करिबे उद्योग राज-आज्ञा तुच्छ करि,
निर्वासनदण्ड तार प्रति। रघुपति,
अष्ट वर्ष निर्वासने करिबे यापन—

आर......आछे—और कुछ कहना है।

किछु नाइ—कुछ नहीं।

करिछ—कर रहे हो।

करियाछि बटे—किया अवश्य है; **करिते......शेष**—पूरी नहीं कर सका; **हये**—हो कर; **तार......देवी**—देवी उसका दण्ड दे रही हैं।

शुन—सुनो; **सर्वलोक**—सभी लोग; **एइ**—यह है; **काछे**—निकट; **दिबे**—देगा; **तारि**—उसका;

तोमारे आसिबे रेखे सैन्य चारिजन
राज्येर बाहिरे।

रघुपति। देवी छाड़ा ए जगते
ए जानु हय नि नत आर कारो काछे।
आमि विप्र, तुमि शूद्र, तबु जोड़करे,
नतजानु, आज आमि प्रार्थना करिव
तोमा-काछे—दुइ दिन दाओ अवसर
श्रावणेर शेष दुइ दिन। तार परे
शरतेर प्रथम प्रत्युषे—चले याब
तोमार ए अभिशप्त दग्ध राज्य छेड़े,
आर फिराब ना मुख।

गोविन्द। दुइ दिन दिनु
अवसर।

रघुपति। महाराज! राज-अधिराज!
महिमासागर तुमि कृपा-अवतार!
धूलिर अधम आमि, दीन, अभाजन!

[प्रस्थान

गोविन्द। नक्षत्र, स्वीकार करो अपराध तव।

नक्षत्रराय। महाराज, दोषी आमि। साहस ना हय
मार्जना करिते भिक्षा।

[पदतले पतन

गोविन्द। बलो तुमि कार
मन्त्रणाय भुले ए काजे दियेछ हात?

तोमारे......बाहिरे—चार सैनिक तुम्हें राज्य के बाहर कर आएँगे।

देवी......काछे—देवी के अलावा इस संसार में और किसी के निकट ये घुटने नत नहीं हुए; **तोमा-काछे**—तुम्हारे निकट; **दाओ**—दो।

दिनु—दिया।

साहस......भिक्षा—क्षमा की भिक्षा माँगने का साहस नहीं होता।

बलो—बोलो; **कार**—किसकी; **दियेछ**—दिया है; **हात**—हाथ।

स्वभावकोमल तुमि, निदारुण बुद्धि
ए तोमार नहे।

नक्षत्रराय। आर कारे दिब दोष!
लब ना ए पापमुखे आर कारो नाम।
आमि शुधु एका अपराधी। आपनार
पापमन्त्रणाय आपनि भुलेछि। शत
दोष क्षमा करियाछ निर्बोध भ्रातार,
आरबार क्षमा करो।

गोविन्द। नक्षत्र, चरण
छेड़े ओठो, शोनो कथा। क्षमा कि आमार
काज? विचारक आपन शासने बद्ध,
बन्दी हते बेशी बन्दी। एक अपराधे
दण्ड पाबे एक जने, मुक्ति पाबे आर,
एमन क्षमता नाइ विधातार—आमि
कोथा आछि!

सकले। क्षमा करो, क्षमा करो प्रभु!
नक्षत्र तोमार भाइ।

गोविन्द। स्थिर हओ सबे।
भाइ बन्धु केह नाहि मोर, ए आसने
यतक्षण आछि। प्रमाण हइया गेछे
अपराध। छाड़ाये त्रिपुरराज्यसीमा

आर......दोष—और किसे दोष दूँगा; **लब......नाम**—इस पापी मुख से और किसी का नाम नहीं लूँगा; **आमि......अपराधी**—बस एक मैं ही अपराधी हूँ; **करियाछ**—किया है; **आरबार**—फिर एक बार।

छेड़े—छोड़; **ओठो**—उठो; **शोनो**—सुनो; **एक......आर**—एक ही अपराध में एक आदमी दण्ड पाएगा और दूसरा मुक्ति पाएगा; **आमि......आछि**—मेरी क्या बिसात।

हओ—होओ; **केह......मोर**—मेरा कोई नहीं; **ए......आछि**—जब तक इस आसन पर हूँ; **हइया गेछे**—हो गया है।

ब्रह्मपुत्रनदीतीरे आछे राजगृह
तीर्थस्नानतरे, सेथाय नक्षत्रराय
अष्ट वर्ष निर्वासिन करिबे यापन।

[प्रहरीगण नक्षत्रके लइया याइते उद्यत।

[राजार सिंहासन हइते अवरोहण

दिये याओ बिदायेर आलिङ्गन। भाइ,
ए दण्ड तोमार शुधु एकेलार नहे,
ए दण्ड आमार। आज हते राजगृह
सूचिकण्टकित हये बिँधिबे आमाय।
रहिल तोमार साथे आशीर्वाद मोर;
यत दिन दूरे र'बि राखिबेन तोरे
देवगण।

[नक्षत्रेर प्रस्थान

सभासद्‌गणेर प्रति

सभागृह छेड़े याओ सबे,
क्षणेक एकेला रब आमि।

[सकलेर प्रस्थान

[द्रुत नयनरायेर प्रवेश

नयनराय। महाराज,
समूह विपद!

गोविन्द। राजा कि मानुष नहे?
हाय विधि, हृदय ताहार गड़ नि कि

लइया याइते—ले जाने को।

दिये याओ—देते जाओ; **ए......नहे**—यह दण्ड केवल अकेले तुम्हारा नहीं है; **यत......र'बि**—जितने दिन दूर रहोगे; **राखिबेन**—रक्षा करेंगे।

याओ—जाओ; **क्षणेक......आमि**—मैं कुछ क्षण एकान्त में रहूँगा।

राजा......नहे—राजा क्या मनुष्य नहीं है; **ताहार**—उसका; **गड़...... कि**—नहीं गढ़ा क्या;

अतिदीन दरिद्रेर समान करिया ?
दु:ख दिबे सबार मतन, अश्रुजल
फेलिबारे अवसर दिबे ना कि शुधु ?—
किसेर विपद, ब'ले याओ शीघ्र करि।

नयनराय। मोगलेर सैन्य साथे आसे चाँदपाल,
नाशिते त्रिपुरा।

गोविन्द। ए नहे नयनराय
तोमार उचित। शत्रु बटे चाँदपाल,
ताइ बले तार नामे हेन अपवाद !

नयनराय। अनेक दियेछ दण्ड दीन अधीनेरे,
आज एइ अविश्वास सब चेये बेशि।
श्रीचरणच्युत हये आछि, ताइ बले
गियेछि कि एत अध:पाते !

गोविन्द। भालो करे
बलो आरबार, बुझे देखि सब।

नयनराय। योग
दिये मोगलेर साथे चाहे चाँदपाल
तोमारे करिते राजच्युत।

गोविन्द। तुमि कोथा
पेले ए संवाद ?

दिबे—दोगे; **सबार मतन**—सब की भाँति; **फेलिबारे**—गिराने, बहाने; **किसेर......करि**—कैसी विपद, जल्दी से कह डालो।

आसे—आ रहा है; **नाशिते**—नाश करने (मिटाने)।

ए......उचित—यह तुम्हें उचित नहीं, नयनराय; **शत्रु......अपवाद**—चाँदपाल (तुम्हारा) शत्रु अवश्य है लेकिन क्या इसीलिये उसके नाम ऐसा अपवाद (लगाना उचित है)।

अनेक......बेशि—(इस) दीन अधीन को (तुमने) बहुत दण्ड दिए हैं (लेकिन) आज का यह अविश्वास सब से अधिक है; **गियेछि......अध:पाते**—क्या इतना नीचे गिर गया हूँ (क्या इतना अध:पतन हो गया है)।

तुमि......संवाद—तुमने यह खबर कहाँ पायी।

8

नयनराय। येदिन आमारे प्रभु
निरस्त्र करिले, अस्त्रहीन लाजे चले
गेनु देशान्तरे; शुनिलाम आसामेर
साथे मोगलेर बाधिछे विवाद; ताइ
चलेछिनु सेथाकार राजसन्निधान
मागिते सैनिकपद। पथे देखिलाम
आसिछे मोगल सैन्य त्रिपुरार पाने,
सङ्गे चाँदपाल। सन्धाने जेनेछि तार
अभिसन्धि। छुटिया एसेछि राजपदे।

गोविन्द। सहसा ए की हल संसारे हे विधातः!
शुधु दुइ-चारि दिन हल, धरणीर
कोन्खाने छिद्रपथ हयेछे बाहिर,
समुदय नागवंश रसातल हते
उठितेछे चारि दिके पृथिवीर 'परे——
पदे पदे तुलितेछे फणा। एसेछे कि
प्रलयेर काल!——एखन समय नहे
विस्मयेर। सेनापति, लह सैन्यभार।

द्वितीय दृश्य

मन्दिरप्राङ्गण

जयसिंह ओ रघुपति

रघुपति। गेछे गर्व, गेछे तेज, गेछे ब्राह्मणत्व।

येदिन—जिस दिन; **आमारे**—मुझे; **करिले**—किया; **चले गेनु**—चला गया; **बाधिछे विवाद**——झगड़ा हो रहा है; **ताइ.....पद**——इसीलिये वहाँ के राजा के निकट सैनिक पद माँगने जा रहा था; **पाने**——ओर; **सन्धाने.....अभिसन्धि**—उसकी अभिसंधि का पता लगाया है; **छुटिया......राजपदे**—दौड़ कर राजचरणों में आया हूँ।

ए......हल——यह क्या हुआ; **तुलितेछे**—उठा रहा है; **लह**——लो।

गेछे——चला गया है;

ओरे वत्स, आमि तोर गुरु नहि आर।
काल आमि असंशये करेछि आदेश
गुरुर गौरवे, आज शुधु सानुनये
भिक्षा मागिबार मोर आछे अधिकार।
अन्तरेते से दीप्ति निभेछे, यार बले
तुच्छ करिताम आमि ऐश्वर्येर ज्योति,
राजार प्रताप। नक्षत्र पड़िले खसि
तार चेये श्रेष्ठतर माटिर प्रदीप।
ताहारे खुँजिया फिरे परिहासभरे
खद्योत धूलिर माझे, खुँजिया ना पाय।
दीप प्रतिदिन नेभे, प्रतिदिन ज्वले—
बारेक निभिले तारा चिर-अन्धकार!
आमि सेइ चिरदीप्तिहीन; सामान्य ए
परमायु, देवतार अति क्षुद्र दान,
भिक्षा मेगे लइयाछि तारि दुटो दिन
राजद्वारे नतजानु हये। जयसिंह,
सेइ दुइ दिन येन व्यर्थ नाहि हय।
सेइ दुइ दिन येन आपन कलङ्क
घुचाये मरिया याय। कालामुख तार
राजरक्ते राङा करे तबे याय येन।

काल—कल; **मागिबार**—माँगने का; **अन्तरेते.....निभेछे**—अन्तर की वह दीप्ति बुझ गई है; **यार बले**—जिसके बल पर; **करिताम**—करता; **नक्षत्र....प्रदीप**—नक्षत्र के टूट कर गिर जाने पर मिट्टी का प्रदीप भी उससे श्रेष्ठतर होता है; **ताहारे......पाय**—जुगनू परिहास में भर कर उसे धूल में खोजता फिरता है (लेकिन) खोजने पर पाता नहीं; **नेभे**—बुझता है; **ज्वले**—जलता है; **बारेक.....तारा**—तारा एक बार बुझ जाने पर; **सेइ**—वही; **मेगे**—माँग कर; **लइयाछि**—लिया है; **तारि**—उसी के; **नाहि हय**—न हों; **घुचाये**—मिटा कर; **मरिया याय**—मर जाय; **कालामुख.....येन**—अपना काला मुख राजरक्त से रंजित करके ही जाय;

वत्स, केन निरुत्तर? गुरुर आदेश
नाहि आर; तबु तोरे करेछि पालन
आशैशव, किछु नहे तार अनुरोध?
नहि कि रे आमि तोर पितार अधिक
पितृविहीनेर पिता ब'ले? एइ दुःख,
एत करे स्मरण कराते हल! कृपा
भिक्षा सह्य हय, भालोवासा भिक्षा करे
ये अभाग्य, भिक्षुकेर अधम भिक्षुक
से ये। वत्स, तबु निरुत्तर? जानु तबे
आरबार नत होक। कोले एसेछिल
यबे, छिल एतटुकु, ए जानुर चेये
छोटो——तार काछे नत होक जानु। पुत्र,
भिक्षा चाइ आमि।

जयसिंह। पिता, ए विदीर्ण बुके
आर हानियो ना वज्र। राजरक्त चाहे
देवी, ताइ तारे एने दिब। याहा चाहे
सब दिब। सब ऋण शोध करे दिये
याब। ताइ हबे। ताइ हबे।

[प्रस्थान

रघुपति। तबे ताइ
होक। देवी चाहे, ताइ ब'ले दिस। आमि

केन——क्यों; **नाहि आर**——और नहीं; **तोरे**——तुझे; **करेछि**——किया है; **किछु नहे**——कुछ नहीं है; **नहि कि**——नहीं हूँ क्या; **कराते हल**——कराना पड़ा; **भालोवासा**——प्यार; **आरबार**——फिर; **कोले......यबे**——गोद में जब आया था; **एतटुकु**——इतना-सा; **चेये**——से, अपेक्षा; **तार काछे**——उसके निकट; **चाइ**——चाहता हूँ।

बुके——हृदय में; **हानियो ना**——मारना मत; **चाहे**——चाहती है; **ताइ.....दिब**——उसे वही ला दूँगा; **याहा......दिब**——जो चाहेगी सब दूँगा; **याब**——जाऊँगा; **ताइ हबे**——वही होगा।

तबे......होक——तो फिर वही हो; **देवी.....दिस**——देवी चाहती है इसीलिए दे;

केह नइ। हाय अकृतज्ञ, देवी तोर
की करेछे? शिशुकाल हते देवी तोरे
प्रतिदिन करेछे पालन? रोग हले
करियाछे सेवा? क्षुधाय दियेछे अन्न?
मिटायेछे ज्ञानेर पिपासा? अवशेषे
एइ अकृतज्ञतार व्यथा नियेछे कि
देवी बुक पेते? हाय, कलिकाल! थाक्!

तृतीय दृश्य

प्रासादकक्ष

गोविन्दमाणिक्य

[नयनरायेर प्रवेश

नयनराय। विद्रोही सैनिकदेर एनेछि फिराये,
युद्धसज्जा हयेछे प्रस्तुत। आज्ञा दाओ
महाराज, अग्रसर हइ——आशीर्वाद
करो——

गोविन्द। चलो सेनापति, निजे आमि याब
रणक्षेत्रे।

नयनराय। यतक्षण ए दासेर देहे
प्राण आछे, ततक्षण महाराज, क्षान्त
थाको, विपदेर मुखे गिये——

आमि......नइ——मैं कोई नहीं हूँ; **देवी......करेछे**——देवी ने तेरा (तेरे लिये) क्या किया है; **हले**——होने पर; **नियेछे कि**——लिया है क्या; **बुक**——हृदय; **पेते**——बिछा कर।

विद्रोही......फिराये——विद्रोही सैनिकों को लौटा लाया हूँ; **हइ**——हों।

निजे......याब——मैं स्वयं जाऊँगा।

यतक्षण......आछे——जब तक इस दास के शरीर में प्राण है; **क्षान्त**——विरत; **मुखे गिये**——मुख में जा कर।

गोविन्द। सेनापति,
सबार विपद-अंश हते, मोर अंश
निते चाइ आमि। मोर राज-अंश, सब
चेये बेशि। एस सैन्यगण, लह मोरे
तोमादेर माझे। तोमादेर नृपतिरे
दूर सिंहासनचूड़े निर्वासित करे
समरगौरव हते वञ्चित कोरो ना।

[चरेर प्रवेश

चर। निर्वासनपथ हते लयेछे काड़िया
कुमार नक्षत्रराये मोगलेर सेना;
राजपदे वरियाछे ताँरे। आसिछेन
सैन्य लये राजधानी-पाने।

गोविन्द। चुके गेल।
आर भय नाइ। युद्ध तबे गेल मिटे।

[प्रहरीर प्रवेश

प्रहरी। विपक्षशिबिर हते पत्र आसियाछे।

गोविन्द। नक्षत्रेर हस्तलिपि। शान्तिर संवाद
हबे बुझि।......एइ कि स्नेहेर सम्भाषण !
ए तो नहें नक्षत्रेर भाषा ! चाहे मोर

सबार—सबके; **हते**—से; **मोर......आमि**—मैं अपना अंश लेना चाहता हूँ; **लह......माझे**—मुझे अपने बीच लो।

लयेछे काड़िया—छीन लिया है; **नक्षत्रराये**—नक्षत्रराय को; **वरियाछे**—वरण किया है; **ताँरे**—उन्हें; **आसिछेन**—आ रहे हैं; **लये**—ले कर; **पाने**—ओर।

आसियाछे—आया है।

हबे—होगा; **बुझि**—शायद; **एइ कि**—यही क्या; **ए......भाषा**—यह तो नक्षत्र की भाषा नहीं है; **चाहे**—चाहता है; **नतुबा**—नहीं तो;

निर्वासन, नतुवा भासाबे रक्तस्रोते
सोनार त्रिपुरा––दग्ध करे दिबे देश,
बन्दी हबे मोगलेर अन्तःपुरतरे
त्रिपुररमणी !......देखि, देखि, एइ बटे
तारि लिपि ! 'महाराज नक्षत्रमाणिक्य' !
महाराज ! देखो सेनापति––एइ देखो
राजदण्डे-निर्वासित दियेछे राजारे
निर्वासनदण्ड। एमनि विधिर खेला !

नयनराय। निर्वासन ! ए की स्पर्धा ! एखनो तो युद्ध
शेष हय नाइ।

गोविन्द। ए तो नहे मोगलेर
दल। त्रिपुरार राजपुत्र राजा हते
करियाछे साध, तार तरे युद्ध केन ?

नयनराय। राज्येर मङ्गल––

गोविन्द। राज्येर मङ्गल हबे ?
दाँड़ाइया मुखोमुखि दुइ भाइ हाने
भ्रातृवक्ष लक्ष्य करे मृत्युमुखी छुरि––
राज्येर मङ्गल हबे ताहे ? राज्ये शुधु
सिंहासन आछे––गृहस्थेर घर नेइ,

भासाबे......त्रिपुरा––सोने की त्रिपुरा को रक्त की धारा में बहा देगा; **दग्ध...... देश**––देश को जला देगा; **बन्दी.....रमणी**––त्रिपुरा राज्य की रमणियाँ मुगलों के अन्तःपुर के लिये बन्दी बनाई जाएंगी; **देखि**––देखें; **एइ......लिपि**––यही उसने लिखा है; **एइ**––यह; **दियेछे राजारे**––राजा को दिया है; **एमनि**–– ऐसा ही।

एखनो......नाइ––अभी युद्ध तो समाप्त हुआ ही नहीं।

ए......नहे––यह तो नहीं है; **राजा......साध**––राजा बनने की कामना की है; **तार......केन**––उसके लिये युद्ध क्यों।

राज्येर......हबे––राज्य का मंगल होगा; **दाँड़ाइया**––खड़े हो कर; **मुखोमुखि**––आमने सामने; **हाने**––मारे; **ताहे**––उससे;

भाइ नेइ, भ्रातृत्वबन्धन नेइ हेथा ?
देखि देखि आरबार--ए कि तार लिपि ?
नक्षत्रेर निजेर रचना नहे। आमि
दस्यु, आमि देवद्वेषी, आमि अविचारी,
ए राज्येर अकल्याण आमि ! नहे, नहे,
ए तार रचना नहे।--रचना याहारइ
होक, अक्षर तो तारि बटे। निज हस्ते
लिखेछे तो सेइ। ये सर्पेरइ विष होक,
निजेर अक्षरमुखे माखाये दियेछे,
हेनेछे आमार बुके।--विधि, ए तोमार
शास्ति, तार नहे। निर्वासन ! ताइ होक।
तार निर्वासनदण्ड तार हये आमि
नीरवे विनम्र शिरे करिब वहन।

नहे......नहे--नहीं, नहीं, यह उसका लिखा हुआ नहीं है; **रचना......बटे**--लिखा हुआ (चाहे) जिसका हो, अक्षर तो उसीके हैं; **निज......सेइ**--अपने हाथों लिखा तो उसीने है; **ये......होक**--चाहे जिस सर्प का विष (क्यों न) हो; **निजेर......बुके**--अपने अक्षरों के मुख पर लेप कर मेरे वक्ष पर मारा है; **ए.....नहे**--यह तुम्हारा दण्ड है उसका नहीं; **ताइ होक**--वही हो; **तार हये**--उसका हो कर (उसकी ओर से); **करिब**--करूँगा।

पञ्चम अङ्क

प्रथम दृश्य

मन्दिर। बाहिरे झड़

रघुपति

पूज़ोपकरण लइया

रघुपति। एतदिने आज बुझि जागियाछ देवी!
ओइ रोषहुहुंकार! अभिशाप हाँकि
नगरेर 'पर दिया धेये चलियाछ
तिमिररूपिणी!—ओइ बुझि तोर
प्रलयसङ्गिनीगण दारुण क्षुधाय
प्राणपणे नाड़ा देय विश्वमहातरु!
आज मिटाइब तोर दीर्घ उपवास।
भक्तेरे संशये फेलि एतदिन छिलि
कोथा देवी? तोर खड़्ग तुइ ना तुलिले
आमरा कि पारि? आज की आनन्द तोर
चण्डीमूर्ति देखे! साहसे भरेछे चित्त,
संशय गियेछे, हतमान नतशिर
उठेछे नूतन तेजे। ओइ पदध्वनि
शुना याय, ओइ आसे तोर पूजा! जय
महादेवी! [अपर्णार प्रवेश

बाहिरे झड़—बाहर तूफान।

पुजोपकरण लइया—पूजा की सामग्री ले कर।

एतदिन......देवी—इतने दिनों बाद आज लगता है (तुम) जगी हो देवी; **हाँकि**—उच्चस्वर में उद्घोषित कर; **धेये चलियाछ**—दौड़ी चली हो; **नाड़ा देय**—आन्दोलित कर रही हैं; **मिटाइब**—मिटाऊँगा; **भक्तेरे......देवी**—भक्त को संशय में डाल कर अब तक तुम कहाँ थी देवी; **तोर......पारि**—तेरे खड्ग उठाये बिना हमलोग क्या (कर) सकते हैं; **देखे**—देख कर; **गियेछे**—चला गया है; **शुना याय**—सुनाई पड़ती है;

दूर ह, दूर ह मायाविनी,—
जयसिंहे चास तुइ? आरे सर्वनाशी!
महापातकिनी!

[अपर्णार प्रस्थान

ए की अकाल-व्याघात!
जयसिंह यदि नाइ आसे! कभु नहे।
सत्यभङ्ग कभु नाहि हबे तार।—जय
महाकाली, सिद्धिदात्री, जय भयंकरी!—
यदि बाधा पाय—यदि धरा पड़े शेषे—
यदि प्राण याय तार प्रहरीर हाते!—
जय मा अभया, जय भक्तेर सहाय!
जय मा जाग्रत देवी, जय सर्वजया!
भक्तवत्सलार येन दुर्नाम ना रटे
ए संसारे, शत्रुपक्ष नाहि हासे येन
निःशङ्क कौतुके। मातृ-अहंकार यदि
चूर्ण हय सन्तानेर, मा बलिया तबे
केह डाकिबे ना तोरे। ओइ पदध्वनि!
जयसिंह बटे! जय नृमुण्डमालिनी,
पाषण्डदलनी महाशक्ति!

[जयसिंहेर द्रुत प्रवेश

जयसिंह,

राजरक्त कइ?

जयसिंह। आछे आछे। छाड़ो मोरे।
निजे आमि करि निवेदन।—राजरक्त

आसे—आती है; **चास तुइ**—तू चाहती है; **कभु नहे**—कभी नहीं; **धरा...... शेषे**—अन्त में पकड़ा जाय; **रटे**—प्रचारित हो, फैले; **मा.....तोरे**—तब माँ कह कर तुझे कोई नहीं पुकारेगा; **बटे**—निश्चय ही।

कइ—कहाँ है।

आछे—है; **छाड़ो मोरे**—छोड़ो मुझे;

चाइ तोर, दयामयी, जगत्पालिनी
माता? नहिले किछुते तोर मिटिबे ना
तृषा! आमि राजपुत, पूर्वपितामह
छिल राजा, एखनो राजत्व करे मोर
मातामहवंश——राजरक्त आछे देहे।
एइ रक्त दिब। एइ येन शेष रक्त
हय माता, एइ रक्ते शेष मिटे येन
अनन्त पिपासा तोर, रक्ततृषातुरा।

[वक्षे छुरि-बिन्धन

रघुपति। जयसिंह! जयसिंह! निर्दय! निष्ठुर!
ए की सर्वनाश करिलि रे! जयसिंह,
अकृतज्ञ, गुरुद्रोही, पितृमर्मघाती,
स्वेच्छाचारी! जयसिंह, कुलिशकठिन!
ओरे जयसिंह, मोर एकमात्र प्राण,
प्राणाधिक, जीवन-मन्थन-करा धन!
जयसिंह, वत्स मोर, हे गुरुवत्सल!
फिरे आय, फिरे आय, तोरे छाड़ा आर
किछु नाहि चाहि! अहंकार अभिमान
देवता ब्राह्मण सब याक! तुइ आय!

[अपर्णार प्रवेश

अपर्णा। पागल करिबे मोरे। जयसिंह, कोथा
जयसिंह!

चाइ तोर——तुझे चाहिए; **नहिले**——नहीं तो; **किछुते**——किसी भी तरह; **एइ......दिब**——यही रक्त दूँगा; **एइ......हय**——ताकि यही रक्त अन्तिम हो।

करिलि——किया (तूने); **फिरे आय**——लौट आ; **तोरे......चाहि**——तुझे छोड़ कर (मुझे) और कुछ नहीं चाहिए; **याक**——जायँ; **तुइ आय**——तू आ।

करिबे——बना दोगे।

रघुपति। आय मा अमृतमयी! डाक्
तोर सुधाकण्ठे, डाक् व्यग्रस्वरे, डाक्
प्राणपणे! डाक् जयसिंहे! तुइ तारे
निये या मा, आपनार काछे, आमि नाहि
चाहि।

[अपर्णार मूर्छा

प्रतिमार पदतले माथा राखिया
फिरे दे, फिरे दे, फिरे दे, फिरे दे!

द्वितीय दृश्य

प्रासाद

गोविन्दमाणिक्य ओ नयनराय

गोविन्द। एखनि आनन्दध्वनि! एखनि परेछे
दीपमाला निर्लज्ज प्रासाद! उठियाछे
राजधानी-बहिर्द्वारे विजयतोरण
पुलकित नगरेर आनन्द-उत्क्षिप्त
दुइ बाहु-सम! एखनो प्रासाद हते
बाहिरे आसि नि, छाड़ि नाइ सिंहासन।
एतदिन राजा छिनु, कारो कि करि नि
उपकार? कोनो अविचार करि नाइ
दूर? कोनो अत्याचार करि नि शासन?—

आय—आ; **डाक्**—पुकार; **तुइ......मा**—तू उसे ले जा; **मा**—(पुत्री अथवा पुत्री तुल्य नारी के लिये अतिशय स्नेहपूर्ण संबोधन); **आपनार काछे**—अपने पास; **आमि......चाहि**—मैं (उसे) नहीं चाहता; **राखिया**—रख कर; **फिरे दे**—लौटा दे।

एखनि—अभी; **परेछे**—पहना है; **बाहिरे......नि**—बाहर नहीं आया; **एतदिन......छिनु**—इतने दिन राजा था; **कारो......उपकार**—क्या किसी का भी उपकार नहीं किया; **कोनो**—कोई भी; **अविचार**—अन्याय; **शासन**—दमन;

धिक् धिक् निर्वासित राजा ! आपनारे
आपनि विचार करि आपनार शोके
आपनि फेलिस अश्रु !
मर्तराज्य गेल,
आपनार राजा तबु आमि। महोत्सव
होक आजि अन्तरेर सिंहासनतले।

[गुणवतीर प्रवेश

गुणवती। प्रियतम, प्राणेश्वर, आर केन नाथ ?
एइबार शुनेछ तो देवीर निषेध !
एस प्रभु, आज रात्रे शेष पूजा करे
रामजानकीर मतो याइ निर्वासिने।

गोविन्द। अयि प्रियतमे, आजि शुभदिन मोर।
राज्य गेल, तोमारे पेलेम फिरे। एस
प्रिये, याइ दोँहे देवीर मन्दिरे, शुधु
प्रेम निये, शुधु पुष्प निये, मिलनेर
अश्रु निये, विदायेर विशुद्ध विषाद
निये—आज रक्त नय, हिंसा नय।

गुणवती। भिक्षा
राखो नाथ !

गोविन्द। बलो देवी !

आपनारे......अश्रु—अपने संबंध में स्वयं न्याय कर अपने शोक में अपने आप आँसू वहाता है; **गेल**—गया; **आपनार......आमि**—तो भी मैं अपना राजा हूँ; **होक**—हो।

आर केन—अब और क्यों; **एइबार**—इस बार; **शुनेछ**—सुना है; **एस**—आओ; **मतो**—भाँति; **याइ**—जायँ।

तोमारे......फिरे—फिर से तुम्हें पाया; **दोँहे**—दोनों; **शुधु**—केवल; **निये**—ले कर।

राखो—रक्षा करो ; **बलो**—बोलो।

गुणवती। होयो ना पाषाण।
राजगर्व छेड़े दाओ। देवतार काछे
पराभव ना मानिते चाओ यदि, तबु
आमार यन्त्रणा देखे गलुक हृदय।
तुमि तो निष्ठुर कभु छिले नाको प्रभु,
के तोमारे करिल पाषाण! के तोमारे
आमार सौभाग्य हते लइल काड़िया!
करिले आमारे राजाहीन रानी!

गोविन्द। प्रिये,
आमारे विश्वास करो एकबार शुधु,
ना बुझिया बोझो मोर पाने चेये। अश्रु
देखे बोझो, आमारे ये भालोबास से
भालोबासा दिये बोझो—आर रक्तपात
नहे। मुख फिरायो ना देवी, आर मोरे
छाड़ियो ना, निराश कोरो ना आशा दिये।
याबे यदि मार्जना करिया याओ तबे।

[गुणवतीर प्रस्थान

गेले चलि! की कठिन निष्ठुर संसार!—
ओरे के आछिस?—केह नाइ? चलिलाम!
विदाय हे सिंहासन! हे पुण्य प्रासाद,
आमार पैतृक क्रोड़, निर्वासित पुत्र
तोमारे प्रणाम क'रे लइल विदाय।

चाओ—चाहो; **गलुक**—गले; **कभु**—कभी; **करिल**—बना दिया; **लइल काड़िया**—काढ़ लिया, छीन लिया।

ना......चेये—मेरी ओर देख कर बिना समझे ही समझ लो; **देखे**—देख कर; **आमारे......बोझो**—मुझे जो प्यार देती हो उसी प्यार के द्वारा समझो; **याबे......तबे**—अगर जा रही हो तो मुझे क्षमा करती जाओ; **गेले चलि**—(तू) चली गई; **ओरे......आछिस**—अरे, कौन है; **केह नाइ**—कोई नहीं; **चलिलाम**—चला।

तृतीय दृश्य

अन्तःपुरकक्ष

गुणवती

गुणवती। बाजा वाद्य बाजा, आज रात्रे पूजा हबे,
आज मोर प्रतिज्ञा पुरिबे। आन् बलि।
आन् जवाफुल। रहिलि दाँड़ाये? आज्ञा
शुनिबि ने? आमि केह नइ? राज्य गेछे,
ताइ ब'ले एतटुकु रानी बाकि नेइ
आदेश शुनिबे यार किङ्करकिङ्करी?
एइ ने कङ्कण, एइ ने हीरार कण्ठी—
एइ ने यतेक आभरण! त्वरा क'रे
कर् गिये आयोजन देवीर पूजार!
महामाया ए दासीरे राखियो चरणे!

चतुर्थ दृश्य

मन्दिर

रघुपति

रघुपति। देखो, देखो, की करे दाँड़ाये आछे, जड़
पाषाणेर स्तूप, मूढ़ निर्बोधेर मतो!
मूक, पङ्गु, अन्ध ओ बधिर! तोरइ काछे

बाजा—बजाओ; **पुरिबे**—पूरी होगी; **आन्**—ला; **रहिलि दाँड़ाये**—खड़े रह गए; **आज्ञा......ने**—आज्ञा नहीं सुनोगे; **आमि......नइ**—मैं कोई नहीं हूँ; **राज्य......किङ्करी**—राज्य चला गया तो क्या अब मैं इतनी भी रानी नहीं बची कि दास-दासियाँ मेरा आदेश सुनें; **एइ ने**—यह ले; **यतेक आभरण**—जितने भी गहने हैं; **कर् गिये**—जा कर कर; **ए दासीरे**—इस दासी को।

की.....आछे—किस तरह खड़ी है; **तोरइ काछे**—तेरे ही निकट;

समस्त व्यथित विश्व काँदिया मरिछे!
पाषाणचरणे तोर, महत् हृदय
आपनारे भाङिछे आछाड़ि! हा हा हा हा!
कोन् दानवेर एइ क्रूर परिहास
जगतेर माझखाने रयेछे बसिया।
मा बलिया डाके यत जीव, हासे तत
घोरतर अट्टहास्ये निर्दय विद्रूप।
दे फिराये जयसिंहे मोर! दे फिराये!
दे फिराये राक्षसी पिशाची!

[नाड़ा दिया

शुनिते कि
पास? आछे कर्ण? जानिस की करेछिस?
कार रक्त करेछिस पान? कोन् पुण्य
जीवनेर? कोन् स्नेहदयाप्रीति-भरा
महा हृदयेर? थाक् तुइ चिरकाल
एइमत—एइ मन्दिरेर सिंहासने,
सरल भक्तिर प्रति गुप्त उपहास!
दिब तोर पूजा प्रतिदिन, पदतले
करिब प्रणाम, दयामयी मा बलिया
डाकिब तोमारे। तोर परिचय कारो
काछे नाहि प्रकाशिब, शुधु फिराये दे
मोर जयसिंहे।

काँदिया मरिछे—रोता हुआ मर रहा है; **आछाड़ि**—पछाड़ खा कर; **रयेछे बसिया**—बैठा हुआ है।

मा......जीव—माँ कह कर जीव जितना ही पुकारता है; **दे फिराये**—लौटा दे; **शुनिते......पास**—क्या तुझे सुनाई पड़ रहा है; **जानिस......करेछिस**—जानती है क्या किया है (तूने); **कार**—किसका; **एइमत**—इसी तरह; **बलिया**—कह कर; **डाकिब**—पुकारूँगा; **कारो काछे**—किसी के निकट; **करे दाओ**—कर दो; **पाषाणीरे**—पाषाणी को; **लघु होक**—हल्का हो।

कार काछे काँदितेछि!
तबे दूर, दूर, दूर, दूर करे दाओ
हृदयदलनी पाषाणीरे! लघु होक
जगतेर वक्ष।

[दूरे गोमतीर जले प्रतिमानिक्षेप

[मशाल लइया वाद्य बाजाइया गुणवतीर प्रवेश

गुणवती। जय जय महादेवी!—
देवी कइ!

रघुपति। देवी नाइ।

गुणवती। फिराओ देवीरे
गुरुदेव, एने दाओ ताँरे, रोष शान्ति
करिब ताँहार। आनियाछि मार पूजा।
राज्य पति सब छेड़े पालियाछि शुधु
प्रतिज्ञा आमार। दया करो, दया करे
देवीरे फिराये आनो शुधु, आजि एइ
एक रात्रि-तरे। कोथा देवी?

रघुपति। कोथाओ से
नाइ। ऊर्ध्वे नाइ, निम्ने नाइ, कोथाओ से
नाइ, कोथाओ से छिल ना कखनो।

गुणवती। प्रभु,
एइखाने छिल ना कि देवी?

रघुपति। देवी बल
तारे! ए संसारे कोथाओ थाकित देवी,

एने......ताँरे—उन्हें ला दो; **करिब**—करूँगी; **ताँहार**—उनका; **रात्रि-तरे**—रात्रि के लिये; **कोथा**—कहाँ।

कोथाओ......नाइ—वह कहीं भी नहीं है; **कोथाओ......कखनो**—कहीं भी कभी भी वह नहीं थी; **एइखाने**—यहाँ।

देवी......तारे—उसे देवी कहती हो; **थाकित**—रहती;

तबे सेइ पिशाचीरे देवी बला कभु
सह्य कि करित देवी ? महत्त्व कि तबे
फेलित निष्फल रक्त हृदय विदारि
मूढ़ पाषाणेर पदे ? देवी बल तारे !
पुण्यरक्त पान क'रे से महाराक्षसी
फेटे मरे गेछे।

गुणवती। गुरुदेव, बधियो ना
मोरे। सत्य करे बलो आरबार। देवी
नाइ ?

रघुपति। नाइ।

गुणवती। देवी नाइ ?

रघुपति। नाइ।

गुणवती। देवी नाइ !
तबे के रयेछे ?

रघुपति। केह नाइ। किछु नाइ।

गुणवती। निये या, निये या पूजा ! फिरे या, फिरे या !
बल् शीघ्र कोन् पथे गेछे महाराज।

[अपर्णार प्रवेश

अपर्णा। पिता !

रघुपति। जननी, जननी, जननी आमार !
पिता ! ए तो नहे भर्त्सनार नाम ! पिता !
मा जननी, ए पुत्रघातीरे पिता ब'ले

बला—कहना; **कभु**—कभी; **पुण्य**—पवित्र; **फेटे.....गेछे**—फट कर मर गई।
बधियो......मोरे—मेरा वध न करना; **आरबार**—फिर एक बार।
तबे......रयेछे—तब कौन है।
केह......नाइ—कोई नहीं, कुछ नहीं।
निये या—ले जा; **फिरे या**—लौट जा; **कोन्**—किस।

ये जन डाकित, सेइ रेखे गेछे ओइ
सुधामाखा नाम तोर कण्ठे, एइटुकु
दया करे गेछे। आहा, डाक आरबार!

अपर्णा। पिता, एस ए मन्दिर छेड़े याइ मोरा।

[पुष्प-अर्घ लइया गोविन्दमाणिक्येर प्रवेश

गोविन्द। देवी कइ?

रघुपति। देवी नाइ।

गोविन्द। एकि रक्तधारा!

रघुपति। एइ शेष पुण्यरक्त ए पापमन्दिरे।
जयसिंह निबायेछे निज रक्त दिये
हिंसारक्तशिखा।

गोविन्द। धन्य धन्य जयसिंह,
ए पूजार पुष्पाञ्जलि सँपिनु तोमारे।

गुणवती। महाराज!

गोविन्द। प्रियतमे!

गुणवती। आज देवी नाइ—
तुमि मोर एकमात्र रयेछ देवता।

[प्रणाम

गोविन्द। गेछे पाप! देवी आज एसेछे फिरिया
आमार देवीर माझे।

ये.....डाकित—जो व्यक्ति पुकारता; **सेइ......गेछे**—उसे तेरे अमृतसिञ्चित कण्ठ में रख गया है, इतनी दया कर गया है; **डाक आरबार**—फिर एक बार पुकारो।

एस......मोरा—आओ, इस मंदिर को छोड़ हमलोग चले जायँ।

एकि—यह कैसी।

निबायेछे—बुझाई है।

सँपिनु—सौंपी, अर्पण की।

अपर्णा। पिता, चले एसो !

रघुपति। पाषाण भाङिया गेल——जननी आमार
एवारे दियेछे देखा प्रत्यक्ष प्रतिमा !
जननी अमृतमयी !

अपर्णा। पिता, चले एसो !

एबारे—इस बार।

चित्राङ्गदा

उत्सर्ग

स्नेहास्पद श्रीमान अवनीन्द्रनाथ ठाकुर
परमकल्याणीयेषु

वत्स,

तुमि आमाके तोमार यत्नरचित चित्रगुलि उपहार दियाछ, आमि तोमाके आमार काव्य एवं स्नेह-आशीर्वाद दिलाम।

मङ्गलाकाङ्क्षी
श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर

१५ श्रावण १२९९

सूचना

अनेक बछर आगे रेलगाड़िते याच्छिलुम शान्तिनिकेतन थेके कलकातार दिके। तखन बोध करि चैत्रमास हबे। रेल लाइनेर धारे धारे आगाछार जङ्गल। हलदे बेगनि सादा रङेर फुल फुटेछे अजस्र। देखते देखते एइ भावना एल मने ये आर किछुकाल परेइ रौद्र हबे प्रखर, फुलगुलि तार रङेर मरीचिका निये याबे मिलिये—तखन पल्लीप्राङ्गणे आम धरबे गाछेर डाले डाले, तरुप्रकृति तार अन्तरेर निगूढ़ रससञ्चयेर स्थायी परिचय देबे आपन अप्रगल्भ फल-सम्भारे। सेइ सङ्गे केन जानि हठात् आमार मने हल सुन्दरी युवती यदि अनुभव करे ये से तार यौवनेर माया दिये प्रेमिकेर हृदय भुलियेछे ता हले से तार सुरूपकेइ आपन सौभाग्येर मुख्य अंशे भाग बसाबार अभियोगे सतिन बले धिक्कार दिते पारे। ए ये तार बाइरेर जिनिष, ए येन ऋतुराज वसन्तेर काछ थेके पाओया वर, क्षणिक मोह-विस्तारेर द्वारा जैव उद्देश्य सिद्ध करबार जन्ये। यदि तार अन्तरेर मध्ये यथार्थ चारित्रशक्ति थाके तबे सेइ मोहमुक्त शक्तिर दानइ तार प्रेमिकेर पक्षे महत् लाभ, युगल जीवनेर जययात्रार सहाय। सेइ दानेइ आत्मार स्थायी परिचय, एर परिणामे क्लान्ति नेइ, अवसाद नेइ, अभ्यासेर धूलिप्रलेपे उज्ज्वलतार मालिन्य नेइ। एइ चारित्रशक्ति जीवनेर ध्रुवसम्बल, निर्मम प्रकृतिर आशु प्रयोजनेर प्रति तार निर्भर नय। अर्थात्, एर मूल्य मानविक, ए नय प्राकृतिक।

एइ भावटाके नाट्य-आकारे प्रकाश-इच्छा तखनि मने एल, सेइ सङ्गेइ मने पड़ल महाभारतेर चित्राङ्गदार काहिनी। एइ काहिनीटि किछु रूपान्तर निये अनेक दिन आमार मनेर मध्ये प्रच्छन्न छिल। अवशेषे लेखबार आनन्दित अवकाश पाओया गेल उड़िष्याय पाण्डुया बले एकटि निभृत पल्लीते गिये।

१

अनङ्ग-आश्रम

चित्राङ्गदा मदन ओ वसन्त

चित्राङ्गदा। तुमि पञ्चशर?

मदन। आमि सेइ मनसिज,
टेने आनि निखिलेर नरनारीहिया
वेदनाबन्धने।

चित्राङ्गदा। की वेदना, की बन्धन,
जाने ताहा दासी। प्रणमि तोमार पदे।
प्रभु, तुमि कोन् देव?

वसन्त। आमि ऋतुराज।
जरा मृत्यु दुइ दैत्य निमेषे निमेषे
बाहिर करिते चाहे विश्वेर कङ्काल;
आमि पिछे पिछे फिरे पदे पदे तारे
करि आक्रमण; रात्रिदिन से संग्राम।
आमि अखिलेर सेइ अनन्त यौवन।

चित्राङ्गदा। प्रणाम तोमारे भगवन्। चरितार्थ
दासी देवदर्शने।

आमि सेइ—मैं वही हूँ; **टेने आनि**—खींच लाता हूँ; **निखिलेर**—समस्त विश्व के।

की—क्या, कैसा; **जाने ताहा**—उसे जानती है; **प्रणमि......पदे**—तुम्हारे चरणों में प्रणाम करती हूँ; **तुमि......देव**—तुम कौन देवता हो।

दुइ—दो; **बाहिर......चाहे**—निकाल डालना चाहते हैं; **आमि...... आक्रमण**—मैं पीछे पीछे घूमता पद पद पर उनपर आक्रमण करता हूँ; **से**—वह; **सेइ**—वही।

तोमारे—तुम्हें; **देवदर्शने**—देवदर्शन से।

मदन। कल्याणी, की लागि
ए कठोर व्रत तव? तपस्यार तापे
करिछ मलिन खिन्न यौवनकुसुम;
अनङ्गपूजार नहे एमन विधान।
के तुमि, की चाओ भद्रे?

चित्राङ्गदा। दया कर यदि,
शोन मोर इतिहास। जानाब प्रार्थना
तार परे।

मदन। शुनिबारे रहिनु उत्सुक।

चित्राङ्गदा। आमि चित्राङ्गदा। मणिपुर-राजकन्या।
मोर पितृवंशे कभु पुत्री जन्मिबे ना--
दियाछिला हेन वर देव उमापति
तपे तुष्ट हये। आमि सेइ महावर
व्यर्थ करियाछि। अमोघ देवतावाक्य
मातृगर्भे पशि दुर्बल प्रारम्भ मोर
पारिल ना पुरुष करिते शैव तेजे,
एमनि कठिन नारी आमि।

मदन। शुनियाछि
बटे। ताइ तव पिता पुत्रेर समान
पालियाछे तोमा। शिखायेछे धनुर्विद्या
राजदण्डनीति।

की लागि--किस लिए; **ए**--यह; **तापे**--ताप से; **करिछ**--कर रही हो; **नहे**--नहीं है; **एमन**--ऐसा; **के......चाओ**--तुम कौन हो, क्या चाहती हो।

कर--करो; **शोन**--सुनो; **जानाब**--जताऊँगी; **तार परे**--उसके बाद।

शुनिबारे......उत्सुक--सुनने के लिए उत्सुक हूँ।

कभु--कभी; **जन्मिबे ना**--जन्म नहीं लेगी; **दियाछिला**--दिया था; **हेन**--ऐसा; **हये**--हो कर; **करियाछि**--किया है; **पशि**--प्रवेश कर; **पारिल......तेजे**--शिव का तेज (मुझे) पुरुष नहीं बना सका; **एमनि**--ऐसी।

पालियाछे तोमा--तुम्हारा पालन किया है।

चित्राङ्गदा। ताइ पुरुषेर वेशे
नित्य करि राजकाज युवराजरूपे,
फिरि स्वेच्छामते; नाहि जानि लज्जा भय,
अन्तःपुरवास; नाहि जानि हावभाव,
विलास-चातुरी; शिखियाछि धनुर्विद्या,
शुधु शिखि नाइ, देव, तव पुष्पधनु
केमने बाँकाते हय नयनेर कोणे।

वसन्त। सुनयने, से-विद्या शिखे ना कोनो नारी;
नयन आपनि करे आपनार काज,
बुके यार बाजे सेइ बोझे।

चित्राङ्गदा। एक दिन
गियेछिनु मृग-अन्वेषणे एकाकिनी
घन वने, पूर्णानदीतीरे। तरुमूले
बाँधि अश्व दुर्गम कुटिल वनपथे
पशिलाम मृगपदचिह्न अनुसरि।
झिल्लीमन्द्रमुखरित नित्य-अन्धकार
लतागुल्मे-गहन-गम्भीर महारण्ये
किछु दूर अग्रसरि देखिनु सहसा,
रुधिया संकीर्ण पथ रयेछे शयान
भूमितले, चीरधारी मलिन पुरुष।

ताइ—इसीलिये; **करि**—करती हूँ; **फिरि**—घूमती हूँ; **नाहि जानि**—नहीं जानती; **शधु......नाइ**—केवल (यह) नहीं सीखा; **केमने...... हय**—कैसे वक्र करना होता है।

से......नारी—किसी भी नारी को वह विद्या सीखनी नहीं पड़ती; **आपनि**—स्वयं; **करे**—करते हैं; **बुके......बोझे**—जिसके हृदय में कसक होती है वही समझता है।

गियेछनु—गयी थी; **बाँधि**—बाँध कर; **पशिलाम**—प्रवेश किया; **अनुसरि**—अनुसरण कर; **अग्रसरि**—अग्रसर हो कर; **देखिनु**—देखा; **रुधिया**—अवरुद्ध कर; **रयेछे शयान**—लेटा हुआ है;

उठिते कहिनु तारे अवज्ञार स्वरे
सरे येते––नड़िल ना, चाहिल ना फिरे।
उद्धत अधीर रोषे धनु-अग्रभागे
करिनु ताड़ना ; सरल सुदीर्घ देह
मुहूर्तेइ तीरवेगे उठिल दाँड़ाये
सम्मुखे आमार ; भस्मसुप्त अग्नि यथा
घृताहुति पेये शिखारूपे उठे ऊर्ध्वे
चक्षेर निमेषे। शुधु क्षणेकेर तरे
चाहिला आमार मुखपाने––रोषदृष्टि
मिलालो पलके; नाचिल अधरप्रान्ते
स्निग्ध गुप्त कौतुकेर मृदुहास्यरेखा
बुझि से बालकमूर्ति हेरिया आमार।
शिखे पुरुषेर विद्या, प'रे पुरुषेर
वेश, पुरुषेर साथे थेके, एतदिन
भुलेछिनु याहा, सेइ मुखे चेये, सेइ
आपनाते-आपनि-अटल मूर्ति हेरि',
सेइ मुहूर्तेइ जानिलाम मने, नारी
आमि। सेइ मुहूर्तेइ प्रथम देखिनु
सम्मुखे पुरुष मोर।

उठिते.....येते—अवज्ञा के स्वर में उसे उठ कर हट जाने के लिए कहा; **नड़िल ना**—नहीं हिला; **चाहिल......फिरे**—मुड़ कर नहीं देखा; **उठिल...... आमार**—मेरे सामने खड़ा हो गया; **पेये**—पा कर; **शुधु......मुखपाने**—केवल क्षण भर के लिये मेरे मुख की ओर देखा; **रोषदृष्टि......पलके**—पल भर में रोष भरी दृष्टि विलीन हो गई; **हेरिया**—देख कर; **शिखे**—सीख कर; **प'रे**—पहन कर; **पुरुषेर......थेके**—पुरुष मण्डली में रह कर; **एतदिन**—इतने दिन; **भुलेछिनु याहा**—जिसे भूली हुई थी; **सेइ......चेये**—उस मुख को देख; **सेइ......हेरि**—अपने आप में स्थिर उस मूर्ति को देख कर; **सेइ......मने**—उसी क्षण मन में जाना; **देखिनु**—देखा।

मदन । से शिक्षा आमारि
सुलक्षणे । आमिइ चेतन क'रे दिइ
एकदिन जीवनेर शुभ पुण्यक्षणे
नारीरे हइते नारी, पुरुषे पुरुष ।
की घटिल परे ?

चित्राङ्गदा । सभयविस्मयकण्ठे
शुधानु, 'के तुमि ?' शुनिनु उत्तर, 'आमि
पार्थ, कुरुवंशधर ।'
रहिनु दाँड़ाये
चित्रप्राय, भुले गेनु प्रणाम करिते ।
एइ पार्थ ? आजन्मेर विस्मय आमार ?
शुनेछिनु बटे, सत्यपालनेर तरे,
द्वादश वत्सर वने वने ब्रह्मचर्य
पालिछे अर्जुन । एइ सेइ पार्थवीर !
बाल्यदुराशाय कत दिन करियाछि
मने, पार्थकीर्ति करिब निष्प्रभ आमि
निज भुजबले; साधिब अव्यर्थ लक्ष्य;
पुरुषेर छद्मवेशे मागिब संग्राम
ताँर साथे, वीरत्वेर देब परिचय ।
हा रे मुग्धे, कोथाय चलिया गेल सेइ

से......आमारि—वह शिक्षा मेरी ही है; **आमि......दिइ**—मैं ही सचेत कर देता हूँ; **नारीरे......पुरुष**—नारी को नारी और पुरुष को पुरुष होने के लिए; **की......परे**—बाद में क्या हुआ ।

शुधानु—पूछा; **के तुमि**—तुम कौन हो; **शुनिनु**—सुना; **रहिनु..... करिते**—चित्रवत् खड़ी रही, प्रणाम करना भूल गई; **एइ पार्थ**—यही पार्थ हैं; **आजन्मेर**—जीवन भर का; **शुनेछिनु बटे**—सुना था अवश्य; **तरे**—लिए; **पालिछे**—पालन कर रहा है; **एइ सेइ**—यह वही; **बाल्य......मने**—बचपन की दुराकांक्षा में कितने दिनों सोचा है; **साधिब**—पूरा करूँगी; **मागिब**—माँगूगी, चाहूँगी; **ताँर साथे**—उनके साथ; **देब**—दूँगी; **कोथाय......तोर**—कहाँ चली

स्पर्धा तोर! ये भूमिते आछेन दाँड़ाये
से भूमिर तृणदल हइताम यदि,
शौर्यवीर्य याहाकिछु धुलाय मिलाये
लभिताम दुर्लभ मरण, सेइ ताँर
चरणेर तलें।

की भावितेछिनु मने
नाइ। देखिनु चाहिया, धीरे चलि गेला
वीर वन-अन्तरालें। उठिनु चमकि;
सेइक्षणे जन्मिल चेतना; आपनारे
दिलाम धिक्कार शतबार। छि छि मूढ़े,
ना करिलि सम्भाषण, ना शुधालि कथा,
ना चाहिलि क्षमाभिक्षा, बर्बरेर मतो
रहिलि दाँड़ाये, हेला करि चलि गेला
वीर। बाँचिताम, से मुहुर्ते मरिताम
यदि।

परदिन प्राते, दुरे फेले दिनु
पुरुषेर वेश। परिलाम रक्ताम्बर,
कङ्कण किङ्किणी काञ्चि। अनभ्यस्त साज
लज्जाय जड़ाये अङ्ग रहिल एकान्त
ससंकोचें।

गई तेरी स्पर्धा; **ये......यदि**—जिस भूमि पर (वे) खड़े हैं, मैं उस भूमि का यदि तृणदल होती; **याहाकिछु**—जो कुछ; **धुलाय मिलाये**—धूल में मिला कर; **लभिताम**—प्राप्त करती; **सेइ**—वही; **ताँर......तले**—उनके चरणों के नीचे।

की......नाइ—क्या सोच रही थी, याद नहीं; **देखिनु चाहिया**—देखा; **चलि गेला**—चले गए; **उठिनु चमकि**—चौंक उठी; **आपनारे......शतबार**—अपनेको सैकड़ों बार धिक्कार दिया; **मतो**—भाँति; **रहिलि दाँड़ाये**—खड़ी रही; **हेला करि**—अवहेला कर; **बाँचिताम......यदि**—बच जाती अगर उसी क्षण मर जाती; **दूरे......दिनु**—दूर फेंक दिया; **परिलाम**—पहना; **काञ्चि**—मेखला; **लज्जाय जड़ाये**—लज्जा से जड़ित; **रहिल**—रहा;

गोपने गेलाम सेइ वने;
अरण्येर शिवालये देखिलाम ताँरे।

मदन। ब'ले याओ बाला। मोर काछे करियो ना
कोनो लाज। आमि मनसिज; मानसेर
सकल रहस्य जानि।

चित्राङ्गदा। मने नाइ भालो,
तार परे की कहिनु आमि, की उत्तर
शुनिलाम। आर शुधायो ना भगवन्।
माथाय पड़िल भेङे लज्जा वज्ररूपे,
तबु मोरे पारिल ना शतधा करिते—
नारी हये एमनि पुरुषप्राण मोर!
नाहि जानि केमने एलेम घरे फिरे
दुःस्वप्नविह्वलसम। शेष कथा ताँर
कर्णे मोर बाजिते लागिल तप्त शूल,
'ब्रह्मचारिव्रतधारी आमि। पतियोग्य
नाहि वराङ्गने।'
पुरुषेर ब्रह्मचर्य!
धिक् मोरे, ताओ आमि नारिनु टलाते?
तुमि जान, मीनकेतु, कत ऋषि मुनि
करियाछे विसर्जन नारीपदतले

गेलाम—गई; **देखिलाम ताँरे**—उन्हें देखा।

ब'ले याओ—कहती जाओ; **मोर.....लाज**—मेरे निकट लज्जा मत करना।

मने......शुनिलाम—अच्छी तरह याद नहीं, उसके बाद मैंने क्या कहा (और) क्या उत्तर सुना (पाया); **आर......ना**—और न पूछो; **माथाय...... वज्ररूपे**—लज्जा वज्ररूप में सिर पर टूट कर गिरी; **तबु......करिते**—फिर भी मुझे टुकड़े टुकड़े नहीं कर सकी; **नाहि......फिरे**—नहीं जानती कैसे घर लौट आई; **शेष......ताँर**—उनकी अन्तिम बात; **कर्णे......लागिल**—मेरे कानों में बजने लगी।

मोरे—मुझे; **ताओ......टलाते**—उसे भी मैं विचलित नहीं कर सकी; **तुमि जान**—तुम जानते हो; **कत**—कितने; **करियाछे**—किया है;

चिरार्जित तपस्यार फल। क्षत्रियेर
ब्रह्मचर्य ! गृहे गिये भाङिये फेलिनु
धनुःशर याहाकिछु छिल; किणाङ्कित
ए कठिन बाहु—छिल या गर्वेर धन
एत काल मोर, लाञ्छना करिनु तारे
निष्फल आक्रोशभरे। एतदिन परे
बुझिलाम, नारी हये पुरुषेर मन
ना यदि जिनिते पारि वृथा विद्या यत।
अबलार कोमल मृणालबाहुदुटि
ए बाहुर चेये धरे शतगुण बल।
धन्य सेइ मुग्ध मूर्ख क्षीणतनुलता
परावलम्बिता लज्जाभये-लीनाङ्गिनी
सामान्य ललना, यार त्रस्त नेत्रपाते
माने पराभव वीर्यबल, तपस्यार
तेज।

हे अनङ्गदेव, सब दम्भ मोर
एक दण्डे लयेछ छिनिया—सब विद्या,
सब बल करेछ तोमार पदानत।
एखन तोमार विद्या शिखाओ आमाय;
दाओ मोरे अबलार बल, निरस्त्रेर
अस्त्र यत।

गिये—जा कर; **भाङिये फेलिनु**—तोड़ डाले; **याहाकिछु छिल**—जो कुछ थे; **किण**—रगड़ का चिह्न; **छिल या**—जो था; **एतकाल**—इतने दिन; **लाञ्छना ......तारे**—उसकी भर्त्सना की; **एतदिन.....बुझिलाम**—इतने दिनों बाद समझा; **जिनिते पारि**—जीत सकी; **यत**—जितनी; **ए**—इस; **चेये**—अपेक्षा।

एक......छिनिया—एक मुहूर्त में छीन लिया है; **करेछ**—किया है; **तोमार**—अपने; **एखन......आमाय**—अब अपनी विद्या मुझे सिखाओ; **दाओ मोरे**—दो मुझे; **यत**—जितने।

मदन। आमि हव सहाय तोमार।
अयि शुभे, विश्वजयी अर्जुने जिनिया
वन्दी करि आनि दिब सम्मुखे तोमार।
राज्ञी हये दियो तारे दण्ड पुरस्कार
यथा-इच्छा। विद्रोहीरे करियो शासन।

चित्राङ्गदा। समय थाकित यदि, एकाकिनी आमि
तिले तिले हृदय ताँहार करिताम
अधिकार, नाहि चाहिताम देवतार
सहायता। सङ्गीरूपे थाकिताम साथे,
रणक्षेत्रे हतेम सारथि, मृगयाते
रहिताम अनुचर, शिबिरेर द्वारे
जागिताम रात्रिर प्रहरी, भक्तरूपे
पूजिताम, भृत्यरूपे करिताम सेवा,
क्षत्रियेर महाव्रत आर्तपरित्राणे
सखारूपे हइताम सहाय ताँहार।
एकदिन कौतूहले देखितेन चाहि;
भाबितेन मने मने, 'ए कोन् बालक,
पूर्वजनमेर चिरदास, ए जनमे
सङ्ग लइयाछे मोर सुकृतिर मतो।'
क्रमे खुलिताम ताँर हृदयेर द्वार,

हब—होऊँगा; **जिनिया**—जीत कर; **बन्दी......तोमार**—बन्दी बना तुम्हारे सामने ला दूंगा; **राज्ञी......तारे**—रानी हो कर देना उसे; **विद्रोहीरे**—विद्रोही का; **करियो**—करना।

थाकित—रहता; **ताँहार**—उनका; **करिताम**—करती; **नाहि चाहिताम**—नहीं चाहती; **थाकिताम साथे**—साथ रहती; **हतेम**—होती; **रहिताम**—रहती; **जागिताम**—जागती; **हइताम......ताँहार**—उनकी सहायक होती; **देखितेन चाहि**—देखते; **भाबितेन**—सोचते; **ए.....बालक**—यह कौन बालक है; **ए जनमे**—इस जन्म में; **सङ्ग......मतो**—पुण्य की भाँति मेरे साथ हो लिया है; **खुलिताम**—खोलती;

चिरस्थान लभिताम सेथा। जानि आमि
ए प्रेम आमार शुधु क्रन्दनेर नहे;
ये नारी निर्वाक् धैर्ये चिरमर्मव्यथा
निशीथनयनजले करये पालन,
दिवालोके ढेके राखे म्लान हासितले,
आजन्मविधवा, आमि से रमणी नहि;
आमार कामना कभु हबे ना निष्फल।
निजेरे बारेक यदि प्रकाशिते पारि,
निश्चय से दिबे धरा। हाय हतविधि,
सेदिन की देखेछिल! शरमे कुञ्चित
शङ्कित कम्पित नारी, विवश विह्वल
प्रलापवादिनी। किन्तु आमि यथार्थ कि
ताइ? येमन सहस्र नारी पथे गृहे,
चारि दिके, शुधु क्रन्दनेर अधिकारी,
तार चेये बेशि नइ आमि? किन्तु हाय,
आपनार परिचय देओया, बहु धैर्ये
बहु दिने घटे—चिरजीवनेर काज,
जन्मजन्मान्तेर व्रत। ताइ आसियाछि
द्वारे तोमादेर, करेछि कठोर तप।

लभिताम—पाती; **सेथा**—वहाँ; **जानि......नहे**—मैं जानती हूँ मेरा यह प्रेम केवल क्रन्दन का नहीं है; **ये**—जो; **करये**—करती है; **ढेके राखे**—ढाँक रखती है; **हासितले**—हँसी के नीचे; **आमि.....नहि**—मैं वह रमणी नहीं हूँ; **आमार......निष्फल**—मेरी कामना कभी निष्फल नहीं होगी; **निजेरे..... धरा**—अपने को एक बार यदि व्यक्त कर सकूँ तो वह निश्चय पकड़ाई देगा; **हतविधि**—दुर्भाग्य; **सेदिन.....देखेछिल**—उस दिन क्या देखा था; **शरमे**—शर्म से; **आमि......ताइ**—मैं सचमुच क्या वही हूँ; **येमन**—जैसी; **चारि दिके**—चारों ओर; **शुधु**—केवल; **तार......आमि**—उससे अधिक मैं नहीं हूँ; **आपनार ......घटे**—अपना परिचय देना अत्यन्त धैर्य से बहुत दिनों में सम्पन्न होता है; **ताइ......तोमादेर**—इसीलिए तुमलोगों के द्वार आई हूँ; **करेछि**—किया है;

हे भुवनजयी देव, हे महासुन्दर
ऋतुराज, शुधु एक दिवसेर तरे
घुचाइया दाओ––जन्मदाता विधातार
विना दोषे अभिशाप, नारीर कुरूप।
करो मोरे अपूर्व सुन्दरी। दाओ मोरे
सेइ एक दिन, तार परे चिरदिन
रहिल आमार हाते।

यखन प्रथम
देखिलाम तारे, येन मुहुर्तेर माझे
अनन्त वसन्त ऋतु पशिल हृदये।
बड़ो इच्छा हयेछिल से यौवनोच्छ्वासे
समस्त शरीर यदि देखिते देखिते
अपूर्व पुलकभरे उठे प्रस्फुटिया
लक्ष्मीर चरणशायी पद्मेर मतन।
हे वसन्त, हे वसन्तसखे, से वासना
पुराओ आमार शुधु दिनेकेर तरे।

मदन। तथास्तु।

वसन्त। तथास्तु। शुधु एक दिन नहे,
वसन्तेर पुष्पशोभा एक वर्ष धरि
घेरिया तोमार तनु रहिबे विकशि।

एक.....तरे––एक दिन के लिये; **घुचाइया दाओ**––मिटा दो; **करो मोरे**––मुझे बना दो; **दाओ**––दो; **सेइ**––वही; **तार......हाते**––इसके बाद सर्वदा का भार मेरे ऊपर रहा। **यखन.....तारे**––जब प्रथम उसे देखा; **येन.....माझे**––जैसे क्षण भर के भीतर; **पशिल**––प्रवेश किया; **हृदये**––हृदय में; **हयेछिल**––हुई थी; **से......तरे**––सिर्फ एक दिन के लिये मेरी वह आकांक्षा पूर्ण करो।

शुधु......नहे––केवल एक दिन नहीं; **धरि**––तक; **घेरिया......विकशि**––तुम्हारे शरीर को आवेष्टित किए हुए विकसित होती रहेगी।

२

मणिपुर : अरण्ये शिवालय

अर्जुन

अर्जुन। काहारे हेरिनु ! से कि सत्य किम्वा माया !
निविड़ निर्जन वने निर्मल सरसी;
एमनि निभृत निरालय, मने हय,
निस्तब्ध मध्याह्ने सेथा वनलक्ष्मीगण
स्नान क'रे याय, गभीर पूर्णिमारात्रे
सेइ सुप्त सरसीर स्निग्ध शस्पतटे
शयन करेन सुखे निःशङ्क विश्रामे
स्खलित अञ्चले।

सेथा तरु-अन्तराले
अपराह्णवेलाशेषे, भावितेछिलाम
आशैशव जीवनेर कथा, संसारेर
मूढ़ खेला दुःखसुख उलटि पालटि;
जीवनेर असन्तोष, असम्पूर्ण आशा,
अनन्त दारिद्रय एइ मर्त मानवेर।
हेनकाले घनतरु-अन्धकार हते
धीरे धीरे बाहिरिया के आसि दाँड़ालो
सरोवरसोपानेर श्वेत शिलापटे।
की अपूर्व रूप ! कोमलचरणतले

काहारे हेरिनु—किसे देखा; **से कि**—वह क्या; **सरसी**—सरोवर; **एमनि**—इसी तरह; **निरालय**—निर्जन; **मने हय**—लगता है।

सेथा—वहाँ; **स्नान......याय**—स्नान कर जाती हैं; **सेइ**—उसी; **शस्पतटे**—कोमल घासवाले तट पर; **करेन**—करती हैं; **सुखे**—आनंद से; **भाबिते-छिलाम**—सोच रहा था; **एइ......मानवेर**—इस मृत्युलोक के मानव का; **हेनकाले**—ऐसे समय; **हते**—से; **बाहिरिया......दाँड़ालो**—कौन निकल कर आ खड़ी हुई;

धरातल केमने निश्चल हये छिल !
उषार कनकमेघ देखिते देखिते
येमन मिलाये याय, पूर्वपर्वतेर
शुभ्र शिरे अकलङ्क नग्न शोभाखानि
करि विकशित, तेमनि वसन तार
मिलाते चाहितेछिल अङ्गेर लावण्ये
सुखावेशे। नामि धीरे सरोवरतीरे
कौतूहले देखिल से निज मुखच्छाया;
उठिल चमकि। क्षणपरे मृदु हासि
हेलाइया वाम बाहुखानि हेलाभरे
एलाइया दिला केशपाश; मुक्त केश
पड़िल विह्वल हये चरणेर काछे।
अञ्चल खसाये दिये हेरिल आपन
अनिन्दित बाहुखानि, परशेर रसे
कोमल कातर, प्रेमेर-करुणा-माखा।
निरखिला नत करि शिर, परिस्फुट
देहतटे यौवनेर उन्मुख विकाश।
देखिला चाहिया नव गौरतनु-तले
आरक्तिम आलज्ज आभास। सरोवरे

केमने......छिल—कैसा निश्चल हो गया था; **देखिते देखिते**—देखते देखते; **येमन......याय**—जैसे विलीन हो जाता है; **शोभाखनि......विकशित**—शोभा विकसित कर; **तेमनि......सुखावेशे**—वैसे ही उसके वस्त्र आनन्द के आवेश में अंगों के लावण्य के साथ विलीन हो जाना चाहते थे; **नामि**—उतर कर; **देखिल से**—उसने देखी; **उठिल चमकि**—चौंक उठी; **क्षणपरे**—क्षण भर बाद; **हेलाइया**—झुका कर; **बाहुखानि**—बाँह; **हेलाभरे**—अवलीला क्रम से; **एलाइया दिला**—आलुलायित कर दिया, शिथिल कर दिया; **विह्वल हये**—विभोर हो कर; **चरणेर काछे**—चरणों के निकट; **खसाये दिये**—स्खलित कर; **हेरिल**—देखा; **परशेर रसे**—स्पर्श के रस से; **माखा**—आलिप्त; **निरखिला......शिर**—शिर झुका कर देखा; **देखिला चाहिया**—देखा;

पा-दुखानि डुवाइया देखिला आपन
चरणेर आभा।—— विस्मयेर नाइ सीमा।
सेइ येन प्रथम देखिल आपनारे।
श्वेतशतदल येन कोरकवयस
यापिल नयन मुदि ; येदिन प्रभाते
प्रथम लभिल पूर्ण शोभा, सेइदिन
हेलाइया ग्रीवा नील सरोवरजले
प्रथम हेरिल आपनारे, सारादिन
रहिल चाहिया सविस्मये।——क्षणपरे
की जानि की दुखे, हासि मिलाइल मुखे,
म्लान हल दुटि आँखि; बाँधिया तुलिल
केशपाश; अञ्चले ढाकिल देहखानि;
निश्वास फेलिया, धीरे धीरे च'ले गेल
सोनार सायाह्न यथा म्लान मुख करि
आँधार रजनीपाने धाय मृदुपदे।

भाविलाम मने, धरणी खुलिया दिल
ऐश्वर्य आपन। कामनार सम्पूर्णता
चमकिया मिलाइया गेल। भाविलाम,

पा-दुखानि—चरण युगल; **डुबाइया**—डुबा कर; **नाइ**—नहीं है; **सेइ...... आपनारे**—जैसे अपने आप को तभी पहली बार देखा हो; **श्वेत.....वयस**—श्वेत कमल जैसे कलिकावस्था को; **यापिल**—यापन किया; **मुदि**—मूँद कर; **येदिन**—जिस दिन; **लभिल**—प्राप्त की; **सेइदिन**—उसी दिन; **आपनारे**—अपने को; **रहिल**—रही; **की......मुखे**—न-जाने किस दुःख से चेहरे की हँसी विलीन हो गई; **हल**—हुई; **दुटि आँखि**—दोनों आँखें; **बाँधिया.....केशपाश**—केशपाश बाँध लिया; **अञ्चले......देहखानि**—अञ्चल से देह ढँक ली; **निश्वास फेलिया**—निश्वास छोड़ कर; **च'ले गेल**—चली गई; **सायाह्न**—सन्ध्या; **करि**—कर; **आँधार......मृदुपदे**—कोमल चरणों से अंधकारमयी रजनी की ओर दौड़ता है।

भाविलाम मने—मन में सोचा; **खुलिया दिल**—खोल दिया; **आपन**—अपना; **चमकिया......गेल**—चमक कर विलीन हो गई;

कत युद्ध, कत हिंसा, कत आड़म्बर,
पुरुषेर पौरुषगौरव, वीरत्वेर
नित्य कीर्तितृषा, शान्त हये लुटाइया
पड़े भूमे ओइ पूर्ण सौन्दर्येर काछे—
पशुराज सिंह यथा सिंहवाहिनीर
भुवनवाञ्छित अरुणचरणतले।
आर एकबार यदि—के दुयार ठेले ?

[द्वार खुलिया

ए की ! सेइ मूर्ति ! शान्त हओ हे हृदय ! —

कोनो भय नाइ मोरे, वरानने ! आमि
क्षत्रकुलजात, भयभीत दुर्बलेर
भयहारी।

चित्राङ्गदा। आर्य ! तुमि अतिथि आमार।
ए मन्दिर आमार आश्रम। नाहि जानि
केमने करिब अभ्यर्थना, की सत्कारे
तोमारे तुषिब आमि।

अर्जुन। अतिथिसत्कार
तव दरशने हे सुन्दरी। शिष्टवाक्य
समूह सौभाग्य मोर। यदि नाहि लह

कत—कितना; **शान्त......काछे**—शान्त हो कर उस पूर्ण सौन्दर्य के निकट भूमि में लोटने लग जाती है; **आर**—और; **के......ठेले**—दरवाज़ा कौन ठेल रहा है।

खुलिया—खोल कर।

ए की—यह क्या; **सेइ**—वही; **हओ**—होओ; **कोनो......मोरे**—मुझसे कोई भय नहीं।

ए—यह; **नाहि जानि**—नहीं जानती; **केमने करिब**—कैसे करूँगी; **की......आमि**—किस सत्कार से मैं तुम्हें तुष्ट करूँगी।

तव दरशने—तुम्हारे दर्शन से; **लह**—लो (मानो);

पा-दुखानि डुबाइया देखिला आपन
चरणेर आभा ।— विस्मयेर नाइ सीमा ।
सेइ येन प्रथम देखिल आपनारे ।
श्वेतशतदल येन कोरकवयस
यापिल नयन मुदि ; येदिन प्रभाते
प्रथम लभिल पूर्ण शोभा, सेइदिन
हेलाइया ग्रीवा नील सरोवरजले
प्रथम हेरिल आपनारे, सारादिन
रहिल चाहिया सविस्मये ।—क्षणपरे
की जानि की दुखे, हासि मिलाइल मुखे,
म्लान हल दुटि आँखि; बाँधिया तुलिल
केशपाश; अञ्चले ढाकिल देहखानि;
निश्वास फेलिया, धीरे धीरे च'ले गेल
सोनार सायाह्न यथा म्लान मुख करि
आँधार रजनीपाने धाय मृदुपदे ।

भाबिलाम मने, धरणी खुलिया दिल
ऐश्वर्य आपन । कामनार सम्पूर्णता
चमकिया मिलाइया गेल । भाबिलाम,

पा-दुखानि—चरण युगल; **डुबाइया**—डुबा कर; **नाइ**—नहीं है; **सेइ...... आपनारे**—जैसे अपने आप को तभी पहली बार देखा हो; **श्वेत.....वयस**—श्वेत कमल जैसे कलिकावस्था को; **यापिल**—यापन किया; **मुदि**—मूँद कर; **येदिन**—जिस दिन; **लभिल**—प्राप्त की; **सेइदिन**—उसी दिन; **आपनारे**—अपने को; **रहिल**—रही; **की......मुखे**—न-जाने किस दुःख से चेहरे की हँसी विलीन हो गई; **हल**—हुई; **दुटि आँखि**—दोनों आँखें; **बाँधिया.....केशपाश**—केशपाश बाँध लिया; **अञ्चले......देहखानि**—अञ्चल से देह ढँक ली; **निश्वास फेलिया**—निश्वास छोड़ कर; **च'ले गेल**—चली गई; **सायाह्न**—सन्ध्या; **करि**—कर; **आँधार......मृदुपदे**—कोमल चरणों से अंधकारमयी रजनी की ओर दौड़ता है ।

भाबिलाम मने—मन में सोचा; **खुलिया दिल**—खोल दिया; **आपन**—अपना; **चमकिया......गेल**—चमक कर विलीन हो गई;

कत युद्ध, कत हिंसा, कत आड़म्बर,
पुरुषेर पौरुषगौरव, वीरत्वेर
नित्य कीर्तितृषा, शान्त हये लुटाइया
पड़े भूमे ओइ पूर्ण सौन्दर्येर काछे—
पशुराज सिंह यथा सिंहवाहिनीर
भुवनवाञ्छित अरुणचरणतले।
आर एकबार यदि—के दुयार ठेले ?

[द्वार खुलिया

ए की ! सेइ मूर्ति ! शान्त हओ हे हृदय ! —

कोनो भय नाइ मोरे, वराननें ! आमि
क्षत्रकुलजात, भयभीत दुर्बलेर
भयहारी।

चित्राङ्गदा। आर्य ! तुमि अतिथि आमार।
ए मन्दिर आमार आश्रम। नाहि जानि
केमने करिब अभ्यर्थना, की सत्कारे
तोमारे तुषिब आमि।

अर्जुन। अतिथिसत्कार
तव दरशने हे सुन्दरी। शिष्टवाक्य
समूह सौभाग्य मोर। यदि नाहि लह

कत—कितना; **शान्त......काछे**—शान्त हो कर उस पूर्ण सौन्दर्य के निकट भूमि में लोटने लग जाती है; **आर**—और; **के......ठेले**—दरवाज़ा कौन ठेल रहा है।

खुलिया—खोल कर।

ए की—यह क्या; **सेइ**—वही; **हओ**—होओ; **कोनो......मोरे**—मुझसे कोई भय नहीं।

ए—यह; **नाहि जानि**—नहीं जानती; **केमने करिब**—कैसे करूँगी; **की......आमि**—किस सत्कार से मैं तुम्हें तुष्ट करूँगी।

तव दरशने—तुम्हारे दर्शन से; **लह**—लो (मानो);

अपराध, प्रश्न एक शुधाइते चाहि—
चित्त मोर कुतूहली ।

चित्राङ्गदा । शुधाओ निर्भये ।

अर्जुन । शुचिस्मिते, कोन् सुकठोर व्रत लागि
जनहीन देवालये हेन रूपराशि
हेलाय दितेछ विसर्जन, हतभाग्य
मर्तजने करिया वञ्चित ?

चित्राङ्गदा । गुप्त एक
कामना-साधना-तरे एकमने करि
शिवपूजा ।

अर्जुन । हाय, कारे करिछे कामना
जगतेर कामनार धन ! सुदर्शने,
उदयशिखर हते अस्ताचलभूमि
भ्रमण करेछि आमि; सप्तद्वीपमाझे
येखाने या किछु आछे दुर्लभ सुन्दर,
अचिन्त्य महान्, सकलि देखेछि चोखे;
की चाओ, काहारे चाओ, यदि बल मोरे
मोर काछे पाइबे वारता ।

शुधाइते चाहि—पूछना चाहता हूँ ।

शुधाओ—पूछो ।

कोन्—किस; **लागि**—लिये; **हेन**—ऐसी; **हेलाय**—अवहेलापूर्वक; **दितेछ**—दे रही हो; **हतभाग्य**—अभागे; **मर्तजने**—मर्त्यजन को; **करिया**—कर ।

तरे—लिये; **एकमने**—एक मन से, एकाग्र हो कर; **करि**—करती हूँ ।

कारे......धन—जगत् की कामना का धन किसकी कामना कर रहा है; **हते**—से; **करेछि**—किया है; **येखाने......आछे**—जहाँ जो कुछ भी है; **सकलि......चोखे**—सबको आँखों से देखा है; **की......वारता**—क्या चाहती हो, किसे चाहती हो अगर मुझसे कहो तो मेरे निकट (उसका) पता पाओगी ।

चित्राङ्गदा। त्रिभुवने
परिचित तिनि, आमि याँरे चाहि।

अर्जुन। हेन
नर के आछे धराय! कार यशोराशि
अमरकाङ्क्षित तव मनोराज्यमाझे
करियाछे अधिकार दुर्लभ आसन?
कह नाम तार, शुनिया कृतार्थ हइ।

चित्राङ्गदा। जन्म ताँर सर्वश्रेष्ठ नरपतिकुले,
सर्वश्रेष्ठ वीर।

अर्जुन। मिथ्या ख्याति बेड़े ओठे
मुखे मुखे कथाय कथाय, क्षणस्थायी
वाष्प यथा उषारे छलना क'रे ढाके
यतक्षण सूर्य नाहि ओठे। हे सरले,
मिथ्यारे कोरो ना उपासना ए दुर्लभ
सौन्दर्यसम्पदे। कह शुनि, सर्वश्रेष्ठ
कोन् वीर, धरणीर सर्वश्रेष्ठ कुले।

चित्राङ्गदा। परकीर्ति-असहिष्णु के तुमि संन्यासी!
के ना जाने कुरुवंश ए भुवनमाझे
राजवंशचूड़ा।

तिनि—वे; **आमि......चाहि**—मैं जिन्हें चाहती हूँ।

हेन.....धराय—पृथ्वी पर कौन ऐसा नर है; **कार**—किसकी; **करियाछे**—किया है; **कह**—कहो; **तार**—उसका; **शुनिया**—सुन कर; **हइ**—होऊँ।

ताँर—उनका।

मिथ्या......कथाय—बातों-बातों में कानोंकान मिथ्या ख्याति बढ़ती चली जाती है; **क्षणस्थायी.....ओठे**—जैसे क्षणस्थायी वाष्प छलना से उषा को ढँके रहता है जब तक सूर्य उदय नहीं होता; **मिथ्यारे......सम्पदे**—इस दुर्लभ सौन्दर्य-सम्पद से मिथ्या की उपासना मत करो; **कह शुनि**—बताओ, सुनूँ; **कोन्**—कौन।

के—कौन; **तुमि**—तुम; **के......जाने**—कौन नहीं जानता; **ए भुवन-माझे**—इस भुवन में।

अर्जुन। कुरुवंश !

चित्राङ्गदा। सेइ वंशे
के आछे अक्षययश वीरेन्द्रकेशरी
नाम शुनियाछ ?

अर्जुन। बलो, शुनि तव मुखे।

चित्राङ्गदा। अर्जुन, गाण्डीवधनु, भुवनविजयी।
समस्त जगत् हते से अक्षय नाम
करिया लुण्ठन, लुकाये रेखेछि यत्ने
कुमारीहृदय पूर्ण करि।
ब्रह्मचारी,
केन ए अधैर्य तव ? तबे मिथ्या ए कि ?
मिथ्या से अर्जुन नाम ? कह एइ वेला—
मिथ्या यदि हय तबे हृदय भाङिया
छेड़े दिइ तारे, बेड़ाक से उड़े उड़े
शून्ये शून्ये मुखे मुखे। तार स्थान नहे
नारीर अन्तरासने।

अर्जुन। अयि वराङ्गने,
से अर्जुन, से पाण्डव, से गाण्डीवधनु,
चरणे शरणागत सेइ भाग्यवान।
नाम तार, ख्याति तार, शौर्यवीर्य तार,
मिथ्या होक सत्य होक, ये दुर्लभ लोके

सेइ वंशे—उसी वंश में; **के आछे**—कौन है; **शुनियाछ**—सुना है। **बलो......मुखे**—बोलो तुम्हारे मुँह से सुनूँ।

समस्त......करि—उस अक्षय नाम को समस्त जगत् से अपहरण कर कुमारीहृदय को पूर्ण कर यत्नपूर्वक छिपा रखा है।

केन—क्यों; **ए**—यह; **तबे......कि**—तब यह क्या मिथ्या है; **हय**—हो; **तबे**—तब; **भाङिया**—तोड़ कर; **छेड़े......तारे**—उसे छोड़ दूँ; **बेड़ाक..... उड़े**—वह उड़ता फिरता रहे; **तार......नहे**—उसका स्थान नहीं है।

से—वह; **सेइ**—वही; **तार**—उसका; **होक**—हो; **ये......दान**—जिस

करेछ ताहारे स्थान दान, सेथा हते
आर तारे कोरो ना विच्युत क्षीणपुण्य
हृतस्वर्ग हृतभाग्य-सम।

चित्राङ्गदा। तुमि पार्थ?

अर्जुन। आमि पार्थ, देवी, तोमार हृदयद्वारे
प्रेमार्त अतिथि।

चित्राङ्गदा। शुनेछिनु, ब्रह्मचर्य
पालिछे अर्जुन द्वादश-वरष-व्यापी।
सेइ वीर कामिनीरे करिछे कामना
व्रत भङ्ग करि! —हे संन्यासी, तुमि पार्थ!

अर्जुन। तुमि भाङियाछ व्रत मोर। चन्द्र उठि
येमन निमेषे भेङे देय निशीथेर
योगनिद्रा-अन्धकार।

चित्राङ्गदा। धिक्, पार्थ, धिक्!
के आमि, की आछे मोर, की देखेछ तुमि,
की जान आमारे! कार लागि आपनारे
हतेछ विस्मृत! मुहूर्तके सत्य भङ्ग
करि अर्जुनेरे करितेछ अनर्जुन

दुर्लभ लोक में (तुमने) उसे स्थान दे रखा है; **सेथा......विच्युत**—वहाँ से अब उसे विच्युत मत कर देना।

तुमि पार्थ—(तो) तुम पार्थ हो।

आमि पार्थ—मैं पार्थ हूँ; **तोमार**—तुम्हारे।

शुनेछिनु—सुना था; **पालिछे**—पालन कर रहा है; **सेइ......करि**—वही वीर व्रत भङ्ग कर कामिनी की कामना कर रहा है।

तुमि......मोर—तुमने मेरे व्रत को भङ्ग किया है; **उठि**—उठ कर, उदय हो कर; **येमन**—जैसे; **निमेषे......देय**—क्षण भर में तोड़ देता है; **के......आमारे**—मैं कौन हूँ, मुझमें क्या है, (मुझमें) तुमने क्या देखा है, मुझे (मेरे संबंध में) क्या जानते हो; **कार......विस्मृत**—किसके लिये अपने को भूल रहे हो; **मुहूर्तके......तरे**—पलक मारते सत्य भङ्ग कर किसके लिये अर्जुन को

कार तरे! मोर तरे नहे। एइ दुटि
नीलोत्पल नयनेर तरे; एइ दुटि
नवनीनिन्दित बाहुपाशे सव्यसाची
अर्जुन दियाछे आसि धरा, दुइ हस्ते
छिन्न करि सत्येर बन्धन। कोथा गेल
प्रेमेर मर्यादा! कोथाय रहिल पड़े
नारीर सम्मान! हाय, आमारे करिल
अतिक्रम आमार ए तुच्छ देहखाना--
मृत्युहीन अन्तरेर एइ छद्मवेश
क्षणस्थायी! एतक्षणे पारिनु जानिते,
मिथ्या ख्याति, वीरत्व तोमार।

अर्जुन। ख्याति मिथ्या,
वीर्य मिथ्या आज बुझियाछि--आज मोरे
सप्तलोक स्वप्न मने हय। शुधु एका
पूर्ण तुमि, सर्व तुमि, विश्वेर ऐश्वर्य
तुमि! एक नारी सकल दैन्येर तुमि
महा अवसान, सकल कर्मेर तुमि
विश्रामरूपिणी। केन जानि, अकस्मात्
तोमारे हेरिया बुझिते पेरेछि आमि
की आनन्दकिरणेते प्रथम प्रत्युषे

अनर्जुन कर रहे हो; **मोर......नहे**—मेरे लिये नहीं; **एइ दुटि**—इन दो; **दियाछे......धरा**—आ कर पकड़ाई दिया है; **दुइ......बन्धन**—दोनों हाथों सत्य के बन्धन को छिन्न भिन्न कर; **कोथाय......पड़े**—कहाँ पड़ा रह गया; **आमारे...... देहखाना**—मेरी यह तुच्छ देह मेरा भी अतिक्रमण कर गई; **एतक्षणे......जानिते** —अब जान पाई हूँ।

बुझियाछि—समझा है; **मोरे**—मुझे; **मने हय**—लगता है; **शुधु...... तुमि**—बस, एक तुम्हीं पूर्ण हो; **केन जानि**—न-जाने क्यों; **तोमारे......आमि**— तुम्हें देख कर मैं समझ पाया हूँ;

अन्धकारमहार्णवे सृष्टिशतदल
दिग्विदिके उठेछिल उन्मेषित हये
एक मुहूर्तेर माझे। आर-सकलेरे
पले पले तिले तिले तबे जाना याय
बहुदिने; तोमापाने येमनि चेयेछि
अमनि समस्त तव पेयेछि देखिते,
तबु पाइ नाइ शेष।—कैलासशिखरे
एकदा मृगयाश्रान्त तृषित तापित
गियेछिनु द्विप्रहरे कुसुमविचित्र
मानसेर तीरे। येमनि देखिनु चेये
सेइ सुरसरसीर सलिलेर पाने
अमनि पड़िल चोखे अनन्त अतल।
स्वच्छ जल यत निम्ने चाइ। मध्याह्नेर
रविरश्मिरेखागुलि स्वर्णनलिनीर
सुवर्णमृणालसाथे मिशि नेमे गेछे
अगाध असीमे; काँपितेछे आँकिबाँकि
जलेर हिल्लोले, लक्षकोटि अग्निमयी
नागिनीर मतो। मने हल, भगवान
सूर्यदेव सहस्र अङ्गुलि निर्देशिया
दिलेन देखाये जन्मश्रान्त कर्मक्लान्त

उठेछिल......माझे—एक क्षण में उन्मेषित हो उठा था; **आर-सकलेरे**—और सभी को; **तबे......बहुदिने**—तब बहुत दिनों में जाना जाता है; **तोमापाने...... शेष**—तुम्हारी ओर जैसे ही देखा है वैसे ही तुमको सम्पूर्णतः देख पाया हूँ फिर भी अन्त नहीं पा सका हूँ; **गियेछिनु**—गया था; **येमनि......चेये**—जैसे ही देखा; **सेइ**—उस; **सलिलेर पाने**—सलिल की ओर; **अमनि......चोखे**—वैसे ही दृष्टि में पड़ा; **यत......चाइ**—जितना नीचे देखता हूँ; **रेखागुलि**—रेखाएँ; **मिशि**—मिल कर; **नेमे गेछे**—नीचे उतर गई हैं; **काँपितेछे**—काँप रही हैं; **आँकि-बाँकि**—टेढ़ीमेढ़ी; **मतो**—भाँति; **मने हल**—लगा; **निर्देशिया**—निर्देश करके; **दिलेन देखाये**—दिखला दिया;

मर्तजने—कोथा आछे सुन्दर मरण
अनन्त शीतल। सेइ स्वच्छ अतलता
देखेछि तोमार माझे। चारि दिक हते
देवेर अङ्गुलि येन देखाये दितेछे
मोरे, ओइ तव अलोक आलोकमाझे
कीर्तिक्लिष्ट जीवनेर पूर्णनिर्वापन।

चित्राङ्गदा। आमि नहि, आमि नहि, हाय, पार्थ, हाय,
कोन् देवेर छलना! याओ याओ, फिरे
याओ, फिरे याओ वीर! मिथ्यारे कोरो ना
उपासना। शौर्यवीर्य महत्त्व तोमार
दियो ना मिथ्यार पदे। याओ, फिरे याओ।

३

तरुतले

चित्राङ्गदा

चित्राङ्गदा। हाय हाय, से कि फिराइते पारि! सेइ
थरथर व्याकुलता वीरहृदयेर
तृषार्त कम्पित एक स्फुलिङ्गनिश्वासी
होमाग्निशिखार मतो; सेइ नयनेर
दृष्टि येन अन्तरेर बाहु हये, केड़े
निते आसिछे आमाय; उतप्त हृदय

मर्तजने—मृत्युलोक के प्राणी को; **कोथा आछे**—कहाँ है; **देखेछि......माझे**—तुम्हारे भीतर देखी है; **चारि......मोरे**—चारों ओर से देवता की उँगली जैसे मुझे दिखाए दे रही है; **ओइ**—वही।

आमि नहि—मैं नही; **कोन्......छलना**—किस देवता की छलना है; **फिरे याओ**—लौट जाओ; **मिथ्यारे......उपासना**—मिथ्या की उपासना मत करो; **दियो......पदे**—मिथ्या के चरणों में मत (डाल) देना।

से......पारि—वह क्या लौटा सकूँगी; **सेइ**—वह; **मतो**—भाँति; **सेइ......आमाय**—आँखों की वह दृष्टि मानो अन्तर की बाँह बन कर मुझे काढ़

छुटिया आसिते चाहे सर्वाङ्ग टुटिया,
ताहार क्रन्दनध्वनि प्रति अङ्गे येन
याय शुना ! ए तृष्णा कि फिराइते पारि ?

[वसन्त ओ मदनेर प्रवेश

हे अनङ्गदेव, एकि रूपहुताशने
घिरेछ आमारे—दग्ध हइ, दग्ध क'रे
मारि।

मदन। बलो, तन्वी, कालिकार विवरण।
मुक्त पुष्पशर मोर कोथा की साधिल
काज, शुनिते वासना।

चित्राङ्गदा। काल सन्ध्यावेला
सरसीर तृणपुञ्जतीरे पेतेछिनु
पुष्पशय्या वसन्तेर झरा फुल दिये।
श्रान्त कलेवरे शुयेछिनु आनमने;
राखिया अलस शिर वाम बाहु 'परे
भाबितेछिलाम गत दिवसेर कथा।
शुनेछिनु येइ स्तुति अर्जुनेर मुखे
आनितेछिलाम ताहा मने; दिवसेर

लेने के लिये आ रही है; **छुटिया.....चाहे**—भाग कर आना चाहता है; **टुटिया**—चूर-चूर कर; **ताहार**—उसकी; **येन......शुना**—मानो सुनाई पड़ती है।

एकि......आमारे—यह कैसी रूपाग्नि से मुझे घेर दिया है; **दग्ध......मारि**—जलती हूँ और जला कर मारती हूँ।

बलो—बोलो; **कालिकार विवरण**—कल का वृत्तान्त; **मोर**—मेरा; **कोथा......काज**—कहाँ कौन-सा कार्य साधा; **शुनिते वासना**—सुनने की इच्छा है।

काल—कल; **पेतेछिनु......दिये**—वसन्त के झड़े हुए फूलों से पुष्पशय्या बिछाई थी; **शुयेछिनु आनमने**—अनमनी सोई थी; **राखिया**—रख कर; **बाहु'परे**—बाँह पर; **भाबितेछिलाम**—सोच रही थी; **कथा**—बात; **शुनेछिनु......मने**—अर्जुन के मुख से स्तुति के जो वचन मैंने सुने थे उन्हें याद कर रही थी;

सञ्चित अमृत हते विन्दु विन्दु ल'ये
करितेछिलाम पान; भुलितेछिलाम
पूर्व-इतिहास, गतजन्मकथासम।
येन आमि राजकन्या नहि; येन मोर
नाइ पूर्वपर। येन आमि धरातले
एक दिने उठेछि फुटिया अरण्येर
पितृमातृहीन फुल; शुधु एक वेला
परमायु—तारि माझे शुने निते हवे
भ्रमरगुञ्जनगीति, वनवनान्तेर
आनन्दमर्मर; परे नीलाम्बर हते
धीरे नामाइया आँखि, नुमाइया ग्रीवा,
टुटिया लुटिया याव वायुस्पर्शभरे
क्रन्दनविहीन—माझखाने फुराइबे
कुसुमकाहिनीखानि आदि-अन्त-हारा।

वसन्त। एकटि प्रभाते फुटे अनन्त जीवन
हे सुन्दरी।

मदन। संगीते येमन, क्षणिकेर
ताने गुञ्जरि काँदिया ओठे अन्तहीन
कथा। तार परे बलो।

हते—से; **ल'ये**—ले कर; **करितेछिलाम**—कर रही थी; **भुलितेछिलाम**—भुला रही थी।

येन......नहि—मानो मैं राजकन्या न होऊँ; **येन......पूर्वपर**—मानो मेरा अतीत या भविष्य न हो; **एकदिने......फुटिया**—एक दिन में प्रस्फुटित हो उठी हूँ; **शुधु**—केवल; **तारि......हबे**—उतने में ही सुन लेना होगा; **परे**—बाद में; **हते**—से; **नामाइया आँखि**—आँखें नीची कर; **नुयाइया**—झुका कर; **टुटिया......भरे**—वायु के स्पर्श से टूट कर लोट जाऊँगी; **माझखाने फुराइबे**—इसी में समाप्त हो जाएगी; **काहिनीखानि**—कहानी; **हारा**—विहीन।

एकटि—एक; **फुटे**—प्रस्फुटित होता है।

संगीत......कथा—जैसे संगीत की क्षण भर की तान में गुंजरित हो कर अन्तहीन (गीत के) शब्द क्रन्दन कर उठते हैं; **तार.....बलो**—उसके बाद कहो।

चित्राङ्गदा। भाबिते भाबिते
सर्वाङ्गे हानितेछिल घुमेर हिल्लोल
दक्षिणेर वायु। सप्तपर्णशाखा हते
फुल्ल मालतीर लता आलस्य-आवेशे
मोर गौरतनु-'परे पाठाइतेछिल
निःशब्द चुम्बन; फुलगुलि केह चुले,
केह पदतले, केह स्तनतटमूले
बिछाइल आपनार मरणशयन।

अचेतने गेल कतक्षण। हेनकाले
घुमघोरे कखन् करिनु अनुभव
येन कार मुग्ध नयनेर दृष्टिपात
दश अङ्गुलिर मतो परश करिछे
रभसलालसे मोर निद्रालस तनु!
चमकि उठिनु जागि।
देखिनु, संन्यासी
पदप्रान्ते निर्निमेष दाँड़ाये रयेछे
स्थिर प्रतिमूर्तिसम। पूर्वाचल हते
धीरे धीरे स'रे एसे पश्चिमे हेलिया

भाबिते भाबिते—सोचते सोचते; **हानितेछिल**—प्रहार कर रहा था; **घुमेर**—नींद का; **मोर......पाठाइतेछिल**—मेरे गोरे शरीर पर भेज रही थी; **फुलगुलि**—फूल; **केह**—कोई; **चुले**—केशराशि पर; **बिछाइल**—बिछाया; **आपनार**—अपना।

गेल कतक्षण—कितने क्षण गए; **हेनकाले**—ऐसे समय; **घुमघोरे...... अनुभव**—घोर निद्रा में कब अनुभव किया; **येन कार**—मानो किसीके; **मतो**—भाँति; **परश करिछे**—स्पर्श कर रहा है; **चमकि......जागि**—चौंक कर जग उठी।

देखिनु—देखा; **दाँड़ाये रयेछे**—खड़ा हुआ है; **हते**—से; **स'रे एसे**—खिसक कर आ कर; **हेलिया**—झुक कर;

द्वादशीर शशी समस्त हिमांशुराशि
दियाछे ढालिया, स्खलितवसन मोर
अम्लान नूतन शुभ्र सौन्दर्येर 'परे।
पुष्पगन्धे पूर्ण तरुतल; झिल्लिरवे
तन्द्रामग्न निशीथिनी; स्वच्छ सरोवरे
अकम्पित चन्द्रकरच्छाया; सुप्त वायु;
शिरे लये ज्योत्स्नालोके मसृण चिक्कण
राशि राशि अन्धकार पल्लवेर भार
स्तम्भित अटवी। सेइमत चित्रार्पित
दाँड़ाइया दीर्घकाय वनस्पतिसम
दण्डधारी ब्रह्मचारी छायासहचर।

प्रथम से निद्राभङ्गे चारि दिक चेये
मने हल, कबे कोन् विस्मृत प्रदोषे
जीवन त्यजिया, स्वप्नजन्म लभियाछि
कोन्-एक अपरूप मोहनिद्रालोके
जनशून्य म्लानज्योत्स्ना वैतरणीतीरे।

दाँड़ानु उठिया। मिथ्या शरम संकोच
खसिया पड़िल श्लथ वसनेर मतो

हिमांशुराशि—शीतल किरणें; **दियाछे ढालिया**—ढाल दी हैं; **सौन्दर्येर 'परे**—सौन्दर्य पर; **झिल्लिरवे**—झींगुरों की झंकार से; **लये**—ले कर; **सेइमत**—उसी प्रकार; **चित्रार्पित**—चित्रवत्; **दाँड़ाइया**—खड़ा हुआ; **वनस्पति**—(पीपल, वट जैसा) विशाल वृक्ष।

प्रथम......निद्राभङ्गे—प्रथम उस निद्राभङ्ग पर; **चारि......हल**—चारों ओर देखने पर लगा; **कबे कोन्**—कब किस; **त्यजिया**—त्याग कर; **लभियाछि**—प्राप्त किया है।

दाँड़ानु उठिया—उठ खड़ी हुई; **खसिया पड़िल**—खिसक कर गिर पड़ा; **मतो**—भाँति;

पदतले। शुनिलाम, "प्रिये! प्रियतमे!"
गम्भीर आह्वाने मोर एक देहमाझे
ज़न्म जन्म शत जन्म उठिल जागिया।
कहिलाम, "लह, लह, याहा-किछु आछे
सब लह, जीवनवल्लभ!" दुइ बाहु
दिलाम बाड़ाये!—चन्द्र अस्त गेल वने,
अन्धकारे झाँपिल मेदिनी। स्वर्गमर्त
देशकाल दुःखसुख जीवनमरण
अचेतन हये गेल असह्य पुलके।

प्रभातेर प्रथम किरणे, विहङ्गेर
प्रथम संगीते, वाम करे दिया भर
धीरे धीरे शय्यातले उठिया बसिनु।
देखिनु चाहिया, सुखसुप्त वीरवर;
श्रान्त हास्य लेगे आछे ओष्ठप्रान्ते ताँर
प्रभातेर चन्द्रकलासम, रजनीर
आनन्देर शीर्ण अवशेष; निपतित
उन्नत ललाटपटे अरुणेर आभा,
मर्तलोके येन नव उदयपर्वते
नवकीर्तिसूर्योदय पाइबे प्रकाश।
उठिनु शयन छाड़ि निश्वास फेलिया;

शुनिलाम—सुना; **गम्भीर......जागिया**—(उस) गम्भीर आह्वान से मेरी एक देह में सैकड़ों जन्म जाग उठे; **कहिलाम**—बोली; **लह......लह**—लो, लो, जो-कुछ है सब लो; **दुइ......बाड़ाये**—दोनों बाँहें बढ़ा दीं; **चन्द्र......वने**—वन में चन्द्रमा अस्त हो गया; **अन्धकारे......मेदिनी**—पृथ्वी अंधकार में कूद पड़ी; **हये गेल**—हो गए।

वाम......भर—बाँये हाथ पर भार दे कर; **शय्या......बसिनु**—शय्या पर उठ बैठी; **देखिनु चाहिया**—हेर कर देखा; **श्रान्त......ताँर**—उनके होठों पर श्रान्त हास्य लगा हुआ है; **येन**—मानो; **पाइबे प्रकाश**—प्रकट होगा।

उठिनु—उठी; **छाड़ि**—छोड़ कर; **फेलिया**—फेंक कर;

मालतीर लताजाल दिलाम नामाये
सावधाने, रविकर करि अन्तराल
सुप्तमुख हते। देखिलाम, चतुर्दिके
सेइ पूर्वपरिचित प्राचीन पृथिवी।
आपनारे आरबार मने पड़े गेल—
छुटिया पलाये एनु नवप्रभातेर
शेफालिविकीर्णतृण वनस्थली दिये
आपनार छायात्रस्ता हरिणीर मतो।
विजन वितानतले बसि, करपुटे
मुख आवरिया काँदिबारे चाहिलाम
एल ना क्रन्दन।

मदन। हाय, मानवनन्दिनी,
स्वर्गेर सुखेर दिन स्वहस्ते भाङ्गिया
धरणीर एक रात्रि पूर्ण करि ताहे
यत्ने धरिलाम तव अधरसम्मुखे—
शचीर प्रसादसुधा, रतिर चुम्बित,
नन्दनवनेर गन्धे मोदितमधुर—
तोमारे करानु पान, तबु ए क्रन्दन!

मालतीर......सावधाने—मालती का लताजाल सावधानी से झुका दिया; **रविकर.....हते**—सोए हुए मुख से सूर्य की किरणों को ओट में कर; **देखिलाम**—देखा; **सेइ**—वही; **आपनारे......गेल**—अपनी सुधि फिर लौट आई; **छुटिया.....एनु**—दौड़ कर चली आई; **दिये**—हो कर; **आपनार......मतो**—अपनी छाया से त्रस्त हरिणी की भाँति; **बसि**—बैठ कर; **करपुटे......क्रन्दन**—हाथों से मुख ढँक कर रोना चाहा (लेकिन) रुलाई नहीं आई।

स्वहस्ते भाङ्गिया—अपने हाथों से तोड़ कर; **धरणीर......सम्मुखे**—(उससे) धरणी की एक रात्रि भर कर यत्न से तुम्हारे अधरों के सामने रख दी; **रतिर चुम्बित**—रति द्वारा चुंबित; **गन्धे**—गन्ध से; **तोमारे......क्रन्दन**—तुम्हें पान कराया तो भी यह क्रन्दन।

चित्राङ्गदा। कारे, देव, कराइले पान! कार तृषा
मिटाइले! से चुम्बन, से प्रेमसंगम
एखनो उठिछे काँपि ये अङ्ग व्यापिया
वीणार झंकार-सम, से तो मोर नहे!
बहुकाल साधनाय एकदण्ड शुधु
पाओया याय प्रथम मिलन; से मिलन
के लइल लुटि आमारे वञ्चित करि!
से चिरदुर्लभ मिलनेर सुखस्मृति
सङ्गे क'रे झ'रे प'ड़े याबे, अतिस्फुट
पुष्पदलसम, ए मायालावण्य मोर;
अन्तरेर दरिद्र रमणी रिक्तदेहे
ब'से रबे चिरदिनरात। मीनकेतु,
कोन् महाराक्षसीरे दियाछ बाँधिया
अङ्गसहचरी करि छायार मतन—
की अभिसम्पात! चिरन्तनतृष्णातुर
लोलुप ओष्ठेर काछे आसिल चुम्बन,
से करिल पान। सेइ प्रेमदृष्टिपात
एमनि आग्रहपूर्ण, ये अङ्गेते पड़े
सेथा येन अङ्कित करिया रेखे याय

कारे......पान—देव, किसे पान कराया है; **कार......मिटाइल**—किसकी पिपासा मिटाई है; **एखनो......सम**—वीणा की झंकार के समान मेरे अंगों में अब भी जो काँप उठते हैं; **से......नहे**—वे तो मेरे नहीं हैं; **बहुकाल...... मिलन**—बहुत दिनों की साधना से प्रथम मिलन का केवल एक क्षण प्राप्त होता है; **से......करि**—मुझे वंचित करके वह मिलन किसने लूट लिया; **सङ्गे......याबे**—साथ ही झड़ कर गिर जाएगा; **ब'से रबे**—बैठी रहेगी; **कोन्......मतन**—किस महाराक्षसी को अङ्गसहचरी बना कर छाया की भाँति बाँध दिया है; **की अभिसम्पात**—कैसा अभिशाप है; **ओष्ठेर...... आसिल**—होठों के पास आया; **से......पान**—उसने पान किया; **सेइ...... रेखा**—वह प्रेमदृष्टि ऐसी आग्रहपूर्ण थी कि जिस अंग पर पड़ती वहीं मानो वासना

वासनार राङा चिह्नरेखा, सेइ दृष्टि
रविरश्मिसम चिररात्रितापसिनी
कुमारी-हृदयपद्म-पाने छुटे एल;
से ताहारे लइल भुलाये।

मदन। कल्य निशि
व्यर्थ गेछे तबे। शुधु, कूलेर सम्मुखे
एसे आशार तरणी, गेछे फिरे फिरे
तरङ्ग-आघाते ?

चित्राङ्गदा। काल रात्रे किछु नाहि
मने छिल देव! सुखस्वर्ग एत काछे
दियेछिल धरा, पेयेछि कि ना पेयेछि
करि नि गणना आत्मविस्मरणसुखे।
आज प्राते उठे नैराश्यधिक्कारवेगे
अन्तरे अन्तरे टुटिछे हृदय। मने
पड़ितेछे एके एके रजनीर कथा।
विद्युत्वेदनासह हतेछे चेतना।
अन्तरे बाहिरे मोर हयेछे सतीन,
आर ताहा नारिब भुलिते। सपत्नीरे
स्वहस्ते साजाये सयतने, प्रतिदिन

की रंगीन चिह्नरेखा अंकित कर जाती; **पाने**—ओर; **छुटे एल**—दौड़ी आई; **से......भुलाये**—उसने उसे बहका लिया (भुलावे में डाल दिया)।

कल्य......तबे—तब कल की रात व्यर्थ गई; **शुधु**—केवल; **एसे**—आ कर; **गेछे......आघाते**—तरङ्गों के आघात से लौट-लौट गई है।

काल......छिल—कल रात कुछ भी याद नहीं था; **एत......धरा**—इतने निकट पकड़ाई में आ गया था; **पेयेछि......गणना**—पाया है या नहीं पाया है (इसका) हिसाब नहीं किया; **टुटिछे**—टूट रहा है; **मने.....कथा**—रात की बात एक एक कर याद आ रही है; **हतेछे चेतना**—अनुभव हो रहा है; **अन्तरे...... भुलिते**—मेरा अन्तर-बाहर सौत बन गया है अब (मैं) इसे भूल नहीं सकती; **सपत्नीरे......हबे**—सौत को अपने हाथों यत्नपूर्वक सजा कर प्रतिदिन भेजना

पाठाइते हबे आमार आकाङ्क्षातीर्थ
वासरशय्याय, अविश्राम सङ्गे रहि
प्रतिक्षण देखिते हइबे चक्षु मेलि
ताहार आदर। ओगो, देहेर सोहागे
अन्तर ज्वलिबे हिंसानले, हेन शाप
नरलोके के पेयेछे आर? हे अतनु,
वर तव फिरे लओ।

मदन। यदि फिरे लइ—
छलनार आवरण खुले फेले दिये
काल प्राते कोन् लाजे दाँड़ाइबे आसि
पार्थेर सम्मुखे कुसुमपल्लवहीन
हेमन्तेर हिमशीर्ण लता? प्रमोदेर
प्रथम आस्वादटुकु दिये, मुख हते
सुधापात्र केड़े निये चूर्ण कर यदि
भूमितले, अकस्मात् से आघातभरे
चमकिया की आक्रोशे हेरिबे तोमाय!

चित्राङ्गदा। सेओ भालो। एइ छद्मरूपिणीर चेये
श्रेष्ठ आमि शतगुणे। सेइ आपनारे

होगा; **अविश्राम......आदर**—अविराम साथ रह कर आँखें खोल कर प्रतिक्षण उसके (प्रति किए गए) दुलार को देखना होगा; **ओगो**—अजी; **देहेर...... हिंसानले**—देह (के प्रति किए गए) दुलार से अन्तर ईर्ष्या की अग्नि में जलेगा; **हेन......आर**—ऐसा शाप नरलोक में और किसने पाया है; **वर......लओ**—अपना वरदान लौटा लो।

यदि......लइ—यदि लौटा लूं; **छलनार......दिये**—छलना का आवरण खोल कर फेंक दूं; **काल......सम्मुखे**—कल प्रातः पार्थ के सम्मुख किस लज्जा से आ खड़ी होगी; **आस्वादटुकु दिये**—आस्वाद दे कर; **मुख......भूमितले**—मुख से सुधापात्र हटा कर यदि भूमि पर चूर कर दोगी; **अकस्मात्......तोमाय**—अकस्मात् आघात पा कर विस्मित हो कर वह किस क्रोध से तुम्हें देखेगा।

सेओ भालो—वह भी अच्छा है; **एइ......शतगुणे**—इस छद्मरूपिणी की अपेक्षा मैं सौगुनी श्रेष्ठ हूँ;

करिब प्रकाश; भालो यदि नाइ लागे,
घृणाभरे च'ले यान यदि, बुक फेटे
मरि यदि आमि, तबु आमि 'आमि' रब।
सेओ भालो इन्द्रसखा।

वसन्त। शोनो मोर कथा।
फुलेर फुराय यबे फुटिबार काज
तखन प्रकाश पाय फल। यथाकाले
आपनि झरिया प'ड़े याबे तापक्लिष्ट
लघु लावण्येर दल, आपन गौरवे
तखन बाहिर हबे; हेरिया तोमारे
नूतन सौभाग्य बलि मानिबे फाल्गुनी।
याओ फिरे याओ, वत्से, यौवन-उत्सवे।

४

अर्जुन ओ चित्राङ्गदा

चित्राङ्गदा। की देखिछ वीर?

अर्जुन। देखितेछि पुष्पवृन्त
धरि, कोमल अंगुलिगुलि रचितेछे

सेइ......प्रकाश—मैं अपने आपको प्रकट करूँगी; **भालो......लागे**—यदि अच्छा न लगे; **घृणा......यदि**—यदि घृणा में भर कर चले जायँ; **बुक......आमि**—छाती फटने से यदि मैं मर जाऊँ; **तबु......रब**—तो भी मैं 'मैं' रहूँगी।

शोनो......कथा—मेरी बात सुनो; **फलेर......फल**—फूल के खिलने का कार्य जब समाप्त हो जाता है तब फल प्रकट होता है; **यथाकाले......याबे**—यथा-समय अपने आप झड़ पड़ेगा; **आपन......हबे**—अपने गौरव से तब प्रकट होओगी; **हेरिया......फाल्गुनी**—तुम्हें देख कर अर्जुन तुम्हें अपना नूतन सौभाग्य समझेंगे; **याओ......याओ**—जाओ, लौट जाओ।

की देखिछ—क्या देख रहे हो।

देखितेछि—देख रहा हूँ; **धरि**—उठा कर; **अंगुलिगुलि**—उँगलियाँ; **रचितेछे**—गूँथ रही हैं;

माला; निपुणता चारुताय दुइ बोने
मिलि, खेला करितेछे येन सारावेला
चञ्चल उल्लासे, अंगुलिर आगे आगे।
देखितेछि आर भावितेछि।

चित्राङ्गदा। की भाविछ?

अर्जुन। भावितेछि, अमनि सुन्दर क'रे ध'रे
सरसिया ओइ राङा परशेर रसे
प्रवासदिवसगुलि गेँथे गेँथे, प्रिये,
अमनि रचिबे माला; माथाय परिया
अक्षय-आनन्द-हार गृहे फिरे याब।

चित्राङ्गदा। ए प्रेमेर गृह आछे?

अर्जुन। गृह नाइ?

चित्राङ्गदा। नाइ।
गृहे निये याबे! बोलो ना गृहेर कथा।
गृह चिर वरषेर; नित्य याहा ताइ
गृहे निये येयो। अरण्येर फुल यबे
शुकाइबे, गृहे कोथा फेले दिबे तारे
अनादरे पाषाणेर माझे? तार चेये

निपुणता......मिलि—निपुणता (और) चारुता दोनों बहनें मिल कर; **खेला करितेछ**—क्रीड़ा कर रही हैं; **येन**—मानो; **देखितेछि.....भावितेछि**—देख रहा हूँ और सोच रहा हूँ। **की भाविछ**—क्या सोच रहे हो।

अमनि......गेँथे—ऐसे ही सुन्दर ढंग से उठा कर उस रंगीन स्पर्श के रस से सरस करके प्रवास के दिनों को गूँथ-गूँथ कर; **अमनि......माला**—ऐसे ही माला रचोगी; **माथाय परिया**—सिर पर धारण कर; **गृहे......याब**—घर लौट जाऊँगा।

ए......आछे—इस प्रेम का घर है। **नाइ**—नहीं है।

गृहे......याबे—घर ले जाओगे; **बोलो......कथा**—घर की बात मत करो; **गृह......वरषेर**—घर तो सदा सर्वदा का है; **नित्य......येयो**—जो नित्य है उसे ही घर ले जाना; **अरण्येर......माझे**—अरण्य का फूल जब सूखेगा, तब उसे अनादर पूर्वक घर में कहाँ पत्थरों में फेंकोगे; **तार चेये**—उसकी अपेक्षा;

अरण्येर अन्तःपुरे नित्य नित्य येथा
मरिछे अंकुर, पड़िछे पल्लवराशि,
झरिछे केशर, खसिछे कुसुमदल,
क्षणिक जीवनगुलि फुटिछे टुटिछे
प्रति पले पले, दिनान्ते आमार खेला
साङ्ग हले झरिब सेथाय काननेर
शत शत समाप्त सुखेर साथे। कोनो
खेद रहिबे ना कारो मने।

अर्जुन। एइ शुधु?

चित्राङ्गदा। शुधु एइ। वीरवर, ताहे दुःख केन?
आलस्येर दिने याहा भालो लेगेछिल
आलस्येर दिने ताहा फेलो शेष क'रे।
सुखेरे ताहार बेशि एकदण्डकाल
बाँधिया राखिले, सुख दुःख हये ओठे।
याहा आछे ताइ लओ, यतक्षण आछे
ततक्षण राखो। कामनार प्रातःकाले
यतटुकु चेयेछिले, तृप्तिर सन्ध्याय
तार बेशि आशा करियो ना।

अरण्येर अन्तःपुरे—अरण्य के अंतःपुर में; **येथा**—जहाँ; **मरिछे**—मर रहे हैं; **पड़िछे**—गिर रहे हैं; **झरिछे**—झड़ रहा है; **खसिछे**—गिर रहे हैं; **फुटिछे टुटिछे**—प्रस्फुटित हो रहे हैं टूट रहे हैं; **दिनान्ते......सेथाय**—दिन के अवसान पर मेरी क्रीड़ा समाप्त होने पर वहीं झर जाऊँगी; **सुखेर साथे**—आनन्द के साथ; **कोनो......मने**—किसी के भी मन में कोई खेद न रहेगा।

एइ शुधु—बस यही।

ताहे......केन—उसमें दुःख क्यों; **याहा......लेगेछिल**—जो अच्छा लगा था; **ताहा......क'रे**—उसे समाप्त कर लो; **सुखेर......ओठे**—सुख को उससे अधिक पल भर के लिए भी बाँध रखने पर सुख दुःख हो उठता है; **याहा......लओ**—जो है वही लो; **यतक्षण.....राखो**—जितनी देर तक है उतनी देर रखो; **कामनार......ना**—कामना के प्रातःकाल में जितना चाहा था, तृप्ति की सन्ध्या में उससे अधिक की आशा मत करना।

दिन गेल।
एइ माला परो गले। श्रान्त मोर तनु
ओइ तव बाहु-'परे टेने लओ वीर।
सन्धि होक अधरेर सुखसम्मिलने
क्षान्त करि मिथ्या असन्तोष। बाहुबन्धे
एसो, बन्दी करि दोँहे दोँहा प्रणयेर
सुधामय चिरपराजये।

अर्जुन। ओइ शोनो,
प्रियतमे, वनान्तेर दूर लोकालये
आरतिर शान्तिशङ्ख उठिल बाजिया।

५

मदन ओ वसन्त

मदन। आमि पञ्चशर, सखा—एक शरे हासि,
अश्रु एक शरे; एक शरे आशा, अन्य
शरे भय; एक शरे विरहमिलन
आशाभय दुःखसुख एक निमेषेइ।

वसन्त। श्रान्त आमि, क्षान्त दाओ सखा! हे अनङ्ग,
साङ्ग करो रणरङ्ग तव। रात्रिदिन
सचेतन थेके तव हुताशने आर

दिन गेल—दिन समाप्त हुआ; **एइ......गले**—इस माला को गले में पहनो; **मोर**—मेरे; **बाहु......लओ**—बाँहों पर खींच लो, बाँहों में ले लो; **सन्धि होक**—मिलन हो; **क्षान्त करि**—विरति दे; **एसो**—आओ; **बन्दी...... दोँहा**—एक दूसरे को बन्दी करें।

ओइ शोनो—वह सुनो; **वनान्तेर......लोकालये**—वन की सीमा से दूर लोकालय (नगर, ग्राम) में; **आरतिर**—आरती का; **उठिल बाजिया**—बज उठा।

एक.....हासि—एक शर (बाण) में हास्य; **एक निमेषेइ**—एक ही क्षण में।

क्षान्त दाओ—विरत होओ; **साङ्ग**—समाप्त; **सचेतन थेके**—सावधान रह कर; **आर......व्यजन**—और कब तक पंखा झलूँ;

कतकाल करिब व्यजन ! माझे माझे
निद्रा आसे चोखे, नत हये पड़े पाखा,
भस्मे म्लान हये आसे तप्तदीप्तिराशि ।
चमकिया जेगे आबार नूतन श्वासे
जागाइया तुलि तार नव-उज्ज्वलता ।
एबार विदाय दाओ सखा !

मदन । जानि तुमि
अनन्त अस्थिर, चिरशिशु । चिरदिन
बन्धनविहीन हये द्युलोके भूलोके
करितेछ खेला । एकान्त यतने यारे
तुलिछ सुन्दर करि बहुकाल ध'रे,
निमेषे येतेछ तारे फेलि धूलितले
पिछे ना फिरिया । आर बेशि दिन नाइ,
आनन्दचञ्चल दिनगुलि लघुवेगे
तव पक्ष-समीरणे हुहु करि कोथा
येतेछे उड़िया च्युत पल्लवेर मतो ।
हर्ष-अचेतन वर्ष शेष हये एल ।

माझे......चोखे—रह-रह कर आँखों में नींद आ जाती है; **नत......पाखा**—पंखा झुक पड़ता है; **भस्मे......आसे**—भस्म में मलीन हो आती है; **चमकि...... उज्ज्वलता**—चौंक कर जग फिर नवीन श्वास से उसकी नव-उज्ज्वलता को जाग्रत कर देता हूँ; **एबार......दाओ**—अब विदा दो ।

जानि—जानता हूँ; **हये**—हो; **करितेछ**—कर रहे हो; **एकान्त...... ध'रे**—अत्यन्त ही यत्न से दीर्घव्यापी काल से जिसे सुन्दर बनाते रहे हो; **निमेषे...... फिरिया**—क्षण भर में उसे धूल में पटक कर पीछे मुड़े बिना चले जा रहे हो; **आर......नाइ**—अब और अधिक दिन नहीं हैं; **दिनगुलि**—दिन; **लघुवेगे**—मृदु फिर भी शीघ्र गति से; **पक्ष-समीरणे**—पंखों की हवा से; **करि**—कर; **कोथा......मतो**—च्युत पल्लव के समान कहाँ उड़े जा रहे हैं; **शेष......एल**—समाप्त हो आया ।

६

अरण्ये

अर्जुन

अर्जुन। आमि येन पाइयाछि प्रभाते जागिया
घुम हते, स्वप्नलब्ध अमूल्य रतन।
राखिबार स्थान तार नाहि ए धराय;
धरे राखे एमन किरीट नाइ कोथा,
गेँथे राखे हेन सूत्र नाइ, फेले याइ
हेन नराधम नहि—तारे लये ताइ
चिररात्रि चिरदिन क्षत्रियेर बाहु
बद्ध हये प'ड़े आछे कर्तव्यविहीन।

[चित्राङ्गदार प्रवेश

चित्राङ्गदा। की भाबिछ?

अर्जुन। भाबितेछि मृगयार कथा।
ओइ देखो, वृष्टिधारा आसियाछे नेमे
पर्वतेर 'परे; अरण्येते घनघोर
छाया; निर्झरिणी उठेछे दुरन्त हये,
कलगर्व-उपहासे तटेर तर्जन
करितेछे अवहेला। मने पड़ितेछे,

आमि......हते—मैंने जैसे भोर में निद्रा से जग कर पाया है; **रतन**—रत्न; **राखिबार.....धराय**—इस पृथ्वी पर उसे रखने का स्थान नहीं; **धरे......कोथा**—(उसे) धारण करे ऐसा किरीट कहीं नहीं है; **गेँथे......नाइ**—गूंथ रखे ऐसा सूत्र नहीं है; **फेले......नहि**—फेंक जाऊँ ऐसा नराधम नहीं हूँ; **तारे......ताइ**—इसीलिये उसे ले कर; **बद्ध......आछे**—बद्ध पड़ी हुई है।

भाबितेछि......कथा—मृगया की बात सोच रहा हूँ; **ओइ**—वह; **आसियाछे......'परे**—पर्वत पर उतर आई है; **उठेछे......हये**—दुर्दमनीय हो उठी है; **करितेछे**—कर रहा है; **मने पड़ितेछे**—याद आ रहा है;

एमनि वर्षार दिने पञ्च भ्राता मिले
चित्रक-अरण्य-तले येतेम शिकारे।
सारादिन रौद्रहीन स्निग्ध अन्धकारे
काटित उत्साहे; गुरुगुरु मेघमन्द्रे
नृत्य करि उठित हृदय; झरझर
वृष्टिजले, मुखर निर्झरकलोल्लासे
सावधान पदशब्द शुनिते पेत ना
मृग; चित्रव्याघ्र पञ्चनखचिह्नरेखा
रेखे येत पथपङ्क-'परे, दिये येत
आपनार गृहेर सन्धान; केकारवे
अरण्य ध्वनित। शिकार समाधा हले
पञ्च सङ्गी पण करि मोरा सन्तरणे
हइताम पार वर्षार सौभाग्यगर्वे—
स्फीत तरङ्गिणी। सेइमत बाहिरिब
मृगयाय, करियाछि मने।

चित्राङ्गदा। हे शिकारी,
ये मृगया आरम्भ करेछ, आगे ताइ
होक शेष। तबे कि जेनेछ स्थिर—
एइ स्वर्णमायामृग तोमारे दियेछे
धरा? नहे ताहा नहे। ए वन्य हरिणी

एमनि......दिने—ऐसे ही वर्षा के दिन; **मिले**—मिल कर; **येतेम शिकारे**—शिकार के लिये जाते; **काटित उत्साहे**—उत्साह से कट जाता; **शुनिते.....ना**—सुन नहीं पाता; **चित्रव्याघ्र**—चीता; **रेखे......'परे**—रास्ते के पंक पर रख (छोड़) जाता; **दिये.....सन्धान**—अपने गृह का पता दे जाता; **समाधा हले**—समाप्त होने पर; **पण......पार**—बाजी लगा कर हमलोग तैर कर पार हो जाते; **सेइमत......मने**—सोचा है उसी तरह मृगया के लिए बाहर निकलूँगा।

ये......शेष—जो शिकार तुमने प्रारंभ किया है पहले वही शेष हो; **तबे......स्थिर**—तब क्या तुमने निश्चित समझा है; **तोमारे......धरा**—तुम्हें पकड़ाई दिए हुए है; **नहे.....नहे**—नहीं वह नहीं;

आपनि राखिते नारे आपनारे धरि।
चकिते छुटिया याय के जाने कखन
स्वपनेर मतो। क्षणिकेर खेला सहे,
चिरदिवसेर पाश वहिते पारे ना।
ओइ चेये देखो, येमन करिछे खेला
वायुते वृष्टिते, श्याम वर्षा हानितेछे
निमेषे सहस्र शर वायुपृष्ठ-'परे,
तबु से दुरन्त मृग मातिया बेड़ाय
अक्षत अजेय, तोमाते आमाते, नाथ,
सेइमत खेला, आजि वरषार दिने—
चञ्चलारे करिबे शिकार प्राणपण
करि, यत शर यत अस्त्र आछे तूणे
एकाग्र आग्रहभरे करिबे वर्षण।
कभु अन्धकार, कभु वा चकित आलो
चमकिया हासिया मिलाय; कभु स्निग्ध
वृष्टिवरिषन, कभु दीप्त वज्रज्वाला।
मायामृगी छुटिया बेड़ाय मेघाच्छन्न
जगतेर माझे, बाधाहीन चिरदिन।

आपनि.....धरि—अपने आपको पकड़ नहीं रख पा रही है; **चकिते......मतो**—न जाने कब स्वप्न की भाँति क्षण भर में भाग जाती है; **क्षणिकेर......सहे**—क्षण भर का खेल सहन करती है; **वहिते......ना**—वहन नहीं कर पाती; **येमन......वृष्टिते**—जैसे वायु और वृष्टि क्रीड़ा कर रहे हैं; **हानितेछे**—प्रहार कर रहा है; **'परे**—पर; **तब......बेड़ाय**—फिर भी वह दुर्दमनीय मृग मत्त घूम रहा है; **तोमाते......दिने**—नाथ, आज वर्षा के दिन तुम्हारा और मेरा वैसा ही खेल है; **चञ्चलारे......शिकार**—चञ्चला (चित्राङ्गदा) का शिकार करना; **तूणे**—तरकस में; **कभु**—कभी; **आलो**—आलोक; **कभु.....मिलाय**—या कभी कम्पित आलोक चमक कर हँस कर विलीन हो जाता है; **छुटिया बेड़ाय**—छूटी-छूटी डोल रही है।

७

मदन ओ चित्राङ्गदा

चित्राङ्गदा। हे मन्मथ, की जानि की दियेछ माखाये
सर्वदेहे मोर। तीव्र मदिरार मतो
रक्तसाथे मिशे उन्माद करेछे मोरे।
आपनार गतिगर्वे मत्त मृगी आमि
धाइतेछि मुक्तकेशे, उच्छ्वसित वेशे
पृथिवी लङ्घिया। धनुर्धर घनश्याम
व्याधेरे आमार करियाछि परिश्रान्त
आशाहतप्राय; फिरातेछि पथे पथे
वने वने तारे। निर्दयविजयसुखे
हासितेछि कौतुकेर हासि। ए खेलाय
भङ्ग दिते हइतेछे भय, एकदण्ड
स्थिर हले पाछे क्रन्दने हृदय भ'रे
फेटे पड़े याय।

मदन। थाक्। भाङियो ना खेला।
ए खेला आमार। छुटुक फुटुक बाण,
टुटुक हृदय। आमार मृगया आजि
अरण्येर माझखाने नवीन वर्षाय।

की......मोर—पता नहीं (तुमने) मेरी सारी देह में क्या लेप दिया है; **तीव्र......मोरे**—तीव्र मदिरा के समान रक्त के साथ मिल कर मुझे पागल कर दिया है; **आपनार**—अपने; **धाइतेछि**—दौड़ रही हूँ; **व्याधेरे आमार**—अपने व्याध को; **करियाछि**—किया है; **फिरातेछि**—घुमा रही हूँ; **तारे**—उसे; **हासितेछि**—हँस रही हूँ; **ए......भय**—इस खेल में बाधा देने में भय होता है; **हले**—होने पर; **पाछे**—पीछे, बाद में; **क्रन्दने......याय**—क्रन्दन से भर कर हृदय फट पड़े।

थाक्—बस, रहने दो; **भाङियो......खेला**—खेल समाप्त न करना; **ए......आमार**—यह मेरा खेल है; **छुटुक फुटुक**—छूटे फूटे; **टुटुक**—टूटे;

दाओ दाओ श्रान्त करे दाओ; करो तारे
पदानत, बाँधो तारे दृढ़ पाशे; दया
करियो ना, हासिते जर्जर करे दाओ;
अमृते-विषेते-माखा खरवाक्यबाण
हानो बुके। शिकारे दयार विधि नाइ।

८

अर्जुन ओ चित्राङ्गदा

अर्जुन। कोनो गृह नाइ तव, प्रिये, ये भवने
काँदिछे विरहे तव प्रियपरिजन?
नित्य स्नेहसेवा दिये ये आनन्दपुरी
रेखेछिले सुधामग्न क'रे, येथाकार
प्रदीप निबाये दिये एसेछ चलिया
अरण्येर माझे? आपन शैशवस्मृति
येथाय काँदिते याय हेन स्थान नाइ?

चित्राङ्गदा। प्रश्न केन? तबे कि आनन्द मिटे गेछे?
या देखिछ ताइ आमि, आर किछु नाइ
परिचय। प्रभाते एइ-ये दुलितेछे
किंशुकेर एकटि पल्लवप्रान्तभागे
एकटि शिशिर, एर कोनो नामधाम

दाओ—दो; **तारे**—उसे; **हासिते......दाओ**—हँसी से जर्जर कर दो; **अमृते ......माखा**—अमृत विष से बुझा; **हानो बुके**—वक्ष में मारो; **शिकारे...... नाइ**—शिकार में दया का विधान नहीं है।

कोनो—कोई भी; **ये**—जिस; **काँदिछे**—क्रन्दन कर रहे हैं; **दिये**—द्वारा; **रेखेछिले**—रखा था; **करे**—करके; **येथाकार......माझे**—जहाँ के प्रदीप को बुझा कर अरण्य के बीच चली आई हो; **आपन**—अपनी; **काँदिते**—क्रन्दन करने।

केन—क्यों; **तबे......गेछे**—तब क्या आनन्द चुक गया; **या......आमि**—जो देख रहे हो वही मैं हूँ; **आर......परिचय**—और कुछ परिचय नहीं है; **प्रभाते......आछे**—प्रभात काल में किंशुक के एक पल्लव के अग्रभाग में यह जो

आछे? एर कि शुधाय केह परिचय?
तुमि यारे भालोबासियाछ से एमनि
शिशिरेर कणा, नामधामहीन।

अर्जुन। किछु
तार नाइ कि बन्धन पृथिवीते? एक—
बिन्दु स्वर्ग शुधु भूमितले भुले प'ड़े
गेछे?

चित्राङ्गदा। ताइ बटें। शुधु निमेषेर तरे
दियेछे आपन उज्ज्वलता अरण्येर
कुसुमेरे।

अर्जुन। ताइ सदा हाराइ-हाराइ
करे प्राण; तृप्ति नाहि पाइ, शान्ति नाहि
मानि। सुदुर्लभे, आरो काछाकाछि एसो।
नामधाम-गोत्रगृह-वाक्यदेहमने
सहस्र बन्धनपाशे धरा दाओ प्रिये!
चारि पार्श्व हते घेरि परशि तोमारे।
निर्भय निर्भरे करि वास। नाम नाइ?

एक ओस-कण झूल रहा है उसका कोई नाम धाम है; **ए......परिचय**—इसका कोई परिचय पूछता है; **तुमि......कणा**—तुमने जिसे प्यार किया है वह इसी प्रकार का शिशिर-कण है।

किछु......पृथिवीते—पृथ्वी पर उसका क्या कोई वन्धन नहीं है; **एकबिन्दु ......गेछे**—बस भूल से पृथ्वी पर एक बिन्दु स्वर्ग आ पड़ा है।

ताइ बटे—ऐसा ही है; **शुधु......कुसुमेरे**—बस क्षण भर के लिये अरण्य के कुसुम को अपनी उज्ज्वलता दी है।

ताइ......प्राण—इसीलिये सर्वदा मन में होता है कि खो न बैठूँ; **नाहि पाइ**—नहीं पाता हूँ; **शान्ति......मानि**—शान्ति अनुभव नहीं कर पाता हूँ; **आरो......एसो**—और निकट आओ; **धरा दाओ**—पकड़ाई दो; **चारि...... तोमारे**—चारों ओर से घेर कर तुम्हारा स्पर्श करूँ; **निर्भरे......वास**—विश्वास-पूर्वक वास करूँ; **नाइ**—नहीं है;

तबे कोन् प्रेममन्त्रे जपिब तोमारे
हृदयमन्दिरमाझे ? गोत्र नाइ ? तबे
की मृणाले ए कमल धरिया राखिब ?

चित्राङ्गदा। नाइ, नाइ, नाइ। यारे बाँधिवारे चाओ
कखनो से बन्धन जाने नि। से केवल
मेघेर सुवर्णछटा, गन्ध कुसुमेर,
तरङ्गेर गति।

अर्जुन। ताहारे ये भालोबासे
अभागा से। प्रिये, दियो ना प्रेमेर हाते
आकाशकुसुम। बुके राखिबार धन
दाओ तारे, सुखे दुःखे, सुदिने दुर्दिने।

चित्राङ्गदा। एखनो ये वर्ष याय नाइ, श्रान्ति एरि
माझे ? हाय हाय, एखन बुझिनु, पुष्प
स्वल्पपरमायु देवतार आशीर्वादे।
गत वसन्तेर यत मृतपुष्पसाथे
झरिया पड़ित यदि ए मोहन तनु
आदरे मरित तबे। बेशि दिन नहे,
पार्थ ! ये कदिन आछे, आशा मिटाइया

तबे......माझे—तब हृदय-मन्दिर के भीतर किस प्रेममंत्र से तुम्हारा जप करूँगा; **तबे......राखिब**—तब किस मृणाल से इस कमल को पकड़ कर रखूँगा।

यारे......नि—जिसे बाँधना चाहते हो उसने कभी भी बन्धन नहीं जाना।

ताहारे......से—उसे जो प्यार करता है वह अभागा है; **दियो ना**—मत देना; **प्रेमेर हाते**—प्रेम के हाथों में; **बुके......तारे**—उसे हृदय में रखने का धन दो।

एखनो......माझे—अभी तो वर्ष भी नहीं बीता है; **एरि माझे**—इतने में ही; **एखन बुझिनु**—अब समझी; **देवतार आशीर्वादे**—देवता के आशीर्वाद से; **यत**—जितने; **झरिया पड़ित**—झड़ पड़ता; **आदरे......तबे**—मर्यादा के साथ मरता; **बेशि......नहे**—अधिक दिन नहीं हैं; **ये......आछे**—जो कुछ दिन हैं; **आशा......कुतूहले**—(अभीप्सित की प्राप्ति की मन की) आशा

कुतूहले, आनन्देर मधुटुकु तार
निःशेष करिया करो पान। एर परे
बारबार आसियो ना स्मृतिर कुहके
फिरे फिरे, गत सायाह्नेर च्युतवृन्त
माधवीर आशे तृषित भृङ्गेर मतो।

९

वनचरगण ओ अर्जुन

वनचर। हाय, हाय के रक्षा करिबे!
अर्जुन। की हयेछे?
वनचर। उत्तरपर्वत हते आसिछे छुटिया
दस्युदल, बरषार पार्वत्य वन्यार
मतो वेगे, विनाश करिते लोकालय।
अर्जुन। ए राज्ये रक्षक केह नाइ?
वनचर। राजकन्या
चित्राङ्गदा आछिलेन दुष्टेर दमन;
ताँर भये, राज्ये नाहि छिल कोनो भय
यमभय छाड़ा। शुनेछि गेछेन तिनि
तीर्थपर्यटने, अज्ञात भ्रमणव्रत।

को आनंद से पूर्ण कर; **आनन्देर......पान**—उसके आनन्द के मधु को निःशेष कर पान करो; **एर.....फिरे**—इसके बाद बार बार स्मृति की छलना से लौट लौट कर मत आना; **सायाह्नेर**—सायंकाल के; **माधवीर आशे**—माधवी की आशा में; **भृङ्गेर मतो**—भौंरे की भाँति।

के......करिबे—कौन रक्षा करेगा। **की हयेछे**—क्या हुआ है।

हते—से; **आसिछे छुटिया**—दौड़ा आ रहा है; **बरषार**—वर्षा की; **वन्यार......वेगे**—बाढ़ के समान वेग से; **विनाश......लोकालय**—ग्राम-नगरों का विनाश करने के लिये।

ए......नाइ—इस राज्य में कोई रक्षक नहीं है; **आछिलेन**—थीं; **ताँर...... छाड़ा**—उनके भय से राज्य में यम के भय को छोड़ कर (अन्य) कोई भी भय नहीं था; **शुनेछि......तिनि**—सुना है वे गईं हैं।

अर्जुन। ए राज्येर रक्षक रमणी ?

वनचर। एक देहे
तिनि पितामाता अनुरक्त प्रजादेर।
स्नेहे तिनि राजमाता, वीर्ये युवराज।

[प्रस्थान

[चित्राङ्गदार प्रवेश

चित्राङ्गदा। की भाबिछ नाथ ?

अर्जुन। राजकन्या चित्राङ्गदा
केमन ना जानि, ताइ भाबितेछि मने।
प्रतिदिन शुनितेछि शतमुख हते
तारि कथा, नव नव अपूर्व काहिनी।

चित्राङ्गदा। कुत्सित, कुरूप ! एमन बङ्किम भुरु
नाइ तार, एमन निबिड़ कृष्णतारा।
कठिन सबल बाहु बिँधिते शिखेछे
लक्ष्य, बाँधिते पारे ना वीरतनु हेन
सुकोमल नागपाशे।

अर्जुन। किन्तु शुनियाछि,
स्नेहे नारी, वीर्ये से पुरुष।

चित्राङ्गदा। छि छि, सेइ

एक देहे—एक (ही) शरीर में; **प्रजादेर**—प्रजागण की।

भाबिछ—सोच रहे हो।

केमन......जानि—कैसी है नहीं जानता; **ताइ भाबितेछि**—इसीलिये सोच रहा हूँ; **शुनितेछि**—सुन रहा हूँ; **हते**—से; **तारि कथा**—उसीकी बात; **काहिनी**—कहानी।

एमन......तार—ऐसी तिरछी भौंहें उसकी नहीं हैं; **एमन......तारा**—ऐसी घनी काली पुतलियाँ (नहीं हैं); **बाहु......लक्ष्य**—बाँहों से लक्ष्य वेधना सीखा है; **बाँधिते......नागपाशे**—ऐसे सुकोमल नागपाश में वीर देह को नहीं बाँध सकती।

शुनियाछि—सुना है।

तार मन्दभाग्य। नारी यदि नारी हय
शुधु, शुधु धरणीर शोभा, शुधु आलो,
शुधु भालोबासा——शुधु सुमधुर छले
शतरूप भङ्गिमाय पलके पलके
लुटाये जड़ाये, बेँके बेँधे, हेसे केँदे,
सेवाय सोहागे छेये चेये थाके सदा——
तबे तार सार्थक जनम। की हइबे
कर्मकीर्ति वीर्यबल शिक्षादीक्षा तार?
हे पौरव, काल यदि देखिते ताहारे
एइ वनपथपार्श्वे, एइ पूर्णातीरे,
ओइ देवालयमाझे, हेसे च'ले येते।
हाय हाय, आज एत हयेछे अरुचि
नारीर सौन्दर्ये, नारीते खुँजिते चाओ
पौरुषेर स्वाद!

एसो, नाथ, ओइ देखो
गाढ़च्छाया शैलगुहामुखे बिछाइया
राखियाछि आमादेर मध्याह्नशयन
कचि कचि पीतश्याम किशलय तुलि,

सेइ——वही; **तार**——उसका; **मन्दभाग्य**——दुर्भाग्य; **हय**——हो; **शुधु**——केवल; **आलो**——आलोक; **भालोबासा**——प्यार; **छले**——व्याज से; **भङ्गिमाय**——भंगिमा में; **पलके पलके**——क्षण-क्षण में; **लुटाये**——लोट कर; **जड़ाये**——आलिंगन कर; **बेँके**——वक्र हो कर, असम्मत हो कर; **बेँधे**——बाँध कर; **हेसे केँदे**——हँस कर रो कर; **सेवाय सोहागे**——सेवा (तथा) प्रणयपूर्ण यत्न से; **छेये**——छा कर; **चेये......सदा**——बराबर देखती रहे; **तबे......जनम**——तभी उसका जन्म सार्थक है; **की हइबे**——क्या होंगे; **तार**——उसकी; **काल......ताहारे**——कल यदि उसे देखते; **एइ**——इस; **ओइ**——उस; **हेसे......येते**——हँस कर चले जाते; **आज...... सौन्दर्ये**——आज नारी के सौन्दर्य से इतनी अरुचि हो गई है; **नारीते......स्वाद**——नारी में पौरुष का स्वाद खोजना चाहते हो।

एसो——आओ; **ओइ**——वह; **बिछाइया राखियाछि**——बिछा रखा है; **आमादेर**——हमलोगों का; **कचि कचि**——कोमल कोमल; **तुलि**——चुन कर;

आर्द्र करि झरनार शीकरनिकरे।
गभीरपल्लवछाये बसि, क्लान्तकण्ठे
काँदिछे कपोत 'वेला याय' 'वेला याय'
वलि। कुलुकुलु बहिया चलेछे नदी
छायातल दिया। शिलाखण्डे स्तरे स्तरे
सरस सुस्निग्ध सिक्त श्यामल शैवाल
नयन चुम्बन करे कोमल अधरे।
एसो नाथ, विरल विरामे।

अर्जुन। आज नहे
प्रिये।

चित्राङ्गदा। केन नाथ?

अर्जुन। शुनियाछि, दस्युदल
आसिछे नाशिते जनपद। भीतजने
करिब रक्षण।

चित्राङ्गदा। कोनो भय नाइ प्रभु!
तीर्थयात्राकाले राजकन्या चित्राङ्गदा
स्थापन करिया गेछे सतर्क प्रहरी
दिके दिके; विपदेर यत पथ छिल
बन्ध करे दिये गेछे बहु तर्क करि।

करि—करके; **बसि**—बैठ; **काँदिछे**—क्रन्दन कर रहा है; **वेला याय**—वेला बीत रही है; **वलि**—कहते हुए; **कुलुकुलु......दिया**—छाया के नीचे से कलकल करती नदी बही जा रही है; **करे**—करता है; **विरल**—निर्जन स्थान।

आज नहे—आज नहीं।

शुनियाछि—सुना है; **आसिछे नाशिते**—नाश करने आ रहा है; **भीतजने......रक्षण**—भय से पीड़ित लोगों की रक्षा करूँगा।

कोनो......नाइ—कोई भी भय नहीं; **करिया गेछे**—कर गई है; **यत**—जितने; **छिल**—थे; **बन्ध......करि**—बहुत समझ बूझ कर बन्द कर गई है।

अर्जुन। तबु आज्ञा करो, प्रिये, स्वल्पकालतरे
करे आसि कर्तव्यसन्धान। बहुदिन
रयेछे अलस हये क्षत्रियेर बाहु।
सुमध्यमे, क्षीणकीर्ति एइ भुजद्वय
पुनर्वार नवीन गौरवे भरि आनि
तोमार मस्तकतले यतने राखिब,
हबे तव योग्य उपाधान।

चित्राङ्गदा। यदि आमि
नाइ येते दिइ? यदि बेँधे राखि? छिन्न
करे याबे? ताइ याओ। किन्तु मने रेखो,
छिन्न लता जोड़ा नाहि लागे। यदि तृप्ति
हये थाके तबे याओ, करिब ना माना।
यदि तृप्ति नाहि हये थाके, तबे मने
रेखो, चञ्चला सुखेर लक्ष्मी कारो तरे
बसे नाहि थाके; से काहारो सेवादासी
नहे; तार सेवा करे नरनारी, अति
भये भये, निशिदिन राखे चोखे चोखे
यत दिन प्रसन्न से थाके। रेखे याबे
यारे सुखेर कलिका, कर्मक्षेत्र हते

तबु......करो—तो भी आज्ञा दो; **तरे**—लिये; **करे आसि**—कर आऊँ; **रयेछे......हये**—निकम्मा रही हैं; **एइ**—ये; **आनि**—लाऊँ; **तोमार**—तुम्हारे; **यतने राखिब**—यत्नपूर्वक रखूँगा; **हबे**—होंगी।

नाइ......दिइ—न जाने दूँ; **बेँधे राखि**—बाँध रखूँ; **छिन्न......याबे**—तोड़ कर जाओगे; **ताइ याओ**—तो जाओ; **किन्तु......लागे**—किन्तु याद रखो छिन्न लता जोड़ी नहीं जाती; **हये थाके**—हो गई हो; **तबे याओ**—तब जाओ; **करिब......माना**—मना नहीं करूँगी; **कारो......थाके**—किसी के लिये बैठी नहीं रहती; **से......नहे**—वह किसी की सेवा करने वाली दासी नहीं है; **तार......करे**—उसकी सेवा करते हैं; **भये भये**—भय पूर्वक; **निशिदिन......थाके**—जितने दिन वह प्रसन्न रहती है रात दिन आँखों आँखों में रखते हैं; **रेखे......**

फिरे एसे सन्ध्याकाले देखिबे ताहार
दलगुलि फुटे झरे पड़े गेछे भूमे;
सब कर्म व्यर्थ मने हबे; चिरदिन
रहिबे जीवनमाझे जीवन्त अतृप्ति
क्षुधातुरा। एसो, नाथ, बोसो। केन आजि
एत अन्यमन? कार कथा भाबितेछ?
चित्राङ्गदा? आज तार एत भाग्य केन?

अर्जुन। भाबितेछि, वीराङ्गना किसेर लागिया
धरेछे दुष्कर व्रत। की अभाव तार?

चित्राङ्गदा। की अभाव तार! की छिल से अभागीर?
वीर्य तार अभ्रभेदी दुर्ग सुदुर्गम
रेखेछिल चतुर्दिके अवरुद्ध करि
रुद्यमान रमणीहृदय। रमणी तो
सहजेइ अन्तरवासिनी, संगोपने
थाके आपनाते; के तारे देखिते पाय,
हृदयेर प्रतिबिम्ब देहेर शोभाय
प्रकाश ना पाय यदि? की अभाव तार!
अरुणलावण्यलेखाचिरनिर्वापित

भूमे—जिसे सुख की कली (के रूप में) रख जाओगे कर्मक्षेत्र से लौटने पर सन्ध्या के समय देखोगे उसकी पंखुड़ियाँ झड़ कर भूमि पर गिर गई हैं; **मने हबे**—मन में लगेंगे (प्रतीत होंगे); **रहिबे**—रहेगी; **जीवनमाझे**—जीवन में; **एसो**—आओ; **बोसो**—बैठो; **केन......अन्यमन**—आज इतने अनमने क्यों हो; **कार......भाबितेछ**—किसकी बात सोच रहे हो; **आज......केन**—आज उसके ऐसे भाग्य क्यों।

भाबितेछि—सोच रहा हूँ; **किसेर लागिया**—किस लिये; **की...... तार**—उसे क्या अभाव है।

की......अभागीर—उस अभागी के पास था ही क्या; **रेखेछिल...... करि**—चारों ओर से अवरुद्ध कर रखा था; **रुद्यमान**—रोदन करने वाला; **सहजेइ**—सहज ही; **संगोपने......आपनाते**—गोपन भाव से अपने आप में रहती है; **के......पाय**—कौन उसे देख सकता है; **देहेर शोभाय**—शरीर के सौन्दर्य में; **प्रकाश......यदि**—यदि प्रकाशित न हो;

उषार मतन ये रमणी आपनार
शतस्तर तिमिरेर तले बसे थाके
वीर्यशैलशृङ्ग-'परे नित्य-एकाकिनी,
की अभाव तार! थाक् थाक्, तार कथा
पुरुषेर श्रुतिसुमधुर नहे, तार
इतिहास।

अर्जुन। बलो बलो। श्रवणलालसा
क्रमश बाड़िछे मोर। हृदय ताहार
करितेछि अनुभव हृदयेर माझे।
येन पान्थ आमि, प्रवेश करेछि गिया
कोन् अपरूप देशे अर्धरजनीते।
नदीगिरिवनभूमि सुप्तिनिमगन,
शुभ्रसौधकिरीटिनी उदार नगरी
छायासम अर्धस्फुट देखा याय, शुना
याय सागरगर्जन; प्रभातप्रकाशे
विचित्र विस्मये येन फुटिबे चौदिक;
प्रतीक्षा करिया आछि उत्सुकहृदये
तारि तरे। बलो बलो, शुनि तार कथा।

चित्राङ्गदा। की आर शुनिबे?

उषार......थाके—उषा के समान जो रमणी अपने सैकड़ों स्तर वाले तिमिर के नीचे बैठी रहती है; **थाक्......कथा**—रहने दो, रहने दो उसकी बात; **नहे**—नहीं है; **तार**—उसका।

बलो—बोलो; **श्रवण......मोर**—सुनने की मेरी लालसा क्रमशः बढ़ रही है; **ताहार**—उसका; **करितेछि......माझे**—हृदय के भीतर अनुभव कर रहा हूँ; **येन......आमि**—मानो मैं पथिक हूँ; **प्रवेश......रजनीते**—आधी रात को किसी अपरूप देश में जा कर प्रवेश किया है; **निमगन**—निमग्न; **देखा याय**—दीख पड़ती है; **शुना याय**—सुनाई पड़ता है; **येन......चौदिक**—मानो चारों ओर प्रस्फुटित हो उठेगा; **करिया आछि**—किए हुए हूँ; **हृदये**—हृदय से; **तारि तरे**—उसीके लिये; **शुनि......कथा**—सुनूँ उसकी बात।

अर्जुन। देखिते पेतेछि तारे—
वाम करे अश्वरश्मि धरि अवहेले,
दक्षिणेते धनुःशर, हृष्ट नगरेर
विजयलक्ष्मीर मतो आर्त प्रजागणे
करितेछे वराभयदान। दरिद्रेर
संकीर्ण दुयारे, राजार महिमा येथा
नत हय प्रवेश करिते, मातृरूप
धरि सेथा करिछेन दयावितरण।
सिंहिनीर मतो, चारि दिके आपनार
वत्सगणे रयेछेन आगलिया; शत्रु
केह, काछे नाहि आसे डरे। फिरिछेन
मुक्तलज्जा भयहीना प्रसन्नहासिनी
वीर्यसिंह-'परे चड़ि जगद्धात्री दया।
रमणीर कमनीय दुइ बाहु-'परे
स्वाधीन से असंकोच बल, धिक् थाक्
तार काछे रुनुझुनु कङ्कणकिङ्किणी।
अयि वरारोहे, बहुदिन कर्महीन
ए परान मोर उठिछे अशान्त हये
दीर्घशीतसुप्तोत्थित भुजङ्गेर मतो।

की......शुनिबे—और क्या सुनोगे।

देखिते......तारे—उसे देख पा रहा हूँ; **रश्मि**—लगाम; **धरि**—पकड़ कर; **अवहेले**—अवहेला के साथ; **हृष्ट**—आनन्दित, प्रसन्न; **मतो**—भाँति; **करितेछे**—दे रही है; **दुयारे**—द्वार पर; **राजार......करिते**—राजा की महिमा जहाँ प्रवेश करने में नत होती है; **सेथा**—वहाँ; **करिछेन**—कर रही हैं; **चारि......आगलिया**—चारों ओर पहरा देती अपने बच्चों की रक्षा कर रही हैं; **केह**—कोई; **काछे......डरे**—डर से निकट नहीं आता; **फिरिछेन**—घूम रही हैं; **'परे चड़ि**—ऊपर चढ़ कर; **दुइ**—दो; **से**—वह; **थाक्**—रहे; **तार काछे**—उसके निकट; **वरारोहे**—नितम्बिनी; **ए......मोर**—ये मेरे प्राण; **उठिछे**—उठ रहे हैं; **हये**—हो कर;

एसो एसो दोँहे दुइ मत्त अश्व लये
पाशापाशि छुटे चले याइ, महावेगे
दुइ दीप्त ज्योतिष्केर मतो। बाहिरिया
याइ एइ रुद्धसमीरण, एइ तिक्त
पुष्पगन्धमदिराय निद्राघनघोर
अरण्येर अन्धगर्भ हते।

चित्राङ्गदा। हे कौन्तेय,
यदि ए लालित्य, एइ कोमल भीरुता
स्पर्शक्लेशसकातर शिरीषपेलव
एइ रूप, छिन्न क'रे घृणाभरे फेलि
पदतले, परेर वसनखण्डसम—
से क्षति कि सहिते पारिबे? कामिनीर
छलाकला मायामन्त्र दूर करे दिये
उठिया दाँड़ाइ यदि सरल उन्नत
वीर्यमन्त अन्तरेर बले, पर्वतेर
तेजस्वी तरुण तरुसम वायुभरे
आनम्रसुन्दर, किन्तु लतिकार मतो
नहे नित्य कुण्ठित लुण्ठित, से कि भालो
लागिबे पुरुषचोखे! —थाक् थाक्, तार
चेये एइ भालो। आपन यौवनखानि
दुदिनेर बहुमूल्य धन, साजाइया

एसो......याइ—आओ, आओ दोनों दो मत्त घोड़े ले कर अगल बगल दौड़ते चले जायँ; **बाहिरिया याइ**—बाहर निकल जायँ; **इस**—इस; **मदिराय**—मदिरा से; **हते**—से।

पेलव—अत्यन्त कोमल; **फेलि**—फेंकूँ; **कि......पारिबे**—क्या सहन कर सकोगे; **दूर......दाँड़ाइ**—दूर करके उठ खड़ी होऊँ; **अन्तरेर बले**—अन्तर के बल से; **नहे**—नहीं; **से......चोखे**—वह क्या पुरुष की आँखों को अच्छा लगेगा; **थाक्.....भालो**—रहने दो, रहने दो, उसकी अपेक्षा यही अच्छा है; **आपन यौवनखानि**—अपना यौवन; **दुदिनेर**—दो दिनों का;

सयतने, पथ चेये बसिया रहिब;
अवसरे आसिबे यखन आपनार
सुधाटुकु देहपात्रे आकर्ण पूरिया
कराइब पान; सुधास्वादे श्रान्ति हले
चले याबे कर्मेर सन्धाने; पुरातन
हले, येथा स्थान दिबे सेथाय रहिब
पार्श्वे पड़ि। यामिनीर नर्मसहचरी
यदि हय दिवसेर कर्मसहचरी,
सतत प्रस्तुत थाके वामहस्तसम
दक्षिणहस्तेर अनुचर, से कि भालो
लागिबे वीरेर प्राणे!

अर्जुन। बुझिते पारि ने
आमि रहस्य तोमार। एतदिन आछि,
तबु येन पाइ नि सन्धान। तुमि येन
वञ्चित करिछ मोरे गुप्त थेके सदा;
तुमि येन देवीर मतन, प्रतिमार
अन्तराले थेके, आमारे करिछ दान
अमूल्य चुम्बनरत्न, आलिङ्गनसुधा;
निजे किछु चाह ना, लह ना। अङ्गहीन

साजाइया......रहिब—यत्नपूर्वक सजाए रास्ता देखती बैठी रहूँगी; **अवसरे...... पान**—समय पा कर (जब) आओगे अपनी सुधा अपने देह-पात्र में लबालब भर कर पान कराऊँगी; **हले**—होने पर; **चले.....सन्धाने**—कर्म के सन्धान में चले जाना; **पुरातन हले**—वृद्ध होने पर; **येथा......पड़ि**—जहाँ स्थान दोगे वहीं किनारे पड़ी रहूँगी; **नर्मसहचरी**—क्रीड़ासंगिनी; **हय**—हो; **थाके**—रहे; **से......प्राणे**—वह क्या वीर के मन को अच्छा लगेगा।

बुझिते......तोमार—तुम्हारा रहस्य समझ नहीं पाता; **एतदिन आछि**—इतने दिन से हूँ; **तबु......सन्धान**—तो भी जैसे पता नहीं पाया; **तुमि......सदा**—तुम जैसे सर्वदा गुप्त रह कर मुझे वञ्चित कर रही हो; **देवीर मतन**—देवी की भाँति; **थेके**—रह कर; **आमारे......दान**—मुझे दान कर रही हो; **निजे...... ना**—स्वयं कुछ नहीं चाहती हो, (कुछ) नहीं लेती हो;

छन्दोहीन प्रेम, प्रतिक्षणे परिताप
जागाय अन्तरे। तेजस्विनी, परिचय
पाइ तव माझे माझे कथाय कथाय।
तार काछे ए सौन्दर्यराशि, मने हय,
मृत्तिकार मूर्ति शुधु, निपुणचित्रित
शिल्पयवनिका। माझे माझे मने हय,
तोमारे तोमार रूप धारण करिते
पारिछे ना आर, काँपितेछे टलमल
करि। नित्यदीप्त हासिर अन्तरे
भरा अश्रु करितेछे वास; माझे माझे
छलछल क'रे ओठे, मुहूर्तेर माझे
फाटिया पड़िबे येन आवरण टुटि।
साधकेर काछे प्रथमेते भ्रान्ति आसे
मनोहर मायाकाया धरि; तार परे
सत्य देखा देय भूषणविहीन रूपे
आलो करि अन्तर बाहिर। सेइ सत्य
कोथा आछे तोमार माझारे, दाओ तारे।
आमार ये सत्य ताइ लओ। श्रान्तिहीन
से मिलन चिरदिवसेर।

जागाय—जाग्रत करता है; **परिचय......कथाय**—बीच-बीच में तुम्हारी बातों में तुम्हारा परिचय पाता हूँ; **तार काछे**—उसके निकट; **ए**—यह; **मने हय**—लगता है; **शुधु**—केवल; **तोमारे......करि**—तुम्हें तुम्हारा रूप और ग्रहण नहीं कर पाता, डग-मगा कर काँपता रहता है; **हासिर......वास**—हँसी के अन्तर में भरा हुआ अश्रु वास कर रहा है; **क'रे ओठे**—कर उठता है; **मुहूर्तेर......टुटि**—क्षण भर में जैसे आवरण तोड़ कर फट पड़ेगा; **साधकेर काछे**—साधक के निकट; **आसे**—आती है; **धरि**—धारण कर; **तार......देय**—उसके वाद सत्य दिखाई देता है; **आलो......बाहिर**—अन्तर-वाहर को प्रकाशित कर; **सेइ...... तारे**—वह सत्य तुम्हारे भीतर कहाँ है, उसे दो; **आमार......लओ**—मेरा जो सत्य है उसे लो; **से**—वह।

अश्रु केन
प्रिये ! बाहुते लुकाये मुख केन एइ
व्याकुलता ! वेदना दियेछि प्रियतमे ?
तबे थाक्, तबे थाक्। ओइ मनोहर
रूप पुण्यफल मोर। एइ-ये संगीत
शोना याय माझे माझे वसन्तसमीरे
ए यौवनयमुनार परपार हते,
एइ मोर बहुभाग्य। ए वेदना मोर
सुखेर अधिक सुख, आशार अधिक
आशा, हृदयेर चेये बड़ो, ताइ तारे
हृदयेर व्यथा बले मने हय प्रिये !

१०

मदन वसन्त ओ चित्राङ्गदा

मदन। शेष रात्रि आजि।

वसन्त। आज रात्रि-अवसाने
तव अङ्गशोभा फिरे याबे वसन्तेर
अक्षय भाण्डारे। पार्थेर चुम्बनस्मृति
भुले गिये तव ओष्ठराग, दुटि नव
किशलये मञ्जरि उठिबे लतिकाय।

केन—क्यों; **बाहुते......व्याकुलता**—बाँहों में मुख छिपाए यह व्याकुलता क्यों; **वेदना.....प्रियतमे**—(मैंने क्या) कष्ट दिया है प्रियतमे; **तबे थाक्**—तब रहने दो; **ओइ**—वह; **एइ-ये**—यह जो; **शोना......माझे**—बीच-बीच में सुनाई पड़ता है; **ए**—इस; **परपार हते**—उस पार से; **एइ**—यही; **हृदयेर ......बड़ो**—हृदय से बड़ा; **ताइ......प्रिये**—इसीलिये वह हृदय की व्यथा जान पड़ती है प्रिये।

फिरे......भाण्डारे—वसन्त के अक्षय भाण्डार में लौट जाएगी; **भुले गिये**—भूल कर; **दुटि.....लतिकाय**—लतिका के दो नव किसलयों में मञ्जरित हो उठेगी;

अङ्गेर बरन तव शत श्वेत फुले
धरिया नूतन तनु, गतजन्मकथा
त्यजिबे स्वप्नेर मतो नव जागरणे।

चित्राङ्गदा। हे अनङ्ग, हे वसन्त, आज रात्रे तबे
ए मुमूर्षु रूप मोर शेष रजनीते
अन्तिम शिखार मतो श्रान्त प्रदीपेर
आचम्बिते उठुक उज्ज्वलतम हये।

मदन। तबे ताइ होक। सखा, दक्षिणपवन
दाओ तबे निश्वसिया प्राणपूर्ण वेगे।
अङ्गे अङ्गे उठुक उच्छ्वसि पुनर्बार
नवोल्लासे यौवनेर क्लान्त मन्द स्रोत।
आजि मोर पञ्च पुष्पशरे निशीथेर
निद्राभेद करि, भोगवती तटिनीर
तरङ्ग-उच्छ्वासे प्लावित करिया दिब
बाहुपाशे-बन्ध दुटि प्रेमिकेर तनु।

११

शेष रात्रि

अर्जुन ओ चित्राङ्गदा

चित्राङ्गदा। प्रभु, मिटियाछे साध? एइ सुललित
सुगठित नवनीकोमल सौन्दर्येर
यत गन्ध यत मधु छिल सकलि कि

अङ्गेर बरन—अंगों का वर्ण; **फुले**—फूलों में; **धरिया**—धारण कर; **त्यजिबे**—त्याग देगा; **स्वप्नेर मतो**—स्वप्न की भाँति।

तबे—तब; **ए**—यह; **आचम्बिते......हये**—अकस्मात् उज्ज्वलतम हो उठे।

तबे......होक—तो फिर ऐसा ही हो; **दाओ**—दो; **करि**—कर; **करिया दिब**—कर दूँगा; **दुटि**—दो।

मिटियाछे—मिटी, पूरी हुई; **एइ**—इस; **यत**—जितनी; **छिल**—था;

करियाछ पान? आर-किछु बाकि आछे?
आर-किछु चाओ? आमार या-किछु छिल
सब हये गेछे शेष? हय नाइ, प्रभु--
भालो होक, मन्द होक, आरो-किछु बाकि
आछे, से आजिके दिब।

प्रियतम, भालो
लेगेछिल ब'ले करेछिनु निवेदन
ए सौन्दर्यपुष्पराशि चरणकमले
नन्दनकानन हते तुले निये एसे
बहु साधनाय। यदि साङ्ग हल पूजा
तबे आज्ञा करो, प्रभु, निर्माल्येर डालि
फेले दिइ मन्दिरबाहिरे। एइबार
प्रसन्न नयने चाओ सेविकार पाने।

ये फुले करेछि पूजा, नहि आमि कभु
से फुलेर मतो, प्रभु, एत सुमधुर,
एत सुकोमल, एत सम्पूर्ण सुन्दर।

सकलि......पान--क्या सबका पान कर लिया है; **आर......आछे**--और कुछ बाकी है; **चाओ**--चाहते हो; **आमार......शेष**--मेरा जो कुछ था सब समाप्त हो गया; **हय नाइ**--नहीं हुआ; **भालो......होक**--अच्छा हो, बुरा हो; **से...... दिब**--वह आज दूँगी।

भालो.....निवेदन--अच्छा लगा था इसलिये निवेदन किया था; **ए**--इस; **हते**--से; **तुले......साधनाय**--बहुत साधना से चुन ला कर; **यदि......करो**--यदि पूजा समाप्त हुई तो आज्ञा दो; **निर्माल्येर......बाहिरे**--निर्माल्य की डाली मंदिर के बाहर फेंक दूँ; **एइबार......पाने**--इस बार प्रसन्न नेत्रों से सेविका की ओर देखो।

ये......पूजा--जिस फूल से पूजा की है; **नहि......मतो**--मैं उस फूल की भाँति कदापि नहीं हूँ; **एत**--इतना;

दोष आछे, गुण आछे, पाप आछे, पुण्य
आछे, कत दैन्य आछे, आछे आजन्मेर
कत अतृप्त तियाषा। संसारपथेर
पान्थ, धूलिलिप्तवास, विक्षतचरण--
कोथा पाब कुसुमलावण्य, दुदण्डेर
जीवनेर अकलङ्क शोभा! किन्तु आछे
अक्षय अमर एक रमणीहृदय।
दुःख-सुख आशा-भय लज्जा-दुर्बलता--
धूलिमयी धरणीर कोलेर सन्तान--
तार कत भ्रान्ति, तार कत व्यथा, तार
कत भालोबासा, मिश्रित जड़ित हये
आछे एक साथे। आछे एक सीमाहीन
अपूर्णता, अनन्त महत्। कुसुमेर
सौरभ मिलाये थाकें यदि, एइबार
सेइ जन्मजन्मातेर सेविकार पाने
चाओ।

सूर्योदय

अवगुण्ठन खुलिया

आमि चित्राङ्गदा। राजेन्द्रनन्दिनी।
हयतो पड़िबे मने, सेइ एकदिन
सेइ सरोवरतीरे, शिवालये, देखा

आछे--हैं; **कत......आछे**--कितनी दीनता है; **तियाषा**--प्यास; **वास**--वस्त्र; **कोथा पाब**--कहाँ पाऊंगी; **कोलेर**--गोद की; **तार**--उसकी; **कत**--कितनी; **जड़ित.....साथे**--एक साथ जुड़ी हुई है; **मिलाये थाके**--लीन हो कर रहे; **एइबार......चाओ**--इस बार उसी जन्मजन्मान्तर की सेविका की ओर देखो।

खुलिया--खोल कर।

आमि--मैं; **हयतो......मने**--हो सकता है याद आए; **सेइ**--उस; **देखा दियेछिल**--दर्शन दिया था;

दियेछिल एक नारी, बहु आवरणे
भाराक्रान्त करि तार रूपहीन तनु।
की जानि की बलेछिल निर्ल्लज मुखरा,
पुरुषेरे करेछिल पुरुषप्रथाय
आराधना; प्रत्याख्यान करेछिले तारे।
भालोइ करेछ। सामान्य से नारीरूपे
ग्रहण करिते यदि तारे, अनुताप
बिंधित ताहार बुके आमरण काल।
प्रभु, आमि सेइ नारी। तबु आमि सेइ
नारि नहि; से आमार हीन छद्मवेश।
तार परे पेयेछिनु वसन्तेर वरे
वर्षकाल अपरूप रूप। दियेछिनु
श्रान्त करि वीरेर हृदय छलनार
भारे। सेओ आमि नहि।

आमि चित्राङ्गदा।

देवी नहि, नहि आमि सामान्या रमणी।
पूजा करि राखिबे माथाय, सेओ आमि
नइ; अवहेला करि पुषिया राखिबे
पिछे, सेओ आमि नहि। यदि पार्श्वे राख

करि—कर; **तार**—अपने; **की......मुखरा**—क्या जानें निर्लज्ज मुखरा ने क्या कहा था; **पुरुषेरे.....आराधना**—पुरुष की प्रथा से पुरुष की आराधना की थी; **प्रत्याख्यान......तारे**—उसकी (तुमने) उपेक्षा की थी; **भालोइ करेछ**—अच्छा ही किया; **सामान्य......तार**—उस सामान्य नारी रूप में यदि उसे ग्रहण करते; **बिंधित**—बींधता; **ताहार बुके**—उसके हृदय में; **आमि सेइ**—मैं वही हूँ; **तबु**—तो भी; **नहि**—नहीं हूँ; **से**—वह; **तार......रूप**—उसके बाद वसन्त के वरदान से वर्ष भर के लिये अपूर्व रूप पाया था; **दियेछिनु......भारे**—वीर के हृदय को छलना के भार से श्रान्त कर दिया था; **सेओ**—वह भी।

नहि—नहीं; **पूजा......माथाय**—पूजा कर सिर पर लोगे; **अवहेला...... पिछे**—अवहेला के साथ पालतू बना कर पीछे रखोगे; **राख**—रखो;

मोरे संकटेर पथे, दुरूह चिन्तार
यदि अंश दाओ, यदि अनुमति कर
कठिन व्रतेर तव सहाय हइते,
यदि सुखे दुःखे मोरे कर सहचरी,
आमार पाइबे तबे परिचय। गर्भे
आमि धरेछि ये सन्तान तोमार, यदि
पुत्र हय, आशैशव वीरशिक्षा दिये
द्वितीय अर्जुन करि तारे एकदिन
पाठाइया दिब यबे पितार चरणे—
तखन जानिबे मोरे प्रियतम!
आज
शुधु निवेदि चरणे, आमि चित्राङ्गदा,
राजेन्द्रनन्दिनी।

अर्जुन। प्रिये, आज धन्य आमि।

मोरे—मुझे; **दाओ**—दो; **अनुमति कर**—आदेश दो; **तब......हइते**—अपनी सहायिका होने का; **पाइबे**—पाओगे; **गर्भे.....तोमार**—गर्भ में मैंने जो तुम्हारी सन्तान धारण की है; **हय**—हो; **दिये**—दे कर; **करि**—बना कर; **तारे**—उसे; **पाठाइया......मोरे**—जब पिता के चरणों में भेजूंगी तब मुझे जानोगे; **शुधु**—केवल; **निवेदि**—निवेदन करती हूँ।

चिरकुमार-सभा

नाटकेर पात्रपात्रीगण

चन्द्रमाधव बाबू	कलिकातार कोनो कलेजेर अध्यापक चिरकुमार-सभार सभापति
श्रीश, विपिन, पूर्ण	चिरकुमार-सभार सभ्यगण
अक्षयकुमार	जगत्तारिणीर बड़ो जामाता
रसिकदादा	जगत्तारिणीर दूरसम्पर्कीय खुड़ा
वनमाली	घटक
गुरुदास	ओस्ताद
दारुकेश्वर, मृत्युञ्जय	कुलीन युवकद्वय
जगत्तारिणी	विधवा हिन्दु महिला
पुरबाला	जगत्तारिणीर ज्येष्ठा कन्या, अक्षय-कुमारेर स्त्री
शैलबाला	जगत्तारिणीर विधवा कन्या
नृपबाला, नीरबाला	जगत्तारिणीर दुइ अविवाहिता कन्या
निर्मला	चन्द्रमाधवबाबुर अविवाहिता भागिनेयी

कलिकातार......अध्यापक—कलकत्ते के किसी कालेज के अध्यापक; **सभ्यगण**—सदस्यगण; **जामाता**—दामाद; **दूरसम्पर्कीय**—दूर के रिश्ते में; **खुड़ा**—चाचा (पिता का छोटा भाई); **घटक**—विवाह संबंध स्थिर कराने वाला मध्यस्थ; **ओस्ताद**—उस्ताद; **दुइ**—दो; **भागिनेयी**—भानजी।

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

अक्षयेर बैठकखाना

अक्षय ओ पुरबाला

पुरबाला। तोमार निजेर बोन हले देखतुम केमन चुप करे बसे थाकते। एतदिने एक-एकटिर तिनटि चारटि करे पात्र जुटिये आनते। ओरा आमार बोन किना——

अक्षय। मानव-चरित्रेर किछुइ तोमार काछे लुकोनो नेइ। निजेर बोने एवं स्त्रीर बोने ये कत प्रभेद ता एइ काँचा वयसेइ बुझे नियेछ। ता भाइ, श्वशुरेर कोनो कन्याटिकेइ परेर हाते समर्पण करते किछुतेइ मन सरे ना——ए विषये आमार औदार्येर अभाव आछे ता स्वीकार करते हबे।

पुरबाला। देखो, तोमार सङ्गे आमार एकटा बन्दोबस्त करते हच्छे।

अक्षय। एकटा चिरस्थायी बन्दोबस्त तो मन्त्र पड़े विवाहेर दिनेइ हये गेछे, आबार आर एकटा !

तोमार......थाकते——तुम्हारी अपनी बहन होती तो (मैं) देखती कैसे चुप बैठे रहते; **एतदिने......आनते**——इतने दिनों में एक-एक के लिए तीन चार पात्र (वर) जुटा लाते; **ओरा......किना**——वे मेरी बहनें हैं न।

मानव......नेइ——मानव-चरित्र का कुछ भी तुम्हारे निकट (तुमसे) छिपा नहीं; **निजेर......नियेछ**——अपनी बहन और स्त्री की बहन में कितना अन्तर है यह इसी कच्ची उम्र में समझ लिया है; **ता......ना**——खैर भई, श्वसुर की किसी भी कन्या को दूसरे के हाथों समर्पण करते किसी भी तरह मन अग्रसर नहीं होता (तैयार नहीं होता); **ए......हबे**——इस संबंध में मेरे भीतर उदारता का अभाव है यह स्वीकार करना पड़ेगा।

आमार......हच्छे——मुझे एक व्यवस्था करनी पड़ेगी।

एकटा——एक; **पड़े**——पढ़ कर; **विवाहेर......गेछे**——विवाह के दिन ही हो गया है; **आबार......एकटा**——अब और एक।

पुरबाला। ओगो, एटा तत भयानक नय। एटा हयतो तेमन असह्य ना हतेओ पारे।

अक्षय। सखी, तबे खुले बलो।

गान

की जानि की भेबेछ मने
खुले बलो ललने।
की कथा हाय भेसे याय,
ऐ छलछल नयने।

पुरबाला। ओस्तादजि थामो। आमार प्रस्ताव एइ-ये, दिनेर मध्ये एकटा समय ठिक करो यखन तोमार ठाट्टा बन्ध थाकबे, यखन तोमार सङ्गे दुटो-एकटा काजेर कथा हते पारबे।

अक्षय। गरिबेर छेले, स्त्रीके कथा बलते दिते भरसा हय ना, पाछे खप करे बाजुबन्द चेये बसे।

गान

पाछे चेये बसे आमार मन
आमि ताइ भये भये थाकि।

एटा--यह; **तत**--उतना; **नय**--नहीं है; **एटा......पारे**--हो सकता है यह उतना असह्य न भी हो।

तबे......बलो--तब खोल कर कहो (स्पष्ट कहो); **की......ललने**--हे ललने, न जाने मन में क्या सोचा है स्पष्ट कहो; **ऐ** (उच्चारण: ओइ)--उन; **की......नयने**--उन छलछलाती आँखों में, हाय, न-जाने कौन-सी बात बही जा रही है।

ओस्तादजि--उस्ताद जी; **थामो**--रुको; **एइ-ये**--यह है कि; **ठिक**--निश्चित; **यखन......थाकबे**--जब तुम्हारा मज़ाक बन्द रहे; **यखन...... पारबे**--जब तुम्हारे साथ दो-एक काम की बातें हो सकें।

गरिबेर......बसे--गरीब की सन्तान (हूँ), स्त्री को बोलते देने का साहस नहीं पाता कहीं चट बाजूबन्द न माँग बैठे।

पाछे......मन--पीछे (कहीं) मेरा मन न माँग बैठे; **आमि......थाकि**--मैं, इसीसे डरा-डरा-सा रहता हूँ; **पाछे......बाँधा**--पीछे कहीं आँखें, आखों से

पाछे चोखे चोखे पड़े बाँधा
आमि ताइ तो तुलि ने आँखि।

पुरबाला। तबे याओ।

अक्षय। ना ना, रागारागि ना। आच्छा, या बल ताइ शुनब। खाताय नाम लिखिये तोमार ठाट्टानिवारिणी सभार सभ्य हब। तोमार सामने कोनो रकमेर बेयादबि करब ना। ता, की कथा हच्छिल? श्यालीदेर विवाह। उत्तम प्रस्ताव।

पुरबाला। देखो, एखन बाबा नेइ। मा तोमारइ मुख चेये आछेन। तोमारइ कथा शुने एखनओ तिनि वेशि वयस पर्यन्त मेयेदेर लेखापड़ा शेखाच्छेन। एखन यदि सत्पात्र ना जुटिये दिते पार ता हले की अन्याय हबे भेबे देखो देखि।

अक्षय। आमि तो तोमाके बलेइछि तोमरा कोनो भावना कोरो ना। आमार श्यालीपतिरा गोकुले बाड़छेन।

पुरबाला। गोकुलटि कोथाय।

बँध न जाएँ; **आमि......आँखि**--मैं इसीलिये तो आँखें नहीं उठाता।

तबे याओ--तब जाओ (चलो, हटो)।

रागारागि ना--नाराजी की बात नहीं; **आच्छा......शुनब**--अच्छा, जो कहोगी वही सुनूंगा; **खातार......हब**--रजिस्टर में नाम लिखा कर तुम्हारी विनोदनिवारिणी सभा का सदस्य हो जाऊंगा; **तोमार......ना**--तुम्हारे सामने कोई बेअदबी नहीं करूंगा; **ता......हच्छिल**--तो, कौन-सी बात हो रही थी; **श्यालीदेर**--सालियों का।

एखन......नेइ--अब पिता जी तो हैं नहीं; **तोमारइ**--तुम्हारा ही; **चेये आछेन**--देख रही हैं; **तोमारइ......शेखाच्छेन**--तुम्हारी ही बात मान कर बड़ी हो जाने पर भी अब तक लड़कियों को पढ़ा रही हैं; **बेशि**--अधिक; **मेयेदेर**--लड़कियों को; **लेखा पड़ा**--लिखना पढ़ना; **शेखाच्छेन**--सिखा रही हैं (शिक्षा दिला रही हैं); **एखन**--अब; **जुटिये......पार**--जुटा सको; **ता हले**--ऐसा होने पर; **की......देखि**--कितना अन्याय होगा सोच कर देखो तो सही।

आमि......ना--मैं तो तुमसे कह ही चुका हूँ, तुमलोग कोई चिन्ता मत करो; **आमार......बाड़छेन**--मेरी सालियों के पति गोकुल में बढ़ रहे हैं।

अक्षय। येखान थेके एइ हतभाग्यके तोमार गोष्ठे भर्ति करेछ। आमादेर सेइ चिरकुमार-सभा।

पुरबाला। प्रजापतिर सङ्गे तादेर ये लड़ाइ।

अक्षय। देवतार सङ्गे लड़ाइ करे पारबे केन। ताँके केवल चटिये देय मात्र। सेइजन्ये भगवान प्रजापतिर विशेष झोँक ओइ सभाटार उपरेइ। सरा-चापा हाँड़िर मध्ये मांस येमन गुमे सिद्ध हते थाके––प्रतिज्ञार मध्ये चापा थेके सभ्यगुलिओ एकेबारे हाड़ेर काछ पर्यन्त नरम हये उठेछेन––दिव्यि विवाहयोग्य हये एसेछेन––एखन पाते दिलेइ हय। आमिओ तो एककाले ओइ सभार सभापति छिलुम।

पुरबाला। तोमार की रकम दशाटा हयेछिल।

अक्षय। से आर की बलब। प्रतिज्ञा छिल स्त्री शब्द पर्यन्त मुखे उच्चारण करब ना, किन्तु शेषकाले एमनि हल ये, मने हत श्रीकृष्णेर षोलो-शो गोपिनी यदि वा सम्प्रति दुष्प्राप्य हन अन्तत महाकालीर चौषट्टि हाजार योगिनीर सन्धान पेलेओ एकबार पेट भरे प्रेमालापटा

येखान......करेछ––जहाँ से इस अभागे को अपनी गोष्ठ में भर्ती किया है; **आमादेर**––हमलोगों की; **सेइ**––वही।

प्रजापतिर......लड़ाइ––प्रजापति (ब्रह्मा) के साथ उनलोगों की लड़ाई जो है।

देवतार......केन––देवता के साथ लड़ाई करके पार कैसे पाएंगे; **ताँके......मात्र**––उनको केवल अप्रसन्न भर कर पाते हैं; **सेइजन्ये**––इसीलिये; **झोँक......उपरेइ**––झुकाव उसी सभा के ऊपर है; **सरा......थाके**––ढँकी हुई हाँड़ी के भीतर मांस जैसे धीमे धीमे पकता रहता है; **प्रतिज्ञार......उठेछेन**––प्रतिज्ञा के भीतर दबे रह कर सदस्यगण भी बिल्कुल हड्डी के निकट तक नर्म हो उठे हैं; **दिव्यि**––अच्छी तरह; **हये एसेछेन**––हो आए हैं; **एखन...... हय**––अब थाल में परोसे जा सकते हैं; **आमिओ**––मैं भी; **एककाले**––किसी समय, एक समय; **ओइ**––उस; **छिलुम**––था।

तोमार......हयेछिल––तुम्हारी कैसी दशा हुई थी।

से......बलिब––वह और क्या कहूँ; **छिल**––थी; **करब ना**––नहीं करूंगा; **एमनि......ये**––ऐसा हुआ कि; **मने हत**––मन में होता; **षोलो-शो**––सोलह सौ; **सम्प्रति**––वर्तमान, अभी; **हन**––हों; **अन्तत**––कम से कम; **चौषट्टि हाजार**––चौंसठ हजार; **सन्धान पेलेओ**––खबर पाने पर भी;

करे निइ—ठिक सेइ समयटातेइ तोमार सङ्गे साक्षात् हल आर-कि।

पुरबाला। चौषट्टि हाजारेर शख मिटल?

अक्षय। से आर तोमार मुखेर सामने बलब ना। जाँक हबे। तबे इशाराय बलते पारि, मा काली दया करेछेन बटे।

पुरबाला। तबे आमिओ बलि, बाबा भोलानाथेर नन्दीभृङ्गीर अभाव छिलो ना, आमाके बुझि तिनि दया करेछिलेन।

अक्षय। ता हते पारे, सेइजन्येइ कार्तिकटि पेयेछ।

पुरबाला। आबार ठाट्टा शुरु हल?

अक्षय। कार्तिकेर कथाटा बुझि ठाट्टा? गा छुँये बलछि, ओटा आमार अन्तरेर विश्वास।

[शैलबालार प्रवेश

शैलबाला। मुखुज्येमशाय, एइबार तोमार छोटो दुटि श्यालीके रक्षा करो।

अक्षय। यदि अरक्षणीया हये थाकेन तो आमि आछि। व्यापारटा की।

करे नि—कर लूँ; **ठिक......कि**—ठीक उसी समय तुम्हारे साथ साक्षात्कार हुआ और क्या। **शख मिटल**—शौक मिटा (पूरा हुआ)।

से......ना—वह अब तुम्हारे सम्मुख नहीं कहूंगा; **जाँक हबे**—गर्व (दम्भ) होगा; **तबे......पारि**—फिर भी इशारे से कह सकता हूँ; **करेछेन बटे**—अवश्य की है।

तबे......बलि—तो फिर मैं भी कहूँ; **छिलो ना**—नहीं था; **आमाके...... करेछिलेन**—मेरे ऊपर संभवतः उन्होंने दया की थी।

ता......पेयेछ—वह हो सकता है, इसीलिये तो (तुमने) कार्तिक पाया है।

आबार......हल—फिर मज़ाक शुरू हुआ।

कथाटा—बात; **बुझि**—शायद; **जा......बलछि**—देह छू कर (शपथ खा कर) कहता हूँ; **ओटा**—वह; **आमार**—मेरे।

मुखुज्येमशाय—मुखर्जी महाशय; **एइबार......करो**—इस बार (अब) अपनी दोनों छोटी सालियों की रक्षा करो।

यदि......आछि—यदि वे अरक्षणीया हो गई हों तो मैं हूँ; **अरक्षणीया**—(वह लड़की जिसे और अविवाहित रखना उचित न हो); **व्यापारटा की**—क्या बात है।

शैलबाला। मार काछे ताड़ा खेये रसिकदादा कोथा थेके एकजोड़ा कुलीनेर छेले एने हाजिर करेछेन, मा स्थिर करेछेन तादेर सङ्गेइ ताँर दुइ मेयेर विवाह देबेन।

अक्षय। ओरे बास रे। एकेबारे बियेर एपिडेमिक। प्लेगेर मतो! एक बाड़िते एकसङ्गे दुइ कन्येके आक्रमण! भय हय पाछे आमाकेओ धरे।

गान

बड़ो थाकि काछाकाछि,
ताइ भये भये आछि।
नयन वचन कोथाय कखन बाजिले बाँचि ना-बाँचि।

शैलबाला। एइ कि तोमार गान गाबार समय हल।

अक्षय। की करब भाइ। रोशनचौकि बाजाते शिखि नि, ता हले धरतुम। बल की। शुभकर्म! दुइ श्यालीर उद्वाहबन्धन! किन्तु एत ताड़ाताड़ि केन।

शैलबाला। वैशाख मासेर पर आसछे बछरे अकाल पड़बे, आर बियेर दिन नेइ।

मार......खेये—माँ के निकट डाँट खा कर; **कोथा थेके**—कहाँ से; **छेले**—लड़के; **एने**—ला कर; **करेछेन**—किया है; **स्थिर**—तय; **तादेर...... देबेन**—उन्हीं के साथ अपनी दोनों लड़कियों का विवाह कर देंगी।

बास—बस; **एकेबारे**—एकदम; **बियेर**—विवाह का; **मतो**—भाँति; **एक......आक्रमण**—एक ही गृह में एक साथ दो कन्याओं पर आक्रमण; **भय...... धरे**—भय होता है कहीं मुझे भी न धर ले।

बड़ो......आछि—अत्यन्त निकट रहता हूँ इसीलिये डरता रहता हूँ; **कोथाय**—कहाँ; **कखन**—कब; **बाजिले**—विद्ध होने पर; **बाँचि ना बाँचि**—बचूँ या न बचूँ।

एइ......हल—यह क्या तुम्हारे गीत गाने का समय हुआ।

की करब—क्या करूँ; **शिखि नि**—नहीं सीखा; **ता......धरतुम**—नहीं तो वही छेड़ देता; **बल की**—कहती क्या हो; **एत......केन**—इतनी जल्दबाजी क्यों।

पर—बाद; **आसछे बछरे**—आगामी वर्ष; **अकाल**—(शुभ कार्य के लिए) अनुपयुक्त समय; **आर......नेइ**—फिर कोई विवाह का लग्न नहीं है।

पुरबाला। तोरा आगे थाकते भाबिस केन शैल, पात्र आगे देखा याक तो।

[जगत्तारिणीर प्रवेश

जगत्तारिणी। बाबा अक्षय।

अक्षय। की मा।

जगत्तारिणी। तोमार कथा शुने आर तो मेयेदेर राखते पारि ने।

शैलबाला। मेयेदेर राखते पार ना बलेइ कि मेयेदेर फेले देबे मा।

जगत्तारिणी। ओइ तो। तोदेर कथा शुनले गाये ज्वर आसे। बाबा अक्षय, शैल विधवा मेये, ओके एत पड़िये, पास करिये, की हबे बलो देखि। ओर एत विद्येर दरकार की।

अक्षय। मा, शास्त्रे लिखेछे, मेयेमानुषेर एकटा ना एकटा किछु उत्पात थाका चाइ—हय स्वामी, नय विद्ये, नय हिस्टिरिया। देखो ना, लक्ष्मीर आछेन विष्णु, ताँर आर विद्येर दरकार हय नि, ताइ स्वामीटिके एवं पेँचाटिके नियेइ आछेन; आर सरस्वतीर स्वामी

तोरा......केन—तुमलोग पहले से ही चिन्तित क्यों होती हो; **पात्र...... तो**—पहले पात्र तो देखा जाय। **बाबा**—बेटा।

तोमार......ने—तुम्हारी बात मान कर अब और तो लड़कियों को रख नहीं सकती।

मेयेदेर......मा—लड़कियों को रख नहीं सकती इसीलिये क्या लड़कियों को फेंक दोगी, माँ।

ओइ तो—यह लो; **तोदेर......आसे**—तुमलोगों की बात सुन देह में बुखार चढ़ जाता है; **ओके**—उसको; **एत......देखि**—इतना पढ़ा कर पास कराके क्या होगा बोलो देखें; **ओर......की**—उसे इतनी विद्या की क्या आवश्यकता है।

शास्त्रे लिखेछ—शास्त्र में लिखा है; **मेये......चाइ**—स्त्रियों के लिये एक न एक उत्पात रहना चाहिए; **हय**—या तो; **नय विद्ये**—नहीं तो विद्या; **आछेन**—हैं; **ताँर**—उन्हें; **ताइ**—इसीलिये; **पेँचाटिके**—उल्लू (लक्ष्मी का वाहन) को; **नियेइ**—ले कर ही;

नेइ, काजेइ ताँके विद्ये निये थाकते हय।

जगत्तारिणी। ता, या बल बाबा, आसछे वैशाखे मेयेदेर बिये देबइ।

पुरबाला। हाँ मा, आमारओ सेइ मत। मेयेमानुषेर सकाल सकाल बिये हओयाइ भालो।

अक्षय। (जनान्तिके) ता तो बटेइ। विशेषत यखन एका-धिक स्वामी शास्त्रे निषेध, तखन सकाल सकाल बिये करे समये पुषिये नेओया चाइ।

पुरबाला। आः की बकछ। मा शुनते पाबेन।

जगत्तारिणी। रसिक काका आज पात्र देखाते आसबेन। ता, चल् मा पुरि, तादेर जलखाबार ठिक करे राखि गे।

[जगत्तारिणी ओ पुरबालार प्रस्थान

शैलबाला। आर तो देरि करा याय ना मुखुज्येमशाय। एइबार तोमार सेइ चिरकुमार-सभार विपिनबाबु श्रीशबाबुके विशेष एकटु ताड़ा ना दिले चलछे ना। आहा, छेले दुटि चमत्कार। आमादेर नेपो आर नीरर सङ्गे दिव्यि मानाय। तुमि तो चैत्रमास येते ना-येते

नेइ—नहीं हैं; **काजेइ**—अतएव; **ताके......हय**—उसे विद्या ले कर रहना पड़ता है।

या—जो; **बल**—बोलो, कहो; **बिये देबइ**—विवाह कर ही दूंगी।

सकाल—जल्दी ही; **हओयाइ**—होना ही।

ता......बटेइ—सो तो ठीक ही है; **समये......चाइ**—(वैवाहिक जीवन की) अवधि को बढ़ा क्षतिपूर्ति कर लेनी चाहिए।

की बकछ—क्या बक रहे हो; **मा......पाबेन**—माँ सुन लेंगी।

दिखाते आसबेन—दिखाने आएँगे; **पुरि**—पुरबाला; **तादेर......गे**—उन लोगों के लिये जलपान ठीक कर रखें।

आर......ना—और तो देरी नहीं की जा सकती; **एकटु**—थोड़ा; **ताड़ा**—(जल्दी करने के लिए बारबार दबाव देना); **ना दिले**—बिना दिये; **चलछे ना**—चल नहीं रहा है (नहीं चलेगा); **नेपो**—(नृपबाला का प्यार से लिया हुआ नाम); **नीर**—नीरबाला; **दिव्यि मानाय**—खूब मेल बैठता है;

आपिस घाड़े करे सिमले याबे, एबारे माके ठेकिये राखा शक्त हबे।

अक्षय। किन्तु, ताइ बले सभाटिके हठात् असमये ताड़ा लागाले ये चमके याबे। डिमेर खोला भेङ्गे फेललेइ किछु पाखि बेरोय ना। यथोचित ता दिते हबे, ताते समय लागे।

शैलबाला। बेश तो, ता देबार भार आमि नेब मुखुज्येमशाय।

अक्षय। आर-एकटु खोलसा करे बलते हच्छे।

शैलबाला। ओइ तो दश नम्बरे ओदेर सभा। आमादेर छादेर उपर दिये देखन-हासिर बाड़ि पेरिये ओखाने ठिक याओया याबे। आमि पुरुषवेशे ओदेर सभार सभ्य हब, तार परे सभा कत दिन टेँके आमि देखे नेब।

अक्षय। ता हले जन्मटा बदले निये आर-एकबार सभ्य हब। एकबार तोमार दिदिर हाते नाकाल हयेछि, एबार तोमार हाते। कुमार हबार सुखटाइ ओइ—कटाक्षबाणगुलोके लक्ष्यभेद करबार सुयोग देओया याय।

तुमि......हबे—तुम तो चैत्र मास जाते न जाते आफिस सिर पर रख कर शिमला चले जाओगे, इस बार माँ को रोक रखना कठिन होगा।

ताइ बले—इसीलिये; **चमके याबे**—भड़क जाएँगे; **डिमेर......ना**—अंडे के (बाहरी) आवरण को तोड़ देने से ही तो पक्षी बाहर नहीं होता; **ता दिते......लागे**—(अंडे को) सेना होता है, उसमें समय लगता है।

बेश—अच्छा; **ता......नेब**—सेने का भार मैं लूंगी।

आर......हच्छे—और ज़रा खुलासा करके कहना होगा।

ओइ तो—वही तो; **ओदेर**—उनकी; **छादेर......दिये**—छत के ऊपर से; **देखन-हासि**—वह सहेली जिसे देखते ही प्रीति की हँसी फूट पड़े (सहेली को प्यार में पुकारने का नाम); **बाड़ि**—गृह; **पेरिये**—पार करके; **ओखाने**—वहाँ; **ठिक......याबे**—ठीक जाया जा सकता है; **सभ्य**—सदस्य; **हब**—होऊँगी; **तार परे**—उसके बाद; **कतदिन**—कितने दिन; **टेँके**—टिकती है; **आमि......नेब**—मैं देख लूंगी।

ता......हब—ऐसा होने पर (मैं) जन्म बदल कर फिर एक बार सदस्य होऊंगा; **दिदिर हाते**—दीदी के हाथों; **नाकाल**—पूरी तरह पराभूत; **हयेछि**—हुआ हूँ; **एबार......हाते**—इस बार तुम्हारे हाथों; **हबार**—होने का;

शैलबाला। छि मुखुज्येमशाय, तुमि सेकेले हये याच्छ। ओइ-सब नयनबाण-टान-गुलोर एखन कि आर चलन आछे। युद्ध-विद्यार ये एखन अनेक बदल हये गेछे।

[नृपबाला ओ नीरबालार प्रवेश

नृप शान्त स्निग्ध, नीर ताहार विपरीत—कौतुके एवं चाञ्चल्ये से सर्वदाइ आन्दोलित।

नीरबाला। (शैलके जड़ाइया धरिया) मेजदिदि भाइ, आज कारा आसबे बल् तो ?

नृपबाला। मुखुज्येमशाय, आज कि तोमार बन्धुदेर निमन्त्रण आछे। जलखाबारेर आयोजन हच्छे केन।

अक्षय। ओइ तो! बइ पड़े पड़े चोख काना करले—पृथिवीर आकर्षणे उल्कापात की करे घटे से समस्त लाख-दुलाख क्रोशेर खबर राख, आर आज १८ नम्बर मधुमिस्त्रिर गलिते कार आकर्षणे के एसे पड़छे सेटा अनुमान करतेओ पारले ना ?

नीरबाला। बुझेछि भाइ सेजदिदि। तोर वर आसछे भाइ, ताइ सकालवेला आमार बाँ चोख नाचछिल।

नृपबाला। तोर बाँ चोख नाचले आमार वर आसबे केन।

सुखटाइ ओइ—यही तो सुख है; **बाणगुलोके**—बाणों को; **देओया याय**—दिया जा सकता है।

तुमि......याच्छ—तुम प्रचीनपंथी हुए जा रहे हो; **एखन......आछे**—अब क्या कोई चलन है; **हये गेछे**—हो गया है। **ताहार**—उसके; **सर्वदाइ**—सर्वदा ही।

जड़ाइया धरिया—जकड़ कर पकड़ती हुई; **मेजदिदि**—मंझली दीदी; **आज......तो**—आज कौन लोग आएंगे बोलो तो।

जलखाबारेर—जलपान का; **हच्छे केन**—क्यों हो रहा है।

बइ—पुस्तक; **पड़े पड़े**—पढ़ पढ़ कर; **की करे घटे**—कैसे होता है; **क्रोशेर**—कोसों का; **राख**—रखती हो; **गलिते**—गली में; **कार...पड़छे**—किसके आकर्षण से कौन आ रहा है; **सेटा**—वह; **करतेओ.....ना**—कर भी नहीं सकी।

बुझेछि—समझ गई; **सेजदिदि**—संझली दीदी; **आसछे**—आ रहा है; **ताइ......नाचछिल**—इसीलिए भोर में मेरी बाँयी आँख नाच (फड़क) रही थी।

आसबे केन—क्यों आएगा।

नीरबाला। ता भाइ आमार बाँ चोखटा ना हय तोर वरेर जन्ये नेचे निले, ताते आमि दुःखित नइ। किन्तु मुखुज्येमशाय, जलखाबार तो दुटि लोकेर जन्ये देखलुम, सेजदिदि कि स्वयंवरा हबे नाकि।

अक्षय। आमादेर छोड़दिदि ओ वञ्चित हबेन ना।

नीरबाला। आहा मुखुज्येमशाय, की सुसंवाद शोनाले। तोमाके की बकशिश देब। एइ नाओ आमार गलार हार--आमार दु हातेर बाला।

शैलबाला। आः छि, हात खालि करिस ने।

नीरबाला। आज आमादेर वरेर अनारे पड़ार छुटि दिते हबे मुखुज्येमशाय।

नृपबाला। आः, की वर वर करछिस। देखो तो भाइ मेजदिदि।

अक्षय। ओके ओइ जन्येइ तो बर्बरा नाम दियेछि। अयि बर्बरे, भगवान तोमादेर कटि सहोदराके एइ एकटि अक्षय वर दिये रेखेछेन, तबु तृप्ति नेइ?

नीरबाला। सेइजन्येइ तो लोभ बेड़े गेछे।

ना हय--न हो; **तोर......जन्ये**--तेरे वर के लिए; **नेचे निले**--नाच (फड़क) ली; **ताते**--उससे; **नइ**--नहीं हूँ; **लोकेर जन्ये**--लोगों के लिए; **देखलुम**--देखा; **हबे नाकि**--होगी क्या।

छोड़दिदि--छोटी दीदी (नीरबाला); **हबेन ना**--नहीं होंगी।

शोनाले--सुनाया; **तोमाके......देब**--तुम्हें क्या बख्शीश दूँ; **एइ नाओ**--यह लो।

खालि--खाली; **करिस ने**--मत कर।

अनारे--(इं०) सम्मान में; **पड़ार**--पढ़ाई की; **छुटि......हबे**--छुट्टी देनी होगी।

करछिस--करती है।

ओके--उसको; **ओइ जन्ये**--उसीलिए; **कटि**--कई।

सेइ......गेछे--इसीलिए तो लोभ बढ़ गया है।

नृप ताहाके टानिया लइया चलिल

(चलिते चलिते) एले खबर दियो मुखुज्येमशाय, फाँकि दियो ना।
देखछ तो सेजदिदि किरकम चञ्चल हये उठेछे।

गान

ना बले याय पाछे से

आँखि मोर घुम ना जाने।

अक्षय। भय नेइ, भय नेइ। एकटा याय तो आर-एकटा आसबे। ये विधाता आगुन सृष्टि करेछेन पतङ्गओ तिनिइ जुटिये देबेन। एखन गानटा चलुक।

नीरबाला। काछे तार रइ, तबुओ

व्यथा ये रय पराने।

अक्षय। नीरु, एटा तो आगन्तुकदेर लक्ष्य करे तैरि हय नि। काछेर मानुषटि के बलो तो।

नीरबाला। ये पथिक पथेर भुले

एल मोर प्राणेर कूले

पाछे तार भुल भेङे याय

चले याय कोन् उजाने,

आँखि मोर घुम ना जाने।

ताहाके......चलिल—उसे घसीट ले चली।

एले......दियो—आने पर खबर देना; **फाँकि......ना**—धोखा मत देना; **किरकम**—कैसी; **हये उठेछे**—हो उठी है।

याय—जाय; **पाछे**—बाद में; **से**—वह; **घुम**—नींद।

एकटा......आसबे—एक जाएगा तो और एक आएगा; **ये......देबेन**—जिस विधाता ने अग्नि की सृष्टि की है वही पतंगे भी जुटा देंगे; **एखन......चलुक**—अभी गीत चले।

काछे......पराने—उसके निकट रहती हूँ, फिर भी प्राणों में व्यथा रहती है।

एटा तो—यह तो; **तैरि**—तैयार; **हय नि**—नहीं हुआ है (नहीं रचा गया है); **काछेर......तो**—निकट का व्यक्ति कौन है बताओ तो।

ये—जो; **भुले**—भूल से; **एल**—आया; **पाछे**—पीछे; **भेङे याय**—टूट जाय (दूर हो जाय); **उजाने**—(स्रोत की) उल्टी दिशा में।

अक्षय। ए तो आमार सङ्गे मिलछे। किन्तु भाइ, जेने शुनेइ पथ भुलेछि, सुतरां से भुल भाङबार रास्ता राखि नि।

नीरबाला।

एल येइ एल आमार आगल टुटे,
खोला द्वार दिये आबार याबे छुटे।
खेयालेर हाओया लेगे ये खेपा ओठे जेगे
से कि आर सेइ अवेलाय मिनतिर बाधा माने।
आँखि मोर घुम ना जाने।

अक्षय। गान

ना, ना गो, ना
कोरो ना भावना—
यदि वा निशि याय याब ना, याब ना।
यखनि चले याइ
आसिब बले याइ,
आलो-छायार पथे करि आनागोना।
दोलाते दोले मन मिलने विरहे।
बारे बारेइ जानि तुमि तो चिर हे।
क्षणिक आड़ाले
बारेक दाँड़ाले
मरि भये भये पाब कि पाब ना।

ए......मिलछे—यह तो मेरे साथ मिलता है; **जेने......भुलेछि**—जान-बूझ कर ही पथ भूला हूँ; **राखि नि**—नहीं रखा।

एल......टुटे—जब (वह) आया मेरी अर्गला (बाधा) तोड़ कर आया; **दिये**—हो कर; **आबार......छुटे**—फिर भाग जाएगा; **खेयालेर......जेगे**—खयाल (स्वप्न) की हवा लगने से जो पागल जाग उठता है; **अवेलाय**—असमय।

कोरो—करो; **भावना**—चिन्ता; **याय**—चली जाय; **याब ना**—नहीं जाऊंगा; **यखनि......याइ**—जब चला जाता हूँ, आऊंगा कह कर जाता हूँ; **करि**—करता हूँ; **आनागोना**—आवाजाही; **दोलाते**—झूले में; **बारे बारेइ**—बारबार ही; **जानि**—जानता हूँ; **आड़ाले**—आड़ में, अन्तराल में; **बारेक**—

नीरबाला। बड़ो निश्चिन्त हलुम। ता हले घुमते पारि।

अक्षय। निर्भये।

[नृपबाला ओ नीरबालार प्रस्थान

शैलबाला। मुखुज्येमशाय, आमि ठाट्टा करछि ने—आमि चिरकुमार-सभार सभ्य हब। किन्तु आमार सङ्गे परिचित एकजन काउके चाइ तो। तोमार बुझि आर सभ्य हबार जो नेइ?

अक्षय। ना, आमि पाप करेछि। तोमार दिदि आमार तपस्या भङ्ग करे आमाके स्वर्ग हते वञ्चित करेछेन।

शैलबाला। ता हले रसिकदादाके धरते हच्छे। तिनि तो कोनो सभार सभ्य ना हयेओ चिरकुमार-व्रत रक्षा करेछेन।

अक्षय। सभ्य हलेइ एइ बुड़ोवयसे व्रतटि खोयाबेन। इलिश-माछ अमनि दिब्यि थाके, धरलेइ मारा याय; प्रतिज्ञाओ ठिक ताइ, ताके बाँधलेइ तार सर्वनाश।

[रसिकेर प्रवेश

रसिकदादार सम्मुखेर माथाय टाक, गोँफ पाका, गौरवर्ण, दीर्घाकृति

एक बार; **दाँड़ाले**—खड़ा होने पर; **मरि**—मरता हूँ; **भये**—भय से; **पाब......ना**—पाऊंगा कि नहीं पाऊंगा।

हलुम—हुई; **घुमते पारि**—सो सकती हूँ।

एकजन......तो—कोई एक आदमी तो अवश्य चाहिए; **तोमार......नेइ**—तुम्हें शायद और सदस्य होने का सुयोग नहीं है। **आमाके**—मुझे।

रसिक—जगत्तारिणी के काका। (बंगाल में दादा-दादी, नाना-नानी के साथ पोता-पोती, नाती-नातिनी के बीच हास-परिहास चलता है।)

ता......हच्छे—ऐसा है तो रसिकदादा को पकड़ना होगा; **तिनि**—वे; **कोनो**—किसी; **ना हयेओ**—न होने पर भी।

सभ्य......खोयाबेन—सदस्य होते ही इस वृद्ध वयस में व्रत नष्ट करेंगे; **इलिशमाछ**—हिल्सा मछली; **अमनि**—वैसे; **दिब्यि**—खूब ठीक; **थाके**—रहती है; **धरलेइ......याय**—पकड़ते ही मर जाती है; **प्रतिज्ञाओ......सर्वनाश**—प्रतिज्ञा भी ठीक उसी तरह की है, उसे बाँधते ही उसका विनाश होता है।

सम्मुखेर......टाक—सामने सिर गंजा; **गोँफ पाका**—पकी मूँछ।

अक्षय। ओरे पाषण्ड, भण्ड, अकालकुष्माण्ड।

रसिक। केन हे मत्तमन्थर कुञ्जकुञ्जर पुञ्जअञ्जनवर्ण।

अक्षय। तुमि आमार श्याली-पुष्पवने दावानल आनते चाओ?

शैलबाला। रसिकदादा, तोमारइ वा ताते की लाभ।

रसिक। भाइ, सइते पारलुम ना, की करि। बछरे बछरेइ तोर बोनदेर वयस बाड़छे, बड़ोमा आमारइ दोष देन केन। बलेन, दुवेला बसे बसे केवल खाच्छ, मेयेदेर जन्ये दुटो वर देखे दिते पार ना? आच्छा भाइ, आमि ना खेते राजि आछि, ता हलेइ वर जुटबे ना तोर बोनदेर वयस कमते थाकबे? ए दिके ये-दुटिर वर जुटछे ना, ताँरा तो दिब्यि खाच्छेन दाच्छेन। शैल भाइ, कुमारसम्भवे पड़ेछिस, मने आछे तो?——

स्वयं विशीर्णद्रुमपर्णवृत्तिता
परा हि काष्ठा तपसस्तया पुनः।
तदप्यपाकीर्णमतः प्रियंवदां
वदन्त्यपर्णेति च तां पुराविदः।

ता भाइ दुर्गा निजेर वर खुँजते खाओयादाओया छेड़े तपस्या करेछिलेन; किन्तु नातनीदेर वर जुटछे ना बले आमि बुड़ोमानुष

पाषण्ड——पाखण्डी; **भण्ड**——कपटी; **अकालकुष्माण्ड**——मूर्ख।

मत्त......वर्ण——अत्यन्त काले रंग के मत्त, मन्थर गति वाले उपवन के हाथी; **कुञ्जकुञ्जर**——उपवन का हाथी; **पुञ्ज**——स्तूप, राशि; **अञ्जन**——काजल; **वर्ण**——रंग। **आनते चाओ**——लाना चाहते हो।

तोमारइ......लाभ——उसमें तुम्हारा ही क्या लाभ है।

सइते......ना——सह नहीं सका; **की करि**——क्या करूँ; **बछरे......बाड़छे**——साल पर साल तुम्हारी बहनों की उम्र बढ़ती है; **बड़ोमा**——बड़ी माँ (जगत्तारिणी); **आमारइ......केन**——मुझे ही क्यों दोष देती हैं; **बलेन**——कहती हैं; **दुवेला**——दोनों वेला; **बसे......ना**——बैठे बैठे खा रहे हो, लड़कियों के लिए दो वर नहीं खोज सकते; **आमि......आछि**——मैं न खाने को राजी हूँ; **ता......थाकबे**——वैसा होने पर वर मिलेंगे या तुम्हारी बहनों की उम्र कम होती जाएगी; **ए.....दाच्छेन**——इस ओर जिन दोनों के वर नहीं जुटते वे तो बड़े मजे में खा पी रही हैं; **पड़ेछिस**——पढ़ा है; **मने......तो**——याद है न।

खुँजते——खोजने के लिए; **खाओयादाओया छेड़े**——खाना पीना छोड़ कर;

खाओयादाओया छेड़े देब, बड़ोमार ए की विचार। आहा शैल, ओटा मने आछे तो? तदप्यपाकीर्णमतः प्रियंवदां—

शैलबाला। मने आछे दादा, किन्तु कालिदास एखन भालो लागछे ना।

रसिक। ता हले तो अत्यन्त दुःसमय बलते हबे!

शैलबाला। ताइ तोमार सङ्गे परामर्श आछे।

रसिक। ता, राजि आछि भाइ। येरकम परामर्श चाओ, ताइ देब। यदि हाँ बलाते चाओ हाँ बलब, ना बलाते चाओ ना बलब। आमार एइ गुणटि आछे। आमि सकलेर मतेर सङ्गे मत दिये याइ बलेइ सबाइ आमाके प्राय निजेर मतोइ बुद्धिमान भावे।

अक्षय। तुमि अनेक कौशले तोमार पसार बाँचिये रेखेछ, तार मध्ये तोमार एइ टाक एकटि।

रसिक। आर एकटि हच्छे 'यावत् किञ्चिन्न भाषते'—ता आमि बाइरेर लोकेर काछे बेशि कथा कइ ने—

शैलबाला। सेइटे बुझि आमादेर काछे पुषिये नाओ?

रसिक। तोदेर काछे ये धरा पड़ेछि।

शैलबाला। धरा यदि पड़े थाक तो चलो, या बलि ताइ करते हबे।

करेछिलेन—की थीं; **बुड़ो मानुष**—बूढ़ा आदमी; **ए......विचार**—यह कैसा न्याय है; **ओटा**—वह।

ता हले—ऐसा होने पर (तब तो); **बलते हबे**—कहना होगा।

येरकम—जैसा; **चाओ**—चाहो; **ताइ देब**—वही दूंगा; **यदि......बलब**—अगर हाँ कहलवाना चाहो हाँ कहूंगा, ना कहलवाना चाहो ना कहूंगा; **आमार......आछे**—मुझमें यह गुण है; **मतेर सङ्गे**—मत के साथ; **मत......भावे**—मत दिए जाता हूँ इसीलिए सभी मुझे प्रायः अपने समान बुद्धिमान समझते हैं।

पसार—ख्याति, नाम; **बाँचिये रेखेछ**—बचा रखा है; **टाक**—गंजापन।

बाइरेर......ने—बाहर के लोगों से अधिक बातें नहीं करता।

सेइटे......नाओ—उसे ही शायद हमलोगों के निकट पूर्ण कर लेते हो।

तोदेर—पड़ेछि—तुम लोगों को पकड़ाई जो दिए हुए हूँ।

या......हबे—जो कहूँ वही करना होगा।

रसिक। भय नेइ दिदि। एमन दुटि कुलीनेर छेले जोगाड़ करेछि, कन्यादायेर दुःखेर चेयेओ यारा हाजारगुण असह्य। तादेर देखले बड़ोमा ताँर मेयेदेर जन्य ए बाड़िते चिरकुमारी-सभा स्थापन करबेन। याइ—तिनि डेके पाठियेछेन।

[प्रस्थान

शैलबाला। मुखुज्येमशाय।

अक्षय। आज्ञे करो।

शैलबाला। कुलीनेर छेले दुटोके कोनो फिकिरे ताड़ाते हबे।

अक्षय। ता तो हबेइ।

गान

देखब के तोर काछे आसे—

तुइ रबि एकेश्वरी, एकला आमि रइब पाशे।

शैलबाला। (हासिया) एकेश्वरी?

अक्षय। ना हय तोमरा चार ईश्वरीइ हले, शास्त्रे आछे, अधिकन्तु न दोषाय।

शैलबाला। आर, तुमिइ एकला थाकबे? ओखाने बुझि अधिकन्तु खाटे ना?

जोगाड़ करेछि—संग्रह किया है, ढूंढ़ निकाला है; **कन्या......असह्य**—(अविवाहित) कन्या के दायित्व के दुःख से भी जो हजार गुना असह्य हैं; **तादेर देखले**—उन्हें देखने पर; **ताँर......करबेन**—अपनी लड़कियों के लिए इस गृह में चिरकुमारी-सभा की स्थापना करेंगी; **याइ**—चलूँ; **तिनि......पाठियेछेन**—उन्होंने बुला भेजा है।

कोनो फिकिरे—किसी कौशल से, किसी उपाय से; **ताड़ाते हबे**—भगाना होगा। **ता......हबेइ**—वह (अर्थात् भगाना) तो होगा ही।

देखब......पाशे—देखूंगा कौन तेरे पास आता है, तुम एकेश्वरी रहोगी, अकेला मैं ही बगल में रहूंगा। **हासिया**—हँस कर।

ना हय—न हो; **हले**—हुईं; **शास्त्रे आछे**—शास्त्र में है।

तुमिइ......थाकबे—तुम ही अकेले रहोगे; **ओखाने**—वहाँ; **बुझि**—शायद; **खाटे ना**—लागू नहीं होता।

अक्षय। ओखाने शास्त्रेर आर एकटा पवित्र वचन आछे, सर्वमत्यन्तगर्हितं।

शैलबाला। किन्तु मुखुज्येमशाय, ओ पवित्र वचनटा तो बराबर खाटबे ना। आर ओ सङ्गी जुटबे।

अक्षय। तोमादेर एइ एकटि शालार जायगाय दशशाला बन्दोबस्त हबे? तखन आबार नूतन कार्यविधि देखा याबे। ततदिन कुलीनेर छेलेटेलेगुलोके घेँषते दिच्छि ने।

[चाकरेर प्रवेश

चाकर। दुटि बाबु एसेछे।

[प्रस्थान

शैलबाला। ओइ बुझि तारा एल। दिदि आर मा भाँड़ारे व्यस्त आछेन, ताँदेर अवकाश हबार पूर्वेइ ओदेर कोनो मते बिदाय करे दियो।

अक्षय। की बकशिश मिलबे।

शैलबाला। आमरा तोमार सब शालीरा मिले तोमाके 'शालीवाहन राजा' खेताब देब।

अक्षय। शालीवाहन दि सेकेण्ड्?

शैलबाला। सेकेण्ड् हते याबे केन। से शालीवाहनेर नाम इतिहास थेके एकेबारे विलुप्त हये याबे। तुमि हबे शालीवाहन दि ग्रेट।

तोमादेर......हबे—तुमलोगों के इस एकसाला की जगह दससाला बन्दोबस्त होगा; **ततदिन......ने**—उतने दिन कुलीनों के लड़कों-वड़कों को पास नहीं फटकने दूंगा। **चाकर**—नौकर।

दुटि......एसेछे—दो बाबू आए हैं।

तारा एल—वे आए; **भाँड़ारे**—भण्डार में; **आछेन**—हैं; **ताँदेर...... दियो**—उनको (दीदी और माँ को) अवसर मिलने के पहले ही किसी तरह इन दोनों को विदा कर देना।

शालीरा—सालियाँ; **तोमाके**—तुम्हें; **खेताब**—खिताब; **देब**—देंगी।

हते......केन—होने क्यों जाओगे; **थेके**—से; **एकेबारे**—बिल्कुल; **हये याबे**—हो जाएगा; **हबे**—होओगे।

अक्षय। बल की। आमार राज्यकाल थेके जगते नूतन साल प्रचलित हबे?

गान

तुमि आमाय करबे मस्त लोक—
देबे लिखे राजार टिके प्रसन्न ऐ चोख।

[शैलवालार प्रस्थान

[मृत्युञ्जय ओ दारुकेश्वरेर प्रवेश

एकटि विसदृश लम्बा, रोगा, बुटजुता-परा, धुति प्राय हाँटुर काछे उठियाछे, चोखेर नीचे कालि-पड़ा, म्यालेरिया रोगीर चेहारा, वयस बाइश हइते बत्रिश पर्यन्त येटा खुशि हइते पारे। आर-एकटि बेँटे खाटो, अत्यन्त दाड़ि गोँफ-सङ्कुल, नाकटि वटिकाकार, कपालटि ढिबि, कालोकोलो, गोलगाल

अक्षय। (अत्यन्त सौहार्द्य-सहकारे उठिया प्रबलवेगे शेक्-ह्याण्ड करिया) आसुन मिस्टार न्याथानियाल, आसुन मिस्टार जेरेमाया, बसुन बसुन। ओरे वरफ जल निये आय रे, तामाक दे—

मृत्युञ्जय। (सहसा विजातीय सम्भाषणे संकुचित हइया मृदुस्वरे) आज्ञे आमार नाम मृत्युञ्जय गाङ्गुलि।

दारुकेश्वर। आमार नाम श्रीदारुकेश्वर मुखोपाध्याय।

बल की—कहती क्या हो।

तुमि....लोक—तुम मुझे बड़ा आदमी बना दोगी; **ऐ** (उच्चारण:—ओई)—उन; **देबे......चोख**—अपनी उन सुन्दर आँखों से राजा का टीका लगा दोगी।

रोगा—रुग्ण; **बुटजुता**—बूट जूता; **परा**—पहने हुए; **धुति**—धोती; **हाँटुर......उठियाछे**—घुटने के पास उठी हुई है; **कालि-पड़ा**—कालिमा पड़ी हुई है; **म्यालेरिया**—मलेरिया; **चेहारा**—चेहरा; **हइते**—से; **बत्रिश**—बत्तीस; **येटा......पारे**—कुछ भी माना जा सकता है; **आर-एकटि**—और एक; **बेँटे खाटो**—नाटा ठिंगना; **दाड़ि**—दाढ़ी; **गोँफ**—मूँछ; **ढिबि**—स्तूप; **कालोकोलो**—काला कलूटा।

सहकारे—के साथ; **शेक्ह्याण्ड**—शेक हैण्ड; **आसुन**—आइए; **बसुन**—बैठिए; **निये......रे**—ले आ रे; **तामाक**—तम्बाकू (हुक्का)।

आज्ञे—जी (अवहित होने की अवस्था को सूचित करने वाला शब्द)।

अक्षय। छि मशाय! ओ नामगुलो एखनओ व्यवहार करेन बुझि? आपनादेर क्रिश्चान नाम? (आगन्तुकदिगके हतबुद्धि निरुत्तर देखिया) एखनओ बुझि नामकरण हय नि? ता ताते विशेष किछु आसे याय ना, ढेर समय आछे।

अक्षयेर गुड़गुड़िर नल मृत्युञ्जयेर हाते प्रदान। से लोकटा इतस्तत करितेछे देखिया

विलक्षण! आमार सामने आबार लज्जा! सात बछर वयस थेके लुकिये तामाक खेये पेके उठेछि। धोँया लेगे लेगे बुद्धिते झुल पड़े गेल। लज्जा यदि करते हय ता हले आमार तो आर भद्रसमाजे मुख देखाबार जो थाके ना।

तखन साहस पाइया दारुकेश्वर मृत्युञ्जयेर हात हइते फस् करिया नल काड़िया लइया फड़ फड़् शब्दे टानिते आरम्भ करिल। अक्षय पकेट हइते कड़ा बर्मार चुरोट बाहिर करिया मृत्युञ्जयेर हाते दिलेन। यदिच ताहार चुरोट अभ्यास छिल ना, तबु से सद्यस्थापित इयार्किर खातिरे प्राणेर माया परित्याग करिया मुदुमन्द टान दिते लागिल एवं कोनो गतिके काशि चापिया राखिल।

ओ......बुझि—वे सब नाम अब भी व्यवहार करते हैं, शायद; **आपनादेर**—आप लोगों का; **ता......ना**—उससे विशेष कुछ आता जाता नहीं।

गुड़गुड़िर—गुड़गुड़ी (हुक्का) का; **से......देखिया**—वह आदमी इतस्ततः कर रहा है यह देख कर।

लुकिये—छिपा कर; **खेये**—पी कर; **पेके उठेछि**—पक्का हो गया हूँ; **धोँया**—धुआँ; **लेगे**—लग-लग कर; **बुद्धिते**—बुद्धि में; **झुल**—(मकड़ी के जाले में धुआँ के कारण लगी हुई कालिमा)।

तखन—तब; **पाइया**—पा कर; **काड़िया लइया**—झपट कर ले कर; **टानिते**—खींचने; **पकेट**—पाकेट; **बर्मार चुरोट**—बर्मा की चुरुट; **हाते दिलेन**—हाथ में दिया; **यदिच......ना**—यद्यपि चुरुट (पीने) का उसे अभ्यास नहीं था; **इयार्किर खातिरे**—रसिकता के लिए; **कोनो......राखिल**—किसी प्रकार खाँसी दबा रखी।

अक्षय। एखन काजेर कथाटा शुरु करा याक। की बलेन।

मृत्युञ्जय चुप करिया रहिल

दारुकेश्वर। ता नय तो की। शुभस्य शीघ्रं।

अक्षय। (गम्भीर हइया) मुर्गि ना मटन?

मृत्युञ्जय अवाक हइया माथा चुलकाइते लागिल। दारुकेश्वर किछु ना बूझिया अपरिमित हासिते आरम्भ करिल

आरे मशाय, नाम शुनेइ हासि! ता हले तो गन्धे अज्ञान एवं पाते पड़ले माराइ याबेन। ता येटा हय मनस्थिर करे बलुन--मुर्गि हबे, ना मटन हबे।

तखन दुजने बुझिल आहारेर कथा हइतेछे। भीरु मृत्युञ्जय निरुत्तर हइया भाबिते लागिल, दारुकेश्वर लालायित रसनाय एकबार चारि दिके चाहिया देखिल

भय किसेर मशाय। नाचते बसे घोमटा?

दारुकेश्वर। (दुइ हाते दुइ पा चापड़ाइया हासिया) ता मुर्गिइ भालो, कटलेट, की बलेन।

मृत्युञ्जय। (साहस पाइया) मटनटाइ वा मन्द की भाइ। चप!

कथाटा--बात; **करा याक**--किया जाय; **की बलेन**--क्या कहते हैं। (यह कहने का एक ढंग है, जैसे हिन्दी में क्यों, ठीक तो, आदि बोलते हैं।)

चुप......रहिल--चुप रहा। **ता......की**--और नहीं तो क्या। **मुर्गि**--मुर्गी।

माथा......लागिल--सिर खुजलाने लगा; **किछु......बुझिया**--बिना कुछ समझे।

नाम......हासि--नाम सुनते ही हँसी; **पाते......याबेन**--थाल में परोसने पर मर ही जाएंगे; **ता......बलुन**--जो हो, मन स्थिर कर कहिए।

हइतेछे--हो रही है; **भाबिते लागिल**--सोचने लगा।

भय......मशाय--भय किस बात का महाशय; **नाचते बसे**--नाचने चले; **घोमटा**--घूंघट; **नाचते......घोमटा**--नाचे तो घूंघट क्या।

दुइ--दोनों; **हाते**--हाथों; **पा**--पैर; **चापड़ाइया**--थपकी देते हुए।

मटन......भाइ--मटन में ही क्या बुराई है भाई।

अक्षय। भय की दादा, दु-इ हबे। दोमना करे खेये सुख हय ना। (चाकरके डाकिया) ओरे, मोड़ेर माथाय ये होटेल आछे सेखान थेके कलिमद्दि खानसामाके डेके आन् देखि। (बुड़ो आङ्‌ल दिया मृत्युञ्जयेर गा टिपिया मृदुस्वरे) बियार, ना शेरी?

मृत्युञ्जय लज्जित हइया मुख बाँकाइल

दारुकेश्वर। हुइस्किर बन्दोबस्त नेइ बुझि?

अक्षय। (पिठ चापड़ाइया) नेइ तो की। बेँचे आछि की करे।

गान

अभय दाओ तो बलि आमार wish की—
एकटि छटाक सोडार जले पाकि तिन पोया हुइस्कि।

क्षीणप्रकृति मृत्युञ्जयओ प्राणपणे हास्य करा कर्तव्य बोध करिल एवं दारुकेश्वर फस् करिया एकटा बइ टानिया लइया टपाटप् बाजाइते आरम्भ करिल

दारुकेश्वर। दादा, ओटा शेष करे फेलो।

गान

अभय दाओ तो बलि आमार wish की—

अक्षय। (मृत्युञ्जयके ठेला दिया) धरो ना हे, तुमिओ धरो।

दोमना करे खेये—दुचित्ते हो कर खाने में; **डाकिया**—पुकार कर; **मोड़ेर माथाय**—मोड़ के सिरे पर; **ये**—जो; **सेखान थेके**—वहाँ से; **बुड़ो आङुल**—अँगूठा; **गा**—शरीर; **टिपिया**—दबा कर; **बियार**—बीयर (जौ की शराब)।

बाँकाइल—टेढ़ा किया।

हुइस्किर......बुझि—शायद ह्विस्की का प्रबन्ध नहीं है।

पिठ—पीठ; **नेइ......की**—नहीं है माने; **बेँचे......करे**—बचा कैसे हुआ हूँ (जिन्दा कैसे हूँ)।

दाओ—दो; **बलि**—बोलें; **पाकि**—पक्की (पूरी); **पोया**—पाव।

प्राणपणे......करिल—प्राणपण से हँसना कर्तव्य समझा; **बइ**—किताब; **टानिया**—खींच कर।

दादा......फेलो—दादा (बड़े भाई), उसे पूरा कर डालो।

धरो—पकड़ो; **धरो......धरो**—शुरू करो ना हे, तुम भी शुरू करो।

सलज्ज मृत्युञ्जय निजेर प्रतिपत्ति रक्षार जन्य मृदुस्वरे योग दिल—अक्षय डेस्क चापड़ाइया बाजाइते लागिलेन। एक जायगाय हठात् थामिया गम्भीर हइया

हाँ, हाँ, आसल कथाटा जिज्ञासा करा हय नि। ए दिके तो सब ठिक, एखन आपनारा की हले राजि हन।

दारुकेश्वर। आमादेर बिलेते पाठाते हबे।

अक्षय। से तो हबेइ। तार ना काटले कि श्याम्पेनेर छिपि खोले। देशे आपनादेर मतो लोकेर विद्येबुद्धि चापा थाके, बाँधन काटलेइ एकेबारे नाके मुखे चोखे उछले उठबे।

दारुकेश्वर। (अत्यन्त खुशि हइया अक्षयेर हात चापिया धरिया) दादा, एइटे तोमाके करे दितेइ हच्छे। बुझले?

अक्षय। से किछुइ शक्त नय। किन्तु ब्याप्टाइज आजइ तो हबेन?

दारुकेश्वर। (हासिते हासिते) सेटा कि रकम।

अक्षय। (किञ्चित् विस्मयेर भावे) केन, कथाइ तो आछे,

प्रतिपत्ति—सम्मान; **जायगाय**—जगह; **थामिया**—रुक कर; **हइया**—हो।

आसल......नि—असली बात तो पूछी ही नहीं; **ए दिके**—इस ओर; **एखन......हन**—अब आपलोग क्या होने पर राजी होंगे।

आमादेर......हबे—हमलोगों को विलायत भेजना होगा।

से......हबेइ—वह तो होगा ही; **तार......खोले**—तार काटे बिना क्या शैम्पेन की बोतल खुलती है; **आपनादेर मतो**—आपलोगों के समान; **लोकेर......थाके**—लोगों की विद्या बुद्धि दबी रहती है; **उछले उठबे**—उफन उठेगी।

चापिया—दबा कर; **एइटे......हच्छे**—यह तुम्हें कर ही देना होगा; **बुझले**—समझे।

से......नय—वह बिल्कुल कठिन नहीं; **ब्याप्टाइज**—(ईसाई धर्म स्वीकार करने की रीति)।

सेटा......रकम—वह कैसा।

केन......आछे—क्यों, बात तो है ही;

रेभारेण्ड विश्वास आज रात्रेइ आसछेन। ब्याप्टिज्म् ना हले तो क्रिश्चान मते विवाह हते पारे ना।

मृत्युञ्जय। (अत्यन्त भीत हइया) क्रिश्चान मते की मशाय।

अक्षय। आपनि ये आकाश थेके पड़लेन। से हच्छे ना—ब्याप्टाइज येमन करे होक, आज रात्रेइ सारते हच्छे। किछुतेइ छाड़ब ना।

मृत्युञ्जय। आपनारा क्रिश्चान नाकि।

अक्षय। मशाय न्याकामि राखुन। येन किछुइ जानेन ना।

मृत्युञ्जय। (अत्यन्त भीतभावे) मशाय, आमरा हिँदु, ब्राह्मणेर छेले, जात खोयाते पारब ना।

अक्षय। (हठात् अत्यन्त उद्धतस्वरे) जात किसेर मशाय। ए दिके कलिमद्दिर हाते मुर्गि खाबेन, बिलेत याबेन, आबार जात?

मृत्युञ्जय। (व्यस्तसमस्त हइया) चुप, चुप, चुप करुन। के कोथा थेके शुनते पाबे।

दारुकेश्वर। व्यस्त हबेन ना मशाय, एकटु परामर्श करे देखि।

रात्रेइ आसछेन—रात में ही आ रहे हैं; **ना हले**—नहीं होने पर; **मते**—मत से; **हते......ना**—हो नहीं सकता।

की मशाय—क्या महाशय।

आपनि......पड़लेन—आप तो आकाश से गिरे; **से......ना**—यह नहीं होगा; **येमन......हच्छे**—जैसे हो आज रात में ही कर लेना होगा; **किछुतेइ......ना**—किसी तरह नहीं छोड़ूंगा।

आपनारा......नाकि—आपलोग क्रिश्चियन हैं क्या।

न्याकामि—नख़रा (भला आदमी बन अज्ञता अथवा सरलता का भान करना); **राखुन**—रखिए; **येन......ना**—जैसे कुछ जानते ही नहीं।

जात—जाति; **खोयाते......ना**—गँवा नहीं सकता।

जात......मशाय—जाति कैसी महाशय; **ए दिके**—इस ओर; **बिलेत याबेन**—विलायत जाएंगे; **आबार**—और फिर।

के......पाबे—कोई कहीं सुन लेगा।

व्यस्त—व्याकुल, अस्थिर; **हबेन ना**—मत होइए; **एकटु**—ज़रा, थोड़ा; **देखि**—देखें।

(मृत्युञ्जयके एकटु अन्तराले डाकिया लइया) बिलेत थेके फिरे सेइ तो एकबार प्रायश्चित्त करतेइ हबे—तखन डबल प्रायश्चित्त करे एकेबारे धर्मे ओठा याबे। ए सुयोगटा छाड़ले आर बिलेत याओयाटा घटे उठबे ना। देखलि तो कोनो श्वशुरइ राजि हल ना। आर भाइ, क्रिश्चानेर हुँकोय तामाकइ यखन खेलुम तखन क्रिश्चान हते आर बाकि की रइल।

(अक्षयेर काछे आसिया) बिलेत याओयाटा तो निश्चय पाका? ता हले क्रिश्चान हते राजि आछि।

मृत्युञ्जय। किन्तु आज रातटा थाक्।

दारुकेश्वर। हते हय तो चट्पट् सेरे फेले पाड़ि देओयाइ भालो; गोड़ातेइ बलेछि शुभस्य शीघ्रं।

इतिमध्ये अन्तराले रमणीगणेर समागम। दुइ थाला फल मिष्टान्न लुचि ओ बरफजल लइया भृत्येर प्रवेश

दारुकेश्वर। कइ मशाय, अभागार अदृष्टे मुर्गि बेटा उड़ेइ गेल नाकि। कटलेट कोथाय।

अक्षय। (मृदुस्वरे) आजकेर मतो एइटेइ चलुक।

दारुकेश्वर। से कि हय मशाय। आशा दिये नैराश?

फिरे—लौट कर; **करतेइ हबे**—करना ही होगा; **ओठा याबे**—शामिल हो लिया जाएगा; **याओयाटा......ना**—जाना नहीं हो सकेगा; **राजि**—राजी; **हुँकोय......रइल**—जब हुक्के से तम्बाकू ही पी ली तब क्रिश्चियन होने में और बाकी क्या रहा।

पाका—पक्का; **ता हले**—तो फिर।

थाक्—रहे।

हते......भालो—होना ही है तो चटपट समाप्त कर पार उतर लेना ही अच्छा; **गोड़ातेइ बलेछि**—प्रारंभ में ही कह चुका हूँ।

कइ......नाकि—कहाँ महाशय, (इस) अभागे के भाग्य से मुर्ग बेटा उड़ ही गया क्या।

आजकेर......चलुक—आज भर यही चले।

से......महाशय—भला ऐसा कैसे हो सकता है महाशय; **दिये**—दे कर;

श्वशुरबाड़ि एसे मटन चप खेते पाव ना ? आर ए-ये बरफजल मशाय, आमार आबार सर्दिर धात, सादा जल सह्य हय ना। (गान जुड़िया) अभय दाओ तो बलि आमार wish की।

अक्षय। (मृत्युञ्जयके टिपिया) धरो ना हे, तुमिओ धरो ना––चुपचाप केन। (गानेर उच्छ्वास थामिले आहार-पात्र देखाइया) नितान्तइ कि एटा चलबे ना।

दारुकेश्वर। (व्यस्त हइया) ना मशाय, ओ-सब रोगीर पथ्यि चलबे ना। मुर्गि ना खेयेइ तो भारतवर्ष गेल।

अक्षय। (कानेर काछे आसिया लक्ष्नौ ठुंरिते गान)

कत काल रबे बलो भारत रे
शुधु डाल भात जल पथ्य करे।

दारुकेश्वर उत्साहसहकारे गानटा धरिल एवं मृत्युञ्जयओ अक्षयेर गोपन ठेला खाइया सलज्जभावे मृदु मृदु योग दिते लागिल

अक्षय। (आबार काने काने धराइया दिया)

देशे अन्नजलेर हल घोर अनटन,
धरो हुइस्कि सोडा आर मुर्गिमटन।

दारुकेश्वर मातिया उठिया ऊर्ध्वस्वरे ओइ पदटा धरिल एवं अक्षयेर वृद्धाङ्गुष्ठेर प्रबल उत्साहे मृत्युञ्जयओ कोनोमते सङ्गे सङ्गे योग दिया गेल

खेते......ना––नहीं खा पाऊँगा; **धात**––शरीर की प्रकृति।
थामिले––रुकने पर; **नितान्तइ......ना**––क्या यह बिलकुल नहीं चलेगा।
पथ्यि––पथ्य; **मुर्गि......गेल**––मुर्गी न खाने से ही तो भारतवर्ष गया।
लक्ष्नौ––लखनऊ; **ठुंरिते**––ठुमरी में।
रबे––रहोगे; **बलो**––बोलो; **शुधु**––केवल; **डाल**––दाल।
उत्साह......धरिल––उत्साह के साथ गीत छेड़ दिया; **ठेला खाइया**––धक्का खा कर; **दिते लागिल**––देने लगा। **अनटन**––अभाव।
मातिया उठिया––विभोर हो कर; **कोनोमते**––किसी प्रकार; **दिया गेल**––देता गया।

अक्षय। (मृदुस्वरे) याओ ठाकुर चैतन चुटकि निया—
एसो दाड़ि नाड़ि कलिमद्दि मिञा।

यतइ उत्साहसहकारे गान चलिल, द्वारेर पार्श्व हइते उस्खुस् शब्द शोना याइते लागिल एवं अक्षय निरीह भालोमानुषटिर मतो माझे माझे सेइ दिके कटाक्षपात करिते लागिलेन। एमन समय मयला झाड़न हाते कलिमद्दि आसिया सेलाम करिया दाँड़ाइल

दारुकेश्वर। (कलिमद्दिके) एइ ये चाचा। आज रान्नाटा की हयेछे बलो देखि। अक्षयबाबु, कारि ना कटलेट?

अक्षय। (अन्तरालेर दिके कटाक्ष करिया) से आपनारा या भालो बोझेन।

दारुकेश्वर। आमार तो मत, ब्राह्मणेभ्यो नमः बले सब-कटाकेइ आदर करे निइ।

अक्षय। ता तो बटेइ, ओरा सकलेइ पूज्य।

कलिमद्दि सेलाम करिया चलिया गेल

अक्षय। (किञ्चित् गला चड़ाइया) मशायरा कि ता हले आज रात्रेइ क्रिश्चान हते चान।

दारुकेश्वर। आमार तो कथाइ आछे, शुभस्य शीघ्रं। आजइ क्रिश्चान हब, एखनइ क्रिश्चान हब, क्रिश्चान हये तबे अन्य कथा।

याओ—जाओ; **चुटकि**—शिखा; **निया**—ले कर; **एसो**—आओ; **नाड़ि**—हिला कर; **कलिमद्दि मिञा**—कलिमुद्दीन मियाँ।

यतइ—जितना ही; **हइते**—से; **शोना......लागिल**—सुना जाने लगा; **मयला**—मैला; **सेलाम करिया**—सलाम कर; **दाँड़ाइल**—खड़ा हो गया।

रान्नाटा—रसोई; **की......देखि**—क्या हुआ है बोलो (तो) देखें; **कारि**—शोरबा। **से......बोझेन**—आपलोग जो अच्छा समझें।

बले—कह कर; **सब......निइ**—सभी का आदर कर लें (चट कर जायँ)।

ता......पूज्य—सो तो है ही, वे सभी पूज्य हैं।

गला चढ़ाइया—आवाज़ ऊँची कर; **मशायरा......चान**—तब क्या आप (दोनों) महाशय आज रात में ही क्रिश्चियन होना चाहते हैं।

आमार......आछे—मैंने तो कहा ही है; **आजइ**—आज ही;

मशाय, आर ओइ पुँइशाक कलाइयेर डाल खेये प्राण बाँचे ना। आनुन आपनार पादरि डेके।

उच्चस्वरे गान

याओ ठाकुर चैतन चुटकि निया,
एसो दाड़ि नाड़ि कलिमद्दि मिञा।

[भृत्येर प्रवेश

भृत्य। (अक्षयेर काने काने) माठाकरुन एकबार डाकछेन।

अक्षय उठिया द्वारेर अन्तराले गेल

जगत्तारिणी। ए की। काण्डटा की।

अक्षय। (गम्भीरमुखे) मा, से-सब परे हबे, एखन ओरा हुइस्कि चाच्छे, की करि। तोमार पाये मालिश करबार जन्ये सेइ-ये ब्राण्डि एसेछिल, तार कि किछु बाकि आछे।

जगत्तारिणी। (हतबुद्धि हइया) बल की बाछा। ब्राण्डि खेते देबे?

अक्षय। की करब मा, शुनेइछ तो, ओर मध्ये एकटि छेले आछे यार जल खेलेइ सर्दि हय, मद ना खेले आर-एकटिर मुखे कथाइ बेर हय ना।

हब—होऊंगा; **एखनइ**—अभी; **हये**—हो कर; **तबे**—तब; **मशाय......ना**—महाशय, और वह पुँइ का शाक और उड़द की दाल खा कर प्राण नहीं बचेंगे; **आनुन......डेके**—अपने पादरी को बुला लाइए।

मा......डाकछेन—मालकिन एकबार बुला रही हैं।

ए की—यह क्या; **काण्डटा कि**—माजरा क्या है।

मा......करि—माँ, वह सब बाद में होगा, अभी तो वे ह्विस्की मांग रहे हैं, क्या करूँ; **तोमार......आछे**—तुम्हारे पैरों में मालिश करने के लिए वह जो ब्राण्डी आई थी उसका क्या कुछ बचा है।

बल......देबे—क्या कह रहे हो बेटा, ब्राण्डी पीने को दोगे; **बाछा**—(छोटों के लिए प्यार का संबोधन) वत्स।

की......ना—क्या करूँ माँ, (तुमने) सुना ही है, उनमेंसे एक लड़का है जिसे पानी पीने से जुकाम होता है दूसरे के मुँह से शराब पिये बिना बात ही नहीं निकलती।

जगत्तारिणी। क्रिश्चान हबार कथा की बलछे ओरा।

अक्षय। ओरा बलछे हिँदु हये खाओयादाओयार बड़ो असुविधे, पुँइशाक कलायेर डाल खेले ओदेर असुख करे।

जगत्तारिणी। (अवाक हइया) ताइ बले कि ओदेर आज रातेइ मुर्गि खाइये क्रिश्चान करबे नाकि।

अक्षय। ता मा, ओरा यदि राग करे चले याय ता हले दुटि पात्र एखनइ हातछाड़ा हबे। ताइ ओरा या बलछे ताइ शुनते हच्छे। (पुरबालार प्रति) आमाके सुद्ध मद धराबे देखछि।

पुरबाला। विदाय करो, विदाय करो, एखनइ विदाय करो।

जगत्तारिणी। (व्यस्त हइया) बाबा, एखाने मुर्गि खाओया-टाओया हबे ना, तुमि ओदेर विदाय करे दाओ। आमार घाट हयेछिल आमि रसिककाकाके पात्र सन्धान करते दियेछिलुम। ताँर द्वारा यदि कोनो काज पाओया याय।

[रमणीगणेर प्रस्थान

अक्षय घरे आसिया देखेन, मृत्युञ्जय पलायनेर उपक्रम करितेछे एवं दारुकेश्वर हात धरिया ताहाके टानाटानि करिया राखिवार चेष्टा करितेछे। अक्षयेर अवर्तमाने

क्रिश्चान......ओरा—वे क्रिश्चियन होने की क्या बात कह रहे हैं।

हिँदु हये—हिन्दु होने से; **खाओयादाओयार**—खाने पीने की; **खेले**—खाने से; **ओदेर......करे**—वे बीमार हो जाते हैं।

ताइ......नाकि—इसीलिए उन्हें आज रात में ही मुर्गी खिला कर क्रिश्चियन बनाओगे क्या।

ओरा......हबे—अगर वे नाराज हो कर चले जायँ तो दो पात्र अभी हाथ से निकल जाएंगे; **ताइ......हच्छे**—इसीलिए वे जो कहते हैं सुनना पड़ता है; **आमाके......देखछि**—देख रहा हूँ मुझको भी वे शराबी बना देंगे; **सुद्ध**—पर्यन्त, भी।

आमार......हयेछिल—मुझसे अपराध हो गया; **ताँर......याय**—उनके द्वारा कोई काम अगर हो पाता (अर्थात् उनसे कोई काम नहीं हो सकता)।

आसिया देखेन—आ कर देखते हैं; **हात......करितेछे**—हाथ पकड़ कर खींचते हुए उसे रोकने की चेष्टा कर रहा है; **अवर्तमाने**—अनुपस्थिति में;

मृत्युञ्जय अग्रपश्चात् विवेचना करिया सन्त्रस्त हइया उठियाछे

मृत्युञ्जय। (अक्षयके रागेर स्वरे) ना मशाय, आमि क्रिश्चान हते पारब ना। आमार बिये करे काज नेइ।

अक्षय। ता मशाय, आपनाके के पाये धराधरि करछे।

दारुकेश्वर। आमि राजि आछि मशाय।

अक्षय। राजि थाकेन तो गिर्जेय यान मशाय। आमार सात पुरुषे क्रिश्चान करा व्यवसा नय।

दारुकेश्वर। ओइ-ये कोन् विश्वासेर कथा बललेन—

अक्षय। तिनि टेरिटिर बाजारे थाकेन, ताँर ठिकाना लिखे दिच्छि।

दारुकेश्वर। आर विवाहटा ?

अक्षय। सेटा ए वंशे नय।

दारुकेश्वर। ता हले एतक्षण परिहास करछिलेन मशाय ? खाओयाटाओ कि—

अक्षय। सेटाओ ए घरे नय।

दारुकेश्वर। अन्तत होटेले ?

अक्षय। से कथा भालो।

टाकार ब्याग हइते गुटिकयेक टाका बाहिर करिया दुटिके विदाय करिया दिलेन। नृपर हात धरिया टानिया नीरबाला

अग्र......उठियाछे—आगापीछा सोच कर त्रस्त हो उठा है।

रागेर स्वरे—क्रुद्ध स्वर में; **ना......ना**—नहीं महाशय, मैं क्रिश्चियन नहीं हो सकूंगा; **आमार......नेइ**—मुझे विवाह करने की जरूरत नहीं।

ता......करछे—तो महाशय, कौन आपके पैर पकड़ रहा है।

राजि......मशाय—राजी हैं तो गिर्जा में जाइए महाशय; **आमार...... नय**—मेरे सात पुश्तों में किसी ने क्रिश्चियन बनाने का व्यवसाय नहीं किया।

सेटा......नय—वह इस वंश में नहीं। **अन्तत**—कम से कम।

टाकार—रुपये का; **ब्याग**—बैग; **हइते**—से; **गुटिकयेक......दिलेन**—कुछ रुपये निकाल कर दोनों को विदा कर दिया; **नृपर**—नृपबाला का; **टानिया**

वसन्तकालेर दमका हाओयार मतो घरेर मध्ये आसिया प्रवेश करिल

नीरबाला। मुखुज्येमशाय, दिदि तो दुटिर कोनोटिकेइ बाद दिते चान ना।

नृपबाला। (नीरर कपोले गुटि दुइ-तिन अङ्गुलिर आघात करिया) फेर मिथ्ये कथा बलछिस--

अक्षय। व्यस्त हस ने भाइ, सत्यमिथ्येर प्रभेद आमि एकटु एकटु बुझते पारि।

नीरबाला। आच्छा मुखुज्येमशाय, ए दुटि कि रसिकदादार रसिकता, ना आमादेर सेजदिदिरइ फाँड़ा?

अक्षय। बन्दुकेर सकल गुलिइ कि लक्ष्ये गिये लागे। प्रजापति टार्गेट प्रचाकटिस करछिलेन, ए दुटो फस्के गेल। प्रथम प्रथम एमन गोटाकतक हयेइ थाके। एइ हतभाग्य धरा पड़बार पूर्वे तोमार दिदिर छिपे अनेक जलचर ठोकर दिये गियेछिल, बँड़शि बिँधल केवल आमारइ कपाले!

कपाले चपेटाघात

—खींच कर; **वसन्तकालेर......करिल**—वसन्त काल की अकस्मात् वेग से आने वाली हवा के समान घर के भीतर प्रवेश किया।

दिदि......ना—दीदी तो दोनों में से किसी को भी नहीं छोड़ना चाहतीं।

नीरर—नीरबाला के; **फेर......बलछिस**—फिर झूठी बात बोल रही है।

व्यस्त......भाइ—अस्थिर न होओ भाई; **एकटु......पारि**—थोड़ा थोड़ा समझ सकते हैं।

आमादेर......फाँड़ा—हमलोगों की छोटी दीदी ही की लाई हुई विपत्ति है; **फाँड़ा**—(ज्योतिष की गणना के अनुसार विपद की संभावना)।

बन्दुकेर......लागे—बन्दूक की सभी गोलियाँ क्या लक्ष्य पर जा कर लगती हैं; **प्रचाकटिस**—प्रैक्टिस; **करछिलेन**—कर रहे थे; **फस्के गेल**—चूक गई; **प्रथम......थाके**—पहले पहल ऐसा ही होता है; **गोटाकतक**—कई; **एइ...... गियेछिल**—इस अभागे के पकड़े जाने के पहले तुम्हारी दीदी की छीपं पर बहुत से जलचर चोट कर आए थे; **बँड़शि......कपाले**—बंसी मेरे ही कपाल में बिंधी।

नृपबाला। एखन थेके रोजइ प्रजापतिर प्रचाकटिस चलबे नाकि मुखुज्येमशाय। ता ह्ले तो आर बाँचा याय ना।

नीरबाला। केन भाइ दुःख करिस। रोजइ कि फसकाबे। एकटा ना एकटा एसे ठिकमतन पौँछबे।

[रसिकेर प्रवेश

नीरबाला। रसिकदादा, एबार थेके आमराओ तोमार जन्ये पात्री जोटाच्छि।

रसिक। से तो सुखेर विषय।

नीरबाला। हाँ। सुख देखिये देब। तुमि थाक होगलार घरे, आर परेर दालाने आगुन लागाते चाओ? आमादेर हाते टिके नेइ? आमादेर सङ्गे यदि लाग, ता ह्ले तोमार दु-दुटो बिये दिये देब; माथाय ये-कटि चुल आछे सामलाते पारबे ना।

रसिक। देख् दिदि, दुटो आस्त जन्तु एनेछिलुम बलेइ तो रक्षे पेलि, यदि मध्यम रकमेर हत, ता ह्लेइ तो विपद घटत। याके जन्तु बले चेना याय ना, सेइ जन्तुइ भयानक।

अक्षय। से-कथा ठिक। मने मने आमार भय छिल, किन्तु

एखन थेके—अभी से; **रोजइ**—रोज ही; **चलबे नाकि**—चलेगी क्या; **ता......ना**—वैसा होने पर तो और नहीं जिया जा सकता।

केन—क्यों; **करिस**—करती है; **फसकाबे**—चूकेगा। **एकटा......पौँछबे**—एक न एक तो निशाने पर बैठेगी ही।

एबार......जोटाच्छि—अब से हमलोग भी तुम्हारे लिए पात्री जुटा रही हैं। **से तो**—यह तो।

सुख......देब—सुख दिखा दूंगी; **तुमि थाक**—तुम रहते हो; **होगला**—एक प्रकार की घास; **चाओ**—चाहते हो; **हाते**—हाथ में; **टिके**—टिकिया; **आमादेर......देब**—हमलोगों के पीछे पड़ोगे तो तुम्हारे दो-दो व्याह करा देंगी; **माथाय......ना**—सिर पर थोड़े-से जो बाल हैं बचा नहीं सकोगे।

दुटो......पेलि—दो पूरे के पूरे जानवरों को लाया था इसीलिए तो (तेरी) रक्षा हुई; **रकमेर हत**—प्रकार के होते; **ता......घटत**—वैसा होने पर तो विपत्ति आ कर रहती; **याके......भयानक**—जिसे जन्तु के रूप में पहचाना न जा सके वही जन्तु भयानक होता है।

एकटु पिठे हात बुलाबामात्रइ चट्पट् शब्दे लेज नड़े उठल। किन्तु मा बलछेन की।

रसिक। से या बलछेन से आर पाँचजनके डेके डेके शोनाबार मतो नय। से आमि अन्तरेर मध्ये रेखे दिलुम। या होक शेषे एइ स्थिर हयेछे, तिनि काशीते ताँर बोनपोर काछे याबेन, सेखाने पात्रेरओ सन्धान पेयेछेन, तीर्थदर्शनओ हबे।

नीरबाला। बल की रसिकदादा। ता हले एखाने आमादेर रोज रोज नतुन नतुन नमुनो देखा बन्ध?

नृपबाला। तोर एखनओ शख आछे नाकि?

नीरबाला। ए कि सखेर कथा हच्छे। ए हच्छे शिक्षा। रोज रोज अनेकगुलि दृष्टान्त देखते देखते जिनिसटा सहज हये आसबे; येटिके बिये करबि सेइ प्राणीटिके बुझते कष्ट हबे ना।

नृपबाला। तोमार प्राणीके तुमि बुझे नियो, आमार जन्ये तोमार भाबते हबे ना।

नीरबाला। सेइ कथाइ भालो—तुइओ निजेर जन्ये भाबिस

किन्तु......उठल—किन्तु जरा-सा पीठ पर हाथ फेरते ही पटापट से दुम हिल उठी; **किन्तु......की**—लेकिन माँ क्या कहती हैं।

से......नय—वे जो कह रही हैं वह और पाँच आदमिओं को बुला कर सुनाने योग्य नहीं है; **रेखे दिलुम**—रख दिया; **या होक**—जो हो; **शेषे......हयेछे**—अन्त में यही तय हुआ है; **तिनि......याबेन**—वे काशी अपनी बहन के लड़के के पास जाएंगी; **सेखाने**—वहाँ; **पेयेछेन**—पाया है।

बल की—कहते क्या हो; **ता......बन्ध**—वैसा होने पर यहाँ हमलोगों का रोज-रोज नया नया नमूना देखना बन्द।

तोर......नाकि—तुझे अब भी शौक है क्या।

ए......हच्छे—यह क्या शौक की बात हो रही है; **ए हच्छे**—यह है; **जिनिसटा......आसबे**—बात सहज हो आएगी; **येटिके......ना**—जिससे ब्याह करेगी उस प्राणी को समझने में कष्ट नहीं होगा।

तुमि......नियो—तुम समझ लेना; **आमार......ना**—मेरे लिए तुम्हें चिन्ता नहीं करनी होगी।

तुइओ......भाबब—तू भी अपने लिए चिन्ता कर मैं भी अपने लिए चिन्ता

आमिओ निजेर जन्ये भावब—किन्तु रसिकदादाके आमादेर जन्ये भावते देओया हबे ना।

[नृप ओ नीरर प्रस्थान। शैलबालार प्रवेश

शैलबाला। रसिकदादा, तोमार सङ्गे आमार परामर्श आछे।

अक्षय। अयाँ, शैल! एइ बुझि! आज रसिकदा हलेन राजमन्त्री! आमाके फाँकि!

शैलबाला। (हासिया) तोमार सङ्गे आमार कि परामर्शेर सम्पर्क मुखुज्येमशाय। परामर्श ये बुड़ो ना हले हय ना।

अक्षय। तबे राजमन्त्रीपदेर जन्ये आमार दरबार उठिये निलुम।

हठात् उच्चैःस्वरे खाम्बाजे गान

आमि केवल फुल जोगाब
तोमार दुटि राङा हाते,
बुद्धि आमार खेले नाको
पाहारा वा मन्त्रणाते।

शैलबाला। रसिकदादा, आमरा ये चिरकुमार-सभार सभ्य हब—तुमि आमार वाहन हबे।

रसिक। भगवान हरि नारी-छद्मवेशे पुरुषके भुलियेछिलेन, तुइ शैल यदि पुरुष-छद्मवेशे पुरुषके भोलाते पारिस ता हले हरि-भक्ति उड़िये दिये तोर पूजोतेइ शेष वयसटा काटाब। किन्तु मा यदि टेर पान?

करूँ; **आमादेर......ना**—अपने लिए सोचने देना नहीं होगा।

हलेन—हुए; **आमाके फाँकि**—मुझे धोखा।

परामर्श......ना—बूढ़े हुए बिना तो परामर्श होता नहीं।

तबे......निलुम—तो फिर राजमन्त्री पद के लिए मैंने अपना आवेदन हटा लिया। **खाम्बाज**—खम्माच (एक रागिनी)।

जोगाब—जुटाऊँगा; **राङा हाते**—लाल हाथों में; **पाहारा**—पहरा।

भुलियेछिलेन—भुलाया था; **भोलाते पारिस**—भुला सके; **उड़िये दिये**—उड़ा कर; **तोर......काटाब**—तेरी पूजा में ही शेष उम्र काटूंगा; **टेर**

शैलबाला। तिन कन्याके केवलमात्र स्मरण करेइ मा मने मने एत अस्थिर हये ओठेन ये, तिनि आमादेर आर खबर राखते पारेन ना। ताँर जन्ये भेबो ना।

रसिक। किन्तु, सभाय की रकम करे सभ्यता करते हय से आमि किछुइ जानि ने।

शैलबाला। आच्छा, से आमि चालिये नेब। आवेदनपत्रेर सङ्गे प्रवेशिकार दशटा टाका पाठिये बसे आछि। रसिकदा, तोमार तो मार सङ्गे काशी चले गेले चलबे ना।

अक्षय। मार सङ्गे काशी याबार जन्ये आमि लोक ठिक करे देब एखन, सेजन्ये भाबना नेइ।

शैलबाला। मुखुज्येमशाय, तुमि तादेर की बानर बानियेइ छेड़े दिले--शेषकाले बेचारादेर जन्ये आमार माया करछिल।

अक्षय। बानर केउ बानाते पारे ना शैल, ओटा परमा प्रकृति निजेइ बानिये राखेन। भगवानेर विशेष अनुग्रह थाका चाइ। येमन कवि हओया आर-कि। लेजइ बल कवित्वइ बल भितरे ना थाकले जोर करे टेने बेर करबार जो नेइ।

पान--खबर पाएँ।

हये ओठेन--हो उठती हैं; **ताँर......ना**--उनकी चिन्ता मत करो।
सभ्यता--सदस्यता; **आमि......ने**--मैं बिलकुल नहीं जानता।
आच्छा......नेब--अच्छा, वह मैं चला लूंगी; **पाठिये......आछि**--भेज चुकी हूँ; **तोमार......ना**--तुम्हारा माँ के साथ काशी जाना तो नहीं चलेगा।

याबार जन्ये--जाने के लिए; **लोक**--लोग; **ठिक......देब**--ठीक कर दूंगा; **सेजन्ये......नेइ**--उसके लिए चिन्ता नहीं।

तुमि......दिले--तुमने उन दोनों को कैसा बन्दर बना डाला; **बेचारादेर...... छिल**--बेचारों पर दया आ रही थी।

बानर......ना--बन्दर कोई बना नहीं सकता; **ओटा**--वह; **निजेइ...... राखेन**--स्वयं बना देती हैं; **थाका चाइ**--होना चाहिए; **येमन......कि**--जैसे कवि होना और क्या; **लेजइ**--दुम ही; **बल**--कहो; **टेने......नेइ**--खींच निकालने का उपाय नहीं।

[पुरबालार प्रवेश

पुरबाला। (केरोसिन ल्याम्पटा लइया नाड़िया-चाड़िया) बेहारा की रकम आलो दिये गेछे, मिट्‌मिट् करछे। ओके बले बले पारा गेल ना।

अक्षय। से बेटा जाने किना अन्धकारेइ आमाके बेशि मानाय।

पुरबाला। आलोते मानाय ना? विनय हच्छे नाकि। एटा तो नतुन देखछि।

अक्षय। आमि बलछिलुम, बेहारा बेटा चाँद बले आमाके सन्देह करेछे।

पुरबाला। ओः, ताइ भालो। ता ओर माइने बाड़िये दाओ। किन्तु रसिकदादा, आज की काण्डटाइ करले।

रसिक। भाइ, वर ढेर पाओया याय किन्तु सबाइ विवाहयोग्य हय ना, सेइटेर एकटा सामान्य उदाहरण दिये गेलुम।

पुरबाला। से उदाहरण ना देखिये दुटो-एकटा विवाहयोग्य वरेर उदाहरण देखालेइ तो भालो हत।

शैलबाला। से भार आमि नियेछि दिदि।

पुरबाला। ता आमि बुझेछि। तुमि आर तोमार मुखुज्ये-

ल्याम्पटा—लैम्प; **लइया**—ले कर; **नाड़िया-चाड़िया**—हिला-डुला कर; **बेहारा**—बैरा; **की......गेछे**—कैसा लैम्प दे गया है; **मिट्‌मिट्**—टिमटिम; **ओके......ना**—उसको कहते कहते हार गई।

से......मानाय—वह जानता है न कि अन्धकार में ही मैं जँचता हूँ।

आलोते......नाकि—उजाले में नहीं जँचते? कैसी विनम्रता है; **एटा..... देखछि**—यह तो नयी बात देख रही हूँ।

आमि बलछिलुम—मैं कह रहा था; **चाँद......करेछे**—उसे मेरे चाँद होने का सन्देह है (मुझे वह चाँद समझता है)।

ता......दाओ—तो उसका वेतन बढ़ा दो।

सेइटेर—उसीका; **दिये गेलुम**—दे चला।

से......देखिये—वह उदाहरण न दिखा कर; **देखालेइ......हत**—दिखलाने से ही अच्छा होता।

से......दिदि—वह भार मैंने लिया है दीदी।

मशाय मिले कदिन धरे ये-रकम परामर्श चलछे एकटा की काण्ड हबेइ।

अक्षय। किष्किन्ध्याकाण्ड तो आज हये गेल।

रसिक। लङ्काकाण्डेर आयोजनओ हच्छे, चिरकुमार-सभार स्वर्णलङ्काय आगुन लागाते चलेछि।

पुरबाला। शैल तार मध्ये के।

रसिक। हनुमान तो नयइ।

अक्षय। उनिइ हच्छेन स्वयं आगुन।

रसिक। एक व्यक्ति ओँके लेजे करे निये याबेन।

पुरबाला। आमि किछु बुझते पारछि ने। शैल, तुइ चिरकुमार-सभाय याबि नाकि।

शैलबाला। आमि ये सभ्य हब।

पुरबाला। की बलिस तार ठिक नेइ। मेयेमानुष आबार सभ्य हबे की।

शैलबाला। आजकाल मेयेराओ ये सभ्य हये उठेछे। ताइ आमि शाड़ि छेड़े चापकान धरब ठिक करेछि।

कदिन......हबेइ—कई दिनों से जिस प्रकार का परामर्श चल रहा है एक न एक काण्ड होगा ही।

तो......गेल—तो आज हो गया। **हच्छे**—हो रहा है।

तार......के—उसमें कौन है।

तो नयइ—निश्चय ही नहीं है।

उनिइ......आगुन—वे ही स्वयं अग्नि हैं।

ओँके—उनको; **लेजे......याबेन**—पूँछ में लपेट कर ले जाएंगे।

आमि......ने—मैं कुछ नहीं समझ पाती; **तुइ**—तू; **याबि नाकि**—जाएगी भला क्या।

आमि......हब—मैं सदस्य जो बनूंगी।

की......नेइ—क्या बोलती है उसका ठीक नहीं; **मेये......की**—लड़की अब क्या सदस्य होगी।

मेयेराओ—लड़कियाँ भी; **ये......उठेछे**—सभ्य हो उठी हैं; **ताइ......करेछि**—इसीलिए मैं साड़ी उतार कर अचकन धारण करूंगी, तय किया है।

पुरबाला। बुझेछि, छद्मवेशे सभ्य हते याच्छिस बुझि? चुलटा तो केटेइछिस, ओइटेइ बाकि छिल। तोमादेर या खुशि करो, आमि एर मध्ये नेइ।

अक्षय। ना ना, तुमि ए दले भिड़ो ना। आर यार खुशि पुरुष होक, आमार अदृष्टे तुमि चिरदिन मेयेइ थेको—नइले ब्रीच अफ कण्ट्राक्ट—से बड़ो भयानक मकद्दमा!

गान

चिर-पुरानो चाँद
चिरदिवस एमनि थेको आमार एइ साध।
पुरानो हासि पुरानो सुधा, मिटाय मम पुरानो क्षुधा
नूतन कोनो चकोर येन पाय ना परसाद।

[पुरबालार प्रस्थान

शैलबालाके आश्वास दिया

भय नेइ। रागटा हये गेलेइ मनटा परिष्कार हबे—एकटु अनुतापओ हबे—सेइटेइ सुयोगेर समय।

रसिक। कोपो यत्र भ्रुकुटिरचना निग्रहो यत्र मौनं
यत्रान्योन्यस्मितमनुनयो यत्र दृष्टिः प्रसादः।

शैलबाला। रसिकदादा, तुमि तो दिव्यि श्लोक आउड़े चलेछ—कोप जिनिसटा की, ता मुखुज्येमशाय टेर पाबेन।

हते......बुझि—होने जा रही है शायद; **चुलटा......छिल**—बाल तो कटा ही लिये हैं, वही बाकी था; **तोमादेर......नेइ**—तुमलोगों की जो खुशी करो, मैं इसमें नहीं हूँ।

ना......ना—नहीं नहीं, तुम इस दल में न घुस जाना; **आर......थेको**—और जिसकी खुशी पुरुष बने, मेरे भाग्य से तुम चिर दिन स्त्री ही रहना; **नइले**—नहीं तो; **मकदम्मा**—मुकद्दमा।

एमनि......साध—ऐसे ही रहो यही मेरी कामना है; **मिटाय**—मिटाए; **कोनो**—कोई; **येन......परसाद**—जिसमें प्रसाद न पाए।

रागटा......गेलेइ—क्रोध हो जाने पर ही; **सेइटेइ**—वही।

तुमि......चलेछ—तुम तो मज़े से श्लोक दुहराते जा रहे हो; **टेर पाबेन**—पता चलेगा।

रसिक। आरे भाइ, बदल करते राजि आछि। मुखुज्येमशाय यदि श्लोक आओड़ातेन आर आमार उपरेइ यदि कोप पड़त ता हले एइ पोड़ा-कपालके सोना दिये बाँधिये राखतुम।

शैलबाला। मुखुज्येमशाय।

अक्षय। (अत्यन्त त्रस्तभावे) आबार मुखुज्येमशाय! एइ वालखिल्य मुनिदेर ध्यानभङ्ग व्यापारेर मध्ये आमि नेइ।

शैलबाला। ध्यानभङ्ग आमरा करब। केवल मुनिकुमारगुलिके एइ बाड़िते आना चाइ।

अक्षय। सभासुद्ध एइखाने उत्पाटित करे आनते हबे! यत दुःसाध्य काज सब एइ एकटिमात्र मुखुज्येमशायके दिये?

शैलबाला। (हासिया) महावीर हबार ओइ तो मुशकिल। यखन गन्धमादनेर प्रयोजन हयेछिल तखन नल-नील-अङ्गदके तो केउ पोँछेओ नि।

अक्षय। ओरे पोड़ारमुखी, त्रेतायुगेर पोड़ारमुखोके छाड़ा आर कोनो उपमाओ तोर मने उदय हल ना? एत प्रेम!

शैलबाला। हाँ गो, एत प्रेम!

बदल......आछि—बदली करने को राजी हूँ; **ता......राखतुम**—तो इस अभागे सिर को सोने से मढ़ देता।

आबार—फिर; **एइ......नेइ**—इन वालखिल्य ऋषियों के ध्यानभंग के मामले में मैं नहीं हूँ।

आमरा करब—हमलोग करेंगे; **केवल......चाइ**—केवल मुनिकुमारों को इस घर में लाना चाहिए (ले आया जाय)।

सभा......हबे—पूरी की पूरी सभा उखाड़ कर यहाँ लानी होगी; **यत**—जितने; **एइ एकटिमात्र**—एकमात्र इस; **के दिये**—के द्वारा।

महावीर......मुशकिल—महावीर होने में यही तो मुश्किल है; **यखन**—जब; **हयेछिल**—हुआ था; **तखन**—तब; **तो......नि**—तो किसी ने पूछा भी नहीं।

पोड़ारमुखी—जलमुँही; **पोड़ारमुखोके छाड़ा**—जलमुँहे (हनुमान) को छोड़ कर; **एत**—इतना।

अक्षय। गान

पोड़ा मने शुधु पोड़ा मुखखानि जागे रे,
एत आछे लोक, तबु पोड़ा चोखे
आर केह नाहि लागे रे।

आच्छा, ताइ हबे। पङ्गपाल कटाके शिखार काछे ताड़िये निये आसब। ता हले चट् करे आमाके एकटा पान एने दाओ—तोमार स्वहस्तेर रचना।

शैलबाला। केन, दिदिर हस्तेर—

अक्षय। आरे दिदिर हस्त तो जोगाड़ करेइछि, नइले पाणिग्रहण की जन्ये। एखन अन्य पद्महस्तगुलिर प्रति दृष्टि देबार अवकाश पाओया गेछे।

शैलबाला। आच्छा गो मशाय। पद्महस्त तोमार पाने एमनि चुन माखिये देबे ये, पोड़ारमुख आबार पुड़बे।

अक्षय। गान

यारे मरणदशाय धरे
से ये शतबार करे मरे।
पोड़ा पतङ्ग यत पोड़े, तत
आगुने झाँपिये पड़े।

पोड़ा—दग्ध, जला; **शुधु**—केवल; **एत......लोक**—इतने लोग हैं; **आर......रे**—और कोई (अच्छा) नहीं लगता।

ताइ हबे—वही होगा; **पङ्गपाल कटाके**—उन पतंगों को; **शिखार...... आसब**—लौ के निकट हाँक लाऊंगा; **ता......दाओ**—तो फिर जल्दी मेरे लिए एक पान ला दो।

जोगाड़ करेइछि—जुटा ही चुका हूँ; **नइले**—नहीं तो; **की जन्ये**—किसलिए; **एखन......गेछे**—अब दूसरे पद्महस्तों (कर-कमलों) की ओर दृष्टि डालने का अवकाश मिला है।

पद्महस्त......पुड़बे—कर-कमल तुम्हारे पान में इतना चूना लगा देंगे कि जला हुआ मुँह और जल जाएगा।

यारे......मरे—जिसे मरणदशा ग्रस्त कर लेती है वह सैकड़ों बार मरता है; **पोड़ा......पड़े**—जला हुआ पतङ्ग जितना जलता है उतना ही आग में कूदता है।

शैलबाला। मुखुज्येमशाय, ओ कागजेर गोलाटा किसेर।

अक्षय। तोमादेर सेइ सभ्य हबार आवेदनपत्र एवं प्रवेशिकार दशटाकार नोट पकेटे छिल, धोबा बेटा केचे एमनि परिष्कार करे दियेछे, एकटा अक्षरओ देखते पाच्छि ने। ओ बेटा बोध हय स्त्री-स्वाधीनतार घोरतर विरोधी, ताइ तोमार ओइ पत्रटा एकेबारे आगा-गोड़ा संशोधन करे दियेछे।

शैलबाला। एइ बुझि!

अक्षय। चारटिते मिले स्मरणशक्ति जुड़े बसे आछ, आर किछु कि मने राखते दिले।

गान

सकलि भुलेछे भोला मन
भोले नि भोले नि शुधु ऐ चन्द्रानन।

[शैल ओ रसिकेर प्रस्थान

[पुरबालार प्रवेश

अक्षय। स्वामीइ स्त्रीर एकमात्र तीर्थ। मान कि ना?

पुरबाला। आमि कि पण्डितमशायेर काछे शास्त्रेर विधान निते एसेछि। आमि मार सङ्गे आज काशी चलेछि एइ खबरटि दिये गेलुम।

गोलाटा—गोला।

तोमादेर......हबार—वही तुमलोगों के सदस्य होने का; **धोबा**—धोबी; **केचे**—फींच कर; **देखते......ने**—देख नहीं पा रहा हूँ; **बोध हय**—लगता है; **ताइ**—इसीलिए; **एकेबारे**—एकदम; **आगागोड़ा**—आद्योपान्त; **करे दियेछे**—कर दिया है।

एइ बुझि—यही है शायद।

चारटिते मिले—चारों (बहनें) मिल कर; **जुड़े......आछ**—जड़ित हो कर बैठी हो; **आर......दिले**—और क्या कुछ भी याद रहने दिया है।

भुलेछे—भूल गया है; **भोले नि**—नहीं भूला; **शुधु**—केवल; **ऐ** (उच्चारण-ओइ)—वह।

स्वामीइ—स्वामी ही; **मान कि ना**—मानती हो या नहीं।

निते एसेछि—लेने आई हूँ; **मार सङ्गे**—माँ के साथ; **चलेछि**—जा रही हूँ; **एइ......गेलुम**—यह संवाद दे चली।

अक्षय। खबरटि सुखबर नय—शोनबामात्र तोमाके शाल-दोशाला बकशिश दिये फेलते इच्छे करछे ना।

पुरबाला। इस्, हृदय विदीर्ण हच्छे—ना? सह्य करते पारछ ना?

अक्षय। आमि केवल उपस्थित विच्छेदटार कथा भावछि ने—एखन तुमि दु दिन ना रइले, आरओ कजन रयेछेन, एकरकम करे एइ हतभाग्येर चले याबे। किन्तु एर परे की हबे। देखो, धर्म-कर्मे स्वामीके एगिये येयो ना—स्वर्गे तुमि यखन डबल प्रमोशन पेते थाकबे आमि तखन पिछिये थाकब—तोमाके विष्णुदूते रथे चड़िये निये याबे, आर आमाके यमदूते काने धरे हाँटिये दौड़ कराबे।

गान

स्वर्गे तोमाय निये याबे उड़िये,
पिछे पिछे आमि चलब खुँड़िये,
इच्छा हबे टिकिर डगा धरे
विष्णुदूतेर माथाटा दिइ गुँड़िये।

पुरबाला। आच्छा, आच्छा, थामो।

अक्षय। आमि थामब, केवल तुमिइ चलबे? उनविंश शताब्दीर एइ बन्दोबस्त? नितान्तइ चलले?

सुखबर—अच्छी खबर; **नय**—नहीं; **शोनबामात्र**—सुनते ही; **तोमाके**—तुम्हें; **बकशिश**—बख्शीश; **दिये......ना**—दे डालने की इच्छा नहीं हो रही है। **सह्य......ना**—सहन नहीं कर पा रहे हो।

भावछि ने—नहीं सोच रहा हूँ; **ना रइले**—न रहीं सही; **आरओ......रयेछेन**—और भी जने हैं; **एकरकम......याबे**—एक प्रकार से इस अभागे का (काम) चल जाएगा; **एर......हबे**—इसके बाद क्या होगा; **एगिये येयो ना**—आगे न निकल जाना; **पेते थाकबे**—पाती रहोगी; **आमि......थाकब**—मैं तब पिछड़ रहूंगा; **तोमाके......याबे**—तुम्हें विष्णु के दूत रथ पर चढ़ा कर ले जाएंगे; **आर......कराबे**—और मुझे यमदूत कान पकड़ कर दौड़ाएंगे।

तोमाय......उड़िये—तुम्हें उड़ा कर ले जाएंगे; **पिछे**—पीछे; **चलब**—चलूंगा; **खुँड़िये**—लंगड़ाते हुए; **हबे**—होगी; **टिकिर......धरे**—चुटिया का छोर पकड़ कर; **माथाटा**—सिर; **दिइ गुँड़िये**—चूर कर दूं। **थामो**—रुको।

आमि......चलबे—मैं रुक जाऊँ, बस केवल तुम्हीं चलोगी; **नितान्तइ**

पुरबाला। चललुम।

अक्षय। आमाके कार हाते समर्पण करे गेले।

पुरबाला। रसिकदादार हाते।

अक्षय। मेयेमानुष, हस्तान्तर करबार आइन किछुइ जान ना। सेइजन्येइ तो विरहावस्थाय उपयुक्त हात निजेइ खुँजे निये आत्मसमर्पण करते हय।

पुरबाला। तोमाके तो बेशि खोँजाखुँजि करते हबे ना।

अक्षय। ता हबे ना।—

गान

कार हाते ये धरा देब प्राण
ताइ भाबते वेला अवसान।
डान दिकेते ताकाइ यखन बाँयेर लागि काँदे रे मन
बाँयेर लागि फिरले तखन दक्षिणेते पड़े टान।

आच्छा, आमार येन सान्त्वनार गुटि दुइ-तिन सदुपाय आछे, किन्तु तुमि—

विरहयामिनी केमने यापिबे,
विच्छेदतापे यखन तापिबे

चलले—क्या एकदम चल दीं। **चललुम**—चली।

आमाके......गेले—मुझे किसके हाथों सौंप चलीं।

मेयेमानुष—स्त्री जाति; **करबार**—करने का; **किछुइ......ना**—ज़रा भी नहीं जानती; **सेइजन्येइ तो**—इसीलिए तो; **निजेइ......निये**—स्वयं ही खोज कर।

तोमाके......ना—तुम्हें तो ज्यादा खोज नहीं करनी पड़ेगी।

ता......ना—सो तो नहीं करनी पड़ेगी।

कार......देब—किसके हाथों में पकड़ाई दूंगा; **ताइ......अवसान**—यही सोचते समय बीत जाता है; **डान......मन**—दाहिनी ओर जब देखता हूँ तो बांयी के लिए मन क्रन्दन कर उठता है; **बाँयेर......टान**—बाँयी के लिए घूमने पर दक्षिण की ओर से खिंचाव होता है; **आच्छा**—अच्छा; **आमार......आछे**—मेरी सान्त्वना के लिए तो मान लो दो-तीन सदुपाय हैं; **केमने**—कैसे; **यापिबे**—बिताओगी; **तापिबे**—तपोगी, जलोगी; **एपाश......मापिबे**—इस करवट उस करवट (करवट बदलती-बदलती) बिस्तर नापोगी;

एपाश ओपाश बिछाना मापिबे,
मकरकेतने केवलि शापिबे—

पुरबाला। रक्षे करो, ओ मिलटा ओइखानेइ शेष करो।

अक्षय। दुःखेर समय आमि थामते पारि ने—काव्य आपनि बेरोते थाके। मिल भालो ना बास अमित्राक्षर आछे, तुमि यखन विदेशे थाकबे आमि आर्तनाद-वध काव्य बले एकटा काव्य लिखब। सखी, तार आरम्भटा शोनो—

(साड़म्बरे) वाष्पीय शकटे चड़ि नारी-चूड़ामणि
पुरबाला चलि यबे गेला काशीधामे
विकाले, कह हे देवी अमृतभाषिणी
कोन् वराङ्गने वरि वरमाल्य-दाने
यापिला विच्छेदमास श्यालीत्रयीशाली
श्रीअक्षय!

पुरबाला। (सगर्वे) आमार माथा खाओ, ठाट्टा नय, तुमि एकटा सत्यिकार काव्य लेखो ना।

अक्षय। माथा खाओयार कथा यदि बलले, आमि निजेर माथाटि खेये अवधि बुझेछि ओटा सुखाद्येर मध्ये गण्य नय। आर

मकर......शापिबे—कामदेव को लगातार शाप देती रहोगी।

रक्षे......करो—माफ करो, वह तुकबंदी वहीं समाप्त करो।

आमि......ने—मैं रुक नहीं सकता; **काव्य......थाके**—काव्य स्वयं ही निकलता रहता है; **मिल......आछे**—तुक पसन्द न हो तो अमित्राक्षर (अतुकान्त छन्द) है; **यखन**—जब; **थाकबे**—रहोगी; **तार......शोनो**—उसका आरम्भ सुनो; **साड़म्बरे**—घटाटोप के साथ; **चड़ि**—चढ़ कर; **चलि......गेला**—जब चली गई; **विकाले**—तीसरे पहर; **कोन्......वरि**—किस वराङ्गना (श्रेष्ठ नारी) का वरण कर; **यापिला**—यापन किया; **श्यालीत्रयीशाली**—तीन सालियों वाले।

आमार......खाओ—मेरा सिर खाओ (मेरे सिर की कसम); **ठाट्टा नय**—दिल्लगी नहीं; **तुमि......ना**—तुम सचमुच एक काव्य लिखो न।

माथा......नय—अगर सिर खाने की बात कहती हो, तो अपना सिर खा कर मैं समझ चुका हूँ कि उसकी गणना सुखाद्य में नहीं है; **आर......लेखा**—और

ओइ काव्य लेखा, ओ कार्यटाओ सुसाध्य बले ज्ञान करि ने। बुद्धिते आमार एक जायगाय फुटो आछे, काव्य जमते पारे ना—फस् फस् करे बेरिये पड़े।

तुमि जान आमार गाछे फल केन ना फले—
येमनि फुलटि फुटे ओठे आनि चरणतले।

किन्तु आमार प्रश्नेर तो कोनो उत्तर पेलुम ना। कौतूहले मरे याच्छि। काशीते ये चलेछ, उत्साहटा किसेर जन्ये। आपातत सेइ विष्णुदूतटाके मने मने क्षमा करलुम, किन्तु भगवान भूतनाथ भवानीपतिर अनुचर-गुलोर उपर भारि सन्देह हच्छे। शुनेछि, नन्दी ओ भृङ्गी अनेक विषये आमाकेओ जेते, फिरे एसे हयतो एइ भृत्यटिके पछन्द ना हतेओ पारे।

पुरबाला। आमि काशी याब ना।

अक्षय। से की कथा। भूतभावनेर ये भृत्यगुलि एकबार मरे भूत हयेछे तारा ये द्वितीयबार मरबे।

[रसिकेर प्रवेश

पुरबाला। आज ये रसिकदार मुख भारि प्रफुल्ल देखाच्छे।

रसिक। भाइ, तोर रसिकदार मुखेर ओइ रोगटा किछुतेइ

वह काव्य लिखना; **ओ......ने**—उस काम को भी सुसाध्य नहीं समझता; **बुद्धिते......पड़े**—मेरी बुद्धि में कहीं पर छेद है, काव्य जमा नहीं हो पाता, भर्-भर् कर बाहर निकल पड़ता है।

तुमि......तले—तुम जानती हो मेरे वृक्ष में फल क्यों नहीं फलते, जैसे ही फूल खिल उठते हैं (तुम्हारे) चरणों में ले आता हूँ; **कोनो**—कोई; **पेलुम ना**—नहीं पाया; **कौतूहले......याच्छि**—कुतूहल से मरा जा रहा हूँ; **काशीते...... जन्ये**—काशी जो चली हो, (यह) उत्साह किस लिए है; **आपातत**—अभी तो; **सेइ......करलुम**—उस विष्णुदूत को मन ही मन क्षमा किया; **हच्छे**—हो रहा है; **शुनेछि**—सुना है; **ओ**—और; **अनेक......जेते**—बहुत-सी बातों में मुझे भी जीत लेंगे; **फिरे......पारे**—लौट कर शायद यह भृत्य पसन्द न भी हो।

आमि......ना—मैं काशी नहीं जाऊंगी।

से......कथा—यह कैसी बात; **हयेछे**—हुए हैं; **तारा......मरबे**—वे तो दूसरी बार मरेंगे।

भारि.....देखाच्छे—अत्यन्त प्रफुल्ल दीखता है।

घुचल ना। कथा नेइ वार्ता नेइ, प्रफुल्ल हयेइ आछे—विवाहित लोकेरा देखे मने मने राग करे।

पुरबाला। शुनले तो, विवाहित लोक। एर एकटा उपयुक्त जवाब दिये याओ।

अक्षय। आमादेर प्रफुल्लतार खबर ओ वृद्ध कोथा थेके जानबे। से एत रहस्यमय ये, ता उद्भेद करते आज पर्यन्त केउ पारले ना—से एत गभीर ये, आमराइ हातड़े खुँजे पाइ ने—हठात् सन्देह हय आछे कि ना।

पुरबाला। एइ बुझि!

राग करिया चलिया याइबार उपक्रम

अक्षय। (ताहाके फिराइया) दोहाइ तोमार, एइ लोकटिर सामने रागारागि कोरो ना—ता हले ओर आस्पर्धा आरओ बेड़े याबे। देखो दाम्पत्यतत्त्वानभिज्ञ वृद्ध, आमरा यखन राग करि तखन स्वभावत आमादेर कण्ठस्वर प्रबल हये ओठे, सेइटेइ तोमादेर कर्ण-गोचर हय; आर अनुरागे यखन आमादेर कण्ठ रुद्ध हये आसे, कानेर

ओइ......ना—यह रोग किसी भी तरह नहीं गया; **कथा......आछे**—बात नहीं चीत नहीं, फिर भी प्रफुल्ल बना ही रहता है; **विवाहित......करे**—विवाहित लोग देख कर मन ही मन क्रुद्ध होते हैं।

शुनले......लोक—सुन लिया न, विवाहित आदमी; **एर......याओ**—इसका एक उपयुक्त जवाब देते जाओ।

कोथा......जानबे—कहाँ से जानेगा; **से......ना**—वह इतना रहस्यमय है कि आज तक कोई उसका भेद नहीं खोल सका; **से......ने**—वह इतना गहरा है कि हमलोग तो टटोल कर भी खोज नहीं पाते; **सन्देह......ना**—सन्देह होता है, है भी कि नहीं।

एइ बुझि—अच्छा, ऐसी बात है; **राग......उपक्रम**—क्रुद्ध हो कर चले जाने का उपक्रम।

ताहाके फिराइया—उसे लौटा कर; **एइ......सामने**—इस आदमी के सामने; **रागारागि.....ना**—गुस्सा मत करो; **ना.....याबे**—नहीं तो उसकी स्पर्धा और बढ़ जाएगी; **आमरा......हय**—हमलोग जब क्रोध करते हैं तब स्वभावतः हमलोगों की आवाज़ तेज़ हो जाती है, बस वही तुमलोगों को कर्णगोचर होती है;

काछे मुख आनते गिये मुख वारंवार लक्ष्यभ्रष्ट हये पड़ते थाके––तखन तो खबर पाओ ना!

पुरबाला। आः, चुप करो।

अक्षय। यखन गयनार फर्द हय तखन बाड़िर सरकार थेके सेक्रा पर्यन्त सेटा कारओ अविदित थाके ना, किन्तु वसन्तनिशीथे यखन प्रेयसी––

पुरबाला। आः, थामो।

अक्षय। वसन्तनिशीथे प्रेयसी––'

पुरबाला। आः, की बकछ तार ठिक नेइ।

अक्षय। वसन्तनिशीथे यखन प्रेयसी गर्जन करे बलेन, 'आमि कालइ बापेर बाड़ि चले याब, आमार एकदण्ड एखाने थाकते इच्छे नेइ––आमार हाड़ कालि हल––आमार––'

पुरबाला। हाँगो मशाय, कबे तोमार प्रेयसी बापेर बाड़ि याब बले वसन्तनिशीथे गर्जन करेछे?

अक्षय। इतिहासेर परीक्षा? केवल घटना रचना करे निष्कृति नेइ? आबार सन तारिख सुद्ध मुखे मुखे बानिये दिते हबे? आमि कि एतबड़ो प्रतिभाशाली!

आर......ना––और जब अनुराग से हमलोगों का कण्ठ रुद्ध हो आता है, कान के पास मुख ले जाने में मुख वारम्वार लक्ष्यभ्रष्ट होता रहता है, तब तो (तुम्हें कोई) खबर नहीं होती। **चुप करो**––चुप भी रहो।

यखन......ना––जब गहने की फेहरिस्त बनती है तो वह घर के सरकार से ले कर सुनार तक किसी के भी लिए अज्ञात नहीं रहती। **थामो**––रुको।

की......नेइ––न जाने क्या बकते हो, कोई ठिकाना है।

बलेन––कहती हैं; **आमि......याब**––मैं कल ही मायके चली जाऊँगी; **आमार......नेइ**––यहाँ एक क्षण रहने की मेरी इच्छा नहीं; **आमार......हल**––मेरे तो नाकों दम आ गया।

हाँगो––क्यों जी; **मशाय**––महाशय; **कबे**––कब; **तोमार**––तुम्हारी; **बले**––कह कर; **गर्जन करेछे**––गर्जन किया है।

निष्कृति नेइ––छुटकारा नहीं; **आबार......सुद्ध**––अब सन् तारीख तक; **बानिये......हबे**––बना देना होगा; **एतबड़ो**––इतना बड़ा।

रसिक। (पुरबालार प्रति) बुझेछ भाइ, सोजा करे ओ तोमार कथा बलते पारे ना––ओर एत क्षमताइ नेइ––ताइ उल्टे बले; आदरे ना कुलोले गाल दिये आदर करते हय।

पुरबाला। आच्छा मल्लिनाथजि, तोमार आर व्याख्या करते हबे ना। मा ये शेषकाले तोमाकेइ काशी निये याबेन स्थिर करेछेन।

रसिक। ता बेश तो, एते आर भयेर कथाटा की। तीर्थे याबार तो वयसइ हयेछे। एखन तोमादेर लोलकटाक्षे ए वृद्धेर किछुइ करते पारबे ना––एखन चित्त चन्द्रचूड़ेर चरणे––

मुग्धस्निग्धविदग्धलुब्धमधुरैर्लोलैः कटाक्षैरलं
चेतः सम्प्रति चन्द्रचूडचरणध्यानामृते वर्तते।

पुरबाला। से तो खुब भालो कथा, तोमार उपरे कटाक्षेर अपव्यय करते चाइ ने, एखन चन्द्रचूडचरणे चलो––ता हले माके डाकि!

रसिक। (करजोड़े) बड़दिदि भाइ, तोमार मा आमाके संशोधनेर बिस्तर चेष्टा करेछेन, किन्तु एकटु असमये संस्कारकार्य

बुझेछ......ना––समझ गई भाई, वह तुम्हारी बात सीधी तरह नहीं बता पाता; **ओर......नेइ**––उसमें इतनी शक्ति ही नहीं; **ताइ......बले**––इसीलिए उलट कर कहता है; **आदरे......हय**––प्यार पूरा न पड़े तो गाली दे कर प्यार जताना होता है।

आच्छा––अच्छा; **तोमार......ना**––तुम्हें अब और व्याख्या नहीं करनी होगी; **मा......करेछेन**––माँ ने अन्त में स्थिर किया है कि तुम्हीं को काशी ले जाएंगी।

ता......की––तो अच्छा ही है, इसमें भला भय की क्या बात है; **तीर्थे...... हयेछे**––तीर्थ जाने की तो उम्र ही है; **एखन......ना**––अब तुमलोगों के चंचल कटाक्ष इस वृद्ध का कुछ भी नहीं कर सकेंगे।

से......कथा––यह तो बड़ी अच्छी बात है; **तोमार......ने**––तुम्हारे ऊपर अब और कटाक्ष का अपव्यय नहीं करना चाहती; **ता......डाकि**––तो फिर माँ को बुलाऊँ।

करजोड़े––हाथ जोड़ कर; **बड़दिदि भाइ**––भई बड़ी दीदी; **तोमार...... करेछेन**––तुम्हारी माँ ने मुझे सुधारने की बड़ी चेष्टा की है; **एकटु**––थोड़ा;

आरम्भ करेछेन—एखन ताँर शासने कोनो फल हबे ना। वरञ्च एखनओ नष्ट हबार वयस आछे, से वयसटा विधातार कृपाय बराबरइ थाके, लोलकटाक्षटा शेषकाल पर्यन्त खाटे, किन्तु उद्धारेर वयस आर नेइ। तिनि एखन काशी याच्छेन, किछुदिन एइ वृद्ध शिशुर बुद्धि-वृत्तिर उन्नतिसाधनेर दुराशा परित्याग करे शान्तिते थाकुन—केन तोरा ताँके कष्ट दिबि।

[जगत्तारिणीर प्रवेश

जगत्तारिणी। बाबा, ता हले आसि।

अक्षय। चलले नाकि मा? रसिकदादा ये एतक्षण दुःख करछिलेन ये तुमि—

रसिक। (व्याकुलभावे) दादार सकल कथातेइ ठाट्टा। मा, आमार कोनो दुःख नेइ—आमि केन दुःख करते याब।

अक्षय। बलछिले ना ये 'बड़ोमा एकलाइ काशी याच्छेन, आमाके सङ्गे निलेन ना'?

रसिक। हाँ, से तो ठिक कथा। मने तो लागतेइ पारे, तबे किना मा यदि नितान्तइ—

जगत्तारिणी। ना बापु, विदेशे तोमार रसिकदादाके सामलाबे के। ओँके निये पथ चलते पारब ना।

करेछेन—किया है; **एखन......ना**—अब उनके नियंत्रण का कोई फल नहीं होगा; **एखनओ......आछे**—अब भी बिगड़ जाने की उम्र है; **से......थाके**—वह उम्र विधाता की कृपा से बराबर ही रहती है; **आर नेइ**—और नहीं; **तिनि**—वे; **याच्छेन**—जा रही हैं; **शान्तिते थाकुन**—शान्ति से रहें; **केन...... दिबि**—तुम लोग उन्हें क्यों कष्ट दोगी। **ता......आसि**—तो फिर चलूं।

एतक्षण—इतनी देर; **करछिलेन**—कर रहे थे।

दादार......ठाट्टा—दादा की हर बात में दिल्लगी (रहती है); **मा...... याब**—माँ, मुझे कोई दुःख नहीं, मैं भला दुःख क्यों मनाऊँगा।

बलछिले......ये—कह रहे थे न कि; **एकलाइ**—अकेली ही; **आमाके...... ना**—मुझे साथ नहीं लिया। **मने......पारे**—मन में लग तो सकता ही है।

सामलाबे के—सँभालेगा कौन; **ओँके......ना**—उन्हें ले कर रास्ते में नहीं चल सकूंगी।

पुरबाला। केन मा, रसिकदादाके निये गेले उनि तोमाके देखते शुनते पारतेन।

जगत्तारिणी। रक्षे करो, आमाके आर देखे-शुने काज नेइ। तोमार रसिकदादार बुद्धिर परिचय ढेर पेयेछि।

रसिक। (टाके हात बुलाइते बुलाइते) ता, मा, येटुकु बुद्धि आछे तार परिचय सर्वदाइ दिच्छि, ओ तो चेपे राखबार जो नेइ—धरा पड़तेइ हबे। भाङा चाकाटाइ सबचेये खड़ खड़ करे, तिनि ये भाङा सेटा पाड़ासुद्ध खबर पाय। सेइजन्येइ बड़ोमा, चुपचाप करे थाकतेइ चाइ, किन्तु तुमि ये आबार चालातेओ छाड़ ना।

जगत्तारिणी। आमि ता हले हारानेर बाड़ि चललुम, एकेबारे तादेर सङ्गे गाड़िते उठब, एर परे आर यात्रार समय नेइ। पुरो, तोरा तो दिनक्षण मानिस ने, ठिकसमये इस्टेशने यास।

पुरबाला। मा, आमि काशी याब ना।

हठात् ताहार असम्मतिते विपन्न हइया जगत्तारिणी ताँहार जामातार मुखेर दिके चाहिलेन

अक्षय। (शाशुड़िर मनेर भाव बुझिया) से कि हय। तुमि मार

केन......पारतेन—क्यों माँ, रसिकदादा को ले जातीं तो वे तुम्हें देख-भाल सकते।

टाके......बुलाइते—गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरते हुए; **येटुकु**—जितनी भी; **दिच्छि**—दे रहा हूँ; **ओ......नेइ**—उसे तो दबा कर रखने का उपाय नहीं; **धरा......हबे**—पकड़ाई देना ही होगा; **भाङा......पाय**—टूटा हुआ पहिया ही सबसे अधिक खड़ खड़ करता है, वे टूटे हुए हैं इसका पता मुहल्ले भर को लग जाता है; **सेइजन्येइ**—इसीलिए; **बड़ोमा**—बड़ी माँ; **चुपचाप.....ना**—चुपचाप रहना चाहता हूँ लेकिन तुम चलाये बिना भी तो नहीं छोड़ती।

आमि......नेइ—तो फिर मैं हारान के घर चली, बस इकट्ठे उन लोगों के साथ गाड़ी में चढ़ूंगी, उसके बाद फिर यात्रा का समय नहीं है; **पुरो**—पुरबाला; **तोरा**—तुमलोग; **दिनक्षण**—लग्न-मुहूर्त; **मानिस ने**—मानती नहीं; **यास**—जाना।

ताँहार......चाहिलेन—अपने जामाता के मुख की ओर देखा।

शाशुड़ि—सास; **से......हय**—भला यह क्या हो सकता है; **तुमि......**

सङ्गे ना गेले ओँर असुविधे हवे। आच्छा मा, तुमि एगोओ, आमि ओके ठिक समये स्टेशने निये याब।

जगत्तारिणी निश्चिन्त हइया प्रस्थान करिलेन। रसिकदादा टाके हात बुलाइते बुलाइते विदायकालीन विमर्षता मुखे आनिबार चेष्टा करिते लागिलेन

[पुरुषवेशधारी शैलेर प्रवेश

अक्षय। के मशाय। आपनि के?

शैलबाला। आज्ञे मशाय, आपनार सहधर्मिणीर सङ्गे आमार विशेष सम्बन्ध आछे। (अक्षयेर सङ्गे शेक-ह्याण्ड) मुखुज्येमशाय, चिनते तो पारले ना?

पुरबाला। अवाक करलि! लज्जा करछे ना?

शैलबाला। दिदि, लज्जा ये स्त्रीलोकेर भूषण—पुरुषेर वेश धरते गेलेइ सेटा परित्याग करते हय। तेमनि आबार मुखुज्येमशाय यदि मेये साजेन, उनि लज्जाय मुख देखाते पारबेन ना। रसिकदादा, चुप करे रइले ये?

रसिक। आहा, शैल येन किशोर कन्दर्प। येन साक्षात् कुमार, भवानीर कोल थेके उठे एल। ओके बराबर शैल बले देखे आसछि, चोखेर अभ्यास हये गियेछिल—ओ सुन्दरी कि माझारि कि चलनसइ

हबे—तुम माँ के साथ न गईं (तो) उन्हें असुविधा होगी; **एगोओ**—आगे चलो; **आमि......याब**—मैं उसे ठीक समय पर स्टेशन ले जाऊँगा।

विमर्षता......लागिलेन—विषाद का भाव मुख पर लाने की चेष्टा करने लगे।

करलि—कर दिया; **लज्जा......ना**—लज्जा नहीं लगती।

धरते गेलेइ—धारण करते ही; **करते हय**—करना होता है; **तेमनि...... ना**—उसी प्रकार अगर मुखर्जी महाशय स्त्री वेश धारण करें तो वे लज्जा के मारे मुँह नहीं दिखा सकेंगे।

कोल......एल—गोद से उठ कर आया है; **ओके......आसछि**—उसे बराबर शैल कह कर (के रूप में) देखता आ रहा हूँ; **चोखेर......गियेछिल**—आँखें अभ्यस्त हो गईं थीं; **ओ......नि**—वह सुन्दरी है, कि बीच की या कामचलाऊ

से कथा कखनो मनेओ ओठे नि––आज ओइ वेशटि बदल करेछे बलेइ तो ओर रूपखानि धरा दिले। पुरोदिदि, लज्जार कथा की बलछिस, आमार इच्छे करछे ओके टेने निये ओर माथाय हात दिये आशीर्वाद करि।

अक्षय। (स्नेहाभिषिक्त गाम्भीर्येर सहित छद्मवेशिनीके क्षण-काल निरीक्षण करिया) सत्यि बलछि शैल, तुमि यदि आमार श्याली ना हये आमार छोटो भाइ हते ता हलेओ आमि आपत्ति करतुम ना।

शैलबाला। (ईषत् विचलित हइया) आमिओ ना मुखुज्ये-मशाय।

पुरबाला। (शैलके बुकेर काछे टानिया) एइ वेशे तुइ कुमार-सभार सभ्य हते याच्छिस?

शैलबाला। अन्य वेशे हते गेले ये व्याकरणेर दोष हय दिदि। की बल रसिकदादा।

रसिक। ता तो बटेइ, व्याकरण बाँचिये तो चलतेइ हबे। भगवान पाणिनि बोपदेव एँरा की जन्ये जन्मग्रहण करेछिलेन। किन्तु भाइ, श्रीमती शैलबालार उत्तर चापकान प्रत्यय करलेइ कि व्याकरण रक्षे हय।

यह बात कभी मन में भी नहीं आई; **ओइ......दिल**—वह वेश बदल दिया है इसीलिए तो उसका रूप पकड़ में आया; **लज्जार......करि**—लज्जा की बात क्या कहती है, मेरी इच्छा हो रही है कि उसे खींच कर उसके सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दूँ।

सत्यि बलछि—सच कह रहा हूँ; **तुमि......ना**—तुम अगर मेरी साली न हो कर मेरा छोटा भाई होतीं तो भी मैं आपत्ति न करता।

बुकेर......टानिया—हृदय के पास खींच कर; **एइ......याच्छिस**—इसी वेश में तू कुमार-सभा का सदस्य होने जा रही है।

अन्य......दिदि—अन्य वेश में होने गई तो व्याकरण का दोष जो होगा दीदी; **की बल**—क्या कहते हो।

ता......बटेइ—सो तो है ही; **बाँचिये......हबे**—बचा कर तो चलना ही होगा; **एरा......करेछिलेन**—इन लोगों ने किसलिए जन्मग्रहण किया था; **उत्तर......हय**—बाद में चपकन (रूपी) प्रत्यय लगाने से ही क्या व्याकरण की रक्षा हो जाती है।

अक्षय। नतुन मुग्धबोधे ताइ लेखे। आमि लिखेप'ड़े दिते पारि, चिरकुमार-सभार मुग्धदेर काछे शैल येमन प्रत्यय कराबे ताँरा तेमनि प्रत्यय याबेन। कुमारदेर धातु आमि जानि किना।

पुरबाला। (एकटुखानि दीर्घनिःश्वास फेलिया) तोर मुखुज्ये-मशायके आर एइ बुड़ो समवयसीटिके निये तोर खेला तुइ आरम्भ कर्—आमि मार सङ्गे काशी चललुम।

पुरबाला जिनिसपत्र गुछाइते गेल एमन समय नृपबाला ओ नीरबाला घरे प्रवेश करियाइ पलायनोद्यत हइल। नीर दरजार आड़ाल हइते आर एकबार भालो करिया ताकाइया 'मेजदिदि' वलिया छुटिया आसिल

नीरबाला। मेजदिदि, तोमाके भाइ जड़िये धरते इच्छे करछे, किन्तु ओइ चापकाने बाधछे। मने हच्छे तुमि येन कोन् रूपकथार राजपुत्र, तेपान्तर माठ पेरिये आमादेर उद्धार करते एसेछ।

नीरर समुच्च कण्ठस्वरे आश्वस्त हइया नृपओ घरे प्रवेश करिया मुग्धनेत्रे चाहिया रहिल

नीरबाला। (ताहाके टानिया लइया) अमन करे लोभीर मतो

मुग्धबोध—(बोपदेव रचित व्याकरण की प्रारंभिक पुस्तक); **ताइ लेखे**—यही लिखा है; **आमि......याबेन**—मैं लिख कर दे सकता हूँ कि चिरकुमार-सभा के मुग्ध सदस्यों से शैल जैसा प्रत्यय (विश्वास) कराएगी वे वैसा ही प्रत्यय कर लेंगे; **आमि......किना**—मैं जानता हूँ न।

एकटुखानि—थोड़ा-सा; **एइ बुड़ो**—इस बूढ़े; **निये**—ले कर; **तुइ**—तू। **जिनिसपत्र**—सामान; **गुछाइते गेल**—सँभालने गई; **एमन**—ऐसे; **ओ**—और; **हइल**—हुईं; **दरजार......आसिल**—दरवाज़े की ओट से और एक बार अच्छी तरह देख कर 'मंझली दीदी' कहती दौड़ी आई।

तोमाके......करते—तुमको भाई जकड़ लेने की इच्छा होती है; **किन्तु...... बाधछे**—लेकिन वह चपकन बाधा दे रही है; **मने......राजपुत्र**—लगता है जैसे तुम किसी दंतकथा के राजपुत्र हो; **तेपान्तर माठ**—बियाबान जंगल (बंगाल की दन्तकथाओं और ग्राम गीतों में वर्णित जनहीन विशाल मैदान); **पेरिये**—पार कर; **करते एसेछ**—करने आए हो।

हइया—हो कर; **चाहिया रहिल**—देखती रही।

ताहाके......लइया—उसको खींच कर; **अमन......केन**—इस प्रकार लोभी

ताकिये आछिस केन। या मने करछिस ता नय, ओ तोर दुष्यन्त नय––ओ आमादेर मेजदिदि।

रसिक। इयमधिकमनोज्ञा चापकानेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।

अक्षय। मूढ़े, तोरा केवल चापकानटा देखेइ मुग्ध। गिल्टिर एत आदर? ए दिके ये खाँटि सोना दाँड़िये हाहाकार करछे।

नीरबाला। आजकाल खाँटि सोनार दर ये बड़ो बेशि, आमादेर एइ गिल्टिइ भालो। की बल भाइ मेजदिदि।

शैलर कृत्रिम गोँफटा एकटु पाकाइया दिल

रसिक। (निजेके देखाइया) एइ खाँटि सोनाटि खुब सस्ताय याच्छे भाइ––एखनओ कोनो टयाँकशाले गिये कोनो महारानीर छापटि पर्यन्त पड़े नि।

नीरबाला। आच्छा बेश, सेजदिदिके दान करलुम। (रसिक-दादारहात धरिया नृपर हाते समर्पण करिल) राजि आछिस तो भाइ?

नृपबाला। ता आमि राजि आछि।

रसिकदादाके एकटा चौकिते बसाइया से ताहार माथार पाका चुल तुलिया दिते लागिल। नीर शैलर कृत्रिम गोँफे

की भाँति क्यों देख रही है; **या......नय**—जो समझ रही है वह नहीं है; **नय**—नहीं है।

गिल्टिर......करछे—गिलट का इतना दुलार, इस ओर विशुद्ध सोना खड़ा हाहाकार कर रहा है।

खाँटि—विशुद्ध; **बड़ो बेशि**—बहुत अधिक; **आमादेर......भालो**—हमलोगों का यह गिलट ही अच्छा है; **की बल**—क्या कहती हो।

निजेके देखाइया—अपनेको दिखा कर; **याच्छे**—जा रहा है; **एखनओ ......नि**—अभी किसी टकसाल में जा कर किसी महारानी की छाप तक नहीं पड़ी है।

आच्छा......करलुम—बहुत अच्छा, संझली दीदी को दान कर दिया; **हात धरिया**—हाथ पकड़ कर; **राजि......भाइ**—राज़ी तो हो भाई।

ता......आछि—सो मैं राज़ी हूँ।

एकटा......लागिल—एक चौकी पर बैठा कर वह उसके सिर के पके बालों

ता दिया पाकाइया तुलिबार चेष्टा करिते लागिल

शैलबाला। आ: की करछिस, आमार गोँफ पड़े याबे।

रसिक। काज की, ए दिके आय ना भाइ, ए गोँफ किछुतेइ पड़बे ना।

नीरबाला। आबार! फेर! सेजदिदिर हाते सँपे दिलुम की करते। आच्छा रसिकदादा, तोमार माथार दुटो-एकटा चुल काँचा आछे, किन्तु गोँफ आगागोड़ा पाकाले की करे।

रसिक। कारओ कारओ माथा पाकबार आगे मुखटा पाके।

अक्षय। ता हले आमि एकबार चिरकुमार-सभार माथाय हात बुलिये आसि।

नीरबाला। गान

जययात्राय याओ गो, ओठो ओठो जयरथे तव।
मोरा जयमाला गेँथे आशा चेये बसे रब।
आँचल बिछाये राखि पथधुला दिब ढाकि—
फिरे एले हे विजयी हृदये बरिया लब।

अक्षय। रथ प्रस्तुत, एखन की आनब बलो।

को चुनने लगी; **गोँफे**—मूँछ पर; **ता दिया**—ताव दे कर; **पाकाइया...... लागिल**—ऐंठने की चेष्टा करने लगी।

की......याबे—क्या करती है, मेरी मूँछ गिर जाएगी।

काज......याबे—जरूरत क्या है, इस ओर आओ ना भाई यह मूँछ किसी भी तरह नहीं गिरेगी।

सेज......करते—संझली दीदी के हाथ में किसलिए सौंपा है; **चुल**—बाल; **गोँफ......करे**—मूँछों को शुरू से आखिर तक (पूरा का पूरा) पकाया कैसे।

कारओ कारओ—किसी किसी का; **माथा......आगे**—सिर के बाल पकने (परिपक्व बुद्धि होने) के पहले; **मुखटा पाके**—मुख प्रवीण हो जाता है।

माथाय......आसि—सर पर हाथ फेर आऊँ।

याओ—जाओ; **ओठो**—चढ़ो; **आशा......रब**—आशा लगाए बैठी रहेंगी; **दिब ढाकि**—ढक देंगी; **फिरे एले**—लौट आने पर; **बरिया लब**—वरण कर लेंगी।

एखन......बलो—अब क्या लाऊंगा बोलो।

नीरबाला। गान

आनियो हासिर रेखा सजल आँखिर कोणे—
नव वसन्तशोभा एनो ए शून्यवने।
सोनार प्रदीपे ज्वालो, आँधार घरेर आलो,
पराओ रातेर भाले चाँदेर तिलक नव।

अक्षय। आर सब भालो, केवल तोमार फर्देर मध्ये सोनार प्रदीपटाइ आक्कारा ठेकछे। चेष्टार त्रुटि हबे ना।

नीरबाला। दिदिदेर सभाटा कोन् घरे बसबे मुखुज्येमशाय।

अक्षय। आमार बसबार घरे।

नीरबाला। ता हले से घरटा एकटु साजिये-गुजिये दिइ गे।

अक्षय। यतदिन आमि से घरटा व्यवहार करछि, एकदिनओ साजाते इच्छे हय नि बुझि?

नीरबाला। तोमार जन्ये झड़ु बेहारा आछे, तबु बुझि आश मिटल ना?

[पुरबालार प्रवेश

पुरबाला। की हच्छे तोमादेर।

नीरबाला। मुखुज्येमशायेर काछे पड़ा बले निते एसेछि दिदि।

आनियो—लाना; **कोणे**—कोने में; **एनो**—लाओ; **पराओ**—लगाओ।

आर......भालो—और तो सब ठीक है; **फर्देर मध्ये**—फेहरिस्त में; **आक्कारा ठेकछे**—महँगा लग रहा है।

दिदि......बसबे—दीदी आदि की सभा किस कमरे में बैठेगी।

आमार......घरे—मेरे बैठने के कमरे में।

ता......गे—तो फिर उस कमरे को थोड़ा सजा-सजू दूँ।

यतदिन......बुझि—जितने दिन से मैं उस कमरे का व्यवहार कर रहा हूँ, एक दिन भी (उसे) सजाने की इच्छा नहीं हुई शायद।

तोमार जन्ये—तुम्हारे लिए; **बेहारा**—बैयरा; **आछे**—है; **तबु...... ना**—तो भी लगता है (तुम्हारी) आस नहीं मिटी।

की हच्छे—क्या हो रहा है; **तोमादेर**—तुम लोगों का।

काछे—निकट; **पड़ा......दिदि**—पाठ सुनाने आई हूँ दीदी; **ता......**

ता, उनि बलछेन ओँर बाइरेर घरटा भालो करे झेड़े साजिये ना दिले उनि पड़ाबेन ना। ताइ सेजदिदिते आमाते ओँर घर साजाते याच्छि। आय भाइ।

नृपबाला। तोर इच्छे हयेछे तुइ घर साजाते या-ना—आमि याब ना।

नीरबाला। बाः आमि एका खेटे मरब, आर तुमि सुद्ध तार फल पाबे—से हबे ना।

नृपके ग्रेप्तार करिया लइया नीर चलिया गेल

पुरबाला। सब गुछिये नियेछि। एखनओ ट्रेन याबार देरि आछे बोध हय।

अक्षय। यदि मिस् करते चाओ ता हले ढेर देरि आछे।

ना—वे कह रहे हैं कि उनके बाहर वाले कमरे को अच्छी तरह झाड़ कर न सजा दूँ तो वे नहीं पढ़ाएंगे; **ताइ......याच्छि**—इसीलिए सँझली दीदी और मैं उनका कमरा सजाने जा रही हैं; **आय**—आ।

तोर......ना—तेरी इच्छा हुई है तो तू जा कर कमरा सजा न; **आमि...... ना**—मैं नहीं जाऊंगी।

बाः—वाह; **आमि......मरब**—मैं अकेली खटती मरूंगी; **आर......ना**—और उसका फल तुम भी पाओगी यह नहीं होगा।

नृपके......गेल—नृपबाला को गिरफ्तार कर नीरबाला (उसे) ले कर चली गई।

सब......नियेछि—सब सँभाल लिया है; **एखन......हय**—अब भी ट्रेन जाने में देर है शायद।

यदि......आछे—अगर छोड़ देना चाहो तो बहुत देर है।

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

चन्द्रबाबुर बाड़ि। चिरकुमार सभार घर

श्रीश ओ विपिन

श्रीश। ता, याइ बल, अक्षयबाबु यखन आमादेर सभाय छिलेन तखन आमादेर चिरकुमार सभा जमेछिल भालो। आमादेर सभापति चन्द्रबाबु किछु कड़ा।

विपिन। तिनि थाकते रस किछु बेशि जमे उठेछिल—चिर-कौमार्यव्रतेर पक्षे रसाधिक्यटा भालो नय, आमार तो एइ मत।

श्रीश। आमार मत ठिक उल्टो। आमादेर व्रत कठिन बलेइ रसेर दरकार बेशि। रुक्ष माटिते फसल फलाते गेले कि जलसिञ्चनेर प्रयोजन हय ना। चिर जीवन विवाह करब ना एइ प्रतिज्ञाइ यथेष्ट, ताइ बलेइ कि सब दिक थेकेइ शुकिये मरते हबे।

विपिन। याइ बल, हठात् कुमार सभा छेड़े दिये विवाह करे अक्षयबाबु आमादेर सभाटाके येन आल्गा करे दिये गेछेन। भितरे भितरे आमादेर सकलेरइ प्रतिज्ञार जोर कमे गेछे।

श्रीश। किछुमात्र ना। आमार निजेर कथा बलते पारि,

ता......बल—जो भी कहो; **यखन......छिलेन**—जब हमलोगों की सभा में थे; **जमेछिल भालो**—जमी खूब थी; **किछु**—कुछ।

तिनि......उठेछिल—उनके रहते रस कुछ अधिक जम उठा था; **आमार...... मत**—मेरा तो यही मत है।

ठिक—ठीक; **आमादेर......बेशि**—हमलोगों का व्रत कठिन है इसीलिए रस की आवश्यकता अधिक है; **माटिते**—मिट्टी में; **फलाते गेले**—फलाने जाने पर; **हय ना**—नहीं होता; **ताइ......हबे**—इसीलिए क्या सब ओर से सूख कर मरना होगा।

छेड़े दिये—छोड़ कर; **येन......गेछेन**—जैसे शिथिल कर गए हैं; **भितरे ......गेछे**—भीतर-भीतर हम सभी की प्रतिज्ञा का बल कम हो गया है।

बलते पारि—कह सकता हूँ;

आमार प्रतिज्ञार बल आरओ बेड़ेछे। ये-व्रत सकले अनायासेइ रक्षा करते पारे, तार उपरे श्रद्धा थाके ना।

विपिन। एकटा सुखबर दिइ शोनो।

श्रीश। तोमार विवाहेर सम्बन्ध हयेछे नाकि।

विपिन। हयेछे बइ कि—तोमार दौहित्रीर सङ्गे।—ठाट्टा राखो, पूर्ण काल कुमार सभार सभ्य हयेछे।

श्रीश। पूर्ण ! बल की। ता हले तो शिला जले भासल।

विपिन। शिला आपनि भासे ना हे। ताके आर-किछुते अकूले भासियेछे।

श्रीश। ओहे विपिन, पूर्ण ये खामका चिरकुमार सभार सभ्य हल तार तो कोनो कारण खुंजे पाओया याच्छे ना। ए सभाय कैशिकाकर्षण, माध्याकर्षण, चुम्बकाकर्षण प्रभृति कोनो आकर्षणेर बालाइ नेइ।

विपिन। के बलले नेइ। पर्दार आड़ाले आछे।

श्रीश। आर-एकटु खोलसा करे बलो। तोमार बुद्धिर दौड़टा की रकम शुनि।

आरओ बेड़ेछे—और भी बढ़ गया है; **अनायासेइ**—अनायास ही; **थाके ना**—नहीं रहती।

एकटा......शोनो—एक सुसंवाद दूँ सुनो। **हयेछे नाकि**—हुआ है क्या। **हयेछे बइकि**—क्यों नहीं; **ठाट्टा राखो**—मज़ाक छोड़ो; **सभ्य**—सदस्य।

बल की—कहते क्या हो; **ता......भासल**—तब तो शिला (पत्थर) जल पर तैर गई।

शिला......हे—शिला अपने आप नहीं तैरती; **ताके......भासियेछे**—उसे और कुछ ने अकूल में बहा दिया है।

खामका—ख्वाहमख्वाह; **सभ्य हल**—सदस्य हुआ; **तार.....ना**—उसका तो कोई कारण ही ढूँढ़े नहीं मिलता; **कैशिकाकर्षण**—केश (राशि) का आकर्षण; **माध्याकर्षण**—गुरुत्वाकर्षण; **बालाइ नेइ**—बला नहीं है।

के......नेइ—कौन कहता है नहीं है; **पर्दार......आछे**—पर्दे की ओट में है।

आर......बलो—और ज़रा खुलासा बताओ; **तोमार......शुनि**—तुम्हारी बुद्धि की दौड़ कैसी है सुनूँ।

विपिन। पूर्ण ए सभार सभ्य हबार पर थेके आमि लक्ष करे देखेछि ये तार दुटि चक्षु सर्वदा ओइ दरजार दिकेर पर्दाटार रहस्य भेद करबार जन्यइ निविष्ट। कारण खुँजते गिये देखि पर्दार नीचेर फाँक दिये दुखानि चरण देखा याच्छे। देखेइ बोझा गेल सेइ चरणेर दिके यार मन विचरण करे कुमार-व्रत रक्षा करते गिये से विव्रत हबे।

श्रीश। सेइ चरणयुगलेर चरम तत्त्वटा धरते पारले? याके एकटु करे जानले मन उतला हय, अनेक समय ताके सम्पूर्ण जानले मन शान्ति पाय। चरण दुटि कार शुनि।

विपिन। तबे इतिहासटा बलि शोनो। जानइ तो, पूर्ण सन्ध्यावेलाय चन्द्रबाबुर काछे पड़ार नोट निते याय। सेदिन आमि आर पूर्ण एक सङ्गेइ एकटु सकाल-सकाल चन्द्रबाबुर बासाय एसेछिलेम। तिनि एकटा मीटिं थेके सबे एसेछेन। बेहारा केरोसिन ज्वेले दिये गेछे—पूर्ण बइयेर पात उल्टाच्छे, एमन समय—की आर बलब भाइ, से येन बङ्किमबाबुर कोन् एक अलिखित नभेलेर भितर थेके बेरिये एल एक कन्ये, पिठे दुलछे वेणी—

ए......थेके—इस सभा का सदस्य होने के बाद से; **आमि......देखेछि**—मैंने लक्ष्य किया है; **ये**—कि; **तार**—उसकी; **दुटि**—दो; **ओइ......दिकेर**—उस दरवाजे की ओर के; **पर्दाटार**—पर्दे का; **करबार जन्यइ**—करने में ही; **निविष्ट**—रत; **दुखानि**—दो; **देखा याच्छे**—दिखलाई पड़ते हैं; **देखेइ...... हबे**—देखते ही समझ में आ गया कि उन चरणों की ओर जिसका मन विचरण करता है वह कुमार-व्रत की रक्षा करने से विपन्न होगा।

तत्त्वटा......पारले—तत्त्व पकड़ पाए; **याके......हय**—जिसे थोड़ा जानने पर मन उतावला हो जाता है; **ताके**—उसे; **कार**—किसके।

जानइ तो—जानते ही हो; **पड़ार**—पढ़ने का; **निते याय**—लेने जाता है; **सेदिन**—उस दिन; **एकटु......सकाल**—कुछ जल्दी; **बासाय**—वासस्थान में; **एसेछिलेम**—आए थे; **तिनि**—वे; **मीटिं**—(इं०) मीटिंग; **थेके**—से; **सबे एसेछेन**—आए ही थे; **ज्वेले......गेछे**—जला गया था; **बइयेर......उल्टाच्छे**—किताब के पन्ने पलट रहा था; **की......भाई**—और क्या कहूँ भाई; **नभेलेर...... कन्ये**—नावेल के भीतर से एक कन्या निकल आई; **पिठे**—पीठ पर; **दुलछे**—झूल रही है।

श्रीश। बल की, बल की विपिन।

विपिन। शोनोइ ना। एक हाते थालाय करे चन्द्रबाबुर जन्ये जलखाबार, आर-एक हाते जलेर ग्लास निये हठात् घरेर मध्ये एसे उपस्थित। आमादेर देखेइ तो कुण्ठित, सचकित, लज्जाय मुख रक्तिमवर्ण! हात जोड़ा, माथाय कापड़ देबार जो नेइ। ताड़ाताड़ि टेबिलेर उपर खाबार रेखेइ छुट। पूर्णर मुख देखेइ बोझा गेल, तार मनटा दोदुल्यमान वेणीर पिछन पिछन छुटेछे। ब्राह्म बटे किन्तु तेत्रिश कोटिर सङ्गे सङ्गे लज्जाके विसर्जन देय नि एवं सत्य बलछि श्रीकेओ रक्षा करेछे।

श्रीश। बल की विपिन, देखते भालो बुझि।

विपिन। दिव्यि देखते। हठात् येन विद्युतेर मतो एसे प'ड़े पड़ाशुनोय वज्राघात करे गेल।

श्रीश। आहा, कइ, आमि तो एकदिनओ देखि नि। मेयेटि के हे।

विपिन। आमादेर सभापतिर भाग्नी, नाम निर्मला।

श्रीश। भाग्नी? सर्वनाश! एइखानेइ थाकेन?

विपिन। सन्देहमात्र नेइ। सभापतिमहाशय निजे नीरोग, किन्तु रोगेर छोँयाच निये फेरेन।

शोनोइ ना—सुन ही लो न; **थालाय करे**—थाली में; **जलखाबार**—जलपान; **एसे**—आ कर; **आमादेर......तो**—हमलोगों को देखते ही; **कापड़**—साड़ी; **देबार......नेइ**—देने का उपाय नहीं; **ताड़ाताड़ि**—झटपट; **खाबार......छुट**—नाश्ता रख कर भाग गई; **दोदुल्यमान**—झूलने वाली; **पिछन**—पीछे; **छुटेछे**—दौड़ पड़ा है; **बटे**—निश्चय ही; **श्रीकेओ**—श्री की भी।

देखते......बुझि—देखने में अच्छी है शायद।

दिव्यि देखते—देखने में अपूर्व है; **हठात्......गेल**—अकस्मात् जैसे विद्युत् की नाईं आ कर पढ़ने-लिखने पर वज्राघात कर गई।

कइ—कहाँ; **आमि......नि**—मैंने तो एक भी दिन नहीं देखा; **मेयेटि**—लड़की; **के**—कौन। **भाग्नी**—भानजी। **एइखानेइ थाकेन**—यहीं रहती हैं।

नेइ—नहीं है; **रोगेर......फेरेन**—रोग की छूत लिये फिरते हैं।

श्रीश। किन्तु भागनेजामाइ बले बालाइ नेइ बुझि?

विपिन। से बालाइटि अपरिणीत आकारे चिरकुमार-सभाय ढुके पड़ेछे। पूर्ण परिणत आकारे यखन बेरिये पड़बे तखन प्रजापति कुमार-सभार गुटि विदीर्ण करे देबेन।

श्रीश। तिनि तबे कुमारी?

विपिन। कुमारी बइकि। कुमार-सभार महामारी। एइ घटनार ठिक परेइ पूर्ण हठात् आमादेर कुमार-सभाय नाम लिखियेछे।

श्रीश। पूजारी सेजे ठाकुर चुरि करबार मतलब। आमाकेओ तो व्यापारटा पर्यवेक्षण करते हबे।

विपिन। नारी-तत्त्वेर गवेषणा स्वास्थ्यकर ना हते पारे।

श्रीश। तोमार स्वास्थ्येर यदि व्याघात ना हये थाके ता हले आमारओ—

विपिन। आरम्भेते रोगेर प्रवेश धरा पड़े ना। किन्तु कुमारेर मार यखन भितर थेके फुटे उठबे तखन अश्विनीकुमारेरओ साध्य नेइ रक्षा करे। गोड़ाय सावधान हओया भालो।

[एकटि प्रौढ़ व्यक्तिर प्रवेश

विपिन। की मशाय, आपनि के।

भागनेजामाइ—भानजी का पति; **जामाइ**—दामाद; **बलाइ......बुझि**—बला नहीं है शायद।

ढुके पड़ेछे—घुस पड़ी है; **यखन......पड़बे**—जब निकल पड़ेगी; **तखन**—तब; **प्रजापति**—ब्रह्मा, तितली; **गुटि**—कीटकोश (वह कोश जिसे उचित समय पर तोड़ कर कीट रूप में स्थित शिशु-तितली को तितलियाँ बाहर निकालती हैं)।

तिनि......कुमारी—तो वे कुमारी हैं।

एइ......लिखियेछे—इस घटना के ठीक बाद ही अकस्मात् पूर्ण ने हमलोगों की कुमारसभा में नाम लिखाया है।

पूजारी......मतलब—पुजारी का वेश धारण कर मूर्ति को चुराने का उद्देश्य है; **आमाकेओ**—मुझे भी। **ना......पारे**—नहीं हो सकता।

व्याघात......आमारओ—विघ्न न हो तो मेरे भी।

साध्य नेइ—शक्ति नहीं है; **गोड़ाय......भालो**—प्रारंभ में ही सावधान होना ठीक है।

प्रौढ़ व्यक्ति। आज्ञे, आमार नाम श्रीवनमाली भट्टाचार्य, ठाकुरेर नाम ৺रामकमल न्यायचुञ्चु, निवास—

श्रीश। आर अधिक आमादेर औत्सुक्य नेइ। एखन की काजे एसेछेन सेइटे—

वनमाली। काज किछुइ नय। आपनारा भद्रलोक, आपनादेर सङ्गे आलाप-परिचय—

श्रीश। काज आपनार ना थाके आमादेर आछे। एखन, अन्य कोनो भद्रलोकेर सङ्गे यदि आलाप-परिचय करते यान ता हले आमादेर एकटु—

वनमाली। तबे काजेर कथाटा सेरे निइ।

श्रीश। सेइ भालो।

वनमाली। कुमारटुलिर नीलमाधव चौधुरि मशायेर दुटि परमासुन्दरी कन्या आछे—ताँदेर विवाहयोग्य वयस हयेछे—

श्रीश। हयेछे तो हयेछे, आमादेर सङ्गे तार सम्बन्धटा की।

वनमाली। सम्बन्ध तो आपनारा एकटु मनोयोग करलेइ हते पारे। से आर शक्त की। आमि समस्तइ ठिक करे देब।

की......के—क्या महाशय, आप कौन हैं।

आज्ञे—जी; **ठाकुरेर नाम**—पिता का नाम; ৺—स्वर्गीय श्री।

एखन......सेइटे—अभी किस काम से आए हैं वही।

काज......नय—काम कुछ भी नहीं।

काज......आछे—आपको काम न सही, हमलोगों को तो है; **अन्य कोनो**—अन्य किसी; **यान**—जायँ; **ता......एकटु**—तो हमलोगों का थोड़ा।

तबे......निइ—तो फिर काम की बात ही पूरी कर लूँ।

सेइ भालो—वही अच्छा।

कुमारटुलिर—कुमारटुली के; **मशायेर**—महाशय की; **दुटि**—दो; **ताँदेर**—उनका; **हयेछे**—हो गई है।

हयेछे......की—हो गई है तो हुआ करे, हमलोगों से उसका क्या संबंध।

सम्बन्ध......पारे—सम्बन्ध तो आपलोगों के थोड़ा-सा ध्यान देने से ही हो सकता है; **से......की**—उसमें क्या कठिनाई है; **आमि......देब**—मैं सब ठीक कर दूंगा।

विपिन। आपनार एत दया अपात्रे अपव्यय करछेन।

वनमाली। अपात्र! विलक्षण! आपनादेर मतो सत्पात्र पाब कोथाय? आपनादेर विनयगुणे आरओ मुग्ध हलेम।

श्रीश। एइ मुग्धभाव यदि राखते चान ता हले एइवेला सरे पड़ुन। विनयगुणे अधिक टान सय ना।

वनमाली। कन्यार बाप यथेष्ट टाका दिते राजि आछेन।

श्रीश। शहरे भिक्षुकेर तो अभाव नेइ। ओहे विपिन, तोमार आमोद बोध हच्छे, किन्तु ए-रकम सदालाप आमार भालो लागे ना।

विपिन। पालाइ कोथाय। भगवान एँकेओ ये लम्बा एकजोड़ा पा दियेछेन।

श्रीश। यदि पिछु धरेन ता हले भगवानेर सेइ दान मानुषेर हाते पड़े खोयाते हबे।

वनमाली। आमिइ याइ।

[प्रस्थान

[चन्द्रमाधवबाबुर प्रवेश

चन्द्रबाबु। पूर्ण।

श्रीश। आज्ञे, आमि श्रीश।

आपनार......करछेन—अपनी इतनी दया अपात्र पर अपव्यय कर रहे हैं।

आपनादेर......कोथाय—आप जैसे सत्पात्र पाऊंगा कहाँ; **आरओ**—और भी; **हलेम**—हुआ।

राखते चान—बनाए रखना चाहते हों; **ता......पड़न**—तो अब (यहाँ से) खिसक जायँ; **विनयगुणे......ना**—विनय का गुण (विनय रूपी रस्सी) अधिक आकर्षण (खिचाव) सहन नहीं करता।

टाका......आछेन—रुपया देने को तैयार हैं।

तोमार......हच्छे—तुम्हें मजा आ रहा है; **ए-रकम**—ऐसा।

पालाइ कोथाय—भाग कर जाऊँ भी कहाँ; **एँकेओ**—इनको भी; **पा**—पैर; **दियेछेन**—दिए हैं।

पिछु धरेन—पीछे लगें; **सेइ**—वह; **हाते......हबे**—हाथों में पड़ कर गँवाना होगा। **आमिइ याइ**—मैं ही चलूँ।

चन्द्रबाबु। आमादेर एइ सभार सभ्यसंख्या अल्प हओयाते कारओ हताश्वास हबार कोनो कारण नेइ—

श्रीश। हताश्वास? सेइ तो आमादेर सभार गौरव। ए सभार महत् आदर्श एवं कठिन विधान कि सर्वसाधारणेर उपयुक्त। आमादेर सभा अल्प लोकेर सभा।

चन्द्रबाबु। (कार्यविवरणेर खाताटा चोखेर काछे तुलिया) किन्तु आमादेर आदर्श उन्नत एवं विधान कठिन बलेइ आमादेर विनय रक्षा करा कर्तव्य; सर्वदाइ मने राखा उचित आमरा आमादेर संकल्प साधनेर योग्य ना हतेओ पारि। भेबे देखो पूर्वे आमादेर मध्ये एमन अनेक सभ्य छिलेन याँरा हयतो आमादेर चेये सर्वांशे महत्तर छिलेन, किन्तु ताँराओ निजेर सुख एवं संसारेर प्रबल आकर्षणे एके एके लक्ष्यभ्रष्ट हयेछेन। आमादेर कय जनेर पथेओ ये प्रलोभन कोथाय अपेक्षा करछे ता केउ बलते पारे ना। सेइजन्य आमरा दम्भ परित्याग करब, एवं कोनो रकम शपथेओ बद्ध हते चाइ ने। आमादेर मत एइ ये, कोनो काले महत् चेष्टाके मने स्थान ना देओयार चेये चेष्टा करे अकृतकार्य हओया भालो।

पाशेर घरे ईषत् मुक्त दरजार अन्तराले एकटि श्रोत्री एइ कथाय ये एकटुखानि विचलित हइया उठिल, ताहार

हओयाते—होने से; **कारओ**—किसी को भी; **हताश्वास**—हताश; **हबार......नेइ**—होने का कोई कारण नहीं।

अल्प लोकेर—अल्प लोगों की।

ना......पारि—नहीं भी हो सकते हैं; **भेबे**—सोच कर; **छिलेन**—थे; **याँरा......छिलेन**—जो कदाचित् हमारी अपेक्षा सब तरह से महत्तर थे; **ताँराओ**—वे भी; **हयेछेन**—हुए हैं; **आमादेर......ना**—हम कुछ लोगों के रास्ते में भी प्रलोभन न जाने कहाँ प्रतीक्षा कर रहा हो यह कोई बता नहीं सकता; **सेइजन्य**—इसीलिए; **आमरा**—हम; **करब**—करेंगे; **कोनो रकम......ने**—किसी प्रकार की शपथ में भी बद्ध होना नहीं चाहते; **आमादेर......ये**—हमलोगों का मत यह है कि; **कोनो......भालो**—महान् चेष्टा को कभी भी मन में स्थान न देने की अपेक्षा प्रयत्न करके असफल होना अच्छा है।

पाशेर घरे—बगल के कमरे में; **दरजार**—दरवाजे के; **श्रोत्री**—सुनने

अञ्चलबद्ध चाबिर गोछाय दुइ एकटा चाबि ये एकटु ठुन शब्द करिल ताहा पूर्ण छाड़ा आर केह लक्ष्य करिते पारिल ना

चन्द्रबाबु। आमादेर सभाके अनेकेइ परिहास करेन। अनेकेइ बलेन तोमरा देशेर काज करबार जन्य कौमार्यव्रत ग्रहण करछ, किन्तु सकलेइ यदि एइ महत् प्रतिज्ञाय आबद्ध हय ता हले पञ्चाश वत्सर परे देशे एमन मानुष के थाकबे यार जन्ये कोनो काज करा कारओ दरकार हबे। आमि प्रायइ नम्र निरुत्तरे एइ-सकल परिहास वहन करि; किन्तु एर कि कोनो उत्तर नेइ।

तिनि ताँहार तिनटिमात्र सभ्येर दिके चाहिलेन

पूर्ण। (नेपथ्यवासिनीके स्मरण करिया सोत्साहे) आछे बइकि। सकल देशेइ एकदल मानुष आछे यारा संसारी हबार जन्ये जन्मग्रहण करे नि, तादेर संख्या अल्प। सेइ कटिके आकर्षण करे एक उद्देश्य-बन्धने बाँधबार जन्ये आमादेर एइ सभा—समस्त जगतेर लोकके कौमार्यव्रते दीक्षित करबार जन्ये नय। आमादेर एइ जाल अनेक लोकके धरबे एवं अधिकांशकेइ परित्याग करबे, अवशेषे दीर्घकाल परीक्षार पर दुटिचारटि लोक थेके याबे। यदि केउ जिज्ञासा करे, तोमराइ कि सेइ दुटिचारटि लोक तबे स्पर्धापूर्वक के निश्चयरूपे बलते पारे। हाँ, आमरा जाले आकृष्ट हयेछि एइ पर्यन्त, किन्तु परीक्षाय शेष पर्यन्त टिँकते पारब कि ना ता अन्तर्यामीइ जानेन। किन्तु आमरा

वाली; **एइ कथाय**—इस बात से; **एकटुखानि**—थोड़ा; **हइया उठिल**—हो उठी; **चाबिर गोछाय**—चाबी के गुच्छे में; **करिल**—किया; **ताहा**—उसे; **छाड़ा**—छोड़ कर, सिवा; **आर......ना**—और कोई लक्ष्य नहीं कर सका।

अनेकेइ बलेन—बहुत-से लोग कहते हैं; **तोमरा**—तुमलोग; **करबार जन्य**—करने के लिए; **करछ**—कर रहे हो; **एमन......हबे**—ऐसा कौन मनुष्य रहेगा जिसके लिए किसी को कोई काम करने की जरूरत होगी; **प्रायइ**—प्रायः; **किन्तु......नेइ**—किन्तु इसका क्या कोई उत्तर नहीं है।

तिनि......चाहिलेन—उन्होंने अपने तीनों सदस्यों की ओर देखा।

हबार जन्ये—होने के लिए; **तादेर**—उनकी; **सेइ कटिके**—उन्हीं कुछ को; **थेके याबे**—रह जाएंगे; **यदि......करे**—यदि कोई पूछे; **तोमराइ कि**—तुम्हीं हो क्या; **बलते पारे**—कह सकता है; **हयेछि**—हुए हैं; **टिँकते**......

टिँकते पारि वा ना पारि, आमरा एके एके स्खलित हइ वा ना हइ, ताइ बले आमादेर एइ सभाके परिहास करबार अधिकार कारओ नेइ। केवल यदि आमादेर सभापतिमशाय एकलामात्र थाकेन, तबे आमादेर एइ परित्यक्त सभाक्षेत्र सेइ एक तपस्वीर तपःप्रभावे पवित्र उज्ज्वल हये थाकबे एवं ताँर चिरजीवनेर तपस्यार फल देशेर पक्षे कखनोइ व्यर्थ हबे ना।

कुण्ठित सभापति कार्यविवरणेर खाताखानि पुनर्वार ताँहार चोखेर अत्यन्त काछे धरिया अन्यमनस्कभावे की देखिते लागिलेन। किन्तु पूर्णर एइ वक्तृता यथास्थाने यथावेगे गिया पौँछिल। चन्द्रमाधवबाबुर एकाकी तपस्यार कथाय निर्मलार चक्षु छल छल करिया आसिल एवं विचलित बालिकार चाबिर गोछाय झनक शब्द उत्कर्ण पूर्णके पुरस्कृत करिल

विपिन। आमरा ए सभार योग्य कि अयोग्य, कालेइ तार परिचय हबे, किन्तु काज कराओ यदि आमादेर उद्देश्य हय तबे सेटा कोनो एक समये शुरु करा उचित। आमार प्रश्न एइ—की करते हबे।

चन्द्रबाबु। (उत्साहित हइया) एइ प्रश्नेर जन्य आमरा एत-दिन अपेक्षा करे छिलाम, की करते हबे। एइ प्रश्न येन आमादेर प्रत्येकके दंशन करे अधीर करे तोले, की करते हबे। बन्धुगण, काजइ एकमात्र ऐक्येर बन्धन। एकसङ्गे यारा काज करे ताराइ एक। एइ

जानेन—टिक सकेंगे या नहीं, यह तो अन्तर्यामी ही जानते हैं; **हइ......हइ**—हों या न हों; **ताइ बले**—इसी कारण; **कारओ नेइ**—किसी का भी नहीं है; **थाकेन**—रहें; **हये**—हो कर; **थाकबे**—रहेगा; **ताँर**—उनके; **कखनोइ**—कभी भी।

की......लागिलेन—जाने क्या देखने लगे; **गिया पौँछिल**—जा पहुँचा;

कालेइ......हबे—समय पर ही उसका परिचय मिलेगा; **कराओ**—करना भी; **हय**—हो; **तबे......समय**—तब उसे किसी एक समय; **एइ**—यह है; **की......हबे**—क्या करना होगा (हमारा क्या कर्तव्य है)।

एइ......छिलाम—इसी प्रश्न की हमलोग इतने दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे; **येन**—जिसमें; **काजइ**—कार्य ही; **ऐक्येर**—एकता का; **एक......एक**—

सभाय आमरा यतक्षण सकले मिले एकटा काजे नियुक्त ना हब ततक्षण आमरा यथार्थ एक हते पारब ना। अतएव विपिनबाबु आज एइ ये प्रश्न करछेन—की करते हबे—एइ प्रश्नके निबते देओया हबे ना। सभ्यमहाशयगण, आपनारा उत्तर करुन की करते हबे।

श्रीश। (अस्थिर हइया) आमाके यदि जिज्ञासा करेन की करते हबे, आमि बलि आमादेर सकलके संन्यासी हये भारतवर्षेर देशे देशे ग्रामे ग्रामे देशहितव्रत निये बेड़ाते हबे, आमादेर दलके पुष्ट करे तुलते हबे, आमादेर सभाटिके सूक्ष्म सूत्र स्वरूप करे समस्त भारतवर्षके गेँथे फेलते हबे।

विपिन। (हासिया) से ढेर समय आछे, या कालइ शुरु करा येते पारे एमन एकटा किछु काज बलो। 'मारि तो गण्डार, लुठि तो भाण्डार' यदि पण करे बस तबे गण्डारओ बाँचबे, भाण्डारओ बाँचबे, तुमिओ येमन आरामे आछ तेमनि आरामे थाकबे। आमि प्रस्ताव करि, आमरा प्रत्येके दुटि करे विदेशी छात्र पालन करब, तादेर पड़ाशुनो एवं शरीरमनेर समस्त चर्चार भार आमादेर उपर थाकबे।

जो एक साथ काम करते हैं वही एक हैं; **एइ.....ना**—इस सभा में जबतक हम सब मिल कर किसी काम में न जुटेंगे तबतक हमलोग वास्तव में एक नहीं हो सकेंगे; **करछेन**—कर रहे हैं; **एइ......ना**—इस प्रश्न को बुझने नहीं देना होगा; **आपनारा......हबे**—आपलोग उत्तर दें, क्या करना होगा।

आमाके......करेन—मुझसे यदि पूछें; **आमि बलि**—मैं कहता हूँ; **निये**—ले कर; **बेड़ाते हबे**—घूमना होगा; **आमादेर......हबे**—अपने दल को मजबूत बनाना होगा; **गेँथे......हबे**—गूँथ देना होगा।

से......आछे—उसके लिए बहुत समय है; **या......बलो**—जो कल ही शुरू किया जा सके ऐसा कोई काम बतलाओ; **मारि......भाण्डार**—मारूँ तो गैंड़े को, लूटूँ तो भाण्डार को (अर्थात् हाथ लगाएंगे तो बड़े कामों में, नहीं तो नहीं); **यदि......बाँचबे**—अगर प्रतिज्ञा कर बैठो तो गैंड़ा भी बचेगा और भाण्डार भी बचेगा (अर्थात् तुमसे कुछ होना जाना नहीं); **तुमिओ......थाकबे**—तुम भी जैसे आराम से हो वैसे ही आराम से रहोगे; **तादेर पड़ाशुनो**—उनकी पढ़ाई-लिखाई; **आमादेर......थाकबे**—हमलोगों के ऊपर रहेगा।

श्रीश। एइ तोमार काज! एर जन्यइ आमरा संन्यासधर्म ग्रहण करेछि? शेषकाले छेले मानुष करते हबे, ता हले निजेर छेले कि अपराध करेछे।

विपिन। (विरक्त हइया) ता यदि बल ता हले संन्यासीर तो कर्मइ नेइ; कर्मेर मध्ये भिक्षे आर भ्रमण आर भण्डामि।

श्रीश। (रागिया) आमि देखछि आमादेर मध्ये केउ केउ आछेन ए सभार महत् उद्देश्येर प्रति याँदेर श्रद्धामात्र नेइ, ताँरा यत शीघ्र ए सभा परित्याग करे सन्तानपालने प्रवृत्त हन ततइ आमादेर मङ्गल।

विपिन। (आरक्तवर्ण हइया) निजेर सम्बन्धे किछु बलते चाइ ने, किन्तु ए सभाय एमन केउ केउ आछेन याँरा संन्यास ग्रहणेर कठोरता एवं सन्तानपालनेर त्यागस्वीकार दुयेरइ अयोग्य, ताँदेर—

चन्द्रबाबु। (चोखेर काछहइते कार्यविवरणेर खाता नामाइया) उत्थापित प्रस्ताव सम्बन्धे पूर्णबाबुर अभिप्राय जानते पारले आमार मन्तव्य प्रकाश करबार अवसर पाइ।

पूर्ण। अद्य विशेषरूपे सभार ऐक्य विधानेर जन्य एकटा काज अवलम्बन करबार प्रस्ताव करा हयेछे। किन्तु काजेर प्रस्तावे ऐक्येर

एइ—यही; **एर जन्यइ**—इसी के लिए; **शेषकाले......करेछे**—अन्त में (यदि) बच्चे को (पाल-पोस कर) आदमी बनाना होगा, तो फिर अपने बच्चों ने क्या अपराध किया है।

विरक्त हइया—खीझ कर; **ता......नेइ**—अगर यह कहो तब तो संन्यासी का कोई कर्म ही नहीं है; **कर्मेर......भण्डामि**—कर्म में केवल भिक्षा मांगना, भ्रमण करना और पाखण्ड हैं।

रागिया—क्रुद्ध हो कर; **केउ.....आछेन**—कोई कोई हैं; **याँदेर**—जिनको; **ताँरा**–वे; **यत**–जितना; **हन**–हों; **ततइ**–उतना ही; **आमादेर**–हमलोगों का।

हइया—हो कर; **किछु......ने**—कुछ कहना नहीं चाहता; **दुयेरइ**—दोनों के ही।

चोखेर......हइते—आँखों के पास से; **नामाइया**—नीचे कर; **आमार ......पाइ**—अपना मन्तव्य प्रकट करने का अवसर पाऊँ।

करा हयेछे—किया गया है; **से......नेइ**—उसे अब किसी को आँखों में

लक्षण की रकम परिस्फुट हये उठेछे से आर काउके चोखे आङ्ुल दिये देखाबार दरकार नेइ। इतिमध्ये आमि यदि आबार एकटा तृतीय मत प्रकाश करे बसि ता हले विरोधानले तृतीय आहुति दान करा हबे—अतएव आमार प्रस्ताव एइ ये, सभापतिमशाय आमादेर काज निर्देश करे देबेन एवं आमरा ताइ शिरोधार्य करे निये बिना विचारे पालन करे याब, कार्यसाधन एवं ऐक्यसाधनेर एइ एकमात्र उपाय आछे।

पाशेर घरे एक व्यक्ति आबार एकबार नड़िया चड़िया बसिल एवं ताहार चाबि झन् करिया उठिल

चन्द्रबाबु। आमादेर प्रथम कर्तव्य भारतवर्षेर दारिद्र्यमोचन, एवं तार आशु उपाय वाणिज्य। आमरा कयजने बड़ो वाणिज्य चालाते पारि ने, किन्तु तार सूत्रपात करते पारि। मने करो आमरा सकलेइ यदि दियाशलाई सम्बन्धे परीक्षा आरम्भ करि। एमन यदि एकटा काठि बेर करते पारि या सहजे ज्वले, शीघ्र नेबे ना एवं देशेर सर्वत्र प्रचुर परिमाणे पाओया याय, ता हले देशे सस्ता देशालाइ निर्माणेर कोनो बाधा थाके ना। आमि बलछि शुधु ओ-जिनिसटा प्रस्तुत करार प्रणाली जानलेइ तो हबे ना। आमादेर देशे यत रकम काठ मेले तार मध्ये कोन् काठटा सब चेये दाह्य तार सन्धान करा चाइ।

उंगली डाल कर दिखलाने की ज़रूरत नहीं; **इतिमध्ये**—इसी बीच; **करे बसि**—कर बैठूँ; **करे देबेन**—कर देंगे।

पाशेर घरे—बगल के कमरे में; **आबार**—फिर; **नड़िया......बसिल**—हिल डुल कर बैठा; **ताहार......उठिल**—उसकी चाबी झन्न कर उठी।

आमरा कयजने—हम कुछ लोग; **चालाते......ने**—नहीं चला सकते; **करते पारि**—कर सकते हैं; **काठि......ज्वले**—तीली निकाल (खोज) सकें जो सहज ही जले; **नेबे ना**—बुझे नहीं; **देशालाइ**—दियासलाई; **कोनो**—कोई; **थाके ना**—नहीं रहेगी; **आमि......ना**—मैं कहता हूँ, सिर्फ उस चीज़ को तैयार करने की प्रणाली जानने से तो होगा नहीं; **यत......चाइ**—हमारे देश में जितने प्रकार की लकड़ी मिलती है उसमें कौन-सी लकड़ी सबसे अधिक जलने वाली है उसकी खोज करनी चाहिए।

विपिन। दाहन-तत्त्व सम्बन्धे पूर्णबाबुर किछु अभिज्ञता आछे बले मने हय।

चन्द्रबाबु। ताइ ना कि। की पूर्ण, तुमि कि दाह्य-पदार्थेर परीक्षा करेछ नाकि।

पूर्ण। आमार मने हय ख्यांरा काठि जिनिसटा सस्ताओ बटे अथच—

विपिन। हाँ, अथच ओटा सहजेइ ज्वाला धरिये देय, किन्तु कुमार-सभाय तार परीक्षा सहज नय।

चन्द्रबाबु। की बलछेन विपिनबाबु। कथाटा शुनते पेलुम ना।

विपिन। आमि बलछिलुम, आमादेर देशे दाह्य पदार्थ यथेष्ट आछे, याते दाहन करे एमन जिनिसेरओ अभाव नेइ; किन्तु परीक्षाटा खुब विवेचनापूर्वक करा चाइ।

चन्द्रबाबु। ठिक कथा बलेछेन। अनेक काठ आछे, येमन शीघ्र ज्वले ओठे तेमनि शीघ्र पुड़े छाइ हये याय।

विपिन। आछे बइ कि।

चन्द्रबाबु। शीघ्र ज्वलबे, अल्प अल्प करे ज्वलबे, अनेकक्षण धरे शेष पर्यन्त ज्वलबे, एमन जिनिसटि चाइ। खुँजले पाओया याबे ना कि।

श्रीश। खुब पाओया याबे; हयतो देखबेन हातेर काछेइ आछे।

करेछ नाकि—कर चुके हो क्या।

आमार......हय—मुझे लगता है; **ख्यांरा**—झाड़ू।

आमि बलछिलुम—मैं कह रहा था; **याते......नेइ**—जिससे जल उठे ऐसी चीज की भी कमी नहीं है; **करा चाइ**—करनी चाहिए।

ठिक......बलेछेन—ठीक बात (आपने) कही है; **अनेक......याय**—बहुत-सी लकड़ियाँ हैं जो जितनी शीघ्र जल उठती हैं उतनी ही शीघ्र जल कर राख हो जाती हैं।

आछे बइकि—हैं, जरूर हैं।

खुँजले......कि—खोजने पर मिल जाएगी क्या।

हयतो......आछे—हो सकता है (आप) देखेंगे कि हाथ के पास ही है।

पूर्ण। पाकाटि एवं ख्यांरा काठि दिये शीघ्रइ परीक्षा करे देखब।

श्रीश मुख फिराइया हासिल

[अक्षयेर प्रवेश

अक्षय। मशाय, प्रवेश करते पारि?

क्षीणदृष्टि चन्द्रमाधवबाबु हठात् चिनिते ना पारिया भ्रू कुञ्चित करिया अवाक हइया चाहिया रहिलेन

अक्षय। मशाय, भय पाबेन ना एवं अमन भ्रूकुटि करे आमाकेओ भय देखाबेन ना। आमि अभूतपूर्व नइ, एमन-कि, आमि आपनादेरइ भूतपूर्व—आमार नाम—

चन्द्रबाबु। आर नाम बलते हबे ना। आसुन, आसुन अक्षय-बाबु—

तिन तरुण सभ्य अक्षयके नमस्कार करिल। विपिन ओ श्रीश दुइ बन्धु सद्योविवादेर विमर्षताय गम्भीर हइया बसिया रहिल

पूर्ण। मशाय, अभूतपूर्वेर चेये भूतपूर्वकेइ बेशि भय हय।

अक्षय। पूर्णबाबु बुद्धिमानेर मतो कथाइ बलेछेन। संसारे भूतेर भयटाइ प्रचलित। निजे ये व्यक्ति भूत अन्य लोकेर जीवन-सम्भोगटा तार काछे वाञ्छनीय हते पारेइ ना, एइ मने करे मानुष भूतके भयंकर कल्पना करे। अतएव सभापतिमशाय, चिरकुमार सभार

पाकाटि—सन का डंठल; **शीघ्रइ**—शीघ्र ही; **करे देखब**—कर देखूंगा।

चिनिते......पारिया—पहचान न सकने के कारण; **हइया**—हो कर; **चाहिया रहिलेन**—देखते रहे।

भय......ना—भय न करें; **अमन**—इस प्रकार; **आमाकेओ......ना**—मुझे भी भय न दिखाएँ; **नइ**—नहीं हूँ; **एमन-कि**—यही नहीं; **आपनादेरइ**—आपलोगों का ही।

आर......ना—(अब) और नाम नहीं बताना होगा; **आसुन**—आइए।

तिन—तीन; **करिल**—किया; **बसिया रहिल**—बैठे रहे।

चेये—अपेक्षा; **भूत......हय**—भूतपूर्व का ही अधिक भय होता है।

मतो—भाँति; **बलेछेन**—कहा है; **भयटाइ**—भय ही; **तार काछे**—उसके निकट; **हते......ना**—हो ही नहीं सकता; **एइ......करे**—यही सोच कर;

भूतटिके सभा थेके झाड़ाबेन, ना पूर्वसम्पर्केर ममता वशत एकखानि चौकि देबेन, एइ बेला बलुन।

चन्द्रबाबु। चौकि देओयाइ स्थिर।

एकखानि चेयार अग्रसर करिया दिलेन

अक्षय। सर्वसम्मतिक्रमे आसन ग्रहण करलुम। आपनारा आमाके नितान्त भद्रता करे बसते बललेन बलेइ ये आमि अभद्रता करे बसेइ थाकब आमाके एमन असभ्य मने करबेन ना। विशेषत: पान तामाक एवं पत्नी आपनादेर सभार नियमविरुद्ध अथच ओइ तिनटे बद अभ्यासइ आमाके एकेबारे माटि करेछे, सुतरां चट्पट काजेर कथा सेरेइ बाड़िमुखो हते हबे।

चन्द्रबाबु। (हासिया) आपनि यखन सभ्य नन तखन आपनार सम्बन्धे सभार नियम नाइ खाटालेम—पान-तामाकेर बन्दोबस्त बोध हय करे दिते पारब, किन्तु आपनार तृतीय नेशाइ—

अक्षय। सेटि एखाने वहन करे आनबार चेष्टा करबेन ना, आमार से नेशाटि प्रकाश्य नय।

चन्द्रबाबु पान-तामाकेर जन्य सनातन चाकरके डाकिबार उपक्रम करिलेन। पूर्ण 'आमि डाकिया दितेछि' बलिया

झाड़ाबेन—झड़वाएंगे; **एइ......बलुन**—अब (फौरन) बतलाइए।

चौकि......स्थिर—चौकी (आसन) देना ही स्थिर (रहा)।

चेयार—(इं०) चेयर, कुर्सी।

करलुम—किया; **आपनारा......ना**—आपलोगों ने मुझे केवल भद्रतावश बैठने के लिए कहा है इसीलिए अभद्रता कर मैं बैठा ही रहूंगा, मुझे ऐसा असभ्य न समझें; **तामाक**—तम्बाकू; **आमाके......करेछे**—मुझे एकदम मिट्टी कर (बिगाड़) दिया है; **चट्पट......हबे**—चटपट काम की बात समाप्त कर गृहाभिमुख होना होगा।

आपनि......खाटालेम—आप जब सभ्य हैं ही नहीं तब आपके सम्बन्ध में सभा का नियम लागू नहीं किया सही; **पान......नेशाइ**—पान, तम्बाकू का बन्दोबस्त लगता है कर सकूंगा लेकिन आपका तृतीय नशा ही।

सेटि......नय—उसे यहाँ वहन कर लाने की चेष्टा न करें, मेरा वह नशा प्रकट करने योग्य नहीं है।

उठिल; पाशेर घरे चाबि एवं चुड़ि एवं सहसा पलायनेर शब्द एकसङ्गे शोना गेल

अक्षय। यस्मिन् देशे यदाचारः। यतक्षण आमि एखाने आछि ततक्षण आमि आपनादेर चिरकुमार—कोनो प्रभेद नेइ। एखन आमार प्रस्तावटा शुनुन।

चन्द्रबाबु टेबिलेर उपर कार्यविवरणेर खाताटिर प्रति अत्यन्त झुँकिया पड़िया मन दिया शुनिते लागिलेन

अक्षय। आमार कोनो मफस्वलेर धनी बन्धु ताँर एकटि सन्तानके आपनादेर कुमार-सभार सभ्य करते इच्छा करेछेन।

चन्द्रबाबु। (विस्मित हइया) बाप छेलेटिर विवाह दिते चान ना!

अक्षय। से आपनारा निश्चिन्त थाकुन—विवाह से कोनोक्रमेइ करबे ना आमि तार जामिन रइलुम। तार दूर सम्पर्केर एक दादा-सुद्ध सभ्य हबेन। ताँर सम्बन्धेओ आपनारा निश्चिन्त थाकते पारेन, कारण यदिच तिनि आपनादेर मतो सुकुमार नन किन्तु आपनादेर सकलेर चेये बेशि कुमार, ताँर वयस षाट पेरिये गेछे—सुतरां ताँर सन्देहेर वयसटा आर नेइ, सौभाग्यक्रमे सेटा आपनादेर सकलेरइ आछे।

चन्द्रबाबु। सभ्यपदप्रार्थीदेर नाम धाम विवरण—

अक्षय। अवश्यइ ताँदेर नाम धाम विवरण एकटा आछेइ—

चाकरके—नौकर को; **डाकिबार**—पुकारने का; **आमि......दितेछि**—मैं बुला देता हूँ; **चुड़ी**—चूड़ां; **शोना गेल**—सुनाई पड़ा।

झुँकिया—झुक कर; **पड़िया**—पड़ कर; **शुनिते लागिलेन**—सुनने लगे।

मफस्वलेर—मुफस्सिल के; **सभ्य......करेछेन**—सदस्य बनाने की इच्छा की है।

बाप......ना—बाप बेटे का विवाह करना नहीं चाहते।

थाकुन—रहें; **तार......हबेन**—उसके दूर के संबंध के एक पितामह भी सदस्य होंगे; **ताँर......पारेन**—उनके संबंध में भी आपलोग निश्चिन्त रह सकते हैं; **ताँर......गेछे**—उनकी उम्र साठ पार कर गई है; **आर नेइ**—अब नहीं है; **सौभाग्य......आछे**—सौभाग्यवश वह आप सभी की है।

एकटा आछेइ—कुछ तो है ही; **सभाके......ना**—सभा को उससे वञ्चित

सभाके तार थेके वञ्चित करते पारा याबे ना—सभ्य यखन पाबेन तखन नाम धाम विवरण सुद्धइ पाबेन। किन्तु आपनादेर एइ एकतलार स्याँतसेँते घरटि स्वास्थ्येर पक्षे अनुकूल नय; आपनादेर एइ चिरकुमार कटिर चिरत्व याते ह्रास ना हय से दिके एकटु दृष्टि राखबेन।

चन्द्रबाबु। (किञ्चित् लज्जित हइया खाताटि नाकेर काछे तुलिया लइया) अक्षयबाबु, आपनि जानेन तो आमादेर आय—

अक्षय। आयेर कथाटा आर प्रकाश करबेन ना, आमि जानि ओ आलोचनाटा चित्तप्रफुल्लकर नय। भालो घरेर बन्दोबस्त करे राखा हयेछे, सेजन्ये आपनादेर धनाध्यक्षके स्मरण करते हबे ना। चलुन ना, आजइ समस्त देखिये शुनिये आनि।

विमर्ष विपिन-श्रीशेर मुख उज्ज्वल हइया उठिल। सभापतिओ प्रफुल्ल हइया उठिया चुलेर मध्य दिया बारबार आङुल बुलाइते बुलाइते चुलगुलाके अत्यन्त अपरिष्कार करिया तुलिलेन। केवल पूर्ण अत्यन्त दमिया गेल

पूर्ण। सभार स्थान-परिवर्तनटा किछु नय।

अक्षय। केन, ए बाड़ि थेके ओ बाड़ि करलेइ कि आपनादेर चिरकौमार्येर प्रदीप हाओयाय निबे याबे।

पूर्ण। ए घरटि तो आमादेर मन्द बोध हय ना।

नहीं रखा जा सकता; **सभ्य......पाबेन**—सदस्य जब पाएंगे तब नाम धाम के विवरण के साथ ही पाएंगे; **स्याँतसेँते**—सीला और नम; **कटिर**—कई का; **याते**—जिसमें; **से......राखबेन**—उस ओर थोड़ी नज़र रखेंगे।

आपनि जानेन—आप जानते हैं।

आयेर......ना—आय की बात और प्रकाशित न करें; **भालो......हयेछे**—अच्छे मकान का प्रबन्ध किया हुआ है; **सेजन्ये......ना**—उसके लिए आपको अपने खजाञ्ची को स्मरण नहीं करना होगा; **चलुन ना**—चलिए न; **आजइ ......आनि**—आज ही सब कुछ दिखा-सुना लाऊँ।

चुलेर मध्य—बालों में; **आङुल......तुलिलेन**—उंगली फेरते-फेरते बालों को बिलकुल उलझा लिया; **दमिया गेल**—दमित हो गया।

केन—क्यों; **ए......याबे**—इस मकान से उस मकान में जाते ही क्या आपलोगों के चिरकौमार्य का प्रदीप हवा से बुझ जाएगा।

अक्षय। मन्द नय। किन्तु एर चेये भालो घर शहरे दुष्प्राप्य हबे ना।

पूर्ण। आमार तो मने हय विलासितार दिके मन ना दिये खानिकटा कष्टसहिष्णुता अभ्यास करा भालो।

श्रीश। सेटा सभार अधिवेशने ना करे सभार बाइरे करा याबे।

विपिन। एकटा काजे प्रवृत्त हलेइ एत क्लेश सह्य करबार अवसर पाओया याय ये, अकारणे बलक्षय करा मूढ़ता।

अक्षय। बन्धुगण, आमार परामर्श शोनो, सभाघरेर अन्धकार दिये चिरकौमार्य-व्रतेर अन्धकार आर बाड़ियो ना। आलोक एवं वातास स्त्रीजातीय नय, अतएव सभार मध्ये ओ दुटोके प्रवेश करते बाधा दियो ना। आरओ विवेचना करे देखो, ए स्थानटि अत्यन्त सरस, तोमादेर व्रतटि तदुपयुक्त नय। बातिकेर चर्चा करछ करो, किन्तु वातेर चर्चा तोमादेर प्रतिज्ञार मध्ये नय। की बल श्रीशबाबु, विपिनबाबुर की मत।

श्रीश ओ विपिन। ठिक कथा। घरटा एकबार देखेइ आसा याक-ना।

> पूर्ण विमर्ष हइया निरुत्तर रहिल। पाशेर घरेओ चाबि एकबार ठुन करिल, किन्तु अत्यन्य अप्रसन्न सुरे

अक्षय। चन्द्रबाबु, एखनइ आसुन ना, देखिये आनि।

ए......ना—यह कमरा हमें तो खराब नहीं मालूम होता।

एर......भालो—इससे अच्छा; **हबे ना**—नहीं होगा।

आमार......दिये—मुझे तो लगता है विलासिता की ओर ध्यान न दे कर; **खानिकटा**—थोड़ा, तनिक।

सेटा—वह; **बाइरे**—बाहर; **करा याबे**—किया जाएगा।

शोनो—सुनो; **सभा......दिये**—सभागृह के अन्धकार से; **आर......ना**—और न बढ़ाना; **ओ दुटोके**—उन दोनों को; **बाधा......ना**—बाधा न देना; **बातिक**—(अतर्क्य रूप से किसी बात की झोंक); **करछ**—करते हो।

घरटा......ना—घर को एकबार देख ही क्यों न आया जाय।

एखनइ......आनि—अभी चलिए न, दिखा लाऊँ।

चन्द्रबाबु। चलुन।

[चन्द्रबाबु ओ अक्षयेर प्रस्थान

विपिन। देखो पूर्णबाबु, सत्यि कथा बलछि तोमाके। चिर-कुमार-सभार फ्रण्टियार पलिसिते आमरा पर्दा जिनिसटार अनुमोदन करि ने। ओइखान थेकेइ शत्रुप्रवेशेर पथ।

पूर्ण। माने की हल।

विपिन। पर्दार मतो उड़ुक्षु जिनिस अल्प एकटु हाओयाते चञ्चल हये ओठे, कुमार-सभार से योग्य नय।

श्रीश। एखानकार सीमाना रक्षार जन्य पाका इँटेर देओयालेर मतो अचल पदार्थ चाइ। ओइ पर्दाटा भालो ठेकछे ना।

पूर्ण। तोमादेर कथागुलो किछु रहस्यमय शोनाच्छे।

विपिन। से-कथा ठिक। रहस्य पदार्थटाइ सर्वनेशे। चिर-कुमारदेर सकलेर चेये ये बड़ो शत्रु, पर्दा-वेष्टनीर मध्येइ तार वास।

श्रीश। आमादेर व्रत हच्छे पर्दाटाके आक्रमण करा, ताके छिन्न करे फेला। पर्दार छायाय छायाय फेरे ये मायामृगी आलो फेललेइ मरीचिकार मतो से मिलिये याबे।

चलुन—चलिए।

सत्यि......तोमाके—सच्ची बात कह रहा हूँ तुमसे; **करि ने**—नहीं करते; **ओइखान थेकेइ**—वहीं से।

माने......हल—क्या मतलब हुआ।

उड़ुक्षु—उड़ंछू; **एकटु हाओयाते**—तनिक-सी हवा से; **हये ओठे**—हो उठता है।

एखानकार—यहाँ की; **सीमाना**—सीमा; **पाका......चाइ**—पक्की ईंटों की दीवाल के समान अचल वस्तु चाहिए; **ओइ......ना**—वह पर्दा कुछ अच्छा नहीं लगता।

तोमादेर कथागुलो—तुमलोगों की बातें; **शोनाच्छे**—सुनाई पड़ रही हैं।

मध्येइ......वास—भीतर ही उसका वास है।

ताके......फेला—उसे फाड़ फेंकना; **फेरे**—विचरण करती है; **आलो फेललइ**—प्रकाश डालते ही; **मतो**—भाँति; **से......याबे**—वह विलीन हो जाएगी।

पूर्ण। श्रीशबाबु, मरीचिका मेलाते पारे, किन्तु तृष्णा तो मेलाय ना।

श्रीश। केन मेलाबे। ओटा थाका चाइ। तृष्णा ना थाकले आमादेर छोटाबे किसे। केवल जाना दरकार कोन् पथे छुटले फल पाओया याबे।

नेपथ्ये गान

ओगो, तोरा के याबि पारे।

विपिन। एकटु आस्ते। गान शुनते पाच्छ ना? खासा गान बटे।

पूर्ण। ओइ गानटाओ कि पर्दा नय। ओर आड़ाले ये रहस्य गा ढाका दिये रयेछे पथे-विपथे छोटाबार क्षमता तारओ आछे।

विपिन। थाक् भाइ। तत्त्वकथाटा एखन थाक्। एकटु शुनते दाओ। खुब काछेर बाड़ि थेकेइ गानटा आसछे, शुनेछि अक्षयबाबुर बासा ओइखानेइ।

श्रीश। गानेर कथाटा बेश स्पष्ट शोना याच्छे।

मेलाते पारे—विलीन हो सकती है; **मेलाय ना**—विलीन नहीं होती।

केन मेलाबे—क्यों विलीन होगी; **ओटा......चाइ**—उसे रहना चाहिए; **तृष्णा......किसे**—तृष्णा न रहने पर हमलोगों को दौड़ाएगा कौन; **केवल...... याबे**—केवल (यह) जानना जरूरी है कि किस पथ पर दौड़ने से फल मिलेगा।

तोरा......पारे—तुम (में से) कौन पार जाएगा।

एकटु......ना—ज़रा धीरे, गीत नहीं सुन पा रहे हो; **खासा......बटे**—सचमुच बढ़िया गीत है।

ओइ......नय—वह गीत भी क्या पर्दा नहीं है; **ओर......आछे**—उसकी ओट में जो रहस्य तन छिपाए हुए है, पथ-विपथ में दौड़ाने की क्षमता उसके पास भी है।

थाक् भाइ—रहने दे भाई; **एखन**—अभी; **एकटु......दाओ**—ज़रा सुनने दो; **खुब......आसछे**—खूब निकट के मकान से गीत आ रहा है; **शुनेछि**—सुना है; **ओइखानेइ**—वहीं है।

शोना याच्छे—सुना जा रहा है (सुनाई पड़ रहा है)।

नेपथ्ये गान

ओगो, तोरा के याबि पारे।
आमि तरी निये बसे आछि नदी किनारे।
ओ पारेते उपवने कत खेला कत जने
ए पारेते धु धु मरु वारि बिना रे।
एइवेला वेला आछे, आय के याबि।
मिछे केन काटे काल कत की भाबि'।
सूर्य पाटे याबे नेमे, सुवातास याबे थेमे,
खेया बन्ध हये याबे सन्ध्या-आँधारे।

श्रीश। गानटा बोध हच्छे येन कुमार-सभाकेइ भय देखाबार गान! खेया बन्ध हये गेलेइ तो मुशकिल।

विपिन। ओइ शुनले ना, बलले—'ए पारेते धु धु मरु वारि बिना रे।'

पूर्ण। ता हले आर देरि केन। पारे याबार जोगाड़ करो।

श्रीश। गलाटा शुने बोध हच्छे, पारे निये याबे ना, अतले तलिये देबे।

[सकलेर प्रस्थान

निये—ले कर; **बसे आछि**—बैठा हूँ; **ओ पारेते**—उस पार; **कत**—कितना; **एइवेला**—अभी; **आय......याबि**—आ जा कौन चलेगा; **मिछे......भाबि**—नाना बातें सोच कर व्यर्थ समय क्यों नष्ट कर रहे हो; **सूर्य.....नेमे**—सूर्य अस्ताचल के नीचे उतर जाएगा (डूब जाएगा); **याबे थेमे**—रुक जाएगी; **खेया......याबे**—खेवा बन्द हो जाएगा।

बोध हच्छे—लगता है; **येन**—मानो; **भय देखाबार**—डराने का; **हये गेलेइ**—हो जाने पर ही।

शुनले ना—सुना नहीं; **बलले**—कहा।

ता......केन—तो फिर देरी क्यों; **पारे......करो**—पार चलने का आयोजन करो।

गला......देबे—गले की आवाज सुनने पर लगता है, पार नहीं ले जाएगी, अथाह में डुबा देगी।

द्वितीय दृश्य

श्रीशेर बासा

श्रीश ताहार बासार दक्षिणेर बारान्दाय एकखाना बड़ो हाताओआला केदारार दुइ हातार उपर दुइ पा तुलिया दिया शुक्लसन्ध्याय चुपचाप बसिया सिगारेट फुँकितेछिल। पाशे टिपायेर उपर रेकाबिते एकटि ग्लासे बरफ देओया लेमनेड ओ स्तूपाकार कुन्दफुलेर माला

[विपिनेर प्रवेश

विपिन। की गो संन्यासीठाकुर।

श्रीश। (उठिया बसिया उच्चैःस्वरे हासिया) एखनओ बुझि झगड़ा भुलते पार नि। आच्छा भाइ शिशुपालक, तुमि कि सत्यि मने कर आमि संन्यासी हते पारि ने।

विपिन। केन पारबे ना। किन्तु अनेकगुलि तल्पिदार चेला सङ्गे थाका चाइ।

श्रीश। तार तात्पर्य एइ ये, केउ वा आमार बेलफुलेर माला गेँथे देबे, केउ वा बाजार थेके लेमनेड ओ बरफ भिक्षे करे आनबे, एइ तो। ताते क्षतिटा की। ये संन्यासधर्मे बेलफुलेर प्रति वैराग्य एवं ठाण्डा लेमनेडेर प्रति वितृष्णा जन्माय सेटा कि खुब उँचुदरेर संन्यास।

ताहार—अपने; **बारान्दाय**—बरामदे में; **हाताओआला**—हत्थे वाली; **केदारार**—आराम कुर्सी के; **पा**—पैर; **तुलिया दिया**—उठा कर रखे हुए; **बसिया**—बैठ कर; **फुँकितेछिल**—फूंक रहा था; **पाशे**—बगल में; **टिपायेर उपर**—तिपाई पर; **रेकाबिते**—रकाबी में; **देओया**—डाला हुआ।

एखनओ—अभी तक; **बुझि**—लगता है (शायद); **भुलते......नि**—भूल नहीं सके; **हते......ने**—नहीं हो सकता।

केन......ना—क्यों नहीं (हो) सकते; **तल्पिदार**—(बिस्तर आदि ढोने वाला); **सङ्गे......चाइ**—संग में रहना चाहिए।

एइ ये—यही है कि; **केउ......देबे**—कोई तो मेरी बेलफूलों की माला गूँथ देगा; **थेके**—से; **भिक्षे......आनबे**—भीख माँग कर लाएगा; **एइ तो**—यही तो; **ठाण्डा**—ठंडा; **सेटा......संन्यास**—वह क्या खूब उच्च कोटि का संन्यास है।

विपिन। साधारण भाषाय तो संन्यासधर्म बलते सेइरकमटाइ बोझाय।

श्रीश। ओइ शोनो, तुमि कि मने कर, भाषाय एकटा कथार एकटा बइ अर्थ नेइ। एकजनेर काछे संन्यासी कथाटार ये अर्थ, आर-एकजनेर काछेओ यदि ठिक सेइ अर्थइ हय, ता हले मन बले एकटा स्वाधीन पदार्थ आछे की करते।

विपिन। तोमार मन संन्यासी कथाटार की अर्थ करछेन आमार मन सेइटि शोनबार जन्य उत्सुक हयेछेन।

श्रीश। आमार संन्यासीर साज एइरकम—गलाय फुलेर माला, गाये चन्दन, काने कुण्डल, मुखे हास्य। आमार संन्यासीर काज मानुषेर चित्त आकर्षण। सुन्दर चेहारा, मिष्टि गला, वक्तृताय अधिकार, ए-समस्त ना थाकले संन्यासी हये उपयुक्त फल पाओया याय ना। रुचि बुद्धि कार्यक्षमता ओ प्रफुल्लता, सकल विषयेइ आमार संन्यासी सम्प्रदायके गृहस्थेर आदर्श हते हबे।

विपिन। अर्थात् एकदल कार्तिकके मयूरेर उपरे चड़े रास्ताय बेरोते हबे।

श्रीश। मयूर ना पाओया याय, ट्राम आछे, पदव्रजेओ नाराज

साधारण......बोझाय—साधारण भाषा में तो संन्यास धर्म कहने से वही समझा जाता है।

ओइ शोनो—वह सुनो; **तुमि......नेइ**—तुम क्या समझते हो कि भाषा में एक बात का एक छोड़ दूसरा अर्थ नहीं है; **एकजनेर......करते**—एक आदमी के निकट संन्यासी शब्द का जो अर्थ है अन्य एक व्यक्ति के निकट भी अगर ठीक वही अर्थ हो तो मन नाम का एक स्वतंत्र पदार्थ है किसलिए।

तोमार......हयेछेन—तुम्हारे मन महोदय संन्यासी शब्द का क्या अर्थ करते हैं मेरे मन महोदय यही सुनने के लिए उत्सुक हैं।

गलाय—गले में; **गाये**—तन पर; **चेहारा**—चेहरा; **मिष्टि**—मीठा; **वक्तृताय**—वक्तृता पर; **ए......थाकले**—यह सब न रहने पर; **पाओया...... ना**—पाया नहीं जाता (नहीं मिलता); **हते हबे**—होना होगा।

चड़े—चढ़ कर; **रास्ताय......हबे**—रास्ते में निकलना होगा।

ना......याय—न पाया जाय (न मिले); **पदव्रजेओ**—पैदल भी;

नइ। कुमार-सभा मानेइ तो कार्तिकेर सभा। किन्तु कार्तिक कि केवल सुपुरुष छिलेन। तिनिइ छिलेन स्वर्गेर सेनापति।

विपिन। लड़ाइयेर जन्य ताँर दुटिमात्र हात, किन्तु वक्तृता करबार जन्ये ताँर तिनजोड़ा मुख।

श्रीश। एर थेके प्रमाण हय आमादेर आर्य पितामहरा बाहुबल अपेक्षा वाक्यबलके तिनगुण बेशि बलेइ जानतेन। आमिओ पालोयानिके वीरत्वेर आदर्श बले मानिने।

विपिन। ओटा बुझि आमार उपर हल?

श्रीश। ओइ देखो। मानुषके अहंकारे की रकम माटि करे! तुमि ठिक करे रेखेछ, पालोयान बललेइ तोमाके बला हल। तुमि कलियुगेर भीमसेन। आच्छा एसो, युद्धं देहि। एकबार वीरत्वेर परीक्षा हये याक।

एइ बलिया दुइ बन्धु क्षणकालेर जन्य लीलाच्छले हात काड़ाकाड़ि करिते लागिल। विपिन हठात् 'एइबार भीमसेनेर पतन' बलिया धप् करिया श्रीशेर केदाराटा अधिकार करिया ताहार उपरे दुइ पा तुलिया दिल; एवं 'उः असह्य तृष्णा' बलिया लेमनेडेर ग्लासटि एक निश्वासे खालि

मानेइ तो—अर्थ ही तो।

लड़ाइयेर......हात—लड़ाई के लिए उनके दो ही हाथ हैं; **करबार जन्ये**—करने के लिए; **ताँर......मुख**—उनके तीन जोड़ी (छः) मुख हैं।

एर......हय—इससे प्रमाणित होता है; **पितामहरा**—पितामहगण; **बेशि ......जानतेन**—अधिक मानते थे; **आमिओ**—मैं भी; **पालोयानिके**—पहलवानी को; **आदर्श......ने**—आदर्श नहीं मानता।

ओटा......हल—वह (कटाक्ष) शायद मुझ पर हुआ।

मानुषके......करे—आदमी को अहंकार कैसे मिट्टी में मिला देता है; **तुमि......हल**—तुमने तय कर रखा है (मान लिया है) पहलवान कहने से तुमको कहना हुआ (पहलवान का अभिप्राय तुम्हीं से है); **हये याक**—हो जाय।

एइ बलिया—यह कह कर; **हात......लागिल**—हाथापाई करने लगे; **केदाराटा......दिल**—आरामकुर्सी पर अधिकार कर उसके ऊपर दोनों पैर रख दिए; **एक......करिल**—एक सांस में खाली किया; **ताड़ाताड़ि**—चटपट;

करिल। तखन श्रीश ताड़ाताड़ि कुन्दफुलेर मालाटि संग्रह करिया—'किन्तु विजयमाल्यटि आमार' बलिया सेटा माथाय जड़ाइल एवं बेतेर मोड़ाटार उपरे बसिया पड़िल

श्रीश। आच्छा भाइ, सत्यि बलो, एकदल शिक्षित लोक यदि एइ रकम संसार परित्याग करे परिपाटि सज्जाय, प्रफुल्ल प्रसन्न मुखे, गाने एवं वक्तृताय भारतवर्षेर चतुर्दिके शिक्षा विस्तार करे बेड़ाय, ताते उपकार हय कि ना।

विपिन। आइडिया भालो बटे।

श्रीश। अर्थात् शुनते सुन्दर किन्तु करते असाध्य। आमि बलछि असाध्य नय एवं आमि दृष्टान्त द्वारा तार प्रमाण करब। भारतवर्षे संन्यासधर्म बले एकटा प्रकाण्ड शक्ति आछे; तार छाइ झेड़े, तार झुलिटा केड़े निये, तार जटा मुड़िये, ताके सौन्दर्य एवं कर्मनिष्ठाय प्रतिष्ठित कराइ चिरकुमार-सभार एकमात्र उद्देश्य। छेले पड़ानो एवं देशलाइयेर काठि तैरि करबार जन्ये आमादेर मतो लोक चिर-जीवनेर व्रत अवलम्बन करेनि। बलो विपिन, तुमि आमार प्रस्तावे राजि आछ कि ना।

विपिन। तोमार संन्यासीर येरकम चेहारा गला एवं आसबाबेर प्रयोजन आमार तो तार किछुइ नेइ। तबे तल्पिदार हये पिछने येते राजि आछि। काने यदि सोनार कुण्डल, अन्तत चोखे यदि सोनार

सेटा......जड़ाइल—उसे सिर में लपेट लिया; **बसिया पड़िल**—बैठ गया।

परिपाटि सज्जाय—सुश्रृंखल भाव से सज्जित हो कर; **बेड़ाय**—घूमे; **ताते......ना**—उससे उपकार होगा कि नहीं।

तार......झेड़े—उसकी राख झाड़ कर; **तार......निये**—उसकी झोली छिन कर; **मुड़िये**—मूँड़ कर; **छेले पड़ानो**—लड़कों का पढ़ाना; **देशलाइयेर**—दियासलाई की; **काठि......जन्ये**—तीली तैयार करने के लिए; **आमादेर...... लोक**—हम जैसे लोग; **करे नि**—नहीं किया है; **बलो**—बोलो; **तुमि...... ना**—तुम मेरे प्रस्ताव से राज़ी हो या नहीं।

येरकम—जैसा; **आमार......नेइ**—मेरे पास तो वह कुछ है नहीं; **तबे......आछि**—तो भी गठरी ढोने वाले नौकर की तरह पीछे चलने के लिए

चशमाटा प'रे येखाने-सेखाम घुरे बेड़ाओ ता हले एकटा प्रहरीर दरकार, से काजटा आमार द्वारा कतकटा चलते पारबे।

श्रीश। आबार ठाट्टा।

विपिन। ना भाइ, ठाट्टा नय। आमि सत्यिइ बलछि, तोमार प्रस्तावटाके यदि सम्भवपर करे तुलते पार ता हले खुब भालोइ हय। तबे ए-रकम एकटा सम्प्रदाये सकलेरइ काज समान हते पारे ना, यार येमन स्वाभाविक क्षमता सेइ अनुसारे योग दिते पारे।

श्रीश। से तो ठिक कथा। केवल एकटि विषये आमादेर खुब दृढ़ हते हबे, स्त्रीजातिर कोनो संस्रव राखब ना।

विपिन। माल्यचन्दन अङ्गदकुण्डल सबइ राखते चाओ केवल ओइ एकटा विषये एत बेशि दृढ़ता केन।

श्रीश। ओइगुलो राखछि बलेइ दृढ़ता। येजन्ये चैतन्य ताँर अनुचरदेर स्त्रीलोकेर सङ्ग थेके कठिन शासने दूरे रेखेछिलेन। ताँर धर्म, अनुराग एवं सौन्दर्येर धर्म, सेजन्येइ तार पक्षे प्रलोभनेर फाँद अनेक छिल।

विपिन। ता हले भयटुकुओ आछे!

राजी हूँ; **परे**—पहन कर; **येखाने......दरकार**—जहाँ-तहाँ घूमते फिरो तो एक प्रहरी की ज़रूरत है; **से......पारबे**—वह काम मेरे द्वारा थोड़ा-बहुत चल सकेगा।

आबार ठाट्टा—फिर मज़ाक।

आमि......बलछि—मैं सच ही कह रहा हूँ; **तोमार......हय**—अपने प्रस्ताव को अगर संभव कर सको तब तो बहुत ही अच्छा हो; **तबे......ना**—फिर भी इस तरह के किसी समाज में सभी का काम समान नहीं हो सकता; **यार...... पारे**—जिसकी जैसी स्वाभाविक क्षमता है उसीके अनुसार योग दे सकता है।

सबइ......चाओ—सभी रखना चाहते हो; **केवल......केन**—केवल उसी एक बात में इतनी दृढ़ता क्यों।

ओइगुलो......बलेइ—वह सब रख रहा हूँ इसीलिए; **येजन्ये**—जिस कारण से; **रेखेछिलेन**—रखा था; **सेजन्येइ......छिल**—इसलिए उस (धर्म) के लिए प्रलोभन के फंदे बहुत थे।

ता......आछे—तब तो भय भी है।

श्रीश। आमार निजेर जन्य लेशमात्र नेइ। आमि आमार मनके पृथिवीर विचित्र सौन्दर्ये व्याप्त करे रेखे दिइ, कोनो एकटा फाँदे आमाके धरे कार साध्य, किन्तु तोमरा ये दिनरात्रि फुटबल टेनिस क्रिकेट निये थाक—तोमरा एकबार पड़ले ब्याटबल गुलिडाण्डा सबसुद्ध घाड़मोड़ भेङे पड़बे।

विपिन। आच्छा भाइ, समय उपस्थित हले देखा याबे।

श्रीश। ओ-कथा भालो नय। समय उपस्थित हबे ना, समय उपस्थित हते देब ना। समय तो रथे चड़े आसेन ना—आमरा ताँके घाड़े करे निये आसि—किन्तु तुमि ये समयटार कथा बलछ ताके वाहन-अभावे फिरतेइ हबे।

[पूर्णबाबुर प्रवेश

उभये। एसो पूर्णबाबु।

विपिन ताहाके केदाराटा छाड़िया दिया एकटा चौकि टानिया लइया बसिल

पूर्ण। तोमादेर एइ बारान्दाय ज्योत्स्नाटि तो मन्द रचना कर नि—माझे माझे थामेर छाया फेले फेले साजियेछ भालो।

आमार......नेइ—अपने लिए मुझे ज़रा भी नहीं; **रेखे दिइ**—रख देता हूँ; **कोनो......साध्य**—किसी फंदेमें मुझे पकड़ ले (ऐसी) किसकी शक्ति है; **निये थाक**—लिये रहते हो; **तोमरा......पड़ले**—तुमलोग एक बार गिरने पर; **ब्याटबल**—बैटबाल; **सबसुद्ध**—सब समेत; **घाड़मोड़......पड़बे**—गर्दन वगैरह तोड़ गिरोगे (भहरा कर गिर पड़ोगे)।

हले—होने पर; **देखा याबे**—देखा जाएगा।

हबे ना—नहीं होगा; **हते......ना**—होने नहीं दूंगा; **रथे चड़े**—रथ पर चढ़ कर; **आसेन ना**—आते नहीं; **आमरा......आसि**—हमलोग उन्हें गर्दन पर चढ़ा कर लाते हैं; **फिरतेइ हबे**—लौट ही जाना होगा।

विपिन......बसिल—विपिन उसके लिए आरामकुर्सी छोड़ कर एक चौकी घसीट कर बैठ गया।

तोमादेर.....बारान्दाय—तुमलोगों के इस बरामदे में; **ज्योत्स्ना**—चाँदनी; **तो......नि**—कुछ बुरी रचना तो नहीं की है; **माझे माझे**—बीच बीच में; **थामेर**—खंभे की; **फेले**—डाल कर; **साजियेछ**—सजाया है।

श्रीश। छादेर उपर ज्योत्स्ना रचना करा प्रभृति कतकगुलि अत्याश्चर्य क्षमता जन्माबार पूर्व हतेइ आमार आछे। किन्तु देखो पूर्णबाबु, ओइ देशालाइ करा-टरा ओगुलो आमार भालो आसे ना।

पूर्ण। (फुलेर मालार दिके चाहिया) संन्यासधर्मेइ कि तोमार असामान्य दखल आछे नाकि।

श्रीश। सेइ कथाइ तो हच्छिल। संन्यासधर्म तुमि काके बल शुनि।

पूर्ण। ये धर्मे दरजि धोबा नापितेर कोनो सहायता निते हय ना, ताँतिके एकेबारेइ अग्राह्य करते हय, पियार्स सोपेर विज्ञापनेर दिके दृक्पात करते हय ना——

श्रीश। आरे छिः, से संन्यासधर्म तो बुड़ो हये मरे गेछे, एखन नवीन संन्यासी बले एकटा सम्प्रदाय गड़ते हबे——

पूर्ण। विद्यासुन्दरेर यात्राय ये नवीन संन्यासी आछेन तिनि मन्द दृष्टान्त नन——किन्तु तिनि तो चिरकुमार-सभार विधानमते चलेन नि।

श्रीश। यदि चलतेन ता हले तिनिइ ठिक दृष्टान्त हते पारतेन। साजे सज्जाय वाक्ये आचरणे सुन्दर एवं सुनिपुण हते हबे——

छादेर उपर——छत पर; **कतकगुलि**——कई; **करा-टरा**——करना-वरना; **ओगुलो......ना**——वह सब मुझे अच्छी तरह नहीं आता।

फुलेर......चाहिया——फूल की माला की ओर देख कर; **दखल.....नाकि**——अधिकार है क्या।

सेइ......हच्छिल——वही बात तो हो रही थी; **तुमि......शुनि**——तुम किसे कहते हो सुनूँ।

दरजि——दर्जी; **धोबा**——धोबी; **नापित**——नाई; **निते......ना**——नहीं लेनी होती; **ताँतिके......हय**——ताँती (तन्तुवाय) की एकदम उपेक्षा करनी होती है।

बुड़ो....गेछे——बूढ़ा (पुराना) हो कर मर गया; **गड़ते हबे**——गढ़ना होगा।

विद्यासुन्दर——(पश्चिमी बंगाल में प्रचलित एक सुप्रसिद्ध प्रेम-कहानी); **यात्रा**——(बंगाल में प्रचलित अभिनय-विशेष जिसमें न रंगमंच होता है और न पर्दा आदि); **आछेन**——हैं; **तिनि......नन**——वे बुरा उदाहरण नहीं हैं।

यदि......पारतेन——अगर वे चलते तो वे ही ठीक उदाहरण हो सकते थे;

पूर्ण। केवल राजकन्यार दिक थेके दृष्टि नामाते हबे, एइ तो? बिनि सुतार माला गाँथते हबे, किन्तु से माला पराते हबे कार गलाय हे!

श्रीश। स्वदेशेर। कथाटा किछु उच्च श्रेणीर हये पड़ल; की करब बलो, मालिनी मासी एवं राजकुमारी एकेबारेइ निषिद्ध। किन्तु ठाट्टा नय पूर्णबाबु––

पूर्ण। ठाट्टार मतो मोटेइ शोनाच्छे ना––भयानक कड़ा कथा, एकेबारे खट्खटे शुकनो!

श्रीश। आमादेर चिरकुमार-सभा थेके एमन एकटि संन्यासी सम्प्रदाय गठन करते हबे यारा रुचि शिक्षा ओ कर्मे सकल गृहस्थेर आदर्श हबे। य़ारा संगीत प्रभृति कलाविद्याय अद्वितीय हबे, आबार लाठि तलोयार खेला, घोड़ाय चड़ा, बन्दुक लक्ष्य कराय पारदर्शी हबे––

पूर्ण। अर्थात् मनोहरण एवं प्राणहरण दुइ कर्मेइ मजबुत हबे। पुरुष देवीचौधुरानीर दल आर-कि!

श्रीश। बङ्किमबाबु आमार आइडियाटा पूर्वे हतेइ चुरि करे रेखेछेन––किन्तु ओटाके काजे लागिये आमादेर निजेर करे निते हबे।

पूर्ण। सभापतिमशाय की बलेन।

साजे सज्जाय—साज-सज्जा में।

केवल......तो—केवल राजकन्या की ओर से दृष्टि हटानी होगी, यही तो; **बिनि**—विना; **सुतार**—सूत के, धागे के; **गाँथते हबे**—गूँथना होगा; **किन्तु ......हे**—लेकिन वह माला किसके गले में पहनानी होगी हे।

हये पड़ल—हो गई; **की......बलो**—क्या करूँ बताओ; **मासी**—मौसी; **एकेबारेइ**—बिलकुल।

ठाट्टार......ना—मज़ाक़ की तरह एकदम नहीं सुनाई पड़ता; **कड़ा कथा**—कड़ी बात; **शुकनो**—सूखी।

यारा—जो लोग; **लाठि**—लाठी; **तलोयार**—तलवार; **चड़ा**—चढ़ना।

पुरुष......कि—पुरुष देवीचौधुरानी का दल और क्या; **देवीचौधुरानी**—(बङ्किमचन्द्र के सुप्रसिद्ध उपन्यास की प्रधान पात्री)

पूर्वे.....रेखेछेन—पहले से ही चुरा लिया है; **किन्तु.....हबे**—किन्तु उसको व्यवहार में ले कर हमें अपना बना लेना होगा।

की बलेन—क्या कहते हैं।

श्रीश। ताँके कदिन धरे बुझिये बुझिये आमार दले टेने नियेछि। किन्तु तिनि ताँर देशालाइयेर काठि छाड़ेन नि। तिनि बलेन, संन्यासीरा कृषितत्त्व वस्तुतत्त्व प्रभृति शिखे ग्रामे ग्रामे चाषादेर शिखिये बेड़ाबे—एक टाका क'रे शेयार निये एकटा ब्याङ्क खुले बड़ो बड़ो पल्लीते नूतन नियमे एक-एकटा दोकान बसिये आसबे—भारतवर्षेर चारि दिके वाणिज्येर जाल विस्तार करे देबे। तिनि खुब मेते उठेछेन।

पूर्ण। विपिनबाबुर की मत।

विपिन। यदिच आमि निजेके श्रीशेर नवीन संन्यासी सम्प्रदायेर आदर्श पुरुष बले ज्ञान करि ने, किन्तु दल यदि गड़े ओठे तो आमिओ संन्यासी साजते राजि आछि।

पूर्ण। किन्तु साजते खरच आछे मशाय—केवल कौपीन नय तो—अङ्गद कुण्डल आभरण कुन्तलीन देलखोश—

श्रीश। पूर्णबाबु, ठाट्टाइ कर आर याइ कर, चिरकुमार-सभा संन्यासी-सभा हबेइ। आमरा एक दिके कठोर आत्मत्याग करब, अन्य दिके मनुष्यत्वेर कोनो उपकरण थेके निजेदेर वञ्चित करब ना—आमरा कठिन शौर्य एवं ललित सौन्दर्य उभयकेइ समान आदरे वरण करब—सेइ दुरूह साधनाय भारतवर्षे नवयुगेर आविर्भाव हबे—

ताँके......नियेछि—उन्हें कई दिन से समझाते समझाते अपने दल में घसीट लिया है; **छाड़ेन नि**—नहीं छोड़ी है; **शिखे**—सीख कर; **चाषादेर......बेड़ाबे**—खेतिहरों को सिखाते हुए घूमेंगे; **एक......खुले**—एक एक रुपये का शेयर ले कर बैंक खोल कर; **पल्लीते**—ग्रामों में; **दोकान**—दुकान; **बसिये आसबे**—जमा आएंगे; **तिनि......उठेछेन**—वे मतवाले हो उठे हैं।

यदिच—यद्यपि; **निजेके**—अपने को; **आदर्श......ने**—आदर्श पुरुष नहीं समझता; **गड़े ओठे**—निर्मित हो जाय; **तो......आछि**—तो मैं भी संन्यासी की सज्जा करने को तैयार हूँ।

कुन्तलीन—एक तैल-विशेष; **देलखोश**—दिलखुश, मनोरम (एक तैल का नाम)।

ठाट्टाइ......कर—ठट्ठा ही करो या जो भी करो; **हबेइ**—होगी ही; **निजेदेर**—अपने आप को।

पूर्ण। बुझेछि श्रीशबाबु—किन्तु नारी कि मनुष्यत्वेर एकटा सर्वप्रधान उपकरणेर मध्ये गण्य नय। एवं ताँके उपेक्षा करले ललित सौन्दर्येर प्रति कि समादर रक्षा हबे। तार की उपाय करले।

श्रीश। नारीर एकटा दोष—नरजातिके तिनि लतार मतो वेष्टन करे धरेन, यदि ताँर द्वारा विजड़ित हबार आशङ्का ना थाकत, यदि ताँके रक्षा करेओ स्वाधीनता रक्षा करा येत, ता हले कोनो कथा छिल ना। काजे यखन जीवन उत्सर्ग करते हबे तखन काजेर समस्त बाधा दूर करते चाइ—पाणिग्रहण करे फेलले निजेर पाणिकेओ बन्ध करे फेलते हबे, से हले चलबे ना पूर्णबाबु।

पूर्ण। व्यस्त होयो ना भाइ, आमि आमार शुभविवाहे तोमादेर निमन्त्रण करते आसि नि। किन्तु भेबे देखो देखि, मनुष्यजन्म आर पाब कि ना सन्देह, अथच हृदयके चिरजीवन ये पिपासार जल थेके वञ्चित करते याच्छि तार पूरणस्वरूप आर-कोथाओ आर-किछु जुटबे कि। मुसलमानेर स्वर्गे हुरी आछे, हिन्दुर स्वर्गेओ अप्सरार अभाव नेइ, चिरकुमार-सभार स्वर्गे सभापति एवं सभ्य महाशयदेर चेये मनोरम आर किछु पाओया याबे कि।

श्रीश। पूर्णबाबु, बल की। तुमि ये—

पूर्ण। भय नेइ भाइ, एखनओ मरिया हये उठि नि। तोमार एइ छाद-भरा ज्योत्स्ना आर ओइ फुलेर गन्ध कि कौमार्यव्रत रक्षार

समादर......हबे—सम्मान की रक्षा होगी; **तार......करले**—उसका क्या उपाय किया।

हबार......थाकत—होने की आशंका न होती; **पाणिग्रहण......हबे**—पाणिग्रहण कर लेने पर अपने पाणि (हाथ) को भी बाँध देना पड़ेगा; **से...... ना**—ऐसा होने से नहीं चलेगा।

व्यस्त......भाइ—अस्थिर न होना भाई; **आसि नि**—नहीं आया; **भेबे ......देखि**—सोच कर देखो; **करते याच्छि**—करने जा रहा हूँ; **आर कोथाओ**—और कहीं; **आर किछु**—और कुछ; **जुटबे कि**—जुटेगा क्या; **हुरी**—हूर; **आर......कि**—और कुछ पाया जाएगा (मिलेगा) क्या।

एखनओ......नि—मैं अभी भी हताश हो कर दुःसाहसिक नहीं हो पाया हूँ;

सहायता करबार जन्ये सृष्टि हयेछे। मनेर मध्ये माझे माझे ये वाष्प जमे आमि सेटाके उच्छ्वसित करे देओयाइ भालो बोध करि—चेपे रेखे निजेके भोलाते गेले कोन्‌दिन चिरकुमारव्रतेर लोहार बयलारखाना फेटे यावे। याइ होक, यदि संन्यासी हओयाइ स्थिर कर तो आमिओ योग देब—किन्तु आपातत सभाटाके तो रक्षा करते हबे।

श्रीश। केन? की हयेछे?

पूर्ण। अक्षयबाबु आमादेर सभाके ये स्थानान्तर करबार व्यवस्था करछेन एटा आमार भालो ठेकछे ना।

श्रीश। सन्देह जिनिसटा नास्तिकतार छाया। मन्द हबे, भेङे यावे, नष्ट हबे, ए-सब भाव आमि कोनो अवस्थातेइ मने स्थान दिइ ने। भालोइ हबे—या हच्छे बेश हच्छे—चिरकुमार-सभार उदार विस्तीर्ण भविष्यत् आमि चोखेर सम्मुखे देखते पाच्छि—अक्षयबाबु सभाके एक बाड़ि थेके अन्य बाड़िते निमन्त्रण करे तार की अनिष्ट करते पारेन। केवल गलिर एक नम्बर थेके आर-एक नम्बरे नय, आमादेर ये पथे-पथे देशे-देशे सञ्चरण करे बेड़ाते हबे। सन्देह शङ्का उद्वेग एगुलो मन थेके दूर करे दाओ पूर्णबाबु—विश्वास एवं आनन्द ना हले बड़ो काज हय ना।

एइ—यह; **छाद-भरा**—छत भरी; **आर ओइ**—और वह; **करबार जन्ये**—करने के लिए; **करे देओयाइ**—कर देना ही; **भालो......करि**—अच्छा समझता हूँ; **चेपे रेखे**—दाब कर रखने से; **निजेके.....गेले**—अपने को भुलाने जा कर; **बयलारखाना**—boiler; **फेटे यावे**—फट जाएगा; **याइ होक**—जो हो; **हओयाइ**—होना ही; **आपातत**—अभी, सम्प्रति।

केन—क्यों; **की हयेछे**—क्या हुआ है।

एटा......ना—यह मुझे अच्छा नहीं लगता।

जिनिसटा—वस्तु; **भेङे यावे**—टूट जाएगा; **या......हच्छे**—जो हो रहा है अच्छा हो रहा है; **देखते पाच्छि**—देख पा रहा हूँ; **थेके**—से; **अन्य बाड़िते**—दूसरे मकान में; **करते पारेन**—कर सकते हैं; **आर......नय**—और एक नम्बर में नहीं; **आमादेर ये**—हमें तो; **बेड़ाते हबे**—घूमना होगा; **एगुलो**—ये सब; **करे दाओ**—कर दो; **ना हले**—न होने पर; **हय ना**—नहीं होता।

विपिन। दिनकतक देखाइ याक-ना––यदि कोनो असुविधार कारण घटे ता हले स्वस्थाने फिरे आसा याबे––आमादेर सेइ अन्धकार विवरटि फस् करे केउ केड़े निच्छे ना।

[अकस्मात् चन्द्रमाधवबाबुर सवेगे प्रवेश

तिनजनेर ससम्भ्रमे उत्थान

चन्द्रबाबु। देखो, आमि सेइ कथाटा भावछिलुम––

श्रीश। बसुन।

चन्द्रबाबु। ना ना, बसब ना, आमि एखनइ याच्छि। आमि बलछिलुम, संन्यासव्रतेर जन्ये आमादेर एखन थेके प्रस्तुत हते हबे। हठात् एकटा अपघात घटले, किंवा साधारण ज्वरज्वालाय, की रकम चिकित्सा से आमादेर शिक्षा करते हबे––डाक्तार रामरतनबाबु फि-रविवारे आमादेर दुघण्टा करे वक्तृता देबेन बन्दोबस्त करे एसेछि।

श्रीश। किन्तु ताते अनेक विलम्ब हबे ना?

चन्द्रबाबु। विलम्ब तो हबेइ, काजटि तो सहज नय। केवल ताइ नय––आमादेर किछु किछु आइन अध्ययनओ दरकार। अविचार अत्याचार थेके रक्षा करा, एवं कार कतदूर अधिकार सेटा चाषा-भुषोदेर बुझिये देओया आमादेर काज।

श्रीश। चन्द्रबाबु, बसुन––

दिन......ना—कुछ दिन देखा ही जाय न; **कोनो**—कोई; **फिरे...... याबे**—लौट आया जाएगा; **केउ......ना**—कोई छीने नहीं ले रहा है।

देखो......भावछिलुम—देखो, मैं वही बात सोच रहा था।

बसुन—बैठिए।

बसब ना—बैठूंगा नहीं; **आमि......याच्छि**—मैं अभी जा रहा हूँ; **आमि बलछिलुम**—मैं कह रहा था; **एखन थेके**—अभी से; **हते हबे**—होना होगा; **अपघात**—आकस्मिक दुर्घटना; **से.......हबे**—वह हमलोगों को सीख लेनी होगी; **फि**—फी, प्रत्येक; **करे एसेछि**—कर आया हूँ।

हबेइ—होगा ही; **ताइ नय**—वही नहीं; **आइन**—आईन, कानून; **सेटा**—वह; **चाषाभुषोदेर**—अशिक्षित ग्रामीणों को; **बुझिये......काज**—समझा देना हमलोगों का काम (होगा)।

चन्द्रबाबु। ना श्रीशबाबु, बसते पारछिने, आमार एकटु काज आछे। आर-एकटि आमादेर करते हच्छे—गोरुर गाड़ि, ढेँकि, ताँत प्रभृति आमादेर देशी अत्यावश्यक जिनिसगुलिके एकटु-आधटु संशोधन करे याते कोनो अंशे तादेर सस्ता वा मजबुत वा बेशि उपयोगी करे तुलते पारि से चेष्टा आमादेर करते हबे। एबार ग्रीष्मेर अवकाशे केदारबाबुदेर कारखानाय गिये प्रत्यह आमादेर कतकगुलि परीक्षा करा चाइ।

श्रीश। चन्द्रबाबु, अनेकक्षण दाँड़िये आछेन—

चौकि अग्रसर-करण

चन्द्रबाबु। ना, ना, आमि एखनइ याच्छि। देखो, आमार मत एइ ये, एइ-समस्त ग्रामेर व्यवहार्य सामान्य जिनिसगुलिर यदि आमरा कोनो उन्नति करते पारि ता हले ताते करे चाषादेर मनेर मध्ये येरकम आन्दोलन हबे, बड़ो बड़ो संस्कार कार्येओ तेमन हबे ना। तादेर सेइ चिरकालेर ढेँकि-घानिर किछु परिवर्तन करते पारले तबे तादेर समस्त मन सजाग हये उठबे, पृथिवी ये एक जायगाय दाँड़िये नेइ ए तारा बुझते पारबे—

श्रीश। चन्द्रबाबु बसबेन ना कि।

चन्द्रबाबु। थाक् ना। एकबार भेबे देखो, आमरा ये एतकाल धरे शिक्षा पेये आसछि, उचित छिल आमादेर ढेँकि कुलो थेके तार

बसते......ने—बैठ नहीं सकता; **आमार......आछे**—मुझे कुछ काम है; **आर......हच्छे**—और एक (काम) हमलोगों को करना होगा; **गोरुर गाड़ि**—बैलगाड़ी; **ढेँकि**—(धान कूटने का एक यंत्र); **याते**—जिसमें; **गिये**—जा कर।

अनेक......आछेन—बहुत देर से खड़े हैं।

आमि......याच्छि—मैं अभी जा रहा हूँ; **कोनो......ना**—कोई उन्नति कर सकें तो उससे खेतिहरों के मन में जैसा आन्दोलन होगा, बड़े बड़े सुधार कार्यों से भी वैसा नहीं होगा; **सजाग......उठबे**—सचेत हो उठेगा; **पृथिवी......पारबे**—पृथ्वी एक ही जगह पर नहीं खड़ी है यह वे समझ सकेंगे।

बसबेन......कि—क्या बैठेंगे नहीं।

थाक्-ना—रहने दो न; **भेबे देखो**—सोच कर देखो; **आमरा...... आसछि**—हमलोग जो इतने काल से शिक्षा पाते आ रहे हैं; **उचित......हओया**

परिचय आरम्भ हओया। बड़ो बड़ो कलकारखाना तो दूरेर कथा, घरेर मध्येइ आमादेर सजाग दृष्टि पड़ल ना। आमादेर हातेर काछे या आछे आमरा ना तार दिके भालो करे चेये देखलुम, ना तार सम्बन्धे चिन्ता करलुम। या छिल ता तेमनिइ रये गेछे। मानुष अग्रसर हच्छे अथच तार जिनिसपत्र पिछिये थाकछे, ए कखनो हतेइ पारे ना। आमरा पड़ेइ आछि—इंरेज आमादेर काँधे करे वहन करछे, ताके एगोनो बले ना। छोटोखाटो सामान्य ग्राम्य जीवनयात्रा पल्लीग्रामेर पङ्किल पथेर मध्ये बद्ध हये अचल हये आछे, आमादेर संन्यासी-सम्प्रदायके सेइ गोरुर गाड़िर चाका ठेलते हबे—कलेर गाड़िर चालक हबार दुराशा एखन थाक्।—क'टा बाजल श्रीशबाबु।

श्रीश। साड़े आटटा बेजे गेछे।

चन्द्रबाबु। ता हले आमि याइ। किन्तु एइ कथा रइल, आमादेर एखन अन्य समस्त आलोचना छेड़े नियमित शिक्षाकार्ये प्रवृत्त हते हबे एवं—

पूर्ण। आपनि यदि एकटु बसेन चन्द्रबाबु, ता हले आमार दुइ-एकटा कथा बलबार आछे—

चन्द्रबाबु। ना, आज आर समय नेइ—

पूर्ण। बेशि किछु नय, आमि बलछिलुम आमादेर सभा—

चन्द्रबाबु। से-कथा काल हबे पूर्णबाबु।

—उसका परिचय अपने ढेंकी, सूप से आरम्भ होना उचित था; **पड़ल ना**—नहीं पड़ी; **आमादेर......करलुम**—हमलोगों के हाथों के निकट जो है हमलोगों ने न तो उसकी ओर अच्छी तरह से देखा और न उसके संबंध में विचार किया; **या......गेछे**—जो था वह वैसे ही रह गया है; **पिछिये थाकछे**—पीछे रह जाती हैं; **ए......ना**—यह कभी हो ही नहीं सकता; **आमरा......आछि**—हमलोग पड़े ही हुए हैं; **इंरेज**—अंग्रेज; **ताके......ना**—उसे आगे बढ़ना नहीं कहते; **चाका......हबे**—पहिया ठेलना होगा; **एखन थाक्**—अभी रहे; **क'टा बाजल**—कै बजे हैं।

साड़े......गेछे—साढ़े आठ बजे हैं।

ता.....याइ—तब मैं जाऊँ।

पूर्ण। किन्तु कालइ तो सभा बसछे––

चन्द्रबाबु। आच्छा, ता हले परशु, आमार समय नेइ––

पूर्ण। देखुन, अक्षयबाबु ये––

चन्द्रबाबु। पूर्णबाबु, आमाके माप करते हबे, आज देरि हये गेछे। किन्तु देखो, आमार एकटा कथा मने हच्छिल ये, चिरकुमार सभा यदि क्रमे विस्तीर्ण हये पड़े ता हले आमादेर सकल सभ्यइ किछु संन्यासी हये बेरिये येते पारबेन ना––अतएव ओर मध्ये दुटि विभाग राखा दरकार हबे––

पूर्ण। स्थावर एवं जङ्गम––

चन्द्रबाबु। ता से ये नामइ दाओ। ता छाड़ा अक्षयबाबु सेदिन एकटि कथा या बललेन से-ओ आमार मन्द लागल ना। तिनि बलेन, चिरकुमार सभार संस्रवे आर-एकटि सभा राखा उचित याते विवाहित एवं विवाह-संकल्पित लोकदेर नेओया येते पारे। गृही लोकदेरओ तो देशेर प्रति कर्तव्य आछे। सकलेरइ साध्यमत कोनो-ना-कोनो हितकर काजे नियुक्त थाकते हबे––एइटे हच्छे साधारण व्रत। आमादेर एकदल कुमारव्रत धारण करे देशे देशे विचरण करबेन, एकदल कुमारव्रत धारण करे एक जायगाय स्थायी हये बसे काज करबेन, आर एकदल गृही निज निज रुचि ओ साध्य अनुसारे एकटा कोनो प्रयोजनीय काज अवलम्बन करे देशेर प्रति कर्तव्य पालन करबेन। याँरा पर्यटक-

---

देखुन––देखिए।

आमाके......हबे––मुझे माफ करना होगा; **आज......गेछे**––आज देरी हो गई है; **एकटा......हच्छिल**––एक बात मन में आ रही थी; **हये**––हो; **बेरिये ......ना**––बाहर नहीं जा सकेंगे; **राखा......हबे**––रखने की आवश्यकता होगी।

ता.....दाओ––सो तो जो भी नाम दो; **ता छाड़ा**––इसके अलावा; **सेदिन ......ना**––उस दिन जो बात कही थी वह भी मुझे बुरी नहीं लगी; **तिनि बलेन**––वे कहते हैं; **संस्रवे**––संबंधित; **आर-एकटि**––एक और; **याते**––जिसमें; **लोकदेर......पारे**––लोगों को लिया जा सके; **सकलेरइ......हबे**––सभी को यथाशक्ति किसी-न-किसी हितकर कार्य में लगा रहना होगा; **एइटे हच्छे**––यही है; **जायगाय**––जगह; **बसे......करबेन**––बैठे काम करेंगे; **याँरा**––जो लोग;

सम्प्रदायभुक्त हबेन ताँदेर म्याप-प्रस्तुत, जरिप, भूतत्त्वविद्या, उद्भिद-विद्या, प्राणीतत्त्व प्रभृति शिखते हबे,——ताँरा ये-देशे याबेन सेखानकार समस्त तथ्य तन्न तन्न करे संग्रह करबेन——ता हलेइ भारतवर्षीयेर द्वारा भारतवर्षेर यथार्थ विवरण लिपिबद्ध हबार भित्ति स्थापित हते पारबे, हन्टार साहेबेर उपरेइ निर्भर करे काटाते हबे ना——

पूर्ण। चन्द्रबाबु, यदि बसेन ता हले एकटा कथा——

चन्द्रबाबु। ना, आमि बलछिलुम——येखाने येखाने याब सेखानकार ऐतिहासिक जनश्रुति एवं पुरातन पुँथि संग्रह करा आमादेर काज हबे——शिलालिपि ताम्रशासन एगुलोओ सन्धान करते हबे——अतएव प्राचीन लिपि-परिचयटाओ आमादेर किछुदिन अभ्यास करा आवश्यक।

पूर्ण। से-सब तो परेर कथा, आपातत——

चन्द्रबाबु। ना ना, आमि बलछि ने सकलकेइ सब विद्या शिखते हबे, ता हले कोनोकाले शेष हबे ना। अभिरुचि-अनुसारे ओर मध्ये आमरा केउ-वा एकटा केउ-वा दुटो-तिनटे शिक्षा करब——

श्रीश। किन्तु ता हलेओ——

चन्द्रबाबु। धरो पाँच बछर। पाँच बछरे आमरा प्रस्तुत हये बेरोते पारब। यारा चिरजीवनेर व्रत ग्रहण करबे पाँच बछर तादेर

म्याप—मैप; **जरिप**—जरीब; **शिखते हबे**—सीखना होगा; **ताँरा**—वे; **ये**—जिस; **याबेन**—जाएंगे; **सेखानकार**—वहाँ के; **तन्न.....करे**—पुंखानु-पुंख, राईरत्ती करके; **ता हलेइ**—वैसा होने पर ही, तभी; **हते पारबे**—हो सकेगी; **हन्टार**—हन्टर साहब; **उपरेइ......ना**—ऊपर निर्भर रह कर काम चलाने की जरूरत नहीं रहेगी। **यदि......कथा**—यदि बैठें तो एक बात।

बलछिलुम—कह रहा था; **येखाने......याब**—जहाँ जहाँ जाएंगे; **पुँथि**—हस्तलिखित पोथी; **ताम्रशासन**—ताम्रपत्र; **एगुलोओ......हबे**—इनका भी पता लगाना होगा।

से......आपातत—वह सब तो बाद की बात है, अभी तो।

ना......हबे ना—नहीं नहीं, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि सभी को सब विद्या सीखनी होगी, वैसा हो तब तो कभी भी पूरा नहीं होगा; **शिक्षा करब**—सीखेंगे, शिक्षा प्राप्त करेंगे।

धरो......बछर—समझो, पाँच वर्ष; **तादेर......नय**—उनलोगों के लिए

पक्षे किछुइ नय। ता छाड़ा एइ पाँच बछरेइ आमादेर परीक्षा हये यावे—याँरा टिँके थाकते पारबेन ताँदेर सम्बन्धे आर कोनो सन्देह थाकबे ना।

पूर्ण। किन्तु देखुन, आमादेर सभाटा ये स्थानान्तर करा हच्छे—

चन्द्रबाबु। ना पूर्णबाबु, आज आर किछुतेइ ना, आमार अत्यन्त जरुरी काज आछे। पूर्णबाबु आमार कथागुलो भालो करे चिन्ता करे देखो। आपातत मने हते पारे असाध्य, किन्तु ता नय। दुःसाध्य वटे—ता, भालो काज मात्रइ दुःसाध्य। आमरा यदि पाँचटि दृढ़-प्रतिज्ञ लोक पाइ ता हले आमरा या काज करव ता चिरकालेर जन्य भारतवर्षके आच्छन्न करे देबे।

श्रीश। किन्तु आपनि ये बलछिलेन गोरुर गाड़िर चाका प्रभृति छोटो छोटो जिनिस—

चन्द्रबाबु। ठिक कथा, आमि ताकेओ छोटो मने करे उपेक्षा करि ने—एवं बड़ो काजकेओ असाध्य ज्ञान करे भय करि ने—

पूर्ण। किन्तु सभार अधिवेशन सम्बन्धेओ—

चन्द्रबाबु। से-सब कथा काल हबे पूर्णबाबु! आज तबे चललुम।

[प्रस्थान

कुछ भी नहीं है; **ता......यावे**—इसके अलावा इन पाँच वर्षों में ही हमलोगों की परीक्षा हो जाएगी; **याँरा......ना**—जो टिके रह सकेंगे उनलोगों के संबंध मे और कोई सन्देह नहीं रहेगा।

देखुन—देखिए; **करा हच्छे**—किया जा रहा है।

आज......ना—आज अब और किसी भी तरह नहीं; **आमार......देखो**—मेरी बातों को अच्छी तरह विचार कर देखो; **आपातत......नय**—अभी कठिन मालूम हो सकता है लेकिन ऐसा नहीं है; **लोक पाइ**—लोग पा जायँ; **आच्छन्न ......देबे**—अभिभूत कर देगा।

आमि......ने—छोटा समझ कर मैं उसकी भी उपेक्षा नहीं करता; **ज्ञान करे**—समझ कर।

से....हबे—ये सब बातें कल होंगी; **आज....चललुम**—तो फिर आज चला।

विपिन। भाइ श्रीश, चुपचाप ये। एक मातालेर मातलामि देखे अन्य मातालेर नेशा छुटे याय। चन्द्रबाबुर उत्साहे तोमाके सुद्ध दमिये दियेछे।

श्रीश। ना हे, अनेक भाबबार कथा आछे। उत्साह कि सब समये बकाबकि करे। कखनो-वा एकेबारे निस्तब्ध हये थाके, सेइटेइ हल सांघातिक अवस्था।

विपिन। पूर्णबाबु, हठात् पालाच्छ ये।

पूर्ण। सभापतिमशायके रास्ताय धरते याच्छि—पथे येते येते यदि दैवात् आमार दुटो-एकटा कथाय कर्णपात करेन।

विपिन। ठिक उल्टो हबे। ताँर ये-क'टा कथा बाकि आछे सेगुलो तोमाके शोनाते शोनाते कोथाय याबार आछे से कथा भुलेइ याबेन।

[वनमालीर प्रवेश

वनमाली। भालो आछेन श्रीशबाबु? विपिनबाबु भालो तो? एइ-ये पूर्णबाबुओ आछेन देखछि। ता बेश हयेछे। आमि अनेक बले कये सेइ कुमारटुलिर पात्री दुटिके ठेकिये रेखेछि।

श्रीश। किन्तु आमादेर आर ठेकिये राखते पारबेन ना। आमरा एकटा गुरुतर किछु करे फेलब।

भाइ......ये—भाई श्रीश तुम तो चुप हो; **एक......याय**—एक नशाखोर का नशा देख कर दूसरे नशाखोर का नशा उतर जाता है; **चन्द्र......दियेछे**—चन्द्रबाबू के उत्साह ने तुम तक को हताश कर दिया है।

ना......आछे—नहीं जी, बहुत-सी बातें सोचने की हैं; **बकाबकि करे**—बकबक करता है; **सेइटेइ**—वही।

पालाच्छ ये—खिसके जा रहे हो जो।

धरते याच्छि—पकड़ने जा रहा हूँ; **पथे......येते**—रास्ता चलते-चलते।

ताँर......याबेन—उनकी जो बातें बाकी हैं उन्हें तुमको सुनाते सुनाते वे यह बात भी भूल जाएंगे कि कहाँ जाना है।

ता......हयेछे—यह तो बढ़िया हुआ; **बले कये**—कह सुन कर; **ठेकिये रेखेछि**—अटकाए रखा है।

पूर्ण। आपनारा बसुन श्रीशबाबु। आमार एकटा काज आछे।

विपिन। तार चेये आपनि बसुन पूर्णबाबु। आपनार काजटा आमरा दुजने मिले सेरे दिये आसछि।

पूर्ण। तार चेये तिनजने मिले साराइ तो भालो।

वनमाली। आपनारा व्यस्त हच्छेन देखछि। आच्छा, ता आर-एक समय आसब।

तृतीय दृश्य

चन्द्रबाबुर बाड़ि

चन्द्रमाधवबाबु, निर्मला

चन्द्रबाबु। निर्मल।

निर्मला। की मामा।

चन्द्रबाबु। निर्मल, आमार गलार बोतामटा खुँजे पाच्छि ने।

निर्मला। बोध हय ओइखानेइ कोथाओ आछे।

चन्द्रबाबु। (निश्चिन्तभावे) एकबार खुँजे देखो तो फेनि।

निर्मला। तुमि कोथाय की फेल आमि कि खुँजे बेर करते पारि।

चन्द्रबाबु। (मने एकटुखानि सन्देहेर सञ्चार हओयाय, स्निग्ध-

तार चेये—उसकी अपेक्षा; **मिले.....आसछि**—मिल कर पूरा कर आते हैं।

तार......भालो—तीनों आदमी मिल कर पूरा करें तो और भी अच्छा।

व्यस्त......देखछि—देख रहा हूँ, अस्थिर हो रहे हैं; **आच्छा......आसब**—अच्छा फिर किसी समय आऊंगा।

बोतामटा—बटन; **खुँजे......ने**—मिल नहीं रहा है।

बोध......आछे—शायद वहीं कहीं है।

एकबार......तो—एकबार खोज कर देखो तो; **फेनि**—एक मिष्टान्न (स्नेहपूर्ण संबोधन)।

तुमि......पारि—तुम कहाँ क्या पटक देते हो मैं क्या खोज कर निकाल सकती हूँ।

एकटुखानि—थोड़ा-सा; **हओयाय**—होने से;

कण्ठे) तुमिइ तो पार निर्मल। आमार समस्त त्रुटि सम्बन्धे एत धैर्य आर कार आछे।

निर्मलार रुद्ध अभिमान चन्द्रबाबुर स्नेहस्वरे अकस्मात् अश्रुजले विगलित हइबार उपक्रम करिल ; निःशब्दे संवरण करिबार चेष्टा करिते लागिल। ताहाके निरुत्तर देखिया चन्द्रमाधवबाबु निर्मलार काछे आसिलेन। निर्मलार मुख-खानि दुइ आङुल दिया तुलिया धरिया क्षणकाल देखिलेन

(मृदुहास्ये) निर्मल आकाशे एकटुखानि मालिन्य देखछि येन। की हयेछे बलो देखि।

निर्मला। (क्षुब्ध स्वरे) एतदिन परे आमाके तोमादेर चिर-कुमार सभा थेके विदाय दिच्छ केन। आमि की करेछि।

चन्द्रबाबु। (आश्चर्य हइया) चिरकुमार सभा थेके तोमाके विदाय? तोमार सङ्गे से सभार योग की।

निर्मला। दरजार आड़ाले थाकले बुझि योग थाके ना। अन्तत सेइ यतटुकु योग ताइ वा केन यावे।

चन्द्रबाबु। निर्मल, तुमि तो ए सभार काज करबे ना—यारा काज करबे तादेर सुविधार प्रति लक्ष रेखेइ—

निर्मला। आमि केन काज करब ना। तोमार भाग्ने ना हये

तुमिइ......पार—तुम्हीं तो सकती हो; **आर......आछे**—और किसमें है। **हइबार**—होने का; **ताहाके**—उसे; **काछे आसिलेन**—निकट आए; **दुइ......देखिलेन**—दो उँगलियों से उठा कर क्षण भर को देखा। **देखछि**—देख रहा हूँ; **येन**—मानो; **की......देखि**—क्या हुआ बताओ तो सही।

एतदिन......केन—इतने दिनों बाद अपनी चिरकुमार सभा से मुझे विदा क्यों कर रहे हो; **आमि......करेछि**—मैंने क्या किया है। **हइया**—हो कर। **दरजार......ना**—दरवाजे की ओट में रहने से शायद योग नहीं रहता; **अन्तत......याबे**—कम से कम वह जितना भी योग है वही क्यों जाएगा। **तुमि......ना**—तुम तो इस सभा का कार्य करोगी नहीं; **यारा......रेखेइ**—जो लोग काम करेंगे उनकी सुविधा के प्रति लक्ष रख कर ही। **आमि......ना**—मैं काम क्यों नहीं करूंगी; **भाग्ने**—भानजा; **ना हये**—

भाग्नी हये जन्मेछि बलेइ कि तोमादेर हितकार्ये योग दिते पारब ना। तबे आमाके एतदिन शिक्षा दिले केन। निजेर हाते आमार समस्त मनप्राण जागिये दिये शेषकाले काजेर पथ रोध करे दाओ की बले।

चन्द्रबाबु। निर्मल, एकसमये तो विवाह करे तोमाके संसारेर काजे प्रवृत्त हते हबे––चिरकुमार सभार काज––

निर्मला। विवाह आमि करब ना।

चन्द्रबाबु। तबे की करबे बलो।

निर्मला। देशेर काजे तोमार साहाय्य करब।

चन्द्रबाबु। आमरा तो संन्यासव्रत ग्रहण करते प्रस्तुत हयेछि।

निर्मला। भारतवर्षे कि केउ कखनो संन्यासिनी हयनि।

चन्द्रमाधवबाबु निरुत्तर हइया दाँड़ाइया रहिलेन

मामा, यदि कोनो मेये तोमादेर व्रत ग्रहणेर जन्ये अन्तरेर सङ्गे प्रस्तुत हय तबे प्रकाश्यभावे तोमादेर सभार मध्ये केन ताके ग्रहण करबे ना। आमि तोमादेर कौमार्य-सभार केन सभ्य ना हब।

चन्द्रबाबु। (द्विधाकुण्ठितभावे) अन्य याँरा सभ्य आछेन––

निर्मला। याँरा सभ्य आछेन, याँरा भारतवर्षेर हितव्रत नेबेन, याँरा संन्यासी हते याच्छेन, ताँरा कि एकजन व्रतधारिणी स्त्रीलोकके

न हो कर; **भाग्नी**—भानजी; **हये......ना**—हो कर जन्मी हूँ इसीलिए क्या तुमलोगों के कल्याण-कार्य में योग नहीं दे सकूंगी; **तबे......केन**—तो फिर मुझे इतने दिनों तक शिक्षा क्यों दी; **निजेर हाते**—अपने हाथों; **रोध......बले**—किसलिए रोक रहे हो।

तबे......बलो—तो फिर क्या करोगी, बताओ।

कि......कखनो—क्या कोई कभी।

दाँड़ाइया रहिलेन—खड़े रहे; **यदि......ना**—यदि कोई लड़की तुमलोगों के व्रत को ग्रहण करने के लिए हृदय से तैयार हो तब प्रकट रूप से अपनी सभा में उसे ग्रहण क्यों नहीं करोगे; **केन......हब**—सदस्य क्यों नहीं होऊंगी।

अन्य......आछेन—और जो सदस्य हैं।

नेबेन—लेंगे;

असंकोचे निजेर दले ग्रहण करते पारबेन ना। ता यदि हय ता हले ताँरा गृही हये घरे रुद्ध थाकुन, ताँदेर द्वारा कोनो काज हबे ना।

चन्द्रमाधवबाबु चुलगुलोर मध्ये घन घन पाँच आङुल चालाइया अत्यन्त उस्कोखुस्को करिया तुलिलेन। एमन समय हठात् ताँहार आस्तिनेर भितर हइते हारानो बोतामटा माटिते पड़िया गेल। निर्मला हासिते हासिते कुड़ाइया लइया चन्द्रमाधवबाबुर कामिजेर गलाय लागाइया दिल—चन्द्र-माधवबाबु ताहार कोनो खबर लइलेन ना—चुलेर मध्ये अङ्गुली चालना करिते करिते मस्तिष्क-कुलायेर चिन्तागुलिके विव्रत करिते लागिलेन

[निर्मलार प्रस्थान

[पूर्णबाबुर प्रवेश

पूर्ण। चन्द्रबाबु, से-कथाटा कि भेबे देखलेन। आमादेर सभाटि-के स्थानान्तर करा आमार विवेचनाय भालो हच्छे ना।

चन्द्रबाबु। आज आर-एकटि कथा उठेछे, सेटा पूर्णबाबु तोमार सङ्गे भालो करे आलोचना करते इच्छा करि। आमार एकटि भाग्नी आछेन बोध हय जान।

पूर्ण। (निरीहभावे) आपनार भाग्नी?

ता......ना—यदि ऐसा है तो वे गृही हो कर घर में बन्द रहें, उनके द्वारा कोई काम नहीं होगा।

चुलगुलोर मध्ये—बालों में; **घन घन**—बार बार; **उस्कोखुस्को....तुललेन**—बिल्कुल अस्तव्यस्त कर डाला; **ताँहार......गेल**—उनकी आस्तीन में से खोया हुआ बटन ज़मीन पर गिर पड़ा; **ताहार......ना**—उसका उन्हें कुछ पता नहीं चला; **कुलायेर**—घोंसले की।

से......देखलेन—वह बात क्या सोच कर देखी; **आमार......ना**—मेरे विचार से ठीक नहीं है।

आर......उठेछे—और एक बात उठी है; **तोमार......करि**—तुम्हारे साथ भली भाँति विचार करना चाहता हूँ; **आमार......जान**—मेरी एक भानजी हैं, शायद जानते हो।

आपनार भाग्नी—आपकी भानजी।

चन्द्रबाबु। हाँ, ताँर नाम निर्मला। आमादेर चिरकुमार सभार सङ्गे ताँर हृदयेर खुब योग आछे।

पूर्ण। (विस्मितभावे) बलेन की।

चन्द्रबाबु। आमार विश्वास, ताँर अनुराग एवं उत्साह आमादेर कारओ चेये कम नय।

पूर्ण। (उत्तेजितभावे) ए कथा शुनले आमादेर उत्साह बेड़े ओठे। स्त्रीलोक हये तिनि——

चन्द्रबाबु। आमिओ सेइ कथा भावछि, स्त्रीलोकेर सरल उत्साह पुरुषेर उत्साहे येन नूतन प्राण सञ्चार करते पारे——आमि निजेइ सेटा आज अनुभव करछि।

पूर्ण। (आवेगपूर्णभावे) आमिओ सेटा बेश अनुमान करते पारि।

चन्द्रबाबु। पूर्णबाबु, तोमारओ कि ओइ मत।

पूर्ण। की मत बलछेन।

चन्द्रबाबु। अर्थात्, यथार्थ अनुरागी स्त्रीलोक आमादेर कठिन कर्तव्येर बाधा ना हये यथार्थ सहाय हते पारेन।

पूर्ण। (नेपथ्येर प्रति लक्ष करिया उच्चकण्ठे) से-विषये आमार लेशमात्र सन्देह नेइ। स्त्रीजातिर अनुराग पुरुषेर अनुरागेर एकमात्र सजीव निर्भर——ताँदेर उत्साहे आमादेर उद्दीपना। पुरुषेर उत्साहके नवजात शिशुटिर मतो मानुष करे तुलते पारे केवल स्त्रीलोकेर उत्साह।

आमादेर......नय——हममें से किसी से भी कम नहीं है।

ए......ओठे——यह बात सुन कर तो हमारा उत्साह बढ़ जाता है; **हये**——हो कर; **तिनि**——वे।

आमिओ......भावछि——मैं भी वही बात सोच रहा हूँ; **निजेइ**——स्वयं ही; **सेटा**——उसे।

आमिओ......पारि——मैं भी उसका खूब अनुमान कर सकता हूँ।

तोमारओ......मत——तुम्हारा भी क्या वही मत है।

की......बलछेन——कौन-सा मत कह रहे हैं (किस मत की कह रहे हैं)।

हते पारेन——हो सकती हैं।

नेइ——नहीं है; **निर्भर**——आश्रय; **शिशुटिर मतो**——शिशु की भाँति।

[श्रीश ओ विपिनेर प्रवेश

श्रीश। ता तो पारे पूर्णबाबु—किन्तु सेइ उत्साहेर अभावेइ कि आज सभाय येते विलम्ब हच्छे।

चन्द्रबाबु। ना ना, देरि हबार कारण, आमार गलार बोतामटा किछुतेइ खुँजे पाच्छि ने।

श्रीश। गलाय तो एकटा बोताम लागानो रयेछे देखते पाच्छि—आरओ कि प्रयोजन आछे। यदि-वा थाके, आर छिद्र पाबेन कोथा।

चन्द्रबाबु। (गलाय हात दिया) ताइ तो! आमरा सकलेइ तो उपस्थित आछि, एखन सेइ कथाटार आलोचना हये याओया भालो, की बल पूर्णबाबु।

पूर्ण। से बेश कथा, किन्तु ए दिके देरि हये याच्छे ना?

चन्द्रबाबु। ना, एखनओ समय आछे। श्रीशबाबु, तोमरा एकटु बोसो-ना, कथाटा एकटु स्थिर हये भेबे देखबार योग्य। आमार एकटि भाग्नी आछेन, ताँर नाम निर्मला—

पूर्ण हठात् काशिया लाल हइया उठिल

आमादेर कुमार सभार समस्त उद्देश्येर सङ्गे ताँर एकान्त मनेर मिल।

ता......पारे—सो तो कर सकता है; **सभाय......हच्छे**—सभा में जाने में विलम्ब हो रहा है।

देरि हबार—देरी होने का।

लागानो......पाच्छि—लगा हुआ देख पा रहा हूँ; **आरओ......आछे**—और की भी ज़रूरत है क्या; **यदि......कोथा**—अगर हो भी तो और छिद्र कहाँ पाएंगे।

हात दिया—हाथ फेर कर; **ताइ तो**—वही तो; **हये......भालो**—हो जाना अच्छा है।

से......ना—यह तो बढ़िया बात है, लेकिन इधर देरी नहीं हो रही है।

एखनओ......आछे—अब भी समय है; **तोमरा......ना**—तुमलोग ज़रा बैठो न; **कथाटा......योग्य**—बात ज़रा स्थिर हो कर सोचने लायक है।

काशिया—खाँस कर; **हइया उठिल**—हो उठा।

समस्त......मिल—समस्त उद्देश्यों के साथ उनका मन पूर्ण रूप से एक है।

श्रीश एवं विपिन अविचलित निरुत्सुकभावे शुनिया याइते लागिल

ए कथा आमि निश्चय बलते पारि, ताँर उत्साह आमादेर कारओ चेये कम नय।

श्रीश ओ विपिनेर कांछ हइते किछुमात्र साड़ा ना पाइया चन्द्रबाबुओ मने मने एकटु उत्तेजित हइतेछिलेन

ए कथा आमि भालोरूप विवेचना करे देखे स्थिर करेछि, स्त्रीलोकेर उत्साह पुरुषेर समस्त बृहत् कार्येर महत् अवलम्बन। की बल पूर्णबाबु।

पूर्ण। (निस्तेजभावे) ता तो बटेइ।

चन्द्रबाबु। (हठात् सवेगे) निर्मला यदि कुमार सभार सभ्य हवार जन्य प्रार्थी थाके, ता हले ताके आमरा सभ्य ना करब केन।

पूर्ण। बलेन की चन्द्रबाबु।

श्रीश। आमरा कखनो कल्पना करिनि ये, कोनो स्त्रीलोक आमादेर सभार सभ्य हते इच्छा प्रकाश करबेन, सुतरां ए सम्बन्धे आमादेर कोनो नियम नेइ—

विपिन। निषेधओ नेइ।

श्रीश। स्पष्ट निषेध ना थाकते पारे, किन्तु आमादेर सभार ये सकल उद्देश्य ता स्त्रीलोकेर द्वारा साधित हवार नय।

शुनिया......लागिल—सुनने लगे। **बलते पारि**—कह सकता हूँ।

काछ हइते—निकट से; **किछुमात्र......पाइया**—कोई भी प्रतिक्रिया न देख; **हइतेछिलेन**—हो रहे थे।

ए......करेछि—यह बात मैंने अच्छी तरह सोच कर देखी है और निश्चय किया है। **ता......बटेइ**—सो तो है ही।

थाके—हो; **ता......केन**—तो उसे हमलोग सदस्य क्यों नहीं बनाएंगे।

आमरा......करबेन—हमलोगों ने कभी कल्पना नहीं की कि कोई स्त्री हमलोगों की सभा का सदस्य होने की इच्छा प्रकट करेंगी; **ए सम्बन्धे**—इस संबंध में; **आमादेर......नेइ**—हमलोगों का कोई नियम नहीं है।

निषेधओ नेइ—निषेध भी नहीं है।

ना......पारे—नहीं रह सकता है (न सही); **साधित.....नय**—नहीं साधे जा सकते।

विपिन। आमादेर सभार उद्देश्य संकीर्ण नय, एवं बृहत् उद्देश्य साधन करते गेले विचित्र श्रेणीर ओ विचित्र शक्तिर लोकेर विचित्र चेष्टाय प्रवृत्त हओया चाइ। स्वदेशेर हितसाधन एकजन स्त्रीलोक येरकम पारबेन तुमि सेरकम पारबे ना, एवं तुमि येरकम पारबे एकजन स्त्रीलोक सेरकम पारबेन ना—अतएव सभार उद्देश्यके सर्वाङ्गसम्पूर्ण-भावे साधन करते गेले तोमारओ येमन दरकार स्त्रीसभ्येरओ तेमनि दरकार।

श्रीश। यारा काज करते चाय ना, ताराइ उद्देश्यके फलाओ करे तोले। यथार्थ काज करते गेलेइ लक्ष्यके सीमाबद्ध करते हय। आमादेर सभार उद्देश्यके यत बृहत् मने करे तुमि बेश निश्चिन्त आछ, आमि तत बृहत् मने करिने।

विपिन। आमादेर सभार कार्यक्षेत्र अन्तत एतटा बृहत् ये तोमाके ग्रहण करेछे बले आमाके परित्याग करते हयनि, एवं आमाके ग्रहण करेछे बले तोमाके परित्याग करते हयनि। तोमार आमार उभयेरइ यदि एखाने स्थान हये थाके, आमादेर दुजनेरइ यदि एखाने उपयोगिता ओ आवश्यकता थाके, ताहले आरओ एकजन भिन्न प्रकृतिर लोकेर एखाने स्थान हओया एमन की कठिन।

श्रीश। उदारता अति उत्तम जिनिस, से आमि नीतिशास्त्रे पड़ेछि। आमि तोमार सेइ उदारताके नष्ट करते चाइ ने, विभक्त

साधन......गेले—पूरा करने के लिए; **विचित्र......चाइ**—भिन्न भिन्न प्रचेष्टाओं में प्रवृत्त होना चाहिए; **येरकम......ना**—जिस प्रकार कर सकेंगी तुम उस तरह नहीं कर सकोगे; **तोमारओ......दरकार**—तुम्हारी जिस प्रकार ज़रूरत है उसी प्रकार स्त्री सदस्य की भी ज़रूरत है।

यारा......तोले—जो लोग काम करना नहीं चाहते वे ही उद्देश्य को बढ़ा चढ़ा कर रखते हैं; **मने......ने**—नहीं समझता।

अन्तत—कम से कम; **ये......नि**—कि तुम्हें ग्रहण किया है इसलिए मेरा परित्याग नहीं करना पड़ा है; **एखाने......थाके**—स्थान रहे; **ताहले**—तो फिर; **आरओ**—और भी; **हओया**—होना; **एमन......कठिन**—ऐसा क्या कठिन है।

जिनिस—वस्तु; **पड़ेछि**—पढ़ा है; **करते......ने**—करना नहीं चाहता;

करते चाइ मात्र। स्त्रीलोकेरा ये काज करते पारेन तार जन्ये ताँरा स्वतन्त्र सभा करुन, आमरा तार सभ्य हबार प्रार्थी हब ना, एवं आमादेर सभाओ आमादेरइ थाक्। नइले आमरा परस्परेर काजेर बाधा हब मात्र। माथाटा चिन्ता करे मरुक, उदरटा परिपाक करते थाक्—पाकयन्त्रटि माथार मध्ये एवं मस्तिष्कटि पेटेर मध्ये प्रवेश-चेष्टा ना करलेइ बस्।

विपिन। किन्तु ताइ बले माथाटा छिन्न करे एक जायगाय एवं पाकयन्त्रटाके आर-एक जायगाय राखलेओ काजेर सुविधा हय ना।

श्रीश। (अत्यन्त विरक्त हइया) उपमा तो आर युक्ति नय ये सेटाके खण्डन करलेइ आमार कथाटाके खण्डन करा हल। उपमा केवल खानिकदूर पर्यन्त खाटे।

विपिन। अर्थात्, यतटुकु केवल तोमार युक्तिर पक्षे खाटे।

पूर्ण। (अत्यन्त विमना हइया) विपिनबाबु, आमार मत एइ ये, आमादेर एइ सकल काजे मेयेरा अग्रसर हये एले ताते ताँदेर माधुर्य नष्ट हय।

चन्द्रबाबु। (एकखाना बइ चक्षेर अत्यन्त काछे धरिया) महत् कार्ये ये माधुर्य नष्ट हय से माधुर्य सयत्ने रक्षा करबार योग्य नय।

ताँरा—वे; **करुन**—करें; **आमरा......ना**—हमलोग उसका सदस्य होने के लिए प्रार्थी नहीं होंगे; **एवं......थाक्**—और हमलोगों की सभा भी हमारी बनी रहे; **नइले**—नहीं तो; **मरुक**—मरे; **करते थाक्**—करता रहे; **ना......बस्**—न करना ही यथेष्ट है।

किन्तु......ना—लेकिन इसीलिए सिर काट कर एक जगह और पाक-यन्त्र को दूसरी जगह रखने से भी काम में सुविधा नहीं होगी।

विरक्त हइया—असन्तुष्ट हो कर; **उपमा......हल**—उपमा तो कोई युक्ति है नहीं कि उसका खण्डन करने से मेरी बात का भी खण्डन हो गया; **खानिकदूर**—कुछ दूर; **खाटे**—लागू होती है।

यतटुकु—जितना।

मेयेरा......हय—नारियाँ अग्रसर हों तो उससे उनका माधुर्य नष्ट होता है।

बइ—किताब; **महत्......नय**—महान् कार्य में जो माधुर्य नष्ट होता है वह माधुर्य यत्नपूर्वक रक्षा करने योग्य नहीं है।

श्रीश। ना चन्द्रबाबु, आमि ओ-सब सौन्दर्य माधुर्येर कथा आनछिइने। सैन्यदेर मतो एक चाले आमादेर चलते हबे, अनभ्यास वा स्वाभाविक दुर्बलता वशत याँदेर पिछिये पड़बार सम्भावना आछे ताँदेर निये भारग्रस्त हले आमादेर समस्तइ व्यर्थ हबे।

एमन समय निर्मला अकुण्ठित मर्यादार सहित गृहेर मध्ये प्रवेश करिया नमस्कार करिया दाँड़ाइल। हठात् सकलेइ स्तम्भित हइया गेल। अश्रुपूर्ण क्षोभे ताहार कण्ठस्वर आर्द्र

निर्मला। आपनादेर की उद्देश्य एवं आपनारा देशेर काजे कतदूर पर्यन्त येते प्रस्तुत आछेन ता आमि किछुइ जानिने, किन्तु आमि आमार मामाके जानि—तिनि ये पथे यात्रा करे चलेछेन आपनारा केन आमाके से पथे ताँर अनुसरण करते बाधा दिच्छेन।

श्रीश निरुत्तर, पूर्ण कुण्ठित अनुतप्त, विपिन प्रशान्त गम्भीर, चन्द्रबाबु सुगभीर चिन्तामग्न

निर्मला। (पूर्ण एवं श्रीशेर प्रति अश्रुजलस्नात कटाक्षपात करिया) आमि यदि काज करते चाइ, यिनि आमार आशैशवेर गुरु, मृत्यु पर्यन्त यदि सकल शुभचेष्टाय ताँर अनुवर्तिनी हते इच्छा करि, आपनारा केवल तर्क करे आमार अयोग्यता प्रमाण करते चेष्टा करेन केन। आपनारा आमाके की जानेन।

श्रीश स्तब्ध। पूर्ण घर्माक्त

निर्मला। आमि आपनादेर कुमार-सभा वा अन्य कोनो सभा जानि ने, किन्तु याँर शिक्षाय आमि मानुष हयेछि तिनि यखन कुमार-

---

ओ-सब—वह सव; **कथा......ने**—चर्चा नहीं छेड़ता; **सैन्यदेर मतो**—सैनिकों की तरह; **याँदेर......आछे**—जिनके पिछड़ जाने की संभावना है; **ताँदेर......हबे**—उन्हें ले कर भारग्रस्त होने से हमलोगों का सभी कुछ व्यर्थ हो जाएगा। **दाँड़ाइल**—खड़ी हो गई।

कतदूर.....ने—कितनी दूर तक जाने को तैयार हैं सो मैं कुछ नहीं जानती।

यिनि......गुरु—शैशवकाल से ही जो मेरे गुरु हैं; **आपनारा......जानेन**—आपलोग मुझे क्या जानते हैं।

जानि ने—नहीं जानती; **किन्तु......ना**—लेकिन जिनकी शिक्षा से मैं बड़ी हुई हूँ वे जब कुमार-सभा का अवलंबन करके ही अपने जीवन के समस्त

सभाके अवलम्बन करेइ ताँर जीवनेर समस्त उद्देश्य-साधने प्रवृत्त हयेछेन, तखन एइ कुमार-सभा थेके आपनारा आमाके दूरे राखते पारबेन ना। (चन्द्रबाबुर दिके फिरिया) तुमि यदि बल आमि तोमार काजेर योग्य नइ, ता हले आमि विदाय हब, किन्तु एँरा आमाके की जानेन। एँरा केन आमाके तोमार अनुष्ठान थेके विच्छिन्न करबार जन्ये सकले मिले तर्क करछेन।

श्रीश। (विनीत मृदुस्वरे) माप करबेन, आमि आपनार सम्बन्धे तर्क करि नि, आमि साधारणत स्त्रीजाति सम्बन्धेइ बलछिलुम।

निर्मला। आमि स्त्रीजाति पुरुषजातिर प्रभेद निये कोनो विचार करते चाइ ने—आमि निजेर अन्तःकरण जानि एवं याँर उन्नत दृष्टान्तके आश्रय करे रयेछि ताँर अन्तःकरण जानि, काजे प्रवृत्त हते एर बेशि आमार आर किछु जानबार दरकार नेइ।

चन्द्रबाबु निजेर दक्षिण करतल चोखेर अत्यन्त काछे लइया निरीक्षण करिया देखिते लागिलेन। पूर्ण खुब चमत्कार करिया एकटा किछु बलिबार इच्छा करिल, किन्तु ताहार मुख दिया कोनो कथाइ बाहिर हइल ना

पूर्ण। (मने मने अनेक आवृत्ति करिया) देवी, एइ पङ्किल पृथिवीर काजे केन आपनार पवित्र दुइखानि हस्त प्रयोग करते चाच्छेन।

उद्देश्यों की साधना में प्रवृत्त हुए हैं तब इस कुमार-सभा से आपलोग मुझे दूर नहीं रख सकते; **तुमि......हब**—तुम यदि कहो कि मैं तुम्हारे कार्य के योग्य नहीं हूँ तो मैं विदा ले लूंगी; **एँरा......जानेन**—ये लोग मुझे क्या जानते हैं।

माप करबेन—माफ करेंगी; **आमि......ने**—मैंने आपके संबंध में कोई तर्क नहीं किया; **काजे......नेइ**—कार्य में प्रवृत्त होने के लिए इससे अधिक जानने की मुझे आवश्यकता नहीं।

पूर्ण......ना—पूर्ण की इच्छा थी कि खूब चमत्कार-पूर्ण ढंग से कुछ कहे, लेकिन उसके मुख से कोई बात ही न निकली।

चाच्छेन—चाह रही हैं।

कथाटा मने येमन लागितेछिल मुखे तेमन शोनाइल ना—पूर्ण बलियाइ बुझिते पारिल, कथाटा गद्येर मध्ये पद्येर मतो किछु येन बाड़ाबाड़ि हइया पड़िल। लज्जाय ताहार कान लाल हइया उठिल

विपिन। (स्वाभाविक सुगम्भीर शान्तस्वरे) पृथिवी यत बेशि पङ्किल पृथिवीर संशोधनकार्य तत बेशि पवित्र।

श्रीश। सभार अधिवेशने स्त्रीसभ्य लओया सम्बन्धे नियम मतो प्रस्ताव उत्थापन करे या स्थिर हय आपनाके जानाब।

निर्मला एक मुहूर्त अपेक्षा ना करिया निःशब्दे चलिया याइबार उपक्रम करिल]

चन्द्र। (हठात्) फेनि, आमार सेइ गलार बोतामटा।

निर्मला। (सलज्ज हासिया मृदुकण्ठे) गलातेइ आछे।

चन्द्र। (गलाय हात दिया) हाँ हाँ, आछे बटे।

तिन छात्रेर दिके चाहिया हासिलेन

चतुर्थ दृश्य

अक्षयेर बासा

नृपबाला ओ नीरबाला

नृपबाला। आजकाल तुइ माझे माझे केन अमन गम्भीर हच्छिस बल् तो नीरु।

कथाटा......ना—बात मन में जैसी लग रही थी सुनने में वैसी नहीं लगी; **पूर्ण......पड़िल**—पूर्ण कहते ही समझ गया कि गद्य में पद्य की भाँति कुछ अत्युक्ति हो गई; **लज्जाय......उठिल**—लज्जा से उसके कान लाल हो उठे।

यत बेशि—जितनी अधिक।

लओया सम्बन्धे—लेने के संबंध में; **नियममत......जानाब**—नियमानुसार प्रस्ताव रख कर जो तय होगा आपको सूचित करूँगा।

अपेक्षा......करिया—इन्तजार न करके; **चलिया......करिल**—चले जाने का उपक्रम किया। **गलातेइ आछे**—गले में ही है।

चाहिया—देख कर; **हासिलेन**—हँसे।

तुइ—तू; **माझे माझे**—बीच-बीच में; **अमन**—ऐसी; **हच्छिस**—होती है; **बल् तो**—बता तो सही।

नीरबाला। आमादेर बाड़िर यत किछु गाम्भीर्य सब बुझि तोर एकलार। आमार खुशि आमि गम्भीर हब।

नृपबाला। तुइ की भावछिस आमि बेश जानि।

नीरबाला। तोर अत आन्दाज करबार दरकार की भाइ। एखन तोर निजेर भाबना भाबबार समय हयेछे।

नृपबाला। (नीरर गला जड़ाइया) तुइ भावछिस, मागो मा, आमरा की जञ्जाल। आमादेर विदाय करे दितेओ एत भाबना, एत झंझाट।

नीरबाला। ता, आमरा तो भाइ फेले देबार जिनिस नय ये अमनि छेड़े दिलेइ हल। आमादेर जन्ये ये एतटा हाङ्गाम हच्छे से तो गौरवेर कथा। कुमारसम्भवे तो पड़ेछिस, गौरीर बियेर जन्य एकटि आस्त देवता पुड़े छाइ हये गेल। यदि कोनो कविर काने ओठे ताहले आमादेर विवाहेर एकटा वर्णना बेरिये याबे।

नृपबाला। ना भाइ, आमार भारि लज्जा करछे।

नीरबाला। आर आमार बुझि लज्जा करछे ना? आमि बुझि बेहाया? किन्तु की करबि बल्। इस्कुले येदिन प्राइज निते गिये-

---

यत-किछु—जितना भी; **सब......एकलार**—सब शायद एक तेरा ही है।

तुइ......जानि—तू क्या सोचती है मैं अच्छी तरह जानती हूँ।

तोर......भाइ—तुझे इतना अन्दाज (अटकल) करने की जरूरत क्या है भाई; **एखन......हयेछे**—अब तुझे अपनी चिन्ता करने का समय आ गया है।

जड़ाइया—लिपट कर; **तुइ भावछिस**—तू सोच रही है; **आमादेर...... झंझाट**—हमलोगों को विदा कर देने में भी इतनी चिन्ता, इतना झंझट है।

ता......हल—तो भई, हमलोग कोई फेंक देने की वस्तु तो हैं नहीं जो योंही छोड़ देने से ही हो गया; **आमादेर......कथा**—हमलोगों के लिए जो इतना हंगामा हो रहा है वह तो गौरव की बात है; **पड़ेछिस**—पढ़ा है; **बियेर जन्य**—विवाह के लिए; **एकटि......गेल**—एक साबूत देवता जल कर राख हो गया; **यदि......याबे**—यदि किसी कवि के कान में पहुँचे तो हमलोगों के विवाह का एक वर्णन प्रकाशित हो जाएगा।

आमार......करछे—मुझे बड़ी लज्जा लगती है।

बेहाया—बेहया; **किन्तु......बल्**—लेकिन करेगी क्या बोल; **इस्कुले......**

छिलुम लज्जा करेछिल, आबार तार पर बछरेओ प्राइज नेबार जन्ये रात जेगे पड़ा मुखस्थ करेछिलेम। लज्जाओ करे, प्राइजओ छाड़िने, आमार एइ स्वभाव।

नृपबाला। आच्छा नीरु, एबारे ये प्राइजटार कथा चलछे सेटार जन्ये तुइ कि खुब व्यस्त हयेछिस।

नीरबाला। कोन्टा बल् देखि। चिरकुमार-सभार दुटो सभ्य?

नृपबाला। येइ होक ना केन, तुइ तो बुझते पारछिस।

नीरबाला। ता भाइ, सत्यि कथा वलब? (नृपर गला जड़ाइया काने काने) शुनेछि कुमार-सभार दुटि सभ्येर मध्ये खुब भाव, आमरा यदि दुजने दुइ बन्धुर हाते पड़ि ता हले बिये हयेओ आमादेर छाड़ा-छाड़ि हबे ना—नइले आमरा के कोथाय चले याब ठिक नेइ। ताइ तो सेइ युगल देवतार जन्ये एत पुजोर आयोजन करछि भाइ। जोड़हस्ते मने मने बलछि, हे कुमार-सभार अश्विनीकुमारयुगल, आमादेर दुटि बोनके एकबोँटार दुइ फुलेर मतो तोमरा एकसङ्गे ग्रहण करो।

विरहसम्भावनार उल्लेखमात्रे दुइ भगिनी परस्परके जड़ाइया धरिल एवं नृप कोनोमते चोखेर जल सामलाइते पारिल ना

करेछिल—मैं जिस दिन स्कूल में प्राइज़ लेने गई थी लज्जा मालूम हो रही थी; **आबार......करेछिलेम**—फिर भी उसके बाद वाले वर्ष भी प्राइज़ लेने के लिए रात में जग कर पाठ कंठस्थ किया था; **लज्जाओ.....स्वभाव**—लज्जा भी लगती है, प्राइज़ भी नहीं छोड़ पाती, यही मेरा स्वभाव है।

एबारे......हयेछिस्—इस बार जिस प्राइज़ की बात चल रही है उसके लिए तू क्या खूब अस्थिर हो उठी है।

कोन्टा......देखि—कौन-सा, बता तो सही; **दुटो सभ्य**—दो सदस्य।

येइ......पारछिस—जो भी क्यों न हो, तू समझ तो रही है।

सत्यि......बलब—सच्ची बात कहूँ; **भाव**—स्नेह, प्रीति; **हाते पड़ि**—हाथ पड़ें; **बिये......ना**—विवाह होने पर भी हमलोग अलग-अलग नहीं होंगी; **नइले......नेइ**—नहीं तो हममें से कौन कहाँ चली जाएगी, ठीक नहीं; **ताइ तो**—इसीलिए तो; **बोनके**—बहनों को; **एकबोँटार**—एक वृन्त के; **दुइ......मतो**—दो फूलों की भाँति; **तोमरा**—तुमलोग।

कोनोमते—किसी भी तरह; **सामलाइते......ना**—संभाल न सकी।

नृपबाला। आच्छा नीरु, मेजदिदिके केमन करे छेड़े याबि बल देखि। आमरा दुजने गेले ओँर आर के थाकबे।

नीरबाला। से कथा अनेक भेबेछि। थाकते यदि देन ता हले कि छेड़े याइ। भाइ, ओँर तो स्वामी नेइ, आमादेरओ ना-हय स्वामी ना रइल। मेजदिदिर चेये बेशि सुखे आमादेर दरकार की।

[पुरुषवेशधारिणी शैलबालार प्रवेश

नीरबाला। (टेबिलेर उपरिस्थित थाला हइते एकटि फुलेर माला तुलिया लइया शैलबालार गलाय पराइया) आमरा दुइ स्वयम्वरा तोमाके आमादेर पतिरूपे वरण करलुम।

शैलबालाके प्रणाम करिल

शैलबाला। ओ आबार की।

नीरबाला। भय नेइ भाइ, आमरा दुइ सतिने तोमाके निये झगड़ा करब ना। यदि करि, सेजदिदि आमार सङ्गे पारबे ना—आमि एकलाइ मिटिये निते पारब, तोमाके कष्ट पेते हबे ना। ना, सत्यि बलछि मेजदिदि, तोमार काछे येमन आदरे आमरा आछि एमन आदर कि आर कोथाओ पाब। केन तबे आमादेर परेर गलाय दिते चास।

मेजदिदिके......देखि—मंझली दीदी को कैसे छोड़ कर जाएगी बता तो सही; **आमरा......थाकबे**—हम दोनों के जाने पर उनका और कौन रहेगा।

से......भेबेछि—वह बात मैंने बहुत सोची है; **थाकते......याइ**—अगर रहने दें तो क्या छोड़ कर जाती; **ओर.....नेइ**—उनके तो पति नहीं हैं; **आमादेरओ ......रइल**—हमलोगों का भी पति न हो तो न सही; **मेजदिदिर......की**—मंझली दीदी से अधिक सुख की हमें ज़रूरत क्या है।

तुलिया लइया—उठा कर; **गलाय पराइया**—गले में पहना कर।

ओ......कि—अरे, अब यह क्या (करती हो)।

नेइ—नहीं है; **आमरा......ना**—हम दो सौत तुमको ले कर झगड़ा नहीं करेंगी; **यदि......ना**—अगर करें तो छोटी दीदी मुझ से पार नहीं पाएगी; **आमि......पारब**—मैं अकेली ही निबट लूंगी; **तोमाके......ना**—तुम्हें कष्ट करना नहीं होगा; **तोमार......पाब**—हम तुम्हारे पास जैसे दुलार से हैं वैसा दुलार क्या और कहीं भी पाएंगी; **केन......चास**—फिर क्यों हमलोगों को दूसरे के गले मढ़ना चाहती है।

नृपर दुइ चक्षु बाहिया झर् झर् करिया जल पड़िते लागिल

शैलबाला। (ताहार चोख मुछिया दिया) ओ की, ओ नृप, छि! तोदेर किसे सुख ता कि तोरा जानिस। आमाके निये यदि तोदेर जीवन सार्थक हत ता हले कि आमि आर कारओ हाते तोदेर दिते पारतुम।

[रसिकेर प्रवेश

रसिक। भाइ, आमार मतो असभ्यटाके तोरा सभ्य करलि––आज तो सभा एखाने बसबे, की रकम करे चलब शिखिये दे।

नीरबाला। फेर पुरोनो ठाट्टा? तोमार ओइ सभ्य-असभ्यर कथाटा एइ परशु थेके बलछ।

रसिक। याके जन्म देओया याय तार प्रति ममता हय ना? ठाट्टा एकबार मुख थेके बेर हलेइ कि राजपुतेर कन्यार मतो ताके गला टिपे मेरे फेलते हबे। हयेछे की––यतदिन चिरकुमार-सभा टिँके थाकबे एइ ठाट्टा तोदेर दुवेला शुनते हबे।

नीरबाला। तबे ओटाके तो एकटु सकाल सकाल सेरे फेलते हच्छे। मेजदिदि भाइ, आर दयामाया नय––रसिकदादार रसिकताके

ताहार......दिया—उसकी आँखें पोंछ कर; **ओ......नृप**—अरे अरे नृप यह क्या; **तोदेर......जानिस**—तुमलोगों को किसमें सुख है यह तुमलोग क्या जानती हो; **आमाके......पारतुम**—मुझे ले कर यदि तुमलोगों का जीवन सार्थक होता तो क्या तुमलोगों को और किसीके हाथों सौंप सकती।

आमार......दे—मेरे जैसे असभ्य को तो तुम सबों ने सदस्य बनाया, आज तो यहीं सभा जमेगी, किस तरह चलूँ (व्यवहार करूँ) सिखा दो।

फेर......ठाट्टा—फिर (वही) पुराना मज़ाक; **परशु......बलछ**—परसों से कह रहे हो।

याके......ना—जिसे जन्म दिया जाता है उसके प्रति क्या ममता नहीं होती; **ठाट्टा......हबे**—मज़ाक को क्या एकबार मुँह से निकलते ही राजपूत कन्या की भाँति गला घोंट कर मार डालना होगा; **हयेछे की**—हुआ क्या है; **यतदिन**—जितने दिन; **टिँके थाकबे**—टिकी रहेगी; **एइ......हबे**—यह मज़ाक तुमलोगों को दोनों वेला (समय) सुनना होगा।

तबे......हच्छे—तब तो उसे जरा जल्दी निपटा देना होगा; **आर**—और;

पुरोनो हते देब ना, चिरकुमार-सभार चिरत्व आमरा अचिरे घुचिये देब, तबेइ तो आमादेर विश्वविजयिनी नारी नाम सार्थक हबे। की रकम करे आक्रमण करते हबे एकटा किछु प्ल्यान ठाउरेछिस ?

शैलबाला। किछुइ ना। क्षेत्रे उपस्थित हये यखन येरकम माथाय आसे।

नीरबाला। आमाके यखन दरकार हबे रणभेरी ध्वनित करलेइ आमि हाजिर हब। 'आमि कि डराइ सखी कुमार-सभारे। नाहि कि बल ए भुजमृणाले ?'

[अक्षयेर प्रवेश

अक्षय। अद्यकार सभाय विदुषीमण्डलीके एकटि ऐतिहासिक प्रश्न जिज्ञासा करते इच्छा करि।

शैलबाला। प्रस्तुत आछि।

अक्षय। बलो देखि ये दुटि डाले दाँड़ियेछिलेन सेइ दुटि डाल काटते चेयेछिलेन के।

नृपबाला। आमि जानि मुखुज्येमशाय, कालिदास।

अक्षय। ना, आरओ एकजन बड़ोलोक। श्री अक्षयकुमार मुखोपाध्याय।

नय—नहीं; **पुरोनो......ना**—पुराना नहीं होने देंगी; **आमरा......देब**—हमलोग शीघ्र ही मिटा देंगी; **तबेइ तो**—तभी तो। **प्ल्यान**—प्लैन; **ठाउरेछिस**—तय किया है।

किछुइ ना—कुछ भी नहीं; **हये**—हो कर; **यखन......आसे**—जब जैसा दिमाग में आए।

आमाके......हबे—मेरी जब ज़रूरत होगी; **करलेइ**—करते ही; **कि डराइ**—क्या डरती हूँ; **सभारे**—सभा से; **नाहि......बल**—क्या बल नहीं है।

अद्यकार—आज की; **सभाय**—सभा में; **प्रश्न......करि**—प्रश्न पूछना चाहता हूँ।

बलो......के—बताओ तो सही जिन दो डालियों पर वे खड़े थे उन्हीं दो डालियों को कौन काटना चाहते थे।

आमि जानि—मैं जानती हूँ।

आरओ—और भी।

नीरबाला। डाल दुटि के।

अक्षय। (वामे नीरके टानिया) एइ एकटि (दक्षिणे नृपके टानिया आनिया) एइ आर-एकटि।

नीरबाला। आर, कुड़ुल बुझि आज आसछे।

अक्षय। आसछे केन, एसेछे बललेओ अत्युक्ति हय ना। ओइ-ये सिँड़िते पायेर शब्द शोना याच्छे।

दौड़ दौड़। शैल पालाइबार समय रसिकदादाके टानिया लइया गेल। चुड़ि-बालार झंकार एवं त्रस्त पदपल्लव-कयेकटिर द्रुतपतनशब्द सम्पूर्ण ना मिलाइतेइ श्रीश ओ विपिनेर प्रवेश

अक्षय। पूर्णबाबु एलेन ना ये।

श्रीश। चन्द्रबाबुर बासाय ताँर सङ्गे देखा हयेछिल, किन्तु हठात् ताँर शरीरटा खाराप हयेछे बले आज आर आसते पारलेन ना।

अक्षय। (पथेर दिके चाहिया) एकटु बसुन—आमि चन्द्र-बाबुर अपेक्षाय द्वारेर काछे गिये दाँड़ाइ। तिनि अन्धमानुष, कोथाय येते कोथाय गिये पड़बेन तार ठिक नेइ—काछाकाछि एमन स्थानओ आछे येखाने कुमार-सभार अधिवेशन कोनोमतेइ प्रार्थनीय नय।

अक्षयेर प्रस्थान। अक्षय चलिया गेले घरटि श्रीश भालो करिया देखिया लइल। घरे दुटि दीप ज्वलितेछे। सेइ दुटिके

आर......आसछे—और कुल्हाड़ा शायद आज आ रहा है।

आसछे......ना—आ रहा है क्यों, आ गया है कहने में भी अत्युक्ति नहीं होगी; **ओइ......याच्छे**—वह सीढ़ी पर पैरों का शब्द सुनाई पड़ रहा है।

पालाइबार समय—भागने के समय; **मिलाइतेइ**—विलीन होते ही।

पूर्ण......ये—अच्छा, पूर्णबाबू नहीं आए।

चन्द्र......ना—चन्द्रबाबू के घर उनसे भेंट हुई थी लेकिन अकस्मात् उनका शरीर खराब (अस्वस्थ) हो गया है इसलिए आज अब नहीं आ सके।

चाहिया—देख कर; **एकटु बसुन**—ज़रा बैठिए; **कोथाय......नेइ**—कहाँ जाते कहाँ जा पड़ेंगे इसका ठीक नहीं; **काछाकाछि......नय**—पास में ऐसे भी स्थान हैं जहाँ कुमार-सभा का आधिवेशन किसी भी प्रकार प्रार्थनीय नहीं है।

चलिया गेले—चले जाने पर; **देखिया लइल**—देख लिया।

वेष्टन करिया फिरोज रङेर रेशमेर अवगुण्ठन। सेइ आवरण
भेद करिया घरेर आलोटि मृदु एवं रङ्गिन हइया उठियाछे।
टेबिलेर माझखाने फुलदानिते फुल साजानो

विपिन। (ईषत् हासिया) या बल भाइ, ए घरटि चिरकुमार-सभार उपयुक्त नय।

श्रीश। (चकित हइया) केन नय।

विपिन। घरेर सज्जागुलि तोमार नवीन संन्यासीदेर पक्षेओ येन बेशि बोध हच्छे।

श्रीश। आमार संन्यासधर्मेर पक्षे बेशि किछु हते पारे ना।

विपिन। केवल नारी छाड़ा।

श्रीश। हाँ, ओइ एकटिमात्र।

अन्य दिनेर मतो कथाटाय तेमन जोर पौँछिल ना

विपिन। देयालेर छवि एवं अन्यान्य पाँचरकमे ए घरटिते सेइ नारी-जातिर अनेकगुलि परिचय पाओया याय येन।

श्रीश। संसारे नारीजातिर परिचय तो सर्वत्रइ आछे।

विपिन। ता तो बटेइ। कविदेर कथा यदि विश्वास करा याय ताहले चाँदे फुले लताय पाताय कोनोखानेइ नारीजातिर परिचय थेके हतभाग्य पुरुषमानुषेर निष्कृति पाबार जो नेइ।

या बल—जो कहो (कुछ भी कहो)।

केन नय—क्यों नहीं है।

तोमार......हच्छे—तुम्हारे नवीन संन्यासियों के लिए भी मानो अधिक मालूम दे रही है।

आमार......ना—मेरे संन्यास धर्म के लिए कुछ भी अधिक नहीं हो सकता।

अन्य......ना—अन्य दिनों के समान बात में वैसा ज़ोर नहीं था।

देयालेर......येन—दीवार के चित्रों तथा इस घर की अन्यान्य वस्तुओं से मानो उसी नारी-जाति का ढेरों परिचय मिल रहा है।

कविदेर......नेइ—कवियों की बात का अगर विश्वास किया जाय तो चाँद, फूल, लता, पत्तियाँ कहीं भी नारी-जाति के परिचय से अभागे पुरुष के निस्तार पाने का उपाय नहीं।

श्रीश। (हासिया) केवल भेबेछिलुम, चन्द्रबाबुर बासार सेइ एकतलार घरटिते रमणीर कोनो संस्रव छिल ना। आज से भ्रमटा हठात् भेङे गेल। नाः, ओरा पृथिवीमय छड़िये पड़ेछे।

विपिन। बेचारा चिरकुमार क'टिर जन्ये एकटा कोनो फाँक राखे नि। सभा करबार जायगा पाओयाइ दाय।

श्रीश। एइ देखो-ना।

कोणेर एकटा टिपाइ हइते गोटादुयेक चुलेर काँटा तुलिया देखाइल

विपिन। (काँटा दुटि लइया पर्यवेक्षण करिया) ओहे भाइ, ए स्थानटा तो कुमारदेर पक्षे निष्कण्टक नय।

श्रीश। फुलओ आछे, काँटाओ आछे।

विपिन। सेइटेइ तो विपद। केवल काँटा थाकले एड़िये चला याय।

श्रीश अपर कोणेर छोटो बइयेर शेल्फ् हइते बइगुलि तुलिया देखिते लागिल। कतकगुलि नभेल, कतकगुलि इंरेजि काव्य-संग्रह। प्यालग्रेभेर गीतिकाव्येर स्वर्णभाण्डार खुलिया देखिल, मार्जिने मेयेलि अक्षरे नोट लेखा—तखन गोड़ार पाताटा उल्टाइया देखिल, देखिया एकटु नाड़िया-चाड़िया विपिनेर सम्मुखे धरिल

भेबेछिलुम—सोचा था; **कोनो.....ना**—कोई संपर्क नहीं था; **भेङे गेल**—टूट गया; **ओरा......पड़ेछे**—वे समस्त पृथ्वी पर फैली हुई हैं।

बेचारा......नि—बिचारे कुछ चिरकुमारों के लिए कहीं कोई गुंजाइश नहीं रखी; **सभा......दाय**—सभा करने की जगह तक पाना कठिन है।

कोणेर—कोने की; **टिपाइ**—तिपाई; **हइते**—से; **गोटादुयेक**—दो; **चुलेर काँटा**—बालों के काँटे; **तुलिया देखाइल**—उठा कर दिखाया।

फुलओ......आछे—फूल भी हैं काँटे भी हैं।

सेइटेइ......विपद—वही तो मुश्किल है; **केवल......याय**—केवल काँटा रहने पर कतरा कर चला जा सकता है।

बइयेर—किताब का; **कतकगुलि नभेल**—कुछ नावेल; **मेयेलि अक्षरे**—जनाने हरूफों में; **तखन......देखिल**—तब शुरू के पन्ने को पलट कर देखा।

विपिन। नृपबाला! आमार विश्वास नामटि पुरुषमानुषेर नय। की बोध कर।

श्रीश। आमारओ सेइ विश्वास। ए नामटिओ अन्यजातीय बले ठेकछे हे।

आर एकटा बइ देखाइल

विपिन। नीरबाला! ए नामटि काव्यग्रन्थे चले किन्तु कुमार-सभाय––

श्रीश। कुमार-सभातेओ एइ नामधारिणीरा यदि चले आसेन ता हले द्वाररोध करते पारे एतवड़ो बलवान तो आमादेर मध्ये काउके देखिने।

विपिन। पूर्ण तो एकटि आघातेइ आहत हये पड़ल––रक्षा पाय कि ना सन्देह।

श्रीश। की रकम।

विपिन। लक्ष करे देखनि बुझि?

श्रीश। ना ना, ओ तोमार अनुमान।

विपिन। हृदयटा तो अनुमानेरइ जिनिस––ना याय देखा, ना याय धरा!

श्रीश। पूर्णर असुखटाओ ता हले वैद्यशास्त्रेर अन्तर्गत नय?

नामटि––नाम। **की......कर**––क्या समझते हो।

आमारओ––मेरा भी; **सेइ**––वही; **ए......हे**––यह नाम भी अन्यजातीय लग रहा है।

आर......देखाइल––और एक किताब दिखलाई।

कुमार-सभातेओ––कुमार-सभा में भी; **एइ......ने**––ये नामधारिणियाँ यदि चली आवें तो द्वार रोक सके इतना बलवान तो हममें कोई नहीं दीखता।

हये पड़ल––हो गया; **रक्षा......सन्देह**––(उसकी) रक्षा होगी कि नहीं संदेह है।

की रकम––किस प्रकार।

लक्ष्य......बुझि––शायद तुमने लक्ष्य नहीं किया।

ना......धरा––न दिखाई देता है, न पकड़ाई आता है।

असुखटाओ––व्याधि भी।

विपिन। ना, ए-सकल व्याधि सम्बन्धे मेडिकेल कलेजे कोनो लेक्चार चले ना।

श्रीश। ए बाड़िर दरजाय ढुकतेइ रसिक चक्रवर्ती बले ये वृद्ध युवकटिर सङ्गे देखा हल, ताँके चिरकुमार-सभार द्वारीर उपयुक्त बले बोध हल ना।

विपिन। मने हल शिवेर तपोवन आगलाबार जन्य स्वयं पञ्च-शर नन्दीर छद्मवेशे एसेछेन, लोकटाके विश्वासयोग्य ठेकछे ना।

[चन्द्रेर प्रवेश

चन्द्रबाबु। आजकेर तर्कवितर्केर उत्तेजनाय पूर्णबाबुर हठात् शरीर खाराप हल देखे आमि ताँके ताँर बाड़ि पौँछे देओया उचित बोध करलुम।

विपिन। पूर्णबाबुर येरकम दुर्बल अवस्था देखछि, पूर्व हतेइ ताँर विशेष सावधान हओया उचित छिल।

चन्द्रबाबु। पूर्णबाबुके तो विशेष असावधान बले बोध हय ना।

[अक्षय ओ रसिकेर प्रवेश

अक्षय। माप करबेन। एइ नवीन सभ्यटिके आपनादेर हाते समर्पण करे दियेइ आमि चले याच्छि।

रसिक। (हासिया) आमार नवीनता बाइरे थेके विशेष प्रत्यक्षगोचर नय——

अक्षय। अत्यन्त विनयवशत सेटा बाह्य प्राचीनता दिये ढेके

ए......ढुकतेइ—इस मकान के दरवाजे में घुसते ही; **देखा हल**—भेंट हुई। **आगलाबार जन्य**—रोकने के लिए, पहारा देने के लिए।

शरीर......करलुम—शरीर अस्वस्थ देख कर मैंने उन्हें उनके घर पहुँचा देना उचित समझा।

येरकम—जैसी; **देखछि**—देख रहा हूँ; **पूर्व हतेइ**—पहले से ही; **ताँर**—उनका; **हओया**—होना; **छिल**—था। **बोध......ना**—नहीं लगता।

माप करबेन—माफ करेंगे; **आपनादेर......याच्छि**—आपलोगों के हाथों सौंप करके ही मैं चला जा रहा हूँ। **बाइरे थेके**—बाहर से।

अत्यन्त......रेखेछेन—अत्यन्त विनयवश उसे बाहरी प्राचीनता

रेखेछेन—क्रमश परिचय पाबेन। इनिइ हच्छेन सार्थकनामा श्रीरसिक चक्रवर्ती।

रसिक। पिता आमार रसबोध सम्बन्धे परिचय पाबार पूर्वेइ रसिक नाम रेखेछिलेन, एखन पितृसत्य पालनेर जन्य आमाके रसिकतार चेष्टा करते हय, तार परे 'यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।'

अक्षयेर प्रस्थान। पुरुषवेशी शैलेर प्रवेश। शैल आसिया सकलके नमस्कार करिल। क्षीणदृष्टि चन्द्रमाधवबाबु झापसाभावे ताहाके देखिलेन—विपिन ओ श्रीश ताहार दिके चाहिया रहिल

शैलेर पश्चाते दुइजन भृत्य कयेकटि भोजनपात्र हाते करिया उपस्थित हइल। शैल छोटो छोटो रुपार थालागुलि लइया सादा पाथरेर टेबिलेर उपर साजाइते लागिल

रसिक। इनि आपनादेर सभार आर-एकटि नवीन सभ्य। एँर नवीनता सम्बन्धे कोनो तर्क नेइ। ठिक आमार विपरीत। इनि बुद्धिर प्रवीणता बाह्य नवीनता दिये गोपन करे रेखेछेन। आपनारा किछु विस्मित हयेछेन देखछि; हबार कथा। एँके देखे मने हय बालक, किन्तु आमि आपनादेर काछे जामिन रइलुम—इनि बालक नन।

चन्द्रबाबु। एँर नाम?

रसिक। श्रीअबलाकान्त चट्टोपाध्याय।

श्रीश। अबलाकान्त?

(वृद्धावस्था) से (इन्होंने) ढँक रखा है; **इनिइ हच्छेन**—यही हैं।

पाबार पूर्वेइ—पाने के पहले ही; **रेखेछिलेन**—रखा था; **एखन......हय**—अब पितृसत्य पालनार्थ मुझे रसिकता (हास परिहास) की चेष्टा करनी होती है।

झापसाभावे......देखिलेन—धुँधला धुँधला-सा उसे देखा; **ताहार...... रहिल**—उसकी ओर देखते रहे।

इनि—ये; **आर-एकटि**—और एक; **एँर**—इनकी; **कोनो**—कोई; **नेइ**—नहीं है; **ठिक**—ठीक; **दिये**—द्वारा; **रेखेछेन**—रखा है; **हबार कथा**—होने की बात है; **एँके......बालक**—इनको देखने से लगता है (ये) बालक है; **किन्तु......नन**—लेकिन मैं आपलोगों के निकट ज़ामिन रहा कि ये बालक नहीं हैं।

रसिक। नामटि आमादेर सभाय चलति हबार मतो नय स्वीकार करि। नामटिर प्रति आमारओ विशेष ममत्व नेइ––यदि परिवर्तन करे विक्रमसिंह वा भीमसेन वा अन्य कोनो उपयुक्त नाम राखेन ताते उनि आपत्ति करबेन ना। यदिच शास्त्रे आछे बटे, 'स्वनामा पुरुषो धन्य:'––किन्तु उनि अबलाकान्त नामटिर द्वाराइ जगते पौरुष अर्जन करते व्याकुल नन।

श्रीश। बलेन की मशाय। नाम तो आर गायेर वस्त्र नय ये, बदल करलेइ हल।

रसिक। ओटा आपनादेर एकेले संस्कार, श्रीशबाबु। नामटाके प्राचीनेरा पोशाकेर मध्येइ गण्य करतेन। देखुन-ना केन, अर्जुनेर पितृदत्त नाम की, ठिक करे बला शक्त––पार्थ, धनञ्जय, सव्यसाची, लोकेर यखन या मुखे आसत ताइ बलेइ डाकत। देखुन, नामटाके आपनारा बेशि सत्य मने करबेन ना; ओँके यदि भुले आपनि अबला-कान्त ना'ओ बलेन, उनि लाइबेलेर मोकद्दमा आनबेन ना।

श्रीश। (हासिया) आपनि यखन एतटा अभय दिच्छेन तखन अत्यन्त निश्चिन्त हलुम––किन्तु ओँर क्षमागुणेर परिचय नेबार दरकार हबे ना––नाम भुल करब ना मशाय।

चलति.....नय––चलने लायक नहीं; **यदिच......बटे**––यद्यपि शास्त्र में जरूर है।

बलेन......मशाय––क्या कहते हैं महाशय; **नाम......हल**––नाम शरीर का वस्त्र तो है नहीं कि बदलने से ही हो गया।

ओटा––वह; **एकेले**––आधुनिक; **प्राचीनेरा**––प्राचीन (काल के) लोग; **पोशाकेर......करते**––पोशाक में ही गिनती करते थे। **देखुन......केन**––देखते क्यों नहीं; **नाम की**––नाम क्या था; **ठिक......शक्त**––ठीक ठीक कहना कठिन है; **लोकेर.....डाकत**––लोगों के मुँह में जब जो आता वही कह कर पुकारते थे; **देखुन**––देखिए; **नामटाके......ना**––नाम को आपलोग अधिक सत्य नहीं मानेंगे; **ओँके......बलेन**––उन्हें भूल से आप अवलाकान्त न भी कहें; **लाइबेल**––libel; **आनबेन ना**––नहीं लाएंगे।

एतटा––इतना; **दिच्छेन**––दे रहे हैं; **हलुम**––हुआ; **नेबार......ना**––लेने की जरूरत नहीं होगी; **नाम......मशाय**––नाम में भूल नहीं करूंगा महाशय।

रसिक। आपनि ना करते पारेन, किन्तु आमि करि मशाय। उनि आमार सम्पर्के नाति हन—सेइ जन्ये ओँर सम्बन्धे आमार रसना किछु शिथिल, यदि कखनो एक बलते आर बलि सेटा माप करबेन।

श्रीश। अबलाकान्त बाबु, आपनि ए-समस्त की आयोजन करेछेन। आमादेर सभार कार्यावलीर मध्ये मिष्टान्नटा छिल ना।

रसिक। (उठिया) सेइ त्रुटि यिनि संशोधन करेछेन ताँके सभार हये धन्यवाद दिइ।

शैल। (थाला साजाइते साजाइते) श्रीशबाबु, आहारटाओ कि आपनादेर नियमविरुद्ध।

श्रीश। (विपुलायतन विपिनके टानिया आनिया) एइ सभ्यटिर आकृति निरीक्षण करे देखलेइ ओ सम्बन्धे कोनो संशय थाकबे ना।

विपिन। नियमेर कथा यदि बलेन अबलाकान्तबाबु, संसारेर श्रेष्ठ जिनिस मात्रइ निजेर नियम निजेइ सृष्टि करे; क्षमताशाली लेखक निजेर नियमे चले, श्रेष्ठ काव्य समालोचकेर नियम माने ना। ये मिष्टान्नगुलि संग्रह करेछेन ए सम्बन्धेओ कोनो सभार नियम खाटते पारे ना—एर एकमात्र नियम, बसे याओया एवं निःशेष करा। इनि

आपनि......पारेन—आप नहीं कर सकते; **उनि......हन**—वे मेरे रिश्ते में नाती होते हैं; **सेइजन्ये**—इसीलिए; **यदि......करबेन**—यदि कुछ कहते कुछ कह दूँ (कुछ की जगह कुछ कह बैठूँ) तो उसे माफ करेंगे।

सेइ......दिइ—इस त्रुटि को जिन्होंने सुधार दिया है उन्हें सभा की ओर से धन्यवाद देता हूँ।

साजाइते—सजाते हुए; **आहारटाओ**—आहार भी।

विपुलायतन......आनिया—विपुलकाय विपिन को घसीट कर लाते हुए; **एइ......ना**—इस सदस्य की आकृति निरीक्षण करते ही उस संबंध में कोई संदेह न रहेगा।

नियमेर......बलेन—नियम की बात अगर कहें; **जिनिस**—वस्तु; **कोनो...... ना**—किसी सभा का नियम लागू नहीं हो सकता; **एर**—इसका; **बसे......करा**—बैठ जाना और समाप्त करना; **इनि......हबे**—ये जबतक हैं तबतक जगत् के

यतक्षण आछेन ततक्षण जगतेर अन्य समस्त नियमके द्वारेर काछे अपेक्षा करते हबे।

श्रीश। तोमार हल कि विपिन। तोमाके खेते देखेछि बटे, किन्तु एक निश्वासे एत कथा कइते शुनि नि तो!

विपिन। रसना उत्तेजित हयेछे, एखन सरस वाक्य बला आमार पक्षे अत्यन्त सहज हयेछे। यिनि आमार जीवनवृत्तान्त लिखबेन, हाय, ए समये तिनि कोथाय।

रसिक। (टाके हात बुलाइते बुलाइते) आमार द्वारा से काजटा प्रत्याशा करबेन ना, आमि एत दीर्घकाल अपेक्षा करते पारब ना।

नूतन घरेर विलाससज्जार मध्ये आसिया चन्द्रमाधवबाबुर मनटा विक्षिप्त हइया गियाछिल। ताँहार उत्साहस्रोत यथापथे प्रवाहित हइतेछिल ना। तिनि क्षणे क्षणे कार्यविवरणेर खाता, क्षणे क्षणे निजेर करकोष्ठी अकारणे निरीक्षण करिया देखितेछिलेन

शैलबाला। (चन्द्रबाबुर सम्मुखे गिया) सभार कार्येर यदि किछु व्याघात करे थाकि तो माप करबेन चन्द्रबाबु, किछु जलयोग——

चन्द्रबाबु। ए-समस्त सामाजिकताय सभार कार्येर व्याघात करे, ताते सन्देह नेइ।

सभी नियमों को दरवाजे के पास प्रतीक्षा करनी होगी।

तोमार......कि—तुम्हें क्या हुआ; **तोमाके......बटे**—तुम्हें खाते अवश्य देखा है; **किन्तु......तो**—किन्तु एक सांस में इतनी बातें कहते तो नहीं सुना।

रसना—जिह्वा; **हयेछे**—हो गई है; **बला**—बोलना, कहना; **यिनि**—जो; **लिखबेन**—लिखेंगे; **ए......कोथाय**—इस समय वे कहाँ हैं।

आमि......ना—मैं इतने लम्बे काल तक प्रतीक्षा नहीं कर सकूंगा।

हइया गियाछिल—हो गया था; **हइतेछिल ना**—नहीं हो रहा था; **करकोष्ठी**—हाथ की रेखाओं को।

सभार......करबेन—सभा के कार्य में यदि मैंने कुछ विघ्न डाला हो तो माफ करेंगे; **जलयोग**—जलपान।

ए......नेइ—इन सभी औपचारिकताओं से सभा के काम में विघ्न पड़ता है, इसमें संदेह नहीं।

रसिक। आच्छा, परीक्षा करे देखुन, मिष्टान्ने यदि सभार कार्य रोध हय ताहले—

विपिन। (मृदुस्वरे) ताहले भविष्यते ना-हय सभाटा बन्ध रेखे मिष्टान्नटा चालालेइ हबे।

श्रीश। आसुन रसिकबाबु। आपनि उठछेन ना ये?

रसिक। रोज रोज येचे एवं माझे माझे केड़े खेये थाकि, आज चिरकुमार-सभार सभ्यरूपे आपनादेर संसर्गगौरवे किञ्चित् उपरोधेर प्रत्याशाय छिलुम, किन्तु—

शैलबाला। किन्तु आबार की रसिकदादा। तुमि-ये रविवार करे थाक, आज तुमि किछु खाबे नाकि।

रसिक। देखछेन मशाय! नियम आर कारओ वेलाय नय, केवल रसिकदादार वेलाय। नाः—'बलं बलं बाहुबलम्'। उपरोध-अनुरोधेर अपेक्षा करा नय।

विपिन। (चारटिमात्र भोजनपात्र देखिया) आपनि आमादेर सङ्गे बसबेन ना?

शैलबाला। ना, आमि परिवेशन करब।

श्रीश। से कि हय।

देखुन—देखिए; **हय**—हो।

ता......हबे—तो भविष्य में न हो तो सभा का काम बन्द रख कर मिष्टान्न चलाने से ही हो जाएगा।

आपनि......ये—आप तो उठ नहीं रहे हैं।

येचे—माँग कर; **माझे माझे**—बीच बीच में; **केड़े......थाकि**—(स्वयं) निकाल कर खा लेता हूँ; **उपरोधेर प्रत्याशाय**—अनुरोध की आशा में; **छिलुम**—था।

आबार की—अब क्या; **तुमि......नाकि**—तुम तो रविवार (को उपवास) करते हो, आज तुम कुछ खाओगे क्या।

देखछेन मशाय—देख रहे हैं महाशय; **आर......नय**—और किसीके समय नहीं है; **उपरोध......नय**—अनुरोध के लिए प्रतीक्षा करना (ठीक) नहीं है।

आपनि......ना—आप हमलोगों के साथ नहीं बैठेंगे।

से......हय—ऐसा क्या होता है (भला यह कैसे होगा)।

शैलबाला। आमाके परिवेशन करते दिन, खाओयार चेये ताते आमि ढेर बेशि खुशि हब।

श्रीश। रसिकबाबु, एटा कि ठिक हच्छे।

रसिक। 'भिन्नरुचिर्हि लोकः'। उनि परिवेशन करते भालोबासेन, आमरा आहार करते भालोबासि, एरकम रुचिभेदे बोध हय परस्परे किछु सुविधा आछे।

सकलेर आहार

शैलबाला। चन्द्रबाबु, ओटा मिष्टि, ओटा आगे खाबेन ना, एइ दिके तरकारि आछे। जलेर ग्लास खुँजछेन? एइ ये ग्लास।

चन्द्रबाबुर पाते आम छिल, तिनि सेटाके भालोरूप आयत्त करिते पारितेछिलेन ना—अनुतप्त शैल ताड़ाताड़ि ताहा काटिया सहजसाध्य करिया दिल। ये समये येटि आवश्यक आस्ते आस्ते हातेर काछे जोगाइया दिया ताँहार भोजन-व्यापारटि निर्विघ्न करिते लागिल

चन्द्रबाबु। श्रीशबाबु, स्त्री-सभ्य नेओया सम्बन्धे आपनि किछु विवेचना करेछेन?

श्रीश। भेबे देखते गेले ओते आपत्तिर कारण विशेष नेइ, केवल समाजेर आपत्तिर कथाटा आमि भावि।

आमाके—मुझे; **दिन**—दें; **खाओयार......हब**—खाने की अपेक्षा मुझे उससे बहुत ज्यादा खुशी होगी।

एटा......हच्छे—यह क्या ठीक हो रहा है।

उनि—वे; **भालोबासेन**—पसन्द करते हैं; **आमरा......भालोबासि**—हमलोग भोजन करना पसन्द करते हैं; **एरकम**—इस प्रकार; **बोध हय**—लगता है। **ओटा**—वह; **एइ दिके**—इस ओर; **खुँजछेन**—खोज रहे हैं।

पाते—थाल में; **तिनि......ना**—वे उसे अच्छी तरह काबू में नहीं कर पा रहे थे; **ताड़ाताड़ि**—झटपट; **ताहा**—उसे; **करिया दिल**—कर दिया; **ये......लागिल**—जिस समय जो आवश्यक होता धीरे धीरे (उनके) हाथ के पास जुटा कर उनकी भोजन-क्रिया को निर्विघ्न करने लगी।

स्त्री......करेछेन—स्त्री सदस्य लेने के संबंध में आपने कुछ सोचा है।

भेबे......नेइ—सोच कर देखने जाने पर उसमें आपत्ति का कोई विशेष

विपिन। समाजके अनेक समय शिशुर मतो गण्य करा उचित। शिशुर समस्त आपत्ति मेने चलले शिशुर उन्नति हय ना, समाज सम्बन्धेओ ठिक सेइ कथा खाटे।

श्रीश। आमार बोध हय आमादेर देशे ये एत सभासमितिर आयोजन अनुष्ठान अकाले व्यर्थ हय तार प्रधान कारण, से-सकल कार्ये स्त्रीलोकदेर योग नेइ। रसिकबाबु की बलेन।

रसिक। अवस्थागतिके यदिओ स्त्रीजातिर सङ्गे आमार विशेष सम्बन्ध नेइ, तबु एटुकु जेनेछि, स्त्रीजाति हय योग देन नय बाधा देन, हय सृष्टि नय प्रलय। अतएव ओँदेर दले टेने अन्य सुविधा यदि-वा ना'ओ हय तबु बाधार हात एड़ानो याय। विवेचना करे देखुन, चिरकुमार-सभार मध्ये यदि स्त्रीजातिके आपनारा ग्रहण करतेन ता-हले गोपने एइ सभाटिके नष्ट करबार जन्ये ओँदेर उत्साह थाकत ना——किन्तु वर्तमान अवस्थाय——

शैलबाला। कुमार-सभार उपर स्त्रीजातिर आक्रोशेर खबर रसिकदादा कोथाय पेले।

रसिक। विपदेर खबर ना पेले कि आर सावधान करते नेइ।

कारण नहीं दीखता; **केवल......भाबि**—केवल समाज की आपत्ति की बात मैं सोचता हूँ।

शिशुर......उचित—शिशु की भाँति समझना चाहिए; **मेने चलले**—मान कर चलने से; **हय ना**—नहीं होती; **समाज......खाटे**—समाज के संबंध में भी यही बात लागू होती है।

से......नेइ—उन कार्यों में स्त्रियों का योग नहीं होता।

अवस्थागतिके—पारिपार्श्विक अवस्था के दबाव के कारण; **यदिओ**—यद्यपि; **तबु......जेनेछि**—तो भी इतना जाना है; **हय......देन**—या तो सहयोग करती है या बाधा देती है; **ओँदेर.....याय**—उनलोगों को दल में खींचने से अन्य (कोई) सुविधा अगर न भी हो तो भी बाधा के हाथों से बचा जा सकता है; **विवेचना......देखुन**—विचार कर देखें; **आपनारा......ना**—आपलोग ग्रहण करते तो गुप्त रूप से इस सभा को नष्ट करने का उनका उत्साह न रहता।

कोथाय पेले—कहाँ मिली।

विपदेर......नेइ—विपत्ति की खबर न मिलने पर (भी) क्या उससे

एकचक्षु हरिण येदिके काना छिल सेइ दिक थेकेइ तो तीर खेयेछिल; कुमार-सभा यदि स्त्रीजातिर प्रतिइ काना हन ता हले सेइ दिक थेकेइ हठात घा खाबेन।

श्रीश। (विपिनेर प्रति मृदुस्वरे) एकचक्षु हरिण तो आज एकटा तीर खेयेछेन, एकटि सभ्य धूलिशायी।

चन्द्रबाबु। केवल पुरुष निये यारा समाजेर भालो करते चाय तारा एक पाये चलते चाय। सेइजन्यइ खानिकदूर गियेइ तादेर बसे पड़ते हय। समस्त महत् चेष्टा थेके मेयेदेर दूरे रेखेछि बलेइ आमादेर देशेर काजे प्राणसञ्चार हच्छे ना। आमादेर हृदय, आमादेर काज, आमादेर आशा बाइरे ओ अन्त:पुरे खण्डित। सेइजन्ये आमरा बाइरे गिये वक्तृता दिइ, घरे एसे भुलि। देखो अबलाकान्तबाबु, एखनओ तोमार वयस अल्प आछे, एइ कथाटि भालो करे मने रेखो—स्त्रीजातिके अवहेला कोरो ना। स्त्रीजातिके यदि आमरा निचु करे राखि ताहले ताँराओ आमादेर नीचेर दिकेइ आकर्षण करेन; ता हले ताँदेर भारे आमादेर उन्नतिर पथे चला असाध्य हय—दु पा चलेइ आबार घरेर कोणे एसेइ आबद्ध हये पड़ि। ताँदेर यदि आमरा उच्चे राखि ताहले घरेर मध्ये एसे निजेर आदर्शके खर्व करते लज्जाबोध हय। आमादेर

सावधान नहीं किया जाता; **ये.....खेयेछिल**—जिस ओर से काना था उसी ओर से तो तीर खाया था; **काना......खाबेन**—कानी हो तो उसी ओर से अकस्मात् चोट खायेगी।

केवल......चाय—केवल पुरुष को ले कर जो समाज की भलाई करना चाहते हैं वे एक पैर से चलना चाहते हैं; **सेइजन्यइ......हय**—इसीलिए कुछ दूर जाते ही बैठ जाना पड़ता है; **थेके**—से; **मेयेदेर......बलेइ**—स्त्रियों को दूर रखा है इसीलिए; **हच्छे ना**—नहीं हो रहा है; **बाइरे......खण्डित**—बाहर और भीतर में विभाजित है; **सेइजन्ये.......भुलि**—इसीलिए हमलोग बाहर जा कर वक्तृता देते हैं और घर में आ कर भूल जाते हैं; **यदि......करेन**—अगर हमलोग छोटा बना कर रखें तो वे भी हमलोगों को नीचे की ओर ही खींचेंगी; **दु......पड़ि**—दो कदम चल कर ही फिर घर के कोने में आ कर आबद्ध हो जाते हैं; **खर्व......हय**—विनष्ट करते लज्जा मालूम होती है; **बाइरे**—बाहर।

देशे वाइरे लज्जा आछे, किन्तु घरेर मध्ये सेइ लज्जाटि नेइ, सेइ जन्येइ आमादेर समस्त उन्नति केवल बाह्याड़म्बरे परिणत हय।

शैलबाला। आशीर्वाद करुन आपनार उपदेश येन व्यर्थ ना हय, निजेके येन आपनार आदर्शेर उपयुक्त करते पारि।

चन्द्रबाबु। आमार भाग्नी निर्मलाके कुमार-सभार सभ्य-श्रेणीते भुक्त करते आपनादेर कोनो आपत्ति नेइ?

रसिक। आर कोनो आपत्ति नेइ, केवल एकटु व्याकरणेर आपत्ति। कुमार-सभाय केउ यदि कुमारीवेशे आसेन ता हले बोपदेवेर अभिशाप।

शैलबाला। बोपदेवेर अभिशाप एकाले खाटे ना।

रसिक। आच्छा, अन्तत लोहारामके तो बाँचिये चलते हबे। आमि तो बोध करि, स्त्रीसभ्यरा यदि पुरुषसभ्यदेर अज्ञातसारे वेश ओ नाम परिवर्तन करे आसेन ता हले सहजे निष्पत्ति हय।

श्रीश। ता हले एकटा कौतुक एइ हय ये, के स्त्री के पुरुष निजेदेर एइ सन्देहटा थेके याय—

विपिन। आमि बोध हय सन्देह थेके निष्कृति पेते पारि।

रसिक। आमाकेओ बोध हय आमार नात्नी बले कारओ हठात् आशङ्का ना हते पारे।

करुन—करें; **येन**—जिसमें; **निजेके**—अपनेको; **करते पारि**—कर सकूँ।

कोनो......नेइ—कोई आपत्ति नहीं है। **केउ**—कोई; **आसेन**—आवें।

एकाले—इस काल में, आजकल; **खाटे ना**—नहीं लगता (यथार्थ सिद्ध नहीं होता)।

अन्तत......हबे—कम से कम लोहाराम को तो बचा कर चलना होगा; **अज्ञातसारे**—अनजान में; **निष्पत्ति हय**—समाधान हो जाय।

ता......ये—तो फिर एक मजा यह होगा कि; **के**—कौन; **एइ......याय**—यह संदेह रह जाता है।

आमि......पारि—मुझे लगता है कि संदेह से मैं निस्तार पा सकता हूँ।

आमाकेओ......पारे—मुझे भी लगता है कि (मुझे देख कर) मेरी नतिनी (होने) का किसी को भी सहसा संदेह नहीं हो सकता।

श्रीश। किन्तु अबलाकान्तबाबु सम्बन्धे एकटा सन्देह थेके याय।

शैल अदूरवर्ती टिपाइ हइते मिष्टान्नेर थाला आनिते प्रस्थान करिल

चन्द्रबाबु। देखुन रसिकबाबु, भाषातत्त्वे देखा याय, व्यवहार करते करते एकटा शब्देर मूल अर्थ लोप पेये विपरीत अर्थ घटे थाके। स्त्रीसभ्य ग्रहण करले चिरकुमार-सभार अर्थेर यदि परिवर्तन घटे ताते क्षति की।

रसिक। किछु ना। आमि परिवर्तनेर विरोधी नइ—ता नाम-परिवर्तन वा वेश-परिवर्तन याइ होक-ना केन, यखन या घटे आमि बिना विरोधे ग्रहण करि बलेइ आमार प्राणटा नवीन आछे।

मिष्टान्न शेष हइल एवं स्त्रीसभ्य लओया सम्बन्धे काहारओ आपत्ति हइल ना

रसिक। आशा करि सभार काजेर कोनो व्याघात हयनि।

श्रीश। किछु ना—अन्यदिन केवल मुखेरइ काज चलत आज दक्षिण हस्तओ योग दियेछे।

विपिन। ताते आभ्यन्तरिक तृप्तिटा किछु बेशि हयेछे। आज ता हले एइखानेइ सभा भङ्ग करा होक, कारण एर परे आर कोनो आलोचना चलबे ना। एदिके देरिओ हये गेछे।

[सकलेर प्रस्थान

थेके याय—रह जाता है।

आनिते—लाने के लिए।

देखुन—देखिए; **देखा याय**—देखा जाता है; **लोप पेये**—लोप हो कर; **घटे थाके**—घटने लग जाता है, संपन्न होता है; **ताते......की**—उसमें हानि क्या है।

किछु ना—कुछ नहीं; **नइ**—नहीं हूँ; **याइ......केन**—जो भी क्यों न हो; **यखन......घटे**—जब जो होता है; **ग्रहण......बलेइ**—ग्रहण करता हूँ इसीलिए।

भङ्ग......होक—भंग की जाय; **कारण......ना**—क्योंकि इसके बाद और कोई चर्चा नहीं चल पाएगी; **ए......गेछे**—इधर देरी भी हो गई है।

तृतीय अङ्क

प्रथम दृश्य

अक्षयेर बासा

अक्षय नीर ओ नृप

नीरर गान

येते दाओ गेल यारा।
तुमि येयो ना येयो ना—
आमार बादलेर गान हय नि सारा।
कुटिरे कुटिरे बन्ध द्वार,
निभृत रजनी अन्धकार,
वनेर अञ्चल काँपे चञ्चल—
अधीर समीर तन्द्राहारा।

अक्षय। हल की बलो देखि। आमार ये घरटि एतकाल केवल झड़ु बेहारार झाड़नेर ताड़ने निर्मल छिल, सेइ घरेर हाओया दु वेला तोमादेर दुइ बोनेर अञ्चल-वीजने चञ्चल हये उठछे ये।

नीरबाला। दिदि नेइ, तुमि एकला पड़े आछ बले दया करे माझे माझे देखा दिये याइ, तार उपरे आबार जवाबदिहि?

अक्षय। दयामयी चोर, शून्य हृदयटा चुरि करबार जन्ये शून्य घरे उँकिझुँकि? मतलब कि बुझि ने?

येते......यारा—जो चले गए (उन्हें) जाने दो; **तुमि......ना**—तुम मत जाना; **बादलेर**—वर्षा का; **हय......सारा**—पूरा नही हुआ; **बन्ध**—बन्द।

हल......देखि—हुआ क्या है बताओ तो सही; **एतकाल**—इतने दिन; **बेहारा**—वैयरा; **सेइ......ये**—उसी घर की हवा दोनों वेला तुम दोनों बहनों के अंचल रूपी बीजने से चंचल हो रही है।

नेइ—नहीं हैं; **तुमि......जवाबदिहि**—तुम अकेले पड़े हो इसलिए दया कर बीच बीच में दर्शन दे जाती हूँ और तिस पर जवाबदेही।

शून्य......झुंकि—शून्य हृदय को चोरी करने के लिए सूने घर में ताक-झाँक (हो रही है); **मतलब......ने**—मैं क्या मतलब समझ नहीं पाता।

गान

ओगो दयामयी चोर ! एत दया मने तोर !
बड़ो दया करे कण्ठे आमार जड़ाओ मायार डोर !
बड़ो दया करे चुरि करे लओ शून्य हृदय मोर !

नीरबाला। आमादेर एमन बोका चोर पाओ नि। एखन हृदय आछे कोथाय ये चुरि करते आसब।

अक्षय। ठिक करे वलो देखि हतभागा हृदयटा गेछे कतदूरे।

नृपबाला। आमि जानि मुखुज्येमशाय। बलब? ४७५ माइल।

नीरबाला। सेजदिदि अवाक करलि। तुइ कि मुखुज्येमशायेर हृदयेर पिछने पिछने माइल गुनते गुनते छुटेछिलि नाकि।

नृपबाला। ना भाइ, दिदि काशी याबार समय टाइमटेबिले माइलटा देखेछिलुम।

अक्षय। गान

चलेछे छुटिया पलातका हिया,
वेगे बहे शिरा धमनी।
हाय हाय हाय धरिबारे ताय
पिछे पिछे धाय रमणी।
वायुवेगभरे उड़े अञ्चल,
लटपट वेणी दुले चञ्चल——

एतो......तोर——तुम्हारे मन में इतनी दया है; **जड़ाओ**——लिपटाओ; **लओ**——लो।

आमादेर......नि——हमलोगों को ऐसा बुद्धू चोर मत समझो; **एखन...... करब**——अब हृदय है ही कहाँ जो चोरी करने जाएंगी।

ठिक......कतदूरे——बताओ तो सही अभागा हृदय कितनी दूर गया है।

आमि जानि——मैं जानती हूँ; **बलब**——बताऊँ।

सेजदीदी......करलि——संझली दीदी (तूने तो) अवाक् कर दिया; **तुइ...... नाकि**——तू क्या मुखर्जी महाशय के हृदय के पीछे पीछे मील गिनती भागी थी।

दिदि......समय——दीदी के काशी जाने के समय; **देखेछिलुम**——देखा था।

चलेछे छुटिया——भाग निकला है; **धरिबारे ताय**——उसे पकड़ने के लिए;

एकी रे रङ्ग, आकुल-अङ्ग
छुटे कुरङ्गगमनी !

नीरबाला। कविवर, साधु साधु। किन्तु तोमार रचनाय कोनो कोनो आधुनिक कविर छाया देखते पाइ येन।

अक्षय। तार कारण, आमिओ अत्यन्त आधुनिक। तोरा कि भाबिस तोदेर मुखुज्येमशाय कृत्तिवास ओझार यमज भाइ। भूगोलेर माइल गुने दिच्छिस, आर इतिहासेर तारिख भुल? ता हले आर विदुषी श्याली थेके फल हल की। एतबड़ो आधुनिकटाके तोदेर प्राचीन बले भ्रम हय ?

नीरबाला। मुखुज्येमशाय, शिव यखन विवाहसभाय गिये-छिलेन तखन ताँर श्यालीराओ ओइ रकम भुल करेछिलेन, किन्तु उमार चोखे तो अन्यरकम ठेकेछिल। तोमार भावना किसेर, दिदि तोमाके आधुनिक बलेइ जानेन।

अक्षय। मूढ़े, शिवेर यदि श्याली थाकत ताहले कि ताँर ध्यानभङ्ग करबार जन्ये अनङ्गदेवेर दरकार हत। आमार सङ्गे ताँर तुलना ?

दुले—लहराती है।

रचनाय—रचना में; **कोनो......येन**—मानो किसी किसी आधुनिक कवि की छाया देख पाती हूँ।

तार—उसका; **आमिओ**—मैं भी; **तोरा......भाइ**—तुम क्या सोचती हो कि तुम्हारे मुखर्जी महाशय कृत्तिवास ओझा के जुड़वाँ भाई हैं; **कृत्तिवास**—(बँगला रामायण के प्रणेता, जो ईसवी सन् की पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुए थे); **भूगोलेर......भुल**—भूगोल के मील गिने देती हो और इतिहास की तारीख भूल जाती हो; **ता......की**—तो फिर विदुषी साली होने का फल क्या हुआ; **एतबड़ो.......हय**—इतने बड़े आधुनिक को तुम भ्रम से प्राचीन समझती हो।

यखन—जब; **गियेछिलेन**—गए थे; **तखन......करेछिलेन**—उस समय उनकी सालियों ने भी ऐसी ही भूल की थी; **तोमार......किसेर**—तुम्हें चिन्ता किस बात की; **दिदि......जानेन**—दीदी तो तुम्हें आधुनिक ही समझती हैं।

थाकत—होती।

नृपबाला। आच्छा मुखुज्येमशाय, एतक्षण तुमि एखाने बसे बसे की करछिले।

अक्षय। तोदेर गयलाबाड़िर दुधेर हिसेब लिखछिलुम।

नीरबाला। (डेस्केर उपर हइते असमाप्त चिठि तुलिया लइया) एइ तोमार गयलाबाड़िर हिसेब? हिसेबेर मध्ये क्षीर-नवनीर अंशटाइ बेशि।

अक्षय। (व्यस्तसमस्त) ना ना, ओटा निये गोल करिस ने, आहा, दिये या—

नृपबाला। नीरु भाइ, ज्वालास ने, चिठिखाना ओँके फिरिये दे, ओखाने श्यालीर उपद्रव सय ना। किन्तु मुखुज्येमशाय, तुमि दिदिके चिठिते की बले सम्बोधन कर बलो ना।

अक्षय। रोज नूतन सम्बोधन करे थाकि—

नृपबाला। आज की करेछ बलो देखि।

अक्षय। शुनबे? तबे सखी, शोनो। चञ्चलचकितचित्त-चकोरचौर चञ्चुचुम्बितचारुचन्द्रिकरुचिरुचिर चिरचन्द्रमा।

नीरबाला। चमत्कार चाटुचातुर्य।

एतक्षण......करछिले—इतनी देर से बैठे बैठे तुम यहाँ क्या कर रहे थे।

तोदेर......लिखछिलेम—तुमलोगों के ग्वाले के घर के दूध का हिसाब लिख रहा था।

हइते—से; **तुलिया लइया**—उठा कर; **एइ**—यही; **नवनी**—नवनीत, मक्खन।

व्यस्तसमस्त—हड़बड़ा कर; **ओटा......ने**—उसे ले कर गोलमाल न कर; **आहा......या**—आह, देती जा।

ज्वालास ने—जला मत, तंग न कर; **चिठि......दे**—चिट्ठी उन्हें लौटा दे; **ओखाने......ना**—वहाँ साली का उपद्रव सह्य नहीं होता। **की बले**—क्या कह कर; **बलो-ना**—बताओ न।

आज......करेछ—आज क्या किया है; **बलो**—बोलो; **देखि**—देखें।

शुनबे—सुनोगी; **शोनो**—सुनो।

चमत्कार—गजब की; **चाटु**—चाटुकारिता।

अक्षय। एर मध्ये चौर्यवृत्ति नेइ, चर्वितचर्वणशून्य।

नृपबाला। (सविस्मये) आच्छा मुखुज्येमशाय, रोज रोज तुमि एइ रकम लम्बा लम्बा सम्बोधन रचना कर? ताइ बुझि दिदिके चिठि लिखते एत देरि हय?

अक्षय। ओइजन्येइ तो नृपर काछे आमार मिथ्ये कथा चले ना। भगवान ये आमाके सद्य सद्य बानिये बलबार एमन असाधारण क्षमता दियेछेन सेटा देखछि खाटाते दिले ना। भग्नीपतिर कथा वेदवाक्य बले विश्वास करते कोन् मनुसंहिताय लिखेछे बलो देखि।

नीरबाला। राग कोरो ना, शान्त हओ मुखुज्येमशाय, शान्त हओ। सेजदिदिर कथा छेड़े दाओ, किन्तु भेबे देखो आमि तोमार आधखाना कथा सिकि पयसाओ विश्वास करि ने, एतेओ तुमि सान्त्वना पाओ ना?

नृपबाला। आच्छा मुखुज्येमशाय, सत्यि करे बलो, दिदिर नामे तुमि कखनो कविता रचना करेछ?

अक्षय। एबार तिनि यखन अत्यन्त राग करेछिलेन तखन ताँर स्तव रचना करे गान करेछिलुम—

ओइजन्येइ......ना—उसी लिए तो नृप के सामने मेरी मिथ्या बात नहीं चल पाती; **भगवान......ना**—भगवान ने मुझे आनन-फानन में बात बनाने की जो ऐसी असाधारण शक्ति दी है वह देखता हूँ (तुमने) काम नहीं आने दी; **भग्नीपतिर......देखि**—बहनोई की बात को वेदवाक्य समझ कर विश्वास करने की बात किस मनुसंहिता में लिखी है, बताओ तो सही।

राग......ना—गुस्सा मत करो; **हओ**—होओ; **सेजदिदिर......ना**—सँझली दीदी की बात छोड़ दो, लेकिन सोच कर देखो मैं तुम्हारी आधी बात का एक चौथाई पैसा भर भी (पाई भर भी) विश्वास नहीं करती, क्या इससे भी तुम्हें सान्त्वना नहीं मिलती।

सत्यि......बलो—सच बतलाओ; **दिदिर नामे**—दीदी के नाम; **कखनो**—कभी।

एबार......करेछिलुम—इस बार जब वे बहुत नाराज हो गई थीं तब उनकी स्तुति-रचना कर मैंने गान किया था।

नृपबाला। तार परे ?

अक्षय। तार परे देखलुम, ताते उलटो फल हल, बातास पेये येमन आगुन बेड़े ओठे तेमनि हल––सेइ अवधि स्तव रचना छेड़ेइ दियेछि।

नृपबाला। छेड़े दिये केवल गयलाबाड़िर हिसेब लिखछ ? की स्तव लिखेछिले मुखुज्येमशाय, आमादेर शोनाओ ना।

अक्षय। साहस हय ना, शेषकाले आमार उपरओयालार काछे रिपोर्ट करबे।

नृपबाला। ना, आमरा दिदिके बले देब ना।

अक्षय। तबे अवधान करो।

गान

मनोमन्दिरसुन्दरी।
स्खलदञ्चला चलचञ्चला
अयि मञ्जुला मञ्जरी
रोषारुणरागरञ्जिता
गोपनहास्य –कुटिल-आस्य-
कपटकलहगञ्जिता।

तार परे––फिर (उसके बाद)।

तार......देखलुम––उसके बाद देखा; **ताते......हल**––उसका उल्टा फल हुआ; **बातास......हल**––हवा पा कर जैसे आग भड़क उठती है वैसा ही हुआ; **सेइ......दियेछि**––उसी समय से स्तुति-रचना छोड़ ही दी है।

की––क्या, कौन-सा; **लिखेछिले**––लिखा था; **आमादेर......ना**––हमलोगों को सुनाओ न।

साहस......ना––साहस नहीं होता; **शेषकाले......करबे**––अन्त में मेरे ऊपर वाली के पास रिपोर्ट करोगी।

ना......ना––नहीं हमलोग दीदी से नहीं कहेंगी।

तबे......करो––तब ध्यान से सुनो।

स्खलदञ्चला––स्खलित अञ्चला; **आस्य**––मुख; **गञ्जिता**––तिरस्कार करने वाली, लज्जित करने वाली; **कपटकलहगञ्जिता**––कृत्रिम कलह को लज्जित करने वाली (अर्थात् कृत्रिम कलह करने में अनुपम)।

संकोचनत-अङ्गिनी ।
चकितचपल— —नवकुरङ्ग—
यौवनवनरङ्गिणी ।
अयि खलछलगुण्ठिता ।
लुब्ध-पवन —क्षुब्ध लोभन
मल्लिका अवलुण्ठिता ।
चुम्बनधनवञ्चिनी ।
रुद्ध-कोरक— सञ्चित-मधु—
कठिन कनक कञ्जिनी ।

किन्तु आर नय । एबारे मशायरा बिदाय होन ।

नीरबाला । केन, एत अपमान केन । दिदिर काछे ताड़ा खेये आमादेर उपरे बुझि तार झाल झाड़ते हबे ?

अक्षय । एरा देखछि पवित्र जेनाना आर राखते दिले ना । आरे दुर्वृत्ते, एखनइ लोक आसबे ।

नृपबाला । तार चेये बलो ना दिदिर चिठिखाना शेष करते हबे ।

नीरबाला । ता आमरा थाकलेमइ-वा, तुमि चिठि लेखो-ना; आमरा कि तोमार कलमेर मुख थेके कथा केड़े नेब नाकि ।

अक्षय । तोमरा काछाकाछि थाकले मनटा एइखानेइ मारा

किन्तु......नय—लेकिन और नहीं; **एबारे......होन**—अब महाशयगण विदा हों ।

केन—क्यों; **एत**—इतना; **दिदिर.....हबे**—दीदी से डांट खा कर हमलोगों के ऊपर शायद उसका गुस्सा उतारना होगा ।

एरा......ना—देखता हूँ इन्होंने अन्तःपुर को पवित्र नहीं रहने दिया; **एखनइ......आसबे**—अभी लोग आएँगे ।

तार......हबे—बल्कि यह कहो कि दीदी की चिट्ठी समाप्त करनी होगी ।

ता.....वा—हमलोग बनी रहें तो भी क्या हुआ; **तुमि......ना**—तुम चिट्ठी लिखो न; **आमरा......नाकि**—हम क्या तुम्हारी कलम के मुँह से बात छीन लेंगी ।

तोमरा......याय—तुम्हारे पास में रहने से मन यहीं मारा जाता है;

याय, दूरे यिनि आछेन से पर्यन्त आर पौँछय ना। ना ठाट्टा नय, पालाओ। एखनइ लोक आसबे—ओइ एकटि बइ दरजा खोला नेइ, तखन पालाबार पथ पाबे ना।

नृपबाला। एइ सन्धेवेलाय के तोमार काछे आसबे।

अक्षय। यादेर ध्यान कर तारा नय गो, तारा नय।

नीरबाला। यार ध्यान करा याय से सकल समय आसे ना, तुमि आजकाल सेटा बेश बुझते पारछ, की बल मुखुज्येमशाय। देवतार ध्यान कर आर उपदेवतार उपद्रव हय।

गान

ओ आमार ध्यानेरइ धन।
तोमाय हृदये दोलाय ये हासि रोदन।
आसे वसन्त, फोटे बकुल,
कुञ्जे पूर्णिमा-चाँद हेसे आकुल;
तारा तोमाय खुँजे ना पाय—
प्राणेर माझे आछ गोपन स्वपन।

अक्षय। संग्रह हल कोथा थेके।

नीरबाला। तोमारइ श्रीमुख थेके।

दूरे......ना—जो दूर हैं फिर उन तक नहीं पहुँच पाता; **ठाट्टा नय**—मज़ाक नहीं; **पालाओ**—भागो; **ओइ......नेइ**—उस एक को छोड़ कर और कोई दरवाजा खुला नहीं है; **तखन......ना**—तब भागने का रास्ता नहीं पा सकोगी।

एइ......आसबे—शाम को इस समय तुम्हारे पास कौन आएगा।

यादेर......नय—जिनका ध्यान करती हो वे नहीं।

यार......ना—जिसका ध्यान किया जाता है वह सदा नहीं आता; **सेटा...... पारछ**—यह तुम अच्छी तरह समझ रहे हो; **की बल**—क्या कहते हो; **कर**—करते हो; **हय**—होता है।

आमार......धन—मेरे ध्यान के ही धन; **तोमाय......रोदन**—(मेरे) हास्य और रोदन तुम्हें हृदय में झुलाते हैं; **आसे**—आता है; **फोटे**—खिलता है; **हेसे**—हँसता है; **तारा......पाय**—वे तुम्हें खोज नहीं पाते; **आछ**—हो।

संग्रह......थेके—कहाँ से (यह गान) संग्रह हुआ।

तोमारइ—तुम्हारे ही।

अक्षय। अवशेषे विरहेर दिने आमारइ श्रीवक्षे हानते एसेछिस? आच्छा, ता हले दया करिस ने, एकेबारे शेष करे दे।

नीरबाला। गान

आँखिरे फाँकि दाओ ए की धारा--
अश्रुजले तारे कर सारा।
गन्ध आसे, केन देखि ने माला।
मायेर ध्वनि शुनि, पथ निराला।
वेला ये याय, फुल ये शुकाय--
अनाथ हये आछे आमार भुवन।

नेपथ्ये। अबलाकान्तबाबु आछेन?

[सहसा श्रीशेर प्रवेश। 'माप करबेन' बलिया पलायनोद्यम

[नृप ओ नीरर सवेगे प्रस्थान

अक्षय। एसो एसो श्रीशबाबु।

श्रीश। (सलज्जभावे) माप करबेन।

अक्षय। राजि आछि, किन्तु अपराधटा की आगे बलो।

श्रीश। खबर ना दियेइ--

अक्षय। तोमार अभ्यर्थनार जन्य म्युनिसिपालिटिर काछ थेके यखन बाजेट स्यांशन करे निते हय ना, तखन ना-हय खबर ना दियेइ एले श्रीशबाबु।

अवशेषे--अन्त में; **आमारइ......एसेछिस**--मेरे ही हृदय पर आघात करने आई हो; **आच्छा......दे**--अच्छा, तो दया मत कर, एकदम खतम कर दे।

आँखिरे....सारा--आँसुओं से आकुल कर आँखों को (देखने से) वञ्चित करते हो यह (तुम्हारी) कैसी रीति है; **आसे**--आता है; **केन.....ने**--क्यों नहीं देखती।

माप......पलायनोद्यम--'माफ करेंगे' कह कर भागने का उपक्रम।

एसो--आओ।

राजि......बलो--राजी हूँ, लेकिन पहले बतलाओ अपराध क्या है।

खबर......दियेइ--खबर दिए बिना ही।

तोमार......श्रीशबाबु--तुम्हारी अभ्यर्थना के लिए म्युनिसिपैलिटी के पास से जब बजट sanction करा लेना नहीं होता तब तुम, न हो, खबर दिए बिना ही चले आए सही श्रीशबाबु।

श्रीश। आपनि यदि बलेन, एखाने आमार असमये अनधिकार प्रवेश हय नि ता हलेइ हल।

अक्षय। ताइ बललेम। तुमि यखनइ आसबे तखनइ सुसमय, एवं येखाने पदार्पण करबे सेइखानेइ तोमार अधिकार। श्रीशबाबु, स्वयं विधाता सर्वत्र तोमाके पास्पोर्ट दिये रेखेछेन। एकटु बोसो, अबलाकान्तबाबुके खबर पाठिये दिइ। (स्वगत) ना पलायन करले चिठि शेष करते पारब ना।

[प्रस्थान

श्रीश। चक्षेर सम्मुख दिये एकजोड़ा माया-स्वर्णमृगी छुटे पालाल। ओरे निरस्त्र व्याध, तोर छोटबार क्षमता नेइ। निकषेर उपर सोनार रेखार मतो चकित चोखेर चाहनि दृष्टिपथेर उपरे येन आँका रये गेल।

[रसिकेर प्रवेश

श्रीश। सन्धेवेलाय एसे आपनादेर तो विरक्त करि नि रसिक-बाबु?

रसिक। भिक्षुकक्षे विनिक्षिप्तः किमिक्षुर्नीरसो भवेत्? श्रीशबाबु आपनाके देखे विरक्त हब आमि कि एतवड़ो हतभाग्य।

श्रीश। अबलाकान्तबाबु बाड़ि आछेन तो?

आपनि......हल—आप अगर कहें कि यहाँ मेरा असमय अनधिकार प्रवेश नहीं हुआ तो उसीसे हो गया (तो बस ठीक है)।

ताइ बललेम—वही कहा; **तुम......सुसमय**—तुम जिस समय आओगे उसी समय सुसमय है; **येखाने**—जहाँ; **करबे**—करोगे; **सेइखानेइ**—वहीं; **तोमाके**—तुम्हें; **दिये रेखेछेन**—दे रखा है; **एकटु बसो**—जरा बैठो; **पाठिये दिइ**—भेज दूँ; **ना......ना**—पलायन किये बिना चिट्ठी समाप्त नहीं कर सकूंगा।

चक्षेर......दिये—आँखों के सामने से; **छुटे पालाल**—दौड़ कर निकल गईं; **तोर......नेइ**—तेरे पास दौड़ने की शक्ति नहीं; **चाहनि**—चितवन; **येन...... गेल**—मानो अंकित हो गयी।

सन्धेवेलाय......नि—सन्ध्या के समय आ कर आपलोगों को परेशान तो नहीं किया।

रसिक। आछेन बइकि, एलेन बले।

श्रीश। ना ना, यदि काजे थाकेन ता हले ताँके व्यस्त करे काज नेइ––आमि कुँड़े लोक, बेकार मानुषेर सन्धाने घुरे बेड़ाइ।

रसिक। संसारेर सेरा लोकटाइ कुँड़े, एवं बेकार लोकेराइ धन्य। उभयेर सम्मिलन हलेइ मणिकाञ्चन योग। एइ कुँड़े बेकारेर मिलनेर जन्येइ तो सन्धेवेलाटार सृष्टि हयेछे। योगीदेर जन्ये सकालवेला, रोगीदेर जन्ये रात्रि, काजेर लोकेर जन्ये दशटा चारटे, आर सन्धेवेलाटा, सत्यि कथा बलछि, चिरकुमार-सभार अधिवेशनेर जन्ये चतुर्मुख सृजन करेन नि। की बलेन श्रीशबाबु।

श्रीश। से कथा मानते हबे बइकि, सन्ध्या चिरकुमार-सभार अनेक पूर्वेइ सृजन हयेछे, से आमादेर सभापति चन्द्रबाबुर नियम माने ना––

रसिक। से ये-चन्द्रेर नियम माने तार नियमइ आलादा। आपनार काछे खुले बलि, हासबेन ना श्रीशबाबु, आमार एकतलार घरे कायक्लेशे एकटि जानला दिये अल्प एकटु ज्योत्स्ना आसे––शुक्ल-सन्ध्याय सेइ ज्योत्स्नार शुभ्र रेखाटि यखन आमार वक्षेर उपर एसे

आपनाके......हतभाग्य––आपको देख कर परेशान होऊंगा क्या मैं इतना बड़ा अभागा हूँ।

बाड़ि......तो––घर में हैं तो।

आछेन......बले––अवश्य हैं, बस आ ही चले।

यदि......नेइ––अगर कोई काम कर रहे हों तो उन्हें तंग करने की जरूरत नहीं है; **आमि......बेड़ाइ**––मैं निठल्ला आदमी हूँ, बेकार आदमियों की खोज में घूमता रहता हूँ।

सेरा......कुँड़े––श्रेष्ठ लोग ही निठल्ले होते हैं; **हलेइ**––होने से ही; **सकालवेला**––भोर का समय; **दशटा चारटे**––दस बजे से चार बजे तक; **सत्यि......बलछि**––सच्ची बात कह रहा हूँ; **करेन नि**––नहीं किया।

से......बइकि––यह बात तो जरूर माननी होगी; **पूर्वेइ**––पहले ही।

से......आलादा––वह जिस चन्द्रमा का नियम मानती है उस (चन्द्र) का नियम ही अलग है; **आपना......बलि**––आपसे साफ साफ कहूँ; **हासबेन ना**––हँसिएगा मत; **कायक्लेशे**––बड़ी मुश्किल से; **एकटि......आसे**––एक खिड़की से

पड़े तखन मने हय के आमार काछे की खबर पाठाले गो। शुभ्र एकटि हंसदूत कोन् विरहिणीर हये एइ चिरविरहीर काने काने बलछे—

अलिन्दे कालिन्दीकमलसुरभौ कुञ्जवसतेर्-
वसन्तीं वासन्तीनवपरिमलोद्गारचिकुराम्।
त्वदुत्सङ्गे लीनां मदमुकुलिताक्षीं पुनरिमां
कदाहं सेविष्ये किसलयकलापव्यजनिनीम्॥

श्रीश। बेश बेश रसिकबाबु, चमत्कार। किन्तु ओर मानेटा बले दिते हबे। छन्देर भितर दिये ओर रसेर गन्धटा पाओया याच्छे किन्तु अनुस्वार-विसर्ग दिये एकेबारे एँटे बन्ध करे रेखेछे।

रसिक। बांलाय एकटा तर्जमाओ करेछि—पाछे सम्पादकरा खबर पेये हुड़ाहुड़ि लागिये देय, ताइ लुकिये रेखेछि—शुनबेन श्रीशबाबु?

कुञ्जकुटिरेर स्निग्ध अलिन्देर पर
कालिन्दीकमलगन्ध छुटिबे सुन्दर;
लीना रबे मदिराक्षी तव अङ्कतले,
बहिबे वासन्तीवास व्याकुल कुन्तले।
ताँहारे करिब सेवा, कबे हबे हाय,
किशलय-पाखाखानि दोलाइब गाय?

हो कर थोड़ी-सी चांदनी आती है; **तखन......गो**—तब मन में होता है कि अरे मेरे पास यह किसने संदेश भेजा; **कोन्......बलछे**—किसी विरहिणी का हो कर (की ओर से) इस चिरविरही के कानों में कहता है।

बेश—अच्छा; **किन्तु......हबे**—लेकिन उसका अर्थ बतला देना होगा; **छन्देर......रेखेछे**—छन्द के भीतर से उसके रस की गन्ध मिल रही है लेकिन अनुस्वार-विसर्ग दे कर एकदम कस कर बाँध रखा है।

बांलाय—बंगला में; **एकटा......करेछि**—एक अनुवाद भी किया है; **पाछे......रेखेछि**—बाद में सम्पादक लोग खबर पा कर छीना-झपटी न करने लगें इसलिए छिपा कर रखा है; **शुनबेन**—सुनेंगे।

छुटिबे—दौड़ेगी; **लीना रबे**—संलग्न (लगी हुई) रहेगी; **बहिबे...... कुन्तले**—व्याकुल कुंतल में वसन्त का सौरभ बहेगा; **ताँहारे......सेवा**—उनकी सेवा करूँगा; **कबे हबे**—कब होगा; **पाखाखानि**—पंखा;

श्रीश। वा वा, रसिकबाबु आपनार मध्ये एत आछे ता तो जानतुम ना।

रसिक। की करे जानबेन बलुन। काव्यलक्ष्मी ये ताँर पद्मवन थेके माझे माझे एइ टाकेर उपरे खोला हाओया खेते आसेन ए केउ सन्देह करे ना। (हात बुलाइया) किन्तु एमन फाँका जायगा आर नेइ।

श्रीश। आहाहा रसिकबाबु, यमुनातीरे सेइ स्निग्ध अलिन्द-ओआला कुञ्जकुटिरटि आमार भारि मने लेगे गेछे। यदि पायोनियरे विज्ञापन देखि सेटा देनार दाये निलेमे बिक्रि हच्छे ता हले किने फेलि।

रसिक। बलेन की श्रीशबाबु। शुधु अलिन्द निये करबेन की। सेइ मदमुकुलिताक्षीर कथाटा भेबे देखबेन। से निलेमे पाओया शक्त।

श्रीश। कार रुमाल एखाने पड़े रयेछे।

रसिक। देखि देखि। ताइ तो। दुर्लभ जिनिष आपनार हाथे ठेके देखछि। वाः दिव्य गन्ध! श्लोकेर लाइनटा बदलाते हबे मशाय, छन्द भङ्ग हय होक गे—'वासन्तीनवपरिमलोद्गाररुमालां'। श्रीशबाबु, ए रुमालटाते तो आमादेर कुमार-सभार पताका निर्माण

दोलाइव गाय—शरीर पर झलूंगा।

आपनार......ना—आपके भीतर इतना है यह तो नहीं जानता था।

की......बलुन—किस तरह जानेंगे बताइए; **ताँर**—अपने; **थेके**—से; **माझे माझे**—बीच बीच में; **एइ......ना**—इस खल्वाट (गंजी खोपड़ी) पर खुली हवा खाने आती हैं यह बात किसी के मन में नहीं आती; **हात बुलाइया**—हाथफेर कर; **किन्तु......नेइ**—लेकिन ऐसी खाली जगह और नहीं है।

अलिन्दओआला—अलिन्द वाला; **आमार......गेछे**—मुझे बहुत भा गया है; **पायोनियरे**—पायोनियर (अंग्रेजी अखबार) में; **सेटा......फेलि**—वह कर्ज के मारे नीलाम हो रहा हो तो मैं खरीद लूँ।

बलेन की—कहते क्या हैं; **शुधु.....की**—केवल अलिन्द ले कर क्या करेंगे; **कथाटा......देखबेन**—बात सोच कर देखें; **से......शक्त**—उसे नीलाम में पाना कठिन है। **कार......रयेछे**—किसका रूमाल यहाँ पड़ा हुआ है।

देखि देखि—देखूँ देखूँ; **ताइ तो**—यही तो; **दुर्लभ......देखछि**—देखता हूँ दुर्लभ वस्तु आपके हाथ लगती है; **बदलाते हबे**—बदलनी होगी; **छन्द......**

चलबे ना। देखेछेन, कोणे एकटि छोट्ट 'न' अक्षर लेखा रयेछे?

श्रीश। की नाम हते पारे बलुन देखि। नलिनी? ना बड्ड चलित नाम। नीलाम्बुजा? भयंकर मोटा। नीहारिका? बड़ो बाड़ाबाड़ि। बलुन ना रसिकबाबु, आपनार की मने हय।

रसिक। नाम मने हय ना मशाय, आमार भाव मने आसे, अभिधाने यत 'न' आछे समस्त माथार मध्ये राशीकृत हये उठते चाच्छे, 'न'येर माला गेँथे एकटि नीलोत्पलनयनार गलाय परिये दिते इच्छे करछे——निर्मलनवनीनिन्दित नवीन——बलुन ना श्रीशबाबु——शेष करे दिन ना——

श्रीश। नवमल्लिका।

रसिक। बेश बेश——निर्मलनवनीनिन्दितनवीननवमल्लिका। गीतगोविन्द माटि हल। आरओ अनेकगुलो भालो भालो 'न' माथार मध्ये हाहाकार करे बेड़ाच्छे, मिलिये दिते पारछि ने——निभृत निकुञ्ज निलय, निपुणनूपुरनिक्वण, निबिड़ नीरदनिर्मुक्त——अक्षयदादा थाकले भावते हत ना। मास्टार मशायके देखबामात्र छेलेगुलो येमन बेञ्चे निज निज स्थाने सार बेँधे बसे, तेमनि अक्षयदादार साड़ा पाबा-मात्र कथागुलो दौड़े एसे जुड़े दाँड़ाय। श्रीशबाबु, बुड़ो मानुषके वञ्चना करे रुमालखाना चुपि चुपि पकेटे पुरबेन ना——

गे——छन्द भङ्ग हो तो हो; **ए रुमालटाते**——इस रुमाल से; **चलबे ना**——नहीं चलेगा; **देखेछेन......रयेछे**——देखा है, कोने में एक छोटा 'न' अक्षर लिखा हुआ है।

की......देखि——क्या नाम हो सकता है, बताएँ तो सही; **बड्ड चलित नाम**——बड़ा घिसा हुआ नाम है; **बाड़ाबाड़ि**——अत्युक्ति।

आसे——आते हैं; **अभिधाने**——कोश में; **यत**——जितने; **हये......चाच्छे**——हो उठना चाहते हैं; **'न'येर.....गेँथे**——'न' की माला गूँथ कर; **गलाय.....करछे**——गले में पहना देने की इच्छा होती है; **शेष......ना**——पूरी कर दीजिए न।

माटि हल——तुच्छ हो गया; **आरओ**——और भी; **करे**——करते हुए; **बेड़ाच्छे**——घूम रहे हैं; **मिलिये......ने**——मिला नहीं पा रहा हूँ; **थाकले**——रहने पर; **भावते......ना**——सोचना नहीं पड़ता; **मास्टार......दाँड़ाय**——मास्टर महाशय को देखते ही लड़के जैसे बेञ्च पर अपने अपने स्थान पर पंक्ति बाँध कर बैठ जाते हैं, वैसे ही अक्षय दादा की आहट पाते ही शब्द दौड़ते हुए आ कर इकट्ठे हो जाते

श्रीश। आविष्कारकर्तार अधिकार सकलेर उपर—

रसिक। आमार ओइ रुमालखानिते एकटु प्रयोजन आछे श्रीशबाबु। आपनाके तो बलेछि आमार निर्जन घरेर एकटिमात्र जानला दिये एकटु मात्र चाँदेर आलो आसे—आमार एकटि कविता मने पड़े—

वीथीषु वीथीषु विलासिनीनां
मुखानि संवीक्ष्य शुचिस्मितानि।
जालेषु जालेषु करं प्रसार्य
लावण्यभिक्षामटतीव चन्द्रः।
कुञ्ज पथे पथे चाँद उँकि देय आसि,
देखे विलासिनीदेर मुखभरा हासि,
कर प्रसारण करि फिरे से जागिया
वातायने वातायने लावण्य मागिया।

हतभागा भिक्षुक आमार वातायनटाय यखन आसे तखन ताके की दिये भोलाइ बलुन तो? काव्यशास्त्रेर रसालो जायगा या-किछु मने आसे समस्त आउड़े याइ, किन्तु कथाय चिँड़े भेजे ना। सेइ दुर्भिक्षेर समय ओइ रुमालखानि बड़ो काजे लागबे। ओते अनेकटा लावण्येर संस्रव आछे।

हैं; **बुड़ो**—बूढ़े; **वञ्चना करे**—ठग कर; **पकेटे......ना**—पाकेट में न भर लीजिएगा।

ओइ—उस; **आपनाके......बलेछि**—आपको तो बता ही चुका हूँ; **चाँदेर आलो**—चाँद का प्रकाश, चांदनी।

उँकि......आसि—आ कर झाँकता है; **करि**—कर; **फिरे**—घूमता है; **मागिया**—मांगता हुआ।

हतभागा......तो—अभागा भिक्षुक मेरे वातायन में जब आता है तब उसे क्या दे कर बहलाऊँ बताइए तो; **रसालो**—रसीली; **जायगा**—जगह, स्थान; **या......याइ**—जो कुछ मन में आता है सब की आवृत्ति करता जाता हूँ; **किन्तु...... ना**—लेकिन बातों से तो चिउड़ा (चिड़वा) भीगता नहीं (अर्थात् बातों से तो काम होता नहीं); **सेइ......लागबे**—उस दुर्भिक्ष के समय वह रुमाल बड़े काम

श्रीश। से लावण्य दैवात् कखनो देखेछेन रसिकबाबु ?

रसिक। देखेछि बइकि, नइले कि ओइ रुमालखानार जन्ये एत लड़ाइ करि। आर ओइ ये 'न' अक्षरेर कथागुलो आमार माथार मध्ये एखनओ एकझाँक भ्रमरेर मतो गुञ्जन करे बेड़ाच्छे तादेर सामने कि एकटि कमलवनविहारिणी मानसीमूर्ति नेइ।

श्रीश। रसिकबाबु आपनार ओइ मगजटि एकटि मउचाक विशेष, ओर फुकरे फुकरे कवित्वेर मधु, आमाके सुद्ध माताल करे देबेन देखछि।

दीर्घनिश्वास पतन

[पुरुषवेशी शैलबालार प्रवेश

शैलबाला। आमार आसते अनेक देरि हये गेल, माप करबेन श्रीशबाबु।

श्रीश। आमि एइ सन्धेवेलाय उत्पात करते एलुम, आमाकेओ माप करबेन अबलाकान्तबाबु।

शैलबाला। रोज सन्धेवेलाय यदि एइ-रकम उत्पात करेन ता हले माप करब, नइले नय।

श्रीश। आच्छा राजि, किन्तु एर पर यखन अनुताप उपस्थित हबे तखन प्रतिज्ञा स्मरण करबेन।

आएगा; **ओते**—उसमें; **संस्रव**—संसर्ग।

से—वह; **कखनो देखेछेन**—कभी देखा है।

देखेछि बइकि—जरूर देखा है; **नइले......करि**—नहीं तो भला उस रुमाल के लिए इतनी लड़ाई करता; **आर**—और; **ओइ ये**—वह जो; **एखनओ**—अब भी; **एकझाँक**—एक टोली; **मतो**—भाँति; **बेड़ाच्छे**—घूम रहा है; **तादेर......कि**—उनके सामने क्या; **नेइ**—नहीं है।

आपनार......विशेष—आपका वह मस्तिष्क मधुमक्खियों का एक छत्ता-विशेष है; **फुकरे फुकरे**—हर खाने में; **आमाके**—मुझे; **सुद्ध**—समेत; **माताल**—मतवाला; **करे देबेन**—कर देंगे; **देखछि**—देखता हूँ।

आमार......गेल—मुझे आने में बहुत देरी हो गई; **माप करबेन**—माफ कीजिएगा। **एइ**—इस; **एलुम**—आया; **आमाकेओ**—मुझे भी। **एइ-रकम**—इसी प्रकार; **करेन**—करें; **नइले नय**—नहीं तो नहीं।

शैलबाला। आमार जन्ये भाबबेन ना, किन्तु आपनार यदि अनुताप उपस्थित हय ता हले आपनाके निष्कृति देब।

श्रीश। सेइ भरसाय यदि थाकेन ता हले अनन्तकाल अपेक्षा करते हबे।

शैलबाला। रसिकदादा, तुमि श्रीशबाबुर पकेटेर दिके हात बाड़ाच्छ केन। बुड़ो वयसे गाँटकाटा व्यवसा धरबे नाकि।

रसिक। ना भाइ, से व्यवसा तोदेर वयसेइ शोभा पाय। एकखाना रुमाल निये श्रीशबाबुते आमाते तक्रार चलछे, तोके तार मीमांसा करे दिते हबे।

शैलबाला। की रकम।

रसिक। प्रेमेर बाजारे बड़ो महाजनि करबार मूलधन आमार नेइ——आमि खुचरो मालेर कारबारि——रुमालटा, चुलेर दड़िटा, छेँड़ा कागजे दु-चारटे हातेर अक्षर एइ समस्त कुड़िये-बाड़िये आमाके सन्तुष्ट थाकते हय। श्रीशबाबुर ये-रकम मूलधन आछे ताते उनि बाजारसुद्ध पाइकेरि दरे किने निते पारेन——रुमाल केन समस्त नीला-ञ्चले अर्धेक भाग बसाते पारेन; आमरा येखाने चुलेर दड़ि गलाय

आमार......ना——मेरे लिए चिन्ता न करें।

सेइ......हबे——यदि इसी भरोसे रहें तो अनन्त काल तक प्रतीक्षा करनी होगी।

पकेटेर......केन——पाकेट की ओर हाथ क्यों बढ़ा रहे हो; **बुड़ो......नाकि**——वृद्ध वयस में गाँठ काटने का व्यवसाय आरंभ करोगे क्या।

से......पाय——वह व्यवसाय तुमलोगों की ही उम्र में शोभा देता है; **एक-खाना**——एक; **निये**——ले कर; **श्रीशबाबुते......चलछे**——श्रीशबाबू और मेरे बीच तकरार चल रही है; **तोके......हबे**——तुझे उसका फैसला करना होगा।

प्रेमेर.....नेइ——प्रेम के बाजार में बड़ी महाजनी करने लायक पूंजी मेरी नहीं है; **खुचरो**——खुदरा; **कारबारि**——कारवारी, व्यवसायी; **चुलेर दड़िटा**——बालों के बाँधने की चोटी; **छेँड़ा......हय**——फटे हुए कागज पर हाथ के लिखे दो-चार अक्षर इन्हीं सबों को बीन-बान कर मुझे सन्तुष्ट रहना पड़ता है; **ताते......पारेन**——उससे वे पूरे बाजार को थोक की दर में खरीद ले सकते हैं; **रुमाल......पारेन**——

जड़िये मरते इच्छे करि, उनि ये सेखाने आगुल्फविलम्बित चिकुरराशिर सुगंन्ध घनान्धकारेर मध्ये सम्पूर्ण अस्त येते पारेन। उनि उञ्छवृत्ति करते आसेन केन।

श्रीश। अबलाकान्तबाबु, आपनि तो निरपेक्ष व्यक्ति, रुमाल-खाना एखन आपनार हातेइ थाक्, उभय पक्षेर वक्तृता शेष हये गेले विचारे यार प्राप्य हय ताकेइ देबेन।

शैलबाला। (रुमालखानि पकेटे पुरिया) आमाके आपनि निरपेक्ष लोक मने करछेन बुझि? एइ कोणे येमन एकटि 'न' अक्षर लाल सुतोय सेलाइ करा आछे, आमार हृदयेर एकटि कोणे खुँजले देखते पाबेन ओइ अक्षरटि रक्तेर वर्णे लेखा। ए रुमाल आमि आपनादेर काउकेइ देब ना।

श्रीश। रसिकबाबु ए की रकम जबरदस्ति। आर, 'न' अक्षर-टिओ तो बड़ो भयानक अक्षर!

रसिक। शुनेछि बिलिति शास्त्रे न्यायधर्मओ अन्ध, भालो-बासाओ अन्ध, एखन दुइ अन्धे लड़ाइ होक, यार बल बेशि तारइ जित हबे।

शैलबाला। श्रीशबाबु, यार रुमाल आपनि तो ताके देखेन नि, तबे केन केवलमात्र कल्पनार उपर निर्भर करे झगड़ा करछेन।

रूमाल ही क्यों, पूरे नीलांचल का आधा भाग बँटा सकते हैं; **येखाने**—जहाँ; **गलाय.......करि**—गले में लपेट कर मरने की इच्छा करते हैं; **उनि**—वे; **सेखाने**—वहाँ; **अस्त......पारेन**—समा सकते हैं; **करते......केन**—क्यों करने आते हैं।

हातेइ थाक्—हाथ में रहे; **विचारे......देबेन**—न्याय से जिसका प्राप्य हो उसे ही देंगे।

पकेटे पुरिया—पाकेट में भर (रख) कर; **लाल......आछे**—लाल डोरे से कढ़ा हुआ है; **खुँजले**—खोजने पर; **देखते पाबेन**—देख पाएंगे; **काउकेइ...... ना**—किसी को भी नहीं दूंगा।

बिलिति—विलायती; **होक**—हो; **यार**—जिसका; **तारइ......हबे**—उसीकी जीत होगी।

यार......नि—जिसका रुमाल है आपने उसे तो देखा नहीं है।

श्रीश। देखि नि के बलले।

शैलबाला। देखेछेन, काके देखलेन। 'न' तो दुटि आछे--

श्रीश। दुटिइ देखेछि--ता ए रुमाल दुजनेर याँरइ होक, दाबि आमि परित्याग करते पारब ना।

रसिक। श्रीशबाबु, वृद्धेर परामर्श शुनुन, हृदयगगने दुइ चन्द्रेर आयोजन करबेन नाः 'एकश्चंद्रस्तमोहन्ति'।

[भृत्येर प्रवेश

भृत्य। (श्रीशेर प्रति) चन्द्रबाबुर चिठि निये एकटि लोक आपनार बाड़ि खुँजे शेषकाले एखाने एसेछे।

श्रीश। (चिठि पड़िया) एकटु अपेक्षा करबेन? चन्द्रबाबुर बाड़ि काछेइ--आमि एकबार चट करे देखा करे आसब।

शैलबाला। पालाबेन ना तो?

श्रीश। ना, आमार रुमाल बन्धक रइल, ओखाना खालास ना करे याच्छि ने।

[प्रस्थान

रसिक। भाइ शैल, कुमारसभार सभ्यगुलिके ये-रकम भयंकर कुमार ठाउरेछिलास तार किछुइ नय। एदेर तपस्या भङ्ग करते मेनका रम्भा मदन वसन्त कारओ दरकार हय ना, एइ बुड़ो रसिकइ पारे।

देखि......बलले--कौन कहता है नहीं देखा।

काके देखलेन--किसको देखा है; **दुटि**--दो।

दुजनेर.....होक--दोनों में चाहे जिसका हो; **दाबि**--दावा।

शुनुन--सुनिए; **करबेन ना**--न करें।

शेषकाले--अंत में; **एखाने एसेछे**--यहाँ आया है।

चिठि पड़िया--चिट्ठी पढ़ कर; **एकटु......करबेन**--जरा प्रतीक्षा करेंगे; **काछेइ**--पास ही है; **देखा......आसब**--मिल आऊंगा।

पालाबेन......तो--भागेंगे तो नहीं।

रइल--रहा; **ओखाना......ने**--उसे छुड़ाए बिना नहीं जाऊंगा।

ये-रकम--जैसा; **ठाउरेछिलाम**--ठहराया था; **तार......नय**--वैसा तो कुछ नहीं है; **एदेर**--इन सबों की; **कारओ......ना**--किसी की भी ज़रूरत नहीं; **एइ......पारे**--यह बूढ़ा रसिक ही सकेगा (कर लेगा)।

शैलबाला। ताइ तो देखछि।

रसिक। आसल कथाटा की जान? यिनि दार्जिलिङ थाकेन तिनि म्यालेरियार देशे पा बाड़बामात्रइ रोगे चेपे धरे। एँरा एतकाल चन्द्रबाबुर बासाय बड्ड नीरोग जायगाय छिलेन, एइ बाड़िटि ये रोगेर बीजे भरा। एखानकार रुमाले बइये चौकिते टेबिले येखाने स्पर्श करछेन सेइखान थेकेइ एकेबारे नाके मुखे रोग ढुकछे--आहा, श्रीश-बाबुटि गेल!

शैलबाला। रसिकदादा, तोमार बुझि रोगेर बीज अभ्येस हये गेछे? ।

रसिक। आमार कथा छेड़े दाओ। आमार पिले यकृत् या-किछु हबार ता हये गेछे।

[नीरबालार प्रवेश

नीरबाला। दिदि, आमरा पाशेर घरेइ छिलुम।

रसिक। जेलेरा जाल टानाटानि करे मरछे, आर चिल बसे आछे छोँ मारबार जन्ये।

नीरबाला। सेजदिदिर रुमालखाना निये श्रीशबाबु की काण्ड-टाइ करले। सेजदिदि तो लज्जाय लाल हये पालिये गेछे। आमि

ताइ......देखछि--वही तो देख रही हूँ।

आसल......जान—असली बात क्या है जानती हो; **यिनि......धरे**--जो दार्जिलिंग में रहते हैं उन्हें मलेरिया वाले स्थान में पैर बढ़ाते ही रोग धर दबाता है; **एँरा**—ये लोग; **बड्ड**—खूब; **जायगाय छिलेन**—जगह में थे; **एइ...... भरा**—यह मकान जो रोग के कीटाणुओं से भरा है; **एखानकार**—यहाँ के; **बइये**--पुस्तकों में; **येखाने......ढुकछे**—जहाँ स्पर्श करते हैं वहीं से एकाएक नाक मुख में रोग घुसता है; **आहा......गेल**—आहा, श्रीशबाबू (बेचारा) गया।

अभ्येस......गेछे--अभ्यस्त हो गए हो।

आमार......दाओ—मेरी बात छोड़ दो; **आमार......गेछे**—मुझे प्लीहा, यकृत जो कुछ होना था सब हो लिया है।

आमरा......छिलुम—हम बगल के कमरे में ही थीं।

जेलेरा......जन्ये--मछुए जाल खींचते खींचते मरे जा रहे हैं और चील झपट्टा मारने के लिए बैठी है।

एमनि बोका, भुलेओ किछु फेले याइ नि। बारोखाना रुमाल एनेछि, भावछि एबार घरेर मध्ये रुमालेर हरिर लुट दिये याब।

शैलबाला। तोर हाते ओ किसेर खाता नीर।

नीरबाला। ये गानगुलो आमार पछन्द हय ओते लिखे राखि दिदि।

रसिक। छोड़दिदि, आजकाल तोर की रकम पारमार्थिक गान पछन्द हच्छे तार एक-आधटा नमुना देखते पारि कि।

नीरबाला। "दिन गेल रे, डाक दिये ने पारेर खेया,
चुकिये हिसेब मिटिये दे तोर देया-नेया।"

रसिक। दिदि भारि व्यस्त ये! पार करबार नेये डेके दिच्छि भाइ। या देबे या नेबे सेटा मोकाबिलाय ठिक करे नियो।

नीरबाला। गान

ज्वलेनि आलो अन्धकारे
दाओ ना साड़ा कि ताइ बारे बारे।

की......करले—कैसा हंगामा मचा डाला; **लज्जाय......गेछे**—लज्जा से लाल हो कर भाग गई; **आमि......नि**—मैं ऐसी बेवकूफ हूँ, भूल से भी कुछ नहीं डाल गई; **बारोखाना......याब**—बारह रुमाल लाई हूँ, सोच रही हूँ इस बार घर में रुमालों की लूट मचा जाऊंगी; **हरिर लुट**—(हरि-संकीर्तन के बाद भक्तों के बीच प्रसाद बतासे आदि बिखेर देना)।

तोर......खाता—तेरे हाथ में वह कापी कैसी है।

ये......राखि—जो गीत मुझे पसन्द आते हैं उसमें लिख रखती हूँ।

देखते......कि—देख सकता हूँ क्या।

दिन......खेया—दिन बीत गया, पार जाने वाली नौका को पुकार ले; **चुकिये......नेया**—हिसाब चुका कर अपना देना-लेना बेबाक कर दे।

भारि......ये—तुम तो अत्यन्त व्याकुल हो; **पार......भाइ**—पार करने वाले माँझी को पुकार देता हूँ; **या......नियो**—जो दोगी जो लोगी (जो लेना-देना हो) उसे मुकाबिले पर (सामने) ठीक कर लेना।

ज्वलेनि आलो—रोशनी नहीं जली; **अन्धकारे......बारे**—अन्धकार में क्या इसीलिए बारंबार पता नहीं देते;

तोमार बाँशि आमार बाजे बुके
कठिन दुखे, गभीर सुखे,
ये जाने ना पथ, काँदाओ तारे।
चेये रइ रातेर आकाश-पाने,
मन ये की चाय ता मनइ जाने।
आशा जागे केन अकारणे
आमार मने क्षणे क्षणे
व्यथार टाने तोमाय आनबे द्वारे।

नेपथ्ये। अबलाकान्तबाबु आछेन ?

विपिन घरे प्रविष्ट ओ सचकित हइया दण्डायमान।
नीरबाला मुहूर्त हतबुद्धि हइया द्रुतवेगे बहिष्क्रान्त

शैलबाला। आसुन विपिनबाबु।

विपिन। ठिक करे बलुन, आसब कि। आमि आसार दरुन आपनादेर कोनोरकम लोकसान नेइ ?

रसिक। घर थेके किछु लोकसान ना करले लाभ हय ना, विपिनबाबु—व्यावसार एइ-रकम नियम। या गेल ता आबार दुनो हये फिरे आसते पारे, की बल अबलाकान्त।

शैलबाला। रसिकदादार रसिकता आजकाल एकटु शक्त हये आसछे।

तोमार......बुके—तुम्हारी बांसुरी मेरे हृदय में ध्वनित होती है; **ये......तारे**—जो पथ नहीं जानता उसे रुलाते हो; **चेये......पाने**—रात्रि के आकाश की ओर टकटकी लगाए रहती हूँ; **मन......जाने**—मन जाने क्या चाहता है, मन ही जाने; **केन**—क्यों; **क्षणे क्षणे**—क्षण क्षण में; **व्यथार......द्वारे**—व्यथा का खिंचाव तुम्हें (मेरे) द्वार पर ले आएगा।

ठिक......कि—ठीक ठीक बताइए, आऊँ क्या; **आमि......नेइ**—मेरे आने से आपलोगों का किसी प्रकार का नुकसान तो नहीं।

घर......ना—घर से कुछ नुकसान दिए बिना लाभ नहीं होता; **या......पारे**—जो गया वह फिर दूना हो कर लौट आ सकता है।

शक्त......आसछे—सख्त होता जा रहा है।

रसिक। गुड़ जमे येरकम शक्त हये आसे। किन्तु, विपिनबाबु की भावछेन बलुन देखि।

विपिन। भावछि की छुतो करे विदाय निले आमाके विदाय दिते आपनादेर भद्रताय बाधबे ना।

शैलबाला। बन्धुत्वे यदि बाधे?

विपिन। ता हले छुतो खोँजबार कोनो दरकारइ हय ना।

शैलबाला। तबे सेइ खोँजटा परित्याग करुन, भालो हये बसुन।

रसिक। मुखखाना प्रसन्न करुन विपिनबाबु। आमादेर प्रति ईर्षा करबेन ना। आमि तो वृद्ध, युवकेर ईर्षार योग्यइ नइ। आर आमादेर सुकुमारमूर्ति अबलाकान्तबाबुके कोनो स्त्रीलोक पुरुष बले ज्ञानइ करे ना। आपनाके देखे यदि कोनो सुन्दरी किशोरी त्रस्त हरिणीर मतो पलायन करे थाकेन ता हले मनके एइ बले सान्त्वना देबेन ये, तिनि आपनाके पुरुष बलेइ मस्त खातिरटा करेछेन। हाय रे हतभाग्य रसिक, तोके देखे कोनो तरुणी लज्जाते पलायनओ करे ना।

विपिन। रसिकबाबु आपनाकेओ ये दले टानछेन अबलाकान्त-बाबु। ए की रकम हल।

गुड़......आसे—गुड़ जम कर जैसे सख्त हो जाता है; **कि......देखि**—क्या सोच रहे हैं बताएँ तो सही।

भावछि......ना—सोच रहा हूँ किस बहाने से विदा लेने पर मुझे विदा करने में आपलोगों की भद्रता को ठेस नहीं लगेगी।

बन्धुत्वे......बाधे—यदि मित्रता को ठेस लगे।

ता......ना—तब तो बहाना खोजने की कोई ज़रूरत नहीं।

सेइ खोँजटा—वह खोज; **करुन**—कीजिए; **भालो......बसुन**—अच्छी तरह बैठिए।

योग्यइ नइ—योग्य ही नहीं हूँ; **कोनो**—कोई भी; **स्त्रीलोक......ना**—स्त्री, पुरुष नहीं समझती; **आपनाके देखे**—आपको देख कर; **पलायन.....करेछेन**—भाग गई हों तो यही समझ कर मन को सान्त्वना दें कि उन्होंने आपको पुरुष समझ कर आपको भारी सम्मान दिया है; **तोके......ना**—तुझे देख कर कोई भी तरुणी लज्जा से भागती नहीं।

आपनाकेओ—आपको भी; **दले टानछेन**—दल में घसीटे ले रहे हैं;

शैलबाला। की जानि विपिनबाबु—आमार एइ अबलाकान्त नामटाइ मिथ्ये—कोनो अबला तो ए पर्यन्त आमाके कान्त बले वरण करे नि।

विपिन। हताश हबेन ना, एखनओ समय आछे।

शैलबाला। से आशा एवं से समय यदि थाकत ता हले चिर-कुमार-सभाय नाम लेखाते येतुम ना।

विपिन। (स्वगत) एँर मनेर मध्ये एकटा की वेदना रयेछे नइले एत अल्प वयसे एइ काँचामुखे एमन स्निग्ध कोमल करुणभाव थाकत ना। एटा किसेर खाता। गान लेखा देखछि। 'नीरबाला देवी'।

पाठ

शैलबाला। की पड़छेन विपिनबाबु।

विपिन। कोनो एकटि अपरिचितार काछे अपराध करछि, हयतो ताँर काछे क्षमा प्रार्थना करबार सुयोग पाब ना एवं हयतो ताँर काछे शास्ति पाबारओ सौभाग्य हबे ना, किन्तु एइ गानगुलि मानिक एवं हातेर अक्षरगुलि मुक्तो। यदि लोभे पड़े चुरि करि तबे दण्डदाता विधाता क्षमा करबेन।

शैलबाला। विधाता माप करते पारेन किन्तु आमि करब ना। ओ खाताटिर 'परे आमार लोभ आछे विपिनबाबु।

ए......हल—यह कैसा हुआ (यह कैसी बात है)।

नामटाइ मिथ्ये—नाम ही मिथ्या है; **कोनो......नि**—अभी तक किसी भी अबला ने मुझे तो कान्त कह कर वरण नहीं किया।

हबेन ना—न हों; **एखनओ**—अब भी।

थाकत—होता; **लेखाते......ना**—लिखाने नहीं जाता।

एँर—इनके; **एकटा की**—कोई; **रयेछे**—है; **नइले**—नहीं तो; **एतो**—इतनी; **काँचामुखे**—किशोर मुख पर; **थाकत ना**—न रहता।

की.....पड़छेन—क्या पढ़ रहे हैं।

हयतो—हो सकता है; **ताँर काछे**—उनके निकट; **पाब ना**—न पाऊंगा; **शास्ति......ना**—दण्ड पाने का भी सौभाग्य न होगा; **मुक्तो**—मोती; **चुरि करि**—चोरी करूँ।

माप......पारेन—माफ कर सकते हैं; **आमि......ना**—मैं नहीं करूंगी।

रसिक। आर, आमि बुझि लोभ मोह समस्त जय करे बसे आछि? आहा, हातेर अक्षरेर मतो जिनिस आर आछे? मनेर भाव मूर्ति धरे आङ ुलेर आगा दिये बेरिये आसे—अक्षरगुलिर उपर चोख बुलिये गेले, हृदयटि येन चोखे एसे लागे। अबलाकान्त, ए खाताखानि छेड़ो ना भाइ। तोमादेर चञ्चला नीरबाला देवी कौतुकेर झरनार मतो दिनरात झरे पड़छे, ताके तो धरे राखते पार ना, एइ खाताखानिर पत्रपुटे तारइ एकटि गन्डूष भरे उठेछे—ए जिनिसेर दाम आछे। विपिनबाबु, आपनि तो नीरबालाके जानेन ना, आपनि ए खाताखाना निये की करबेन।

विपिन। आपनारा तो स्वयं ताँकेइ जानेन—खाताखानिते आपनादेर प्रयोजन की। एइ खाता थेके आमि येटुकु परिचय प्रत्याशा करि तार प्रति आपनारा दृष्टि देन केन।

[श्रीशेर प्रवेश

श्रीश। मने पड़ेछे मशाय—सेदिन एखाने एकटा बइयेते नाम देखेछिलेम, नृपबाला, नीरबाला—ए की, विपिन ये! तुमि एखाने हठात्?

विपिन। तोमार सम्बन्धेओ ठिक ओइ प्रश्नटा प्रयोग करा येते पारे।

बसे आछि—बैठा हुआ हूँ; **हातेर......आछे**—भला हाथ के लिखे अक्षरों के समान क्या कोई अन्य वस्तु है; **मनेर......आसे**—मन के भाव मूर्ति धारण कर उंगली के अग्रभाग से बाहर निकल पड़ते हैं; **अक्षर......लागे**—अक्षरों पर आँखें फिराने से हृदय जैसे आँखों से आ लगता है; **छेड़ो**—छोड़ना; **ताके...... ना**—उसे तो पकड़ कर रख नहीं सकते; **निये......करबेन**—ले कर क्या करेंगे।

ताँकेइ जानेन—उन्हीं को जानते हैं; **खाताखानिते......की**—कापी की आपको क्या ज़रूरत है; **येटुकु**—जितना; **तार......केन**—उस पर आप नज़र क्यों डालते हैं।

मने......मशाय—याद आ गया महाशय; **एखाने**—यहाँ; **बइयेते**—पुस्तक में; **देखेछिलेम**—देखा था; **ए की**—यह क्या।

करा......पारे—किया जा सकता है।

श्रीश। आमि एसेछिलुम आमार सेइ संन्यासीसम्प्रदायेर कथाटा अबलाकान्तबाबुर सङ्गे आलोचना करते। ओँर येरकम चेहारा, कण्ठस्वर, मुखेर भाव, उनि ठिक आमार संन्यासीर आदर्श हते पारेन। उनि यदि ओँर ओइ चन्द्रकलार मतो कपालटिते चन्दन दिये, गलाय माला परे, हाते एकटि वीणा निये सकालवेलाय एकटि पल्लीर मध्ये प्रवेश करेन ता हले कोन् गृहस्थेर हृदय ना गलाते पारेन।

रसिक। बुझते पारछि ने मशाय, हृदय गलाबार कि खुब जरुरि दरकार हयेछे।

श्रीश। चिरकुमार-सभा हृदय गलाबार सभा।

रसिक। बलेन की। तबे आमार द्वारा की काज पाबेन।

श्रीश। आपनार मध्ये येरूप उत्ताप आछे आपनि उत्तरमेरुते गेले सेखानकार बरफ गलिये वन्या करे दिये आसते पारेन। विपिन, उठछ नाकि।

विपिन। याइ, आमाके रात्रे एकटु पड़ते हबे।

रसिक। (जनान्तिके) अबलाकान्त जिज्ञासा करछेन, पड़ा हये गेले बइखाना कि फेरत पाओया याबे।

विपिन। (जनान्तिके) पड़ा हये गेले से आलोचना परे हबे, आज थाक्।

आमि......छिलुम—मैं आया था; **ओँर**—उनका; **ये-रकम**—जैसा; **हते पारेन**—हो सकते हैं; **दिये**—दे कर; **परे**—पहन कर; **हाते**—हाथ में; **सकालवेलाय**—सबेरे; **पल्लीर मध्ये**—गाँव में; **ना......पारेन**—गला न सकेंगे।

बुझते......ने—समझ नहीं पा रहा हूँ; **हृदय......हयेछे**—हृदय गलाने की क्या बहुत ज़रूरत आ पड़ी है।

तबे......पाबेन—तो फिर मुझसे कौन-सा काम लेंगे।

गेले—जाने पर; **सेखानकार**—वहाँ की; **गलिये**—गला कर; **वन्या...... पारेन**—बाढ़ ला दे सकते हैं; **उठछ नाकि**—उठ रहे हो क्या।

याइ......हबे—चलूँ, मुझे रात में ज़रा पढ़ना होगा।

जिज्ञासा करछेन—पूछ रहे हैं; **पड़ा......याबे**—पढ़ना हो जाने पर किताब क्या वापस मिलेगी। **परे हबे**—बाद में होगी; **आज थाक्**—आज रहने दें।

शैलबाला। (मृदुस्वरे) श्रीशबाबु इतस्तत करछेन केन, आपनार किछु हारियेछे नाकि।

श्रीश। (मृदुस्वरे) आज थाक्, आर एकदिन खुँजे देखब।

[श्रीश ओ विपिनेर प्रस्थान

नीरबाला। (द्रुत प्रवेश करिया) ए की रकमेर डाकाति दिदि। आमार गानेर खाताखाना निये गेल! आमार भयानक राग हच्छे।

रसिक। राग शब्दे नाना अर्थ अभिधाने कय।

नीरबाला। आच्छा पण्डितमशाय, तोमार अभिधान जाहिर करते हबे ना—आमार खाता फिरिये आनो।

रसिक। पुलिसे खबर दे भाइ, चोर धरा आमार व्यवसा नय।

नीरबाला। केन दिदि तुमि आमार खाता निये येते दिले।

शैलबाला। एमन अमूल्य धन तुइ फेले रेखे यास केन।

नीरबाला। आमि बुझि इच्छे करे फेले रेखे गेछि।

रसिक। लोके सेइरकम सन्देह करछे।

नीरबाला। ना रसिकदादा, तोमार ओ ठाट्टा आमार भालो लागे ना।

आपनार......नाकि—आपका कुछ खो गया है क्या।

आर......देखब—और किसी दिन खोज देखूंगा।

डाकाति—डकैती; **निये गेल**—ले गया; **आमार......हच्छे**—मुझे बड़ा गुस्सा आ रहा है।

राग......कय—कोश में राग शब्द के नाना अर्थ पाए जाते हैं।

पुलिसे......भाइ—पुलिस को खबर दे भाई; **चोर......नय**—चोर पकड़ना मेरा व्यवसाय (काम) नहीं है।

केन......दिले—दीदी तुमने मेरी कापी क्यों ले जाने दी।

एमन—ऐसा; **तुइ......केन**—तू डाल क्यों जाती है।

आमि......गेछि—मैं शायद जान कर डाल गई हूँ।

लोके......करछे—लोग इसी प्रकार का सन्देह करते हैं।

तोमार......ना—तुम्हारा वह मजाक मुझे अच्छा नहीं लगता।

ता......अवस्था—तब तो बड़ी खराब हालत है।

रसिक। ता हले भयानक खाराप अवस्था।

[नीरबालार सक्रोधे प्रस्थान

[सलज्ज नृपबालार प्रवेश

रसिक। की नृप, हाराधन खुँजे बेड़ाच्छिस।

नृपबाला। ना आमार किछु हाराय नि।

रसिक। से तो अति सुखेर संवाद। शैलदिदि, ता हले आर केन, रुमालखानार मालिक यखन पाओया याच्छे ना, तखन ये लोक कुड़िये पेयेछे ताकेइ फिरिये दिस। (शैलर हात हइते रुमाल लइया) ए जिनिसटा कार भाइ।

नृपबाला। ओ आमार नय। [पलायनोद्यत

रसिक। (नृपके धरिया) ये जिनिसटा खोओया गेछे नृप तार उपरे कोनो दाबिओ राखते चाय ना।

नृपबाला। रसिकदादा, छाड़ो, आमार काज आछे।

द्वितीय दृश्य

गोलदिघिर पथ

श्रीश ओ विपिन

श्रीश। ओहे विपिन, आज माघेर शेषे प्रथम वसन्तेर वातास दियेछे, ज्योत्स्नाओ दिव्यि, आज यदि एखनइ घुमोते किंवा पड़ा

की......बेड़ाच्छिस—क्यों नृप, खोया हुआ धन खोजती डोल रही है।

ना......नि—नहीं, मेरा कुछ नहीं खोया है।

से......संवाद—यह तो बड़े सुख का संवाद है; **ता......केन**—ऐसा है तो फिर अब देर क्यों; **यखन......ना**—जब नहीं मिल रहा है; **तखन......दिस**—तब जिस आदमी ने पाया है उसीको लौटा दे; **हात हइते**—हाथ से; **लइया**—ले कर; **ए......भाइ**—यह चीज किसकी है भाई।

ओ......नय—वह मेरी नहीं है।

धरिया—पकड़ कर; **ये.....ना**—जो वस्तु खो गई है नृप उस पर कोई दावा भी नहीं करना चाहती। **छाड़ो**—छोड़ो; **आमार......आछे**—मुझे काम है।

बातास दियेछे—हवा चली है; **ज्योत्स्नाओ दिव्यि**—चाँदनी भी गजब

मुखस्थ करते याओया याय ता हले देवतारा धिक्कार देबेन।

विपिन। ताँदेर धिक्कार खुब सहजे सह्य हय किन्तु व्यामोर धाक्का किंवा—

श्रीश। देखो, ओइजन्ये तोमार सङ्गे आमार झगड़ा हय। आमि बेश जानि दक्षिणे हाओयाय तोमारओ प्राणटा चञ्चल हय, किन्तु पाछे केउ तोमाके कवित्वेर अपवाद देय ब'ले मलय-समीरणटाके एकेबारेइ आमल दिते चाओ ना। एते तोमार बाहादुरिटा की जिज्ञासा करि। आमि तोमार काछे आज मुक्तकण्ठे स्वीकार करछि, आमार फुल भालो लागे, ज्योत्स्ना भालो लागे—

विपिन। एवं—

श्रीश। एवं या किछु भालो लागबार मतो जिनिस सबइ भालो लागे।

विपिन। विधाता तो तोमाके भारि आश्चर्यरकम छाँचे गड़ेछेन देखछि।

श्रीश। तोमार छाँच आरओ आश्चर्य। तोमार लागे भालो किन्तु बल अन्यरकम—आमार सेइ शोबार घरेर घड़िटार मतो—से चले ठिक बाजे भुल।

की है; **आज......देबेन**—आज यदि अभी से सोने अथवा पाठ याद करने जाया जाय तो देवतागण धिक्कारेंगे।

ताँदेर—उनका; **हय**—होता है; **व्यामोर धाक्का**—रोग का धक्का।

ओइजन्ये—उसीसे; **आमि......हय**—मैं अच्छी तरह जानता हूँ दक्षिणी वायु से तुम्हारे प्राण भी चञ्चल होते हैं; **किन्तु......ना**—किन्तु बाद में कोई तुम पर कवित्व का लांछन न लगाए इसलिए मलय समीरण को किसी भी प्रकार प्रश्रय नहीं देना चाहते; **एते......करि**—इसमें तुम्हारी कौन-सी बहादुरी है, पूछूँ; **भालो लागे**—अच्छी लगती है।

या......लागे—जो कुछ अच्छी लगने वाली वस्तुएँ हैं वे सभी अच्छी लगती हैं।

छाँचे गड़ेछेन—साँचे में गढ़ा है; **देखछि**—देखता हूँ।

आरओ आश्चर्य—और भी विचित्र है; **तोमार......रकम**—तुम्हें लगता तो है अच्छा, पर कहते हो और कुछ; **सेइ......मतो**—मेरे सोने वाले कमरे की

विपिन। किन्तु श्रीश, तोमार यदि सब मनोरम जिनिसइ मनोहर लागते लागल ता हले तो आसन्न विपद।

श्रीश। आमि तो किछुइ विपद बोध करि ने।

विपिन। सेइ लक्षणटाइ तो सब चेये खाराप। रोगेर यखन वेदनाबोध चले याय तखन आर चिकित्सार रास्ता थाके ना। आमि भाइ स्पष्टइ कबुल करछि, स्त्रीजातिर एकटा आकर्षण आछे—चिरकुमार-सभा यदि सेइ आकर्षण एड़ाते चान ता हले ताँके खुब तफात दिये येते हबे।

श्रीश। भुल, भुल, भयानक भुल। तुमि तफाते थाकले की हबे, ताँरा तो तफाते थाकेन ना। संसार-रक्षार जन्ये विधाताके एत नारी सृष्टि करते हयेछे ये ताँदेर एड़िये चला असम्भव। अतएव कौमार्य यदि रक्षा करते चाओ ता हले नारीजातिके अल्पे अल्पे सइये निते हबे। ओइ ये स्त्रीसभ्य नेबार नियम हयेछे, एतदिन परे कुमार-सभा चिर-स्थायी हबार उपाय अवलम्बन करेछे। किन्तु केवल एकटिमात्र महिला हले चलबे ना विपिन, अनेकगुलि स्त्रीसभ्य चाइ; बद्ध घरेर एकटि जानला खुले ठाण्डा लागाले सर्दि धरे, खोला हाओयाय थाकले से विपद नेइ।

उस घड़ी की भाँति; **से......भुल**—वह चलती तो है ठीक, पर घण्टे गलत बजाती है।

लागते......विपद—लगने लगीं तब तो विपद आने वाली है।

सेइ......खाराप—वही तो सबसे खराब लक्षण है; **रोगेर......ना**—रोग की व्यथा का ज्ञान जब चला जाता है तब चिकित्सा का और उपाय नहीं रह जाता; **कबुल करछि**—कबूल करता हूँ; **एड़ाते चान**—कतराना चाहें; **ताँके......हबे**—उसे अलग हट कर चलना होगा।

भुल—गलत; **तुमि......ना**—तुम्हारे अलग रहने से क्या होगा, वे तो अलग नहीं रहतीं; **रक्षार जन्ये**—रक्षा के लिए; **एत......असम्भव**—इतनी नारी-सृष्टि करनी पड़ी है कि उनसे कतरा कर चलना असम्भव है; **करते चाओ**—करना चाहो; **अल्पे......हबे**—थोड़ा थोड़ा करके सह्य कर लेना होगा; **ओइ...... हयेछे**—वह जो स्त्री-सदस्य लेने का नियम हुआ है; **एतदिन परे**—इतने दिनों बाद; **हबार**—होने का; **करेछे**—किया है; **हले......ना**—होने से नहीं चलेगा; **चाइ**—चाहिए; **जानला**—खिड़की; **ठाण्डा......धरे**—ठण्ड लगा लेने पर सर्दी

विपिन। आमि तोमार ओइ खोला-हाओया बद्ध-हाओया बुझि ने भाइ। यार सर्दिर धात ताके सर्दि थेके रक्षा करते देवता मनुष्य केउ पारे ना।

श्रीश। तोमार धात की बलछे हे।

विपिन। से कथा खोलसा करे बललेइ बुझते पारबे तोमार धातेर सङ्गे तार चमत्कार मिल आछे। नाड़िटा ये सब समये ठिक चिरकुमारेर नाड़िर मतो चले ता जाँक करे बलते पारब ना।

श्रीश। ओइटे तोमार आर एकटा भुल। चिरकुमारेर नाड़िर उपरे उनपञ्चाश पवनेर नृत्य हते दाओ—कोनो भय नेइ बाँधाबाँधि चापाचापि कोरो ना। आमादेर मतो व्रत यादेर, तारा कि हृदयटिके तुलो दिये मुड़े राखते पारे। ताके अश्वमेध यज्ञेर घोड़ार मतो छेड़े दाओ, ये ताके बाँधबे तार सङ्गे लड़ाइ करो।

विपिन। ओ के हे। पूर्ण देखछि। ओ बेचारार ए गलि थेके आर बेरोबार जो नेइ। ओइ वीरपुरुषेर अश्वमेधेर घोड़ाटि बेजाय खोँड़ाच्छे। ओके एकबार डाक देव?

हो जाती है; **खोला......नेइ**—खुली हवा में रहने पर वह भय नहीं रहता।

यार......ना—जिसका सर्दी का कोठा है उसकी सर्दी से रक्षा देवता मनुष्य कोई नहीं कर सकता। **की बलछे**—क्या कहता है।

से......आछे—वह बात खुलासा कहने पर ही समझ सकोगे कि तुम्हारी प्रकृति के साथ उसका अद्भुत सादृश्य है; **ठिक**—ठीक; **चले**—चलती है; **ता......ना**—वह गर्व के साथ नहीं कह सकता (यह कहने की गुस्ताखी नहीं कर सकता)।

ओइटे......भुल—वह तुम्हारी एक और भूल है; **उनपञ्चाश**—उनचास; **हते दाओ**—होने दो; **कोनो......नेइ**—कोई भय नहीं; **बाँधाबाँधि**—बाँध कर रखना; **चापाचापि**—दबा कर रखना; **कोरो ना**—मत करो; **यादेर**—जिन का; **तारा......पारे**—वे क्या हृदय को रुई में लपेट कर रख सकते हैं; **छेड़े दाओ**—छोड़ दो; **ये......करो**—जो उसे बाँधेगा उससे लड़ाई करो।

ओ के हे—अरे, वह कौन है; **ओ......नेइ**—उस बेचारे को इस गली से निकलने का कोई उपाय नहीं; **बेजाय खोँड़ाच्छे**—बेतरह लंगड़ा रहा है; **ओके ......देब**—उसे एकबार आवाज लगाऊँ।

श्रीश। डाको। ओ किन्तु आमादेरइ दुजनके अन्वेषण करे गलिते गलिते घुरछे बले बोध हच्छे ना।

विपिन। पूर्णबाबु, खबर की।

[पूर्णर प्रवेश

पूर्ण। अत्यन्त पुरोनो। काल-परशु ये-खबर चलछिल आजओ ताइ चलछे।

श्रीश। काल-परशु शीतेर हाओया बच्छिल, आज वसन्तेर हाओया दियेछे––एते दुटो-एकटा नतुन खबरेर आशा करा येते पारे।

पूर्ण। दक्षिणेर हाओयाय ये-सब खबरेर सृष्टि हय, कुमार-सभार खबरेर कागजे तार स्थान नेइ। तपोवने एकदिन अकाले वसन्तेर हाओया दियेछिल ताइ निये कालिदासेर कुमारसम्भव काव्य रचना हयेछे––आमादेर कपालगुणे वसन्तेर हाओयाय कुमार-असम्भव काव्य हये दाँड़ाय।

विपिन। हय तो होक-ना पूर्णबाबु––से काव्ये ये-देवता दग्ध हयेछिलेन ए काव्ये ताँके पुनर्जीवन देओया याक।

पूर्ण। ए काव्ये चिरकुमार-सभा दग्ध होक। ये-देवता ज्वले-

डाको––पुकारो; **ओ......ना**––वह लेकिन हम दोनों को ही खोजता गली गली घूम रहा है ऐसा तो नहीं लगता।

खबर की––क्या खबर है (क्या हाल-चाल है)।

पुरोनो––पुरानी; **काल......चलछे**––कल परसों जो खबर चल रही थी आज भी वही चल रही है।

बच्छिल––बह रही थी; **हाओया दियेछे**––हवा चली है; **एते......पारे**––इससे दो-एक नई खबरों की आशा की जा सकती है।

दक्षिणेर......नेइ––दक्षिणी हवा से जिन खबरों की सृष्टि होती है, कुमार-सभा के समाचार पत्र में उनके लिए स्थान नहीं है; **अकाले**––असमय में; **हाओया दियेछिल**––हवा चली थी; **ताइ निये**––उसीको ले कर; **आमादेर......दाँड़ाय**––हमलोगों के भाग्य की विशेषता से वसन्त की हवा से कुमार-असम्भव काव्य तैयार हो जाता है।

हय......ना––होता है तो हो न; **से......याक**––उस काव्य में जो देवता भस्म हो गए थे इस काव्य में उन्हें पुनर्जीवन दिया जाय।

छिलेन तिनि ज्वालान। ना, आमि ठाट्टा करछि ने श्रीशबाबु, आमादेर चिरकुमार-सभाटि एकटि आस्त जतुगृह-विशेष। आगुन लागले रक्षे नेइ। तार चेये विवाहित सभा स्थापन करो, स्त्रीजाति सम्बन्धे निरापद थाकबे। ये इँट पाँजाय पुड़ेछे ता दिये घर तैरि करले आर पोड़बार भय थाके ना हे।

श्रीश। ये-से लोक विवाह करे विवाह जिनिसटा माटि हये गेछे

पूर्णबाबु। सेइ जन्यइ तो कुमार-सभा। आमार यतदिन प्राण आछे ततदिन ए सभाय प्रजापतिर प्रवेश निषेध।

विपिन। पञ्चशर?

श्रीश। आसुन तिनि। एकबार ताँर सङ्गे घनिष्ठता हये गेले, बास् आर भय नेइ।

पूर्ण। देखो श्रीशबाबु——

श्रीश। देखब आर की। ताँके खुँजे बेड़ाच्छि। एक चोट दीर्घनिश्वास फेलब, कविता आओड़ाब, कनकवलयभ्रंसरिक्तप्रकोष्ठ हये याब, तबे रीतिमत संन्यासी हते पारब। आमादेर कवि लिखेछेन——

ए काव्ये——इस काव्य में; **दग्ध होक**——भस्म हो; **ये......ज्वालान**——जो देवता जले थे वे जलावें; **आस्त**——पूरा का पूरा; **जतु-गृह**——लाक्षा गृह; **आगुन......नेइ**——आग लगने पर रक्षा नहीं हो सकेगी; **तार चेये**——उससे तो; **निरापद थाकबे**——निर्विघ्न रहोगे; **ये......ना**——जो ईंट पजावे (भट्ठे) में पक चुकी हो उससे घर बनाने पर और जलने का भय नहीं रहता।

ये......करे——जिस-तिस के विवाह कर लेने के कारण; **विवाह......गेछे**——विवाह (नामक) वस्तु मिट्टी हो गई है; **सेइ......तो**——इसीलिए तो; **प्रजापति**——ब्रह्मा, तितली (व्यंग्यार्थ में युवतियों के लिए प्रयुक्त)।

आसुन तिनि——वे आवें; **हये गेले**——हो जाने पर; **बास्**——बस।

देखब......की——अब और क्या देखूँ; **ताँके......बेड़ाच्छि**——उन्हें ढूंढ़ता फिर रहा हूँ; **एक चोट**——एक बार; **निश्वास फेलब**——आह भरूंगा; **आओड़ाब**——आवृत्ति करूंगा; **भ्रंस**——गिरने के कारण; **प्रकोष्ठ**——बाँह का कलाई से ले कर कुहनी तक का भाग; **हये याब**——हो जाऊंगा; **तबे......पारब**——तभी नियमानुसार संन्यासी हो सकूंगा।

पोहाते——समाप्त होते; **ज्वालाइया याओ**——जला जाओ; **दिया**——द्वारा;

निशि ना पोहाते जीवनप्रदीप
ज्वालाइया याओ प्रिया,
तोमार अनल दिया।
कबे याबे तुमि समुखेर पथे
दीप्त शिखाटि बाहि
आछि ताइ पथ चाहि।
पुड़िबे बलिया रयेछे आशाय
आमार नीरव हिया
आपन आँधार निया।
निशि ना पोहाते जीवनप्रदीप
ज्वालाइया याओ प्रिया।

पूर्ण। ओहे श्रीशबाबु, तोमार कविटि तो मन्द लेखे नि—
निशि ना पोहाते जीवनप्रदीप
ज्वालाइया जाओ प्रिया।

घरटि साजानो रयेछे—थालाय माला, पालङ्के पुष्पशय्या, केवल जीवनप्रदीपटि ज्वलछे ना, सन्ध्या क्रमे रात्रि हते चलल। वा:, दिव्यि लिखेछे। कोन् बइटाते आछे बलो देखि।

श्रीश। बइटार नाम 'आवाहन'।

पूर्ण। नामटाओ बेछे बेछे दियेछे भालो।

(आपन मने) निशि ना पोहाते जीवनप्रदीप
ज्वालाइया याओ प्रिया।
दीर्घनिश्वास

कबे......पथे—कब तुम सामने के पथ से निकलोगी; **बाहि**—वहन कर; **आछि......चाहि**—इसीलिए पथ की ओर दृष्टि लगाए हुए हूँ; **पुड़िबे......निया**—(तुम) जलाओगी इसीलिए अपने अंधकार को ले कर मेरा नीरव हृदय आस लगाए है।

घरटि......रयेछे—कमरा सजाया हुआ है; **थालाय**—थाल में; **ज्वलछे ना**—नहीं जल रहा है; **क्रमे**—क्रमशः; **हते चलल**—होने चली; **वा:......लिखेछे**—वाह, सुंदर लिखा है; **कोन्......आछे**—किस किताब में है।

नामटाओ......भालो—नाम भी चुन कर अच्छा दिया है।

तोमरा कि बाड़िर दिके चलेछ।

श्रीश। बाड़ि कोन् दिके भुले गेछि भाइ।

पूर्ण। आज पथ भोलबार मतोइ राततटा हयेछे बटे। की बल विपिनबाबु।

श्रीश। विपिनबाबु ए-सकल विषये कोनो कथाइ कन ना, पाछे ओँर भितरकार कवित्व धरा पड़े। कृपण ये-जिनिसटार बेशि आदर करे सेइटेकेइ माटिर नीचे पुँते राखे।

विपिन। अस्थाने बाजे खरच करते चाइ ने भाइ, स्थान खुँजे बेड़ाच्छि। मरते हले एकेबारे गङ्गार घाटे गिये मराइ भालो।

पूर्ण। ए तो उत्तम कथा, शास्त्रसंगत कथा। विपिनबाबु एकेबारे अन्तिमकालेर जन्ये कवित्व सञ्चय करे राखछेन, यखन अन्ये वाक्य कबेन किन्तु उनि रबेन निरुत्तर। आशीर्वाद करि अन्येर सेइ वाक्यगुलि येन मधुमाखा हय——

श्रीश। एवं तार सङ्गे येन किञ्चित् झालेर सम्पर्कओ थाके।

विपिन। एवं वाक्यवर्षण करेइ येन मुखेर समस्त कर्तव्य निःशेष ना हय——

पूर्ण। वाक्येर विरामस्थलगुलि येन वाक्येर चेये मधुमत्तर हये ओठे——

तोमरा......चलेछ—तुमलोग क्या घर की ओर चले हो।

बाड़ि......भाइ—घर किस ओर है भूल गया हूँ भाई।

भोलबार......बटे—सचमुच में भूलने लायक ही रात हुई है।

ए......ना—इन सब विषयों में कोई बात ही नहीं कहते; **पाछे**—बाद में; **ओँर......पड़े**—उनके भीतर का कवित्व पकड़ा जाय; **सेइटेकेइ......राखे**—उसे ही मिट्टी के नीचे गाड़ रखता है।

अस्थाने......भाइ—अनुपयुक्त स्थान में व्यर्थ खर्च करना नहीं चाहता भाई; **स्थान......बेड़ाच्छि**—स्थान ढूंढ़ता फिर रहा हूँ; **मरते......भालो**—मरना हो तो एकदम गंगा के घाट पर जा कर ही मरना अच्छा है।

यखन......निरुत्तर—जब दूसरे बात कहेंगे वे निरुत्तर रहेंगे; **करि**—करता हूँ, देता हूँ; **येन......हय**—मानो मधुसिञ्चित हो।

झालेर......थाके—तीखेपन का भी संबंध है। **करेइ**—करके ही।

श्रीश। सेदिन निद्रा येन ना आसे––

पूर्ण। रात्रि येन ना याय––

विपिन। चन्द्र येन पूर्णचन्द्र हय––

पूर्ण। विपिन येन वसन्तेर फुले प्रफुल्ल हये ओठे––

श्रीश। एवं हतभाग्य श्रीश येन कुञ्जद्वारेर काछे एसे उँकि-झुँकि ना मारे।

पूर्ण। दूर होक गे श्रीशबाबु, तोमार सेइ 'आवाहन' थेके आर एकटा किछु कविता आओड़ाओ। चमत्कार लिखेछे हे––

निशि ना पोहाते जीवनप्रदीप
ज्वालाइया याओ प्रिया।

आहा! एकटि जीवनप्रदीपेर शिखाटुकु आर-एकटि जीवन-प्रदीपेर मुखेर काछे केवल एकटु ठेकिये गेलेइ हय, बास्, आर किछुइ नय–– दुटि कोमल अङ्गुलि दिये दीपखानि एकटु हेलिये एकटु छुँइये याओया, तार परेइ चकितेर मध्ये समस्त आलोकित।

(आपन मने) निशि ना पोहाते जीवनप्रदीप
ज्वालाइया याओ प्रिया।

श्रीश। पूर्णबाबु, याओ कोथाय?

पूर्ण। चन्द्रबाबुर बासाय एकखाना बइ फेले एसेछि, सेइटे खुँजते याच्छि।

वाक्येर......ओठे––बात से भी मधुरतर हो उठे।

येन......आसे––जिसमें न आवे।

याय––जाय।

कुञ्जद्वारेर......मारे––कुञ्ज के द्वार के पास आ ताक-झाँक न करे।

दूर......गे––जाने दो, हटाओ भी।

एकटु......हय––जरा-सा स्पर्श लगना ही काफी है; **बास्**––बस; **आर...... नय**––और कुछ नहीं; **दुटि......आलोकित**––दो कोमल उंगलियों से दीप को जरा-सा झुका कर, जरा-सा छू जाना, बस फिर पल भर में ही सब प्रकाशमय।

आपन मने––मन ही मन। **याओ कोथाय**––कहाँ चले।

एकखाना......याच्छि––एक किताब छोड़ आया हूँ उसीको खोजने जा रहा हूँ।

विपिन। खुँजले पाबे तो? चन्द्रबाबुर बासा बड़ो एलोमेलो जायगा——सेखाने या हाराय से आर पाओया याय ना।

[पूर्णर प्रस्थान

श्रीश। (दीर्घनिश्वास फेलिया) पूर्ण बेश आछे भाइ विपिन।

विपिन। भितरकार वाष्पेर चापे ओर माथाटा सोडाओआटारेर छिपिर मतो एकेबारे टप् करे उड़े ना याय।

श्रीश। याय तो याक ना। कोनोमते लोहार तार एँटे माथाटाके ठिक जायगाय धरे राखाइ कि जीवनेर चरम पुरुषार्थ। माझे माझे माथार बेठिक ना हले रात-दिन मुटेर बोझार मतो माथाटाके बये बेड़ाच्छि केन। दाओ भाइ तार केटे, एकबार उड़ुक। सेदिन तोमाके शोनाच्छिलुम——

ओरे सावधानी पथिक, बारेक
पथ भुले मर फिरे।
खोला आँखि दुटो अन्ध करे दे
आकुल आँखिर नीरे।
से भोला पथेर प्रान्ते रयेछे
हारानो हियार कुञ्ज;
झरे पड़े आछे काँटातरु-तले
रक्तकुसुमपुञ्ज;

खुंजले......तो——खोजने पर पा तो जाओगे; **एलोमेलो जायगा**——विश्रृंखल स्थान, गड़बड़ जगह; **सेखाने......ना**——वहाँ जो (कुछ) खो जाता है वह फिर कभी नहीं मिलता। **दीर्घनिश्वास फेलिया**——लंबी सांस ले कर।

भितरकार......याय——भीतर के बाष्प के दबाव से उसका सिर सोडावाटर की डाट की भाँति कहीं एकदम से उड़ न जाय।

याय......ना——जाय तो जाय न; **कोनोमते......राखाइ**——जैसे तैसे लोहे का तार कस कर मस्तिष्क को ठीक स्थान पर रखना ही; **माझे माझे**——बीच बीच में; **ना हले**——न होने पर; **मुटेर......मतो**——मजदूर के (सिर के) बोझेके समान; **बये......केन**——ढोए क्यों फिर रहा हूँ; **दाओ.....उड़क**——भाई, तार काट दो, एकबार उड़े; **सेदिन......शोनाच्छिलुम**——उस दिन तुम्हें सुना रहा था।

सावधानी——सावधान; **बारेक**——एक बार; **से......कुञ्ज**——उस भूले हुए

सेथा दुइवला भाङा-गड़ा खेला
अकूल सिन्धुतीरे।
ओरे सावधानी पथिक, बारेक
पथ भुले मर फिरे।

विपिन। आजकाल तुमि खुब कविता पड़ते आरम्भ करेछ, शीघ्रइ एकटा मुशकिले पड़बे देखछि।

श्रीश। ये लोक इच्छे करे मुशकिलेर रास्ता खुँजे बेड़াच्छे तार जन्ये केउ भेबो ना। मुशकिलके एड़िये चलते गिये हठात् मुशकिलेर मध्ये पा फेललेइ विपद। आसुन आसुन रसिकबाबु, रात्रे पथे बेरियेछेन ये!

[रसिकेर प्रवेश

रसिक। आमार रातइ वा की, आर दिनइ वा की—

वरमसौ दिवसो न पुनर्निशा,
ननु निशैव वरं न पुनर्दिनम्।
उभयमेतदुपैत्वथवा क्षयं
प्रियजनेन न यत्र समागमः।

श्रीश। अस्यार्थः?

रसिक। अस्यार्थ हच्छे—

आसे तो आसुक राति, आसुक वा दिवा,
याय यदि याक निरवधि।
ताहादेर यातायाते आसे याय किवा
प्रिय मोर नाहि आसे यदि।

पथ की सीमा पर खोए हुए हृदय का कुञ्ज है; **सेथा**—वहाँ; **भाङा......खेला**—बनाने मिटाने का खेल।

ये......ना—जो आदमी इच्छापूर्वक विपत्ति का रास्ता ढूंढ़ता फिर रहा है उसके लिए कोई चिन्ता न करे; **एड़िये......गिये**—कतरा कर चलने पर; **पा फेललेइ**—पैर पड़ते ही; **आसुन**—आइए; **रात्रे......ये**—रात में निकल पड़े।

आमार......की—मेरे लिए भला क्या रात और क्या दिन।

आसे......आसुक—आवे तो आवे; **याय**—जाय; **याक**—जाय; **ताहादेर**

अनेकगुलो दिनरात ए-पर्यन्त एसेछे एवं गेछे किन्तु तिनि आज पर्यन्त एसे पौँछलेन ना—ताइ, दिनइ बलुन आर रातइ बलुन ओ दुटोर 'परे आमार आर किछुमात्र श्रद्धा नेइ।

श्रीश। आच्छा रसिकबाबु, प्रियजन एखनइ यदि हठात् एसे पड़ेन।

रसिक। ता हले आमार दिके ताकाबेन ना, तोमादेर दुजनेर मध्ये एकजनेर भागेइ पड़बेन।

श्रीश। ता हले तद्दण्डेइ तिनि अरसिक बले प्रमाण हये याबेन।

रसिक। एवं परदण्डेइ परमानन्दे कालयापन करते थाकबेन। ता आमि ईर्षा करते चाइ ने श्रीशबाबु। आमार भाग्ये यिनि आसते बहु विलम्ब करलेन, आमि ताँके तोमादेर उद्देशेइ उत्सर्ग करलुम। देवी, तोमार वरमाल्य गेँथे आनो। आज वसन्तेर शुक्लरजनी, आज अभिसारे एसो।—

मन्दं निधेहि चरणौ, परिधेहि नीलं
वासः, पिधेहि वलयावलिमञ्चलेन।
मा जल्प साहसिनि शारदचन्द्रकान्त-
दन्तांशवस्तव तमांसि समापयन्ति।

......**किवा**—उनके आने जाने से क्या आता-जाता है; **नाहि आसे**—न आएँ।

ए......गेछे—अब तक आए गए हैं; **तिनि......ना**—वे आज तक नहीं आईं; **ताइ......नेइ**—इसलिए, चाहे दिन कहिए या रात कहिए, मेरी उन पर तनिक भी श्रद्धा नहीं।

एखनइ—अभी; **एसे पड़ेन**—आ धमकें।

ता......पड़बे—तो मेरी ओर ताकेंगी ही नहीं, तुम दोनों में से ही किसी के हिस्से में आएंगी।

ता......याबेन—तब तो वे उसी क्षण अरसिक प्रमाणित हो जाएंगी।

परदण्डेइ—दूसरे ही क्षण; **करते थाकबेन**—करती रहेंगी; **करते.....ने**—नहीं करना चाहता; **यिनि आसते**—जिन्होंने आने में; **करलुम**—किया; **गेँथे आनो**—गुँथ लाओ; **एसो**—आओ।

धीरे धीरे चलो तन्वी, परो नीलाम्बर,
अञ्चले बाँधिया राखो कङ्कण मुखर;
कथाटि कोयो ना, तव दन्त-अंशु-रुचि
पथेर तिमिरराशि पाछे फेले मुछि।

श्रीश। रसिकबाबु, आपनार झुलि ये एकेबारे भरा। एमन कत तर्जमा करे रेखेछेन ?

रसिक। बिस्तर। लक्ष्मी तो एलेन ना, केवल वाणीके नियेइ दिन यापन करछि।

श्रीश। ओहे विपिन, अभिसार-व्यापारटा कल्पना करते बेश लागे।

विपिन। ओटा पुनर्वार चालाबार जन्ये चिरकुमार-सभाय एकटा प्रस्ताव एने देखो-ना।

श्रीश। कतकगुलो जिनिस आछे यार आइडियाटा एत सुन्दर ये, संसारे सेटा चालाते साहस हय ना। ये-रास्ताय अभिसार हते पारे, येखाने कामिनीदेर हार थेके मुक्तो छिँड़े छड़िये पड़े, से-रास्ता कि तोमार पटलडाङा स्ट्रीट। से-रास्ता जगते कोथाओ नेइ। विरहिणीर हृदय नीलाम्बरी परे मनोराज्येर पथे ओइरकम करे बेरिये थाके––

परो—पहनो; **कथाटि.....ना**—बात न करना; **पाछे.....मुछे**—कहीं पोँछ न डाले।

आपनार......भरा––आपकी झोली तो ठसाठस भरी हुई है; **एमन...... रेखेछेन**—ऐसा कितना तर्जुमा (अनुवाद) कर रखा है।

एलेन ना––आईं नहीं; **केवल......करछि**—केवल वाणी (सरस्वती) को ले कर ही दिन काट रहा हूँ।

चालाबार जन्ये—चलाने के लिए; **एने**—ला कर।

कतकगुलो......ना––कई चीजें हैं जिनका आइडिया इतना सुन्दर होता है कि उन्हें संसार में चलाने का साहस नहीं होता; **ये-रास्ताय**—जिस रास्ते पर; **हते पारे**—हो सकता है; **येखाने**––जहाँ; **मुक्तो**—मुक्ता, मोती; **छिँड़े ......पड़े**—टूट कर बिखर पड़ते हैं; **से......नेइ**—वह रास्ता संसार में कहीं है ही नहीं; **परे**—पहन कर; **ओइरकम......थाके**—उसी प्रकार बाहर निकलता

वक्षेर उपर थेके मुक्तो छिँड़े पड़े, चेयेओ देखे ना—सत्यिकार मुक्तो हले कुड़िये नित। की बलेन रसिकबाबु।

रसिक। से कथा मानतेइ हय—अभिसारटा मने मनेइ भालो, गाड़िघोड़ार रास्ताय अत्यन्त बेमानान। आशीर्वाद करि श्रीशबाबु, एइरकम वसन्तेर ज्योस्नारात्रे कोनो एकटि जानला थेके कोनो-एक रमणीर व्याकुल हृदय तोमार बासार दिके येन अभिसारे यात्रा करे।

श्रीश। ता करबे रसिकबाबु, आपनार आशीर्वाद फलबे। आजकेर हाओयाते सेइ खबरटा आमि मने मने पाच्छि। बिशे डाकात येमन खबर दिये डाकाति करत, आमार अजाना अभिसारिका तेमनि पूर्वे हतेइ आमाके अभिसारेर खबर पाठियेछे।

विपिन। तोमार सेइ छातेर बारान्दाटा साजिये प्रस्तुत हये थेको।

श्रीश। ता आमार सेइ दक्षिणेर बारान्दाय एकटि चौकिते आमि बसि आर एकटि चौकि साजानो थाके।

विपिन। सेटाते आमि एसे बसि।

श्रीश। मध्वभावे गुडं दद्यात्, अभावपक्षे तोमाके निये चले।

है; **चेयेओ......ना**—उस ओर देखती भी नहीं; **सत्यिकार......नित**—सचमुच का मोती होने पर बीन लेती।

से......हय—यह बात स्वीकार करनी ही होगी; **मने......भालो**—मन ही मन में (कल्पना में ही) अच्छा है; **बेमानान**—बेमेल।

ता करबे—वह करेगा; **फलबे**—फलेगा; **आजकेर......पाच्छि**—आज की हवा में मैं मन ही मन वह संवाद पा रहा हूँ; **बिशे**—(दंतकथाओं में प्रसिद्ध एक डाकू); **डाकात**—डकैत; **येमन......करत**—जैसे खबर दे कर डकैती करता था; **अजाना**—अपरिचिता;
तेमनि—वैसे ही; **पूर्वे हतेइ**—पहले से ही; **पाठियेछे**—भेजा है।

तोमार......थाके—अपने उस छत वाले बरामदे को सजा कर तैयार रहो।

आमि......थाके—मैं बैठता हूँ और एक चौकी सजी रहती है।

सेटाते......बसि—उस पर मैं आ कर बैठता हूँ।

मध्वभावे—मधु के अभाव में; **अभाव......चले**—अभाव के कारण तुम्हीं से काम चल जाता है।

विपिन। मधुमयी यखन आसबेन तखन हतभागार भाग्ये लगुडं दद्यात्।

रसिक। (जनान्तिके) श्रीशबाबु, आपनार सेइ दक्षिणेर छातटिके चिह्नित करे राखबार जन्ये ये पताका ओड़ानो आवश्यक सेटा ये फेले एलेन।

श्रीश। रुमालटा कि एखन चेष्टा करले पाओया येते पारबे?

रसिक। चेष्टा करते दोष की।

श्रीश। विपिन, तुमि भाइ रसिकबाबुर सङ्गे एकटु कथावार्ता कओ, आमि चट करे आसछि। [प्रस्थान

विपिन। आच्छा रसिकबाबु, राग करबेन ना—

रसिक। यदि वा करि आपनार भय करबार कोनो कारण नेइ, आमि भारि दुर्बल।

विपिन। दु-एकटा प्रश्न जिज्ञासा करब, आपनि विरक्त हबेन ना।

रसिक। आमार वयस सम्बन्धे कोनो प्रश्न नय तो?

विपिन। ना।

रसिक। तबे जिज्ञासा करुन, ठिक उत्तर पाबेन।

विपिन। सेदिन ये महिलाटिके देखलुम, तिनि—

आसबेन—आएँगी।

ओड़ानो—उड़ाना; **सेटा......एलेन**—उसे तो पटक (छोड़) आए।

एखन—अब; **चेष्टा......पारबे**—चेष्टा करने से मिल सकेगा।

चेष्टा......की—चेष्टा करने में नुकसान क्या है।

कओ—कहो; **एकटु......कओ**—थोड़ी बातचीत करो; **आमि......आसछि**—मैं चट से आता हूँ।

राग......ना—गुस्सा न करें (तो)।

यदि......नेइ—अगर करूँ भी तो आपको डरने का कोई कारण नहीं।

जिज्ञासा करब—पूछूंगा; **आपनि......ना**—आप असन्तुष्ट न हों।

नय तो—तो नहीं है।

करुन—कीजिए; **ठिक......पाबेन**—सही उत्तर पाएंगे।

देखलुम—देखा।

रसिक। तिनि आलोचनार योग्य, आपनि संकोच करबेन ना विपिनबाबु—ताँर सम्बन्धे यदि आपनि माझे माझे चिन्ता ओ चर्चा करे थाकेन तबे ताते आपनार असाधारणत्व प्रमाण हय ना—आमराओ ठिक ओइ काज करे थाकि।

विपिन। अबलाकान्तबाबु बुझि—

रसिक। ताँर कथा बलबेन ना—ताँर मुखे अन्य कथा नेइ।

विपिन। तिनि कि—

रसिक। हाँ, ताइ बटे। तबे हयेछे की, तिनि नृपबाला नीरबाला दुजनेर काके ये बेशि भालोबासेन स्थिर करे उठते पारेन ना—तिनि दुजनेर मध्ये सर्वदाइ दोलायमान।

विपिन। किन्तु ताँदेर केउ कि ओँर प्रति—

रसिक। ना, एमन भाव नय ये ओँके विवाह करते पारेन। से हले तो कोनो गोलइ छिल ना।

विपिन। ताइ बुझि अबलाकान्तबाबु किछु—

रसिक। किछु येन चिन्तान्वित।

विपिन। श्रीमती नीरबाला बुझि गान भालोबासेन?

रसिक। बासेन बटे—आपनार पकेटेर मध्येइ तो तार साक्षी आछे।

विपिन। (पकेट हइते गानेर खाता बाहिर करिया) एखाना निये आसा आमार अत्यन्त अभद्रता हयेछे—

आमराओ......थाकि—हमलोग भी ठीक वही काम करते रहते हैं।

ताँर......नेइ—उनकी बात न छेड़ें—उनके ओठों पर तो और दूसरी कोई बात ही नहीं। **तिनि कि**—वे क्या।

ताइ बटे—ठीक वही; **तबे......की**—फिर भी उससे क्या; **काके......ना**—किसे अधिक प्यार करते हैं, यह तय नहीं कर पाते।

किन्तु....प्रति—लेकिन क्या उनमें से कोई उनके प्रति।

एमन......पारेन—ऐसी रुझान नहीं है कि उनसे विवाह कर सकें; **से.....ना**—तब तो कोई गोलमाल ही नहीं था।

बासेन बटे—अवश्य पसन्द करती हैं; **पकेटेर मध्येइ**—पाकेट ही में।

एखाना......हयेछे—इसे ला कर मैंने बड़ी अभद्रता की है।

रसिक। से अभद्रता आपनि ना करले आमरा केउ-ना-केउ करतेम।

विपिन। आपनारा करले तिनि मार्जना करतेन, किन्तु आमि-- वास्तविक अन्याय हयेछे, किन्तु एखन फिरिये दिलेओ तो--

रसिक। मूल अन्यायटा अन्यायइ थेके याय।

विपिन। अतएव--

रसिक। याँहातक बाहान्न ताँहातक तिप्पान्न। हरणे ये दोषटुकु हयेछे रक्षणे ना-हय ताते आर-एकटु योग हल।

विपिन। खाताटा सम्बन्धे तिनि कि आपनादेर काछे किछु बलेछेन।

रसिक। बलेछेन अल्पइ, किन्तु ना बलेछेन अनेकटा।

विपिन। की रकम।

रसिक। लज्जाय अनेकखानि लाल हये उठलेन।

विपिन। छि छि, से लज्जा आमारइ।

रसिक। आपनार लज्जा तिनि भाग करे निलेन, येमन अरुणेर लज्जाय उषा रक्तिम।

से......करतेम—यह अभद्रता आप न करते तो हममें से एक न एक तो करता ही।

आपनारा......करतेन—आपलोगों के करने पर वे क्षमा कर देतीं; **वास्तविक**—सचमुच; **अन्याय हयेछे**—अनुचित हुआ है; **एखन......तो**—अब लौटा देने पर भी तो। **अन्यायइ......याय**—अन्याय ही रह जाता है।

याँहातक......तिप्पान्न—जैसा बावन वैसा तिरेपन; **हरणे......हल**—हरण करने में जितना अपराध हुआ उसके संरक्षण करने में न हो थोड़ा और अपराध जुड़ गया।

खाताटा......बलेछेन—कापी के संबंध में क्या उन्होंने आपलोगों से कुछ कहा है।

बलेछेन......अनेकटा—कहा तो है थोड़ा-सा ही पर जो नहीं कहा वह बहुत है। **की रकम**—कैसे। **हये उठलेन**—हो उठीं।

से.....आमारइ—वह (तो) मेरी ही लज्जा (का कारण) है।

भाग......निलेन—बँटा ली हैं।

विपिन। आमाके आर पागल करबेन ना रसिकबाबु।

रसिक। दले टानछि मशाय।

विपिन। (खाता पुनर्वार पकेटे पुरिया) इंरेजिते बले, दोष करा मानवेर धर्म, क्षमा करा देवतार।

रसिक। आपनि ता हले मानवधर्म-पालनटाइ साव्यस्त करलेन।

विपिन। देवीर धर्मे या बले तिनि ताइ करबेन।

[श्रीशेर प्रवेश

श्रीश। अबलाकान्तबाबुर सङ्गे देखा हल ना।

विपिन। तुमि रातारातिइ ताँके संन्यासी करते चाओ नाकि।

श्रीश। या होक, अक्षयबाबुर काछे विदाय निये एलुम।

विपिन। बटे बटे, ताँके बले आसते भुले गियेछिलुम—एकबार ताँर सङ्गे देखा करे आसि गे।

रसिक। (जनान्तिके) पुनर्वार किछु संग्रहेर चेष्टाय आछेन बुझि? मानवधर्मटा क्रमेइ आपनाके चेपे धरछे।

[विपिनेर प्रस्थान

श्रीश। रसिकबाबु, आपनार काछे आमार एकटा परामर्श आछे।

रसिक। परामर्श देबार उपयुक्त वयस हयेछे, बुद्धि ना हतेओ पारे।

आमाके......ना—मुझे अब और पागल न करें।

दले......मशाय—दल में समेट रहा हूँ महाशय।

पुरिया—भर कर, रख कर; **इंरेजिते बले**—अंग्रेजी में कहा है; **करा**—करना। **साव्यस्त करलेन**—निश्चित किया।

देवीर.....करबेन—देवी के धर्म में जो कहा गया है वे वही करेंगी।

देखा......ना—भेंट नहीं हुई।

विदाय......एलुम—विदा ले आया।

बटे......गियेछिलुम—ठीक ठीक, उनसे कह कर आना भूल गया था; **करे......गे**—कर आऊँ।

क्रमेइ.....धरछे—धीरे-धीरे आप पर सवार होता जा रहा है।

देबार......हयेछे—देने योग्य उम्र हो गई है; **बुद्धि.....पारे**—बुद्धि न भी हुई हो।

श्रीश। आपनादेर ओखाने सेदिन ये दुटि महिलाके देखेछिलेम, ताँदेर दुजनकेइ आमार सुन्दरी बले बोध हल।

रसिक। आपनार बोधशक्तिर दोष देओया याय ना। सकलेइ तो ओइ एक कथाइ बले।

श्रीश। ताँदेर सम्बन्धे यदि माझे माझे आपनार सङ्गे आलाप-आलोचना करि ता हले कि——

रसिक। ता हले आमि खुशि हब, आपनारओ सेटा भालो लागते पारे, एवं ताँदेरओ विशेष क्षति हबे ना।

श्रीश। किछुमात्र ना। झिल्लि यदि नक्षत्र सम्बन्धे जल्पना करे——

रसिक। ताते नक्षत्रेर निद्रार व्याघात हय ना।

श्रीश। झिल्लिरइ अनिद्रारोग जन्माते पारे, किन्तु ताते आमार आपत्ति नेइ।

रसिक। आज तो ताइ बोध हच्छे।

श्रीश। याँर रुमाल कुड़िये पेयेछिलुम ताँर नामटि बलते हबे।

रसिक। ताँर नाम नृपबाला।

श्रीश। तिनि कोन्‌टि।

आपनादेर ओखाने—आपलोगों के यहाँ; **ताँदेर......हल**—वे दोनों ही मुझे सुन्दरी प्रतीत हुईं।

आपनार......ना—आपकी बोधशक्ति को दोष नहीं दिया जा सकता; **सकलेइ......बले**—सभी तो बस वही एक बात कहते हैं।

ताँदेर—उनलोगों के; **करि**—करूँ।

हब—होऊँगा; **आपनारओ......पारे**—आपको भी वह (बातचीत) अच्छी लग सकती है; **ताँदेरओ**—उनलोगों की भी; **हबे ना**—नहीं होगी।

व्याघात.....ना—विघ्न नहीं होता।

झिल्लिरइ—झिल्ली को ही; **जन्माते पारे**—उत्पन्न हो सकता है।

आज......हच्छे—आज तो यही लग रहा है।

याँर—जिनका; **पेयेछिलुम**—पाया था; **ताँर......हबे**—उनका नाम बतलाना होगा।

तिनि कोन्‌टि—वे कौन-सी हैं।

रसिक। आपनिइ आन्दाज करे बलुन देखि।

श्रीश। याँर सेइ लाल रङेर रेशमेर साड़ि परा छिल?

रसिक। बले यान।

श्रीश। यिनि लज्जाय पालाते चाच्छिलेन, अथच पालातेओ लज्जा बोध करछिलेन—ताइ मुहूर्तकालेर जन्य हठात् त्रस्त हरिणीर मतो थमके दाँड़ियेछिलेन, सामनेर दुइ एक गुच्छ चुल प्राय चोखेर उपरे एसे पड़ेछिल—चाबिर-गोच्छा-बाँधा च्युत अञ्चलटि बाँ हाते तुले धरे यखन द्रुतवेगे चले गेलेन तखन ताँर पिठभरा कालोचुल आमार दृष्टिपथेर उपर दिये एकटि कालो ज्योतिष्केर मतो छुटे नृत्य करे चले गेल।

रसिक। ए तो नृपबालाइ बटे। पा दुखानि लज्जित, हात दुखानि कुण्ठित, चोख दुटि त्रस्त, चुलगुलि कुञ्चित, दुःखेर विषय हृदयटि देखते पान नि—से येन फुलेर भितरकार लुकोनो मधुटुकुर मतो मधुर, शिशिरटुकुर मतो करुण।

श्रीश। रसिकबाबु, आपनार मध्ये एत ये कवित्वरस सञ्चित हये रयेछे तार उत्स कोथाय एबार टेर पेयेछि।

आपनिइ......बलुन—आपही अनुमान लगा कर बताइए।

याँर......छिल—जिन्होंने वह लाल रंग की रेशमी साड़ी पहन रखी थी।

बले यान—कहते जाइए।

यिनि......चाच्छिलेन—जो लज्जा से भागना चाह रही थीं; **पालातेओ ......करछिलेन**—भागने में भी लज्जा का अनुभव कर रही थीं; **थमके दाँड़िये-छिलेन**—थम कर खड़ी रह गई थीं; **चुल**—बाल; **एसे पड़ेछिल**—आ पड़ा था; **गोच्छा**—गुच्छा; **बाँ......धरे**—बाँये हाथ से पकड़ कर; **चले गेलेन**—चली गईं; **पिठभरा**—समस्त पीठ ढँके हुए; **कालोचुल**—काले बाल; **उपर दिये**—उपर से हो कर; **छुटे**—दौड़ कर; **नृत्य......गेल**—नृत्य करते हुए चले गए।

ए......बटे—यह तो निश्चय ही नृपबाला हैं; **पा दुखानि**—दोनों पैर; **हात**—हाथ; **देखते......नि**—नहीं देख पाए; **लुकोनो**—छिपे हुए; **मधुटुकुर मतो**—मधु की भाँति; **शिशिर**—ओस।

एत......पेयेछि—यह जो इतना कवित्व-रस सञ्चित है उसका उत्स कहाँ है अब सन्धान पाया है।

रसिक। धरा पड़ेछि श्रीशबाबु—

कवीन्द्राणां चेत: कमलवनमालातपरुचिं
भजन्ते ये सन्तः कतिचिदरुणामेव भवतीं।
विरिञ्चिप्रेयस्यास्तरुणतरश्रृङ्गारलहरीं
गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सभारञ्जनमयीम्।

कवीन्द्रदेर चित्तकमलवनमालार किरणलेखा ये तुमि, तोमाके यारा लेशमात्र भजना करे ताराइ गभीर वाक्यद्वारा सरस्वतीर सभारञ्जन-मयी तरुण लीला-लहरी प्रकाश करते पारे। आमि सेइ कविचित्त-कमलवनेर किरण-लेखाटिर परिचय पेयेछि।

श्रीश। आमिओ अल्पदिन हल एकटु परिचय पेयेछि, तार पर थेके कवित्व आमार पक्षे सहज हये एसेछे।

[अक्षयेर प्रवेश

अक्षय। (स्वगत) नाः, दुटि नवयुवके मिले आमाके आर घरे तिष्ठते दिले ना देखछि। एकटि तो गिये चोरेर मतो आमार घरेर मध्ये हातड़े बेड़ाच्छिलेन—धरा पड़े भालो रकम जवाबदिहि करते पारले ना—शेषकाले आमाके निये पड़ल। तार खानिक बादेइ देखि द्वितीय व्यक्तिटि गिये घरेर बइगुलि निये उल्टे-पाल्टे निरीक्षण करछे। तफात थेके देखेइ पालिये एसेछि। बेश मनेर मतो करे चिठिखानि ये लिखब एरा ता आर दिले ना। आहा, चमत्कार ज्योत्स्ना हयेछे।

धरा पड़ेछि—पकड़ा गया हूँ।

लेखा—रेखा; **ये तुमि**—जो तुम हो; **तोमाके......करे**—तुम्हारी जो लेश मात्र आराधना करते हैं; **ताराइ**—वे ही; **पेयेछि**—पाया है।

आमिओ—मैं भी; **हल**—हुआ; **एकटु**—थोड़ा-सा; **तार......एसेछे**—तभी से मेरे लिए कवित्व सहज हो उठा है।

मिले—मिल कर; **आमाके......देखछि**—देखता हूँ अब और मुझे घर में नहीं बैठने देंगे; **एकटि......बेड़ाच्छिलेन**—एक तो चोर की भाँति मेरे कमरे में जा कर इधर उधर हाथ चलाते घूम रहे थे; **धरा......ना**—पकड़े जाने पर ठीक से कैफियत नहीं दे सके; **शेषकाले......पड़ल**—अंत में मुझी को ले कर उलझ पड़े; **तार.....देखि**—उसके थोड़ी देर बाद ही देखता हूँ; **गिये**—जा कर; **घरेर...... करछे**—कमरे की किताबों को उलट पलट कर देख रहे हैं; **तफात......एसेछि**—

श्रीश। एइ-ये अक्षयबाबु।

अक्षय। ओइ रे! एकटा डाकात घरेर मध्ये, आर एकटा डाकात पथेर धारे। हा प्रिये, तोमार ध्यान थेके यारा आमार मनके विक्षिप्त करछे तारा मेनका उर्वशी रम्भा हले आमार कोनो खेद छिल ना—मनेर मतो ध्यानभङ्गओ अक्षयेर अदृष्टे नेइ—कलिकाले इन्द्रदेवेर वयस बेशि हये बेरसिक हये हठेछे।

[विपिनेर प्रवेश

विपिन। एइ-ये अक्षयबाबु, आपनाकेइ खुँजछिलुम।

अक्षय। हाय हतभाग्य, एमन रात्रि कि आमाके खोँज करे बेड़ाबार जन्यइ हयेछिल।—

In such a night as this,
When the sweet wind did gently kiss the trees
And they did make no noise, in such a night
Troilus methinks mounted the Trojan walls
And sighed his soul toward the Grecian tents,
Where Cressid lay that night.

श्रीश। In such a night आपनि की करते बेरियेछिलेन अक्षयबाबु।

दूर से देख कर ही भाग आया हूँ; **बेश......ना**—अच्छी तरह से मनचाहे ढंग से चिट्ठी लिख लूँ इन्होंने इतना भी नहीं करने दिया; **चमत्कार.....हयेछे**—ग़ज़ब की चाँदनी (खिली) है। **एइ ये**—ये तो।

ओइ रे—उफ; **डाकात**—डकैत; **आर एकटा**—और एक; **पथेर धारे**—सड़क के किनारे; **थेके**—से; **यारा**—जो; **आमार......करछे**—मेरे मन को उचटा रहे हैं; **हले......ना**—होने पर मुझे कोई दुःख नहीं था; **मनेर...... नेइ**—यथेच्छ ध्यान-भंग भी अक्षय के भाग्य में नहीं है; **कलिकाले......उठेछे**—कलिकाल में इन्द्रदेव उम्र बढ़ जाने के कारण अरसिक हो गए हैं।

आपनाकेइ खुंजछिलुम—आपको ही खोज रहा था।

एमन.....हयेछिल—ऐसी रात्रि क्या मुझे खोजते फिरने के लिए हुई थी।

आपनि......बेरियेछिलेन—आप क्या करने निकले थे।

रसिक। अपसरति न चक्षुषो मृगाक्षी
रजनिरियं च न याति नैति निद्रा।
चक्षु-'परे मृगाक्षीर चित्रखानि भासे;
रजनीओ नाहि याय, निद्राओ ना आसे।
अक्षयबाबुर अवस्था आमि जानि मशाय।

अक्षय। तुमि के हे।

रसिक। आमि रसिकचन्द्र—दुइ दिके दुइ युवकके आश्रय करे यौवन-सागरे भासमान।

अक्षय। ए वयसे यौवन सह्य हबे ना रसिकदादा।

रसिक। यौवनटा कोन् वयसे ये सह्य हय ता तो जानि ने, ओटा असह्य व्यापार। श्रीशबाबु, आपनार की रकम बोध हच्छे।

श्रीश। एखनओ सम्पूर्ण बोध करते पारि नि।

रसिक। आमार मतो परिणत वयसेर जन्ये अपेक्षा करछेन बुझि? अक्षयदा, आज तोमाके बड़ो अन्यमनस्क देखाच्छे।

अक्षय। तुमि तो अन्यमनस्क देखबेइ, मनटा ठिक तोमार दिके नेइ।—विपिनबाबु, तुमि आमाके खुँजछिले बलले बटे, किन्तु खुब ये जरुरि दरकार आछे बले बोध हच्छे ना, अतएव आमि एखन विदाय हइ, एकटु विशेष काज आछे। [प्रस्थान

रजनीओ......आसे—रात भी नहीं जाती, निद्रा भी नहीं आती; **आमि जानि**—मैं जानता हूँ।

तुमि.....हे—तुम कौन हो जी। **हबे ना**—नहीं होगा।

ता......ने—वह तो नहीं जानता; **आपनार......हच्छे**—आपको कैसा लग रहा है।

एखनओ......नि—अभी पूरी तरह नहीं समझ पाया हूँ।

परिणत......जन्ये—वृद्ध वयस के लिए; **अपेक्षा......बुझि**—प्रतीक्षा कर रहे हैं शायद; **आज.......देखाच्छे**—आज तुम बहुत अन्यमनस्क दीख रहे हो।

तुमि.....देखबेइ—तुम तो अन्यमनस्क देखोगे ही; **मनटा.....नेइ**—मन ठीक तुम्हारी ओर जो नहीं है; **तुमि......बटे**—तुम मुझे खोज रहे थे ऐसा तुमने कहा तो अवश्य है; **किन्तु......ना**—लेकिन खूब जरूरी काम है ऐसा तो नहीं लगता; **विदाय हइ**—विदा लूँ।

रसिक। विरही चिठि लिखते चलल।

श्रीश। अक्षयबाबु आछेन बेश। रसिकबाबु, ओँर स्त्रीइ बुझि बड़ो बोन? ताँर नाम?

रसिक। पुरबाला।

विपिन। (निकटे आसिया) की नाम बललेन।

रसिक। पुरबाला।

विपन। तिनिइ बुझि सबचेये बड़ो?

रसिक। हाँ।

विपिन। सब-छोटोटिर नाम?

रसिक। नीरबाला।

श्रीश। आर नृपबाला कोन्‌टि।

रसिक। तिनि नीरबालार बड़ो।

श्रीश। ता हले नृपबालाइ हलेन मेजो।

विपिन। आर नीरबाला छोटो।

श्रीश। पुरबालार छोटो नृपबाला।

विपिन। ताँर छोटो हच्छेन नीरबाला।

रसिक। (स्वगत) एरा तो नाम जप करते शुरु करले! आमार मुशकिल। आर तो हिम सह्य हबे ना, पालाबार उपाय करा याक।

लिखते चलल—लिखने चल दिया।

आछेन बेश—हैं खूब; **ओँर.....बोन**—उन्हीं की पत्नी शायद बड़ी बहन हैं; **ताँर**—उनका।

निकटे आसिया—पास आ कर; **की.....बललेन**—क्या नाम बताया।

तिनिइ.....बड़ो—वे ही शायद सब से बड़ी हैं।

तिनि.....बड़ो—वे नीरबाला से बड़ी हैं।

ता......मेजो—तो फिर नृपबाला ही मँझली हुईं।

ताँर.....नीरबाला—उनसे छोटी हैं नीरबाला।

एरा......करले—इन्होंने तो नाम जपना शुरू कर दिया; **आमार मुशकिल**—मेरी मुश्किल है; **आर......याक**—और ओस नहीं झिलेगी, भागने का उपाय किया जाय।

[वनमालीर प्रवेश

वनमाली। एइ-ये आपनारा एखाने। आमि आपनादेर बाड़ि गियेछिलुम।

श्रीश। एइबार आपनि एखाने थाकुन, आमरा बाड़ि याइ।

वनमाली। आपनारा सर्वदाइ व्यस्त देखते पाइ।

विपिन। ता, आपनाके देखले एकटु विशेष व्यस्त हयेइ पड़ि।

वनमाली। पाँचमिनिट यदि दाँड़ान——

श्रीश। रसिकबाबु, एकटु ठाण्डा बोध हच्छे ना ?

रसिक। आपनादेर एतक्षणे बोध हल, आमार अनेकक्षण थेकेइ बोध हच्छे।

वनमाली। चलुन-ना, घरेइ चलुन-ना।

श्रीश। मशाय, एत रात्रे यदि आमार घरे ढोकेन ता हले किन्तु——

वनमाली। ये आज्ञे, आपनारा किछु व्यस्त आछेन देखछि, ता हले आर-एक समय हबे।

एइ.....एखाने—अरे, आपलोग यहाँ हैं; **आमि.....गियेछिलुम**—मैं आपलोगों के घर गया था।

एइबार......याइ—अब आप यहाँ रहें, हमलोग घर जायँ।

आपनारा.....पाइ—आपलोगों को सदा परेशान ही देखता हूँ।

ता......पड़ि—हाँ, आपको देख कर कुछ विशेष परेशान हो जाते हैं।

दाँड़ान—रुकें।

एकटु.....ना—कुछ कुछ ठंड नहीं मालूम हो रही है।

आपनादेर.....हच्छे—आपलोगों को इतनी देर बाद लगी, मुझे तो बहुत देर से ही (ठंड) लग रही है।

चलुन.....ना—चलिए न, घर ही चलें।

एत रात्रे—इतनी रात में; **ढोकेन**—घुसें।

ये आज्ञे—जो आज्ञा; **ता......हबे**—तो फिर और किसी समय होगा।

चतुर्थ अङ्क

प्रथम दृश्य

अक्षयेर बासा

रसिक ओ शैलबाला

रसिक। भाइ शैल।

शैलबाला। की रसिकदादा।

रसिक। ए कि आमार काज। महादेवेर तपोभङ्गेर जन्ये स्वयं कन्दर्पदेव छिलेन––आर आमि वृद्ध––

शैलबाला। तुमि तो वृद्ध, तेमनि युवक दुटिओ तो युगल महादेव नन।

रसिक। ता नन, से आमि बेश ठाओर करेइ देखेछि। सेइ-जन्येइ तो निर्भये एसेछिलुम। किन्तु, तादेर सङ्गे रास्तार मध्ये हिमे दाँड़िये अर्धेक रात पर्यन्त रसालाप करबार मतो उत्ताप आमार शरीरे तो नेइ।

शैलबाला। ताँदेर संसर्गे उत्ताप सञ्चार करे नेबे।

रसिक। सजीव गाछ ये-सूर्येर तापे प्रफुल्ल हये ओठे, मराकाठ तातेइ फेटे याय, यौवनेर उत्ताप बुड़ोमानुषेर पक्षे ठिक उपयोगी बोध हय ना।

एकि.....काज––यह क्या मेरा काम है।

तेमनि––वैसे ही; **दुटिओ**––दोनों; **नन**––नहीं हैं।

से आमि......देखेछि––यह मैंने अच्छी तरह निश्चय करके देख लिया है; **सेइजन्येइ.....एसेछिलुम**––इसीलिए तो बेखटके आया था; **हिमे दाँड़िये**––ओस में खड़े हो कर।

ताँदेर......नेबे––उन लोगों के संसर्ग से उत्ताप का सञ्चार कर लेना।

गाछ––वृक्ष; **ये......ओठे**––जिस सूर्य के ताप से प्रफुल्ल हो उठता है; **मराकाठ......याय**––सूखी लकड़ी उसीसे फट जाती है; **बुड़ोमानुषेर पक्षे**––बूढ़े आदमी के लिए; **ठिक......ना**––ठीक उपयोगी तो नहीं मालूम होता।

शैलबाला। कइ तोमाके देखे फेटे याबे बले तो बोध हच्छे ना।

रसिक। हृदयटा देखले बुझते पारतिस भाइ।

शैलबाला। की बल रसिकदादा। तोमारइ तो एखन सबचेये निरापद वयेस। यौवनेर दाहे तोमार की करबे।

रसिक। शुष्केन्धने वह्निरुपैति वृद्धिम्। यौवनेर दाह वृद्धके पेलेइ हु हुःशब्दे ज्वले ओठे—सेइ जन्यइ तो 'वृद्धस्य तरुणी भार्या' विपत्तिर कारण। की आर बलब भाइ।

[नीरबालार प्रवेश

रसिक। आगच्छ वरदे देवि। किन्तु वर तुमि आमाके देबे कि ना जानि ने, आमि तोमाके एकटि वर देबार जन्ये प्राणपात करे मरछि। शिव तो किछुइ करछेन ना तबु तोमादेर पुजो पाच्छेन, आर एइ-ये बुड़ो खेटे मरछे ए कि किछुइ पाबे ना।

नीरबाला। शिव पान फुल, तुमि पाबे तार फल—तोमाकेइ वरमाल्य देब रसिकदादा।

रसिक। माटिर देवताके नैवेद्य देबार सुविधा एइ ये, सेटि सम्पूर्ण फिरे पाओया याय—आमाकेओ निर्भये वरमाल्य दिते पारिस,

---

कइ......ना—कहाँ, तुम्हें देख कर यह नहीं लगता कि (तुम) फट जाओगे।

हृदयटा.....भाइ—हृदय देखती तो समझ पाती भाई।

तोमारइ.....वयेस—अब तो तुम्हारी उम्र ही सब से अधिक निरापद है; **यौवनेर......करबे**—यौवन का दाह तुम्हारा क्या कर लेगा।

वृद्धके पेलेइ—वृद्ध को पाते ही; **ज्वले ओठे**—जल उठता है; **की...... भाइ**—और क्या कहूँ भाई।

वर......ने—तुम मुझे वर दोगी या नहीं, नहीं जानता; **देबार......मरछि**—देने के लिए दम तोड़ रहा हूँ; **शिव......पाच्छेन**—शिव तो कुछ नहीं कर रहे हैं फिर भी तुमलोगों की पूजा पा रहे हैं; **आर......ना**—और यह बूढ़ा जो खटता मर रहा है यह क्या कुछ नहीं पाएगा।

फुल—फूल; **पाबे**—पाओगे; **तार**—उसका; **तोमाकेइ**—तुम्हीं को; **देब**—दूंगी।

माटिर......याय—मिट्टी के देवता को नैवेद्य देने में सुविधा यह है कि वह सब का सब वापस मिल जाता है; **आमाकेओ**—मुझे भी; **दिते.....पारिस**—

यखनइ दरकार हबे तखनइ फिरे पाबि। तार चेये भाइ, आमाके एकटा गलाबन्ध बुने दिस, वरमाल्येर चेये सेटा बुड़ोमानुषेर काजे लागबे।

नीरबाला। ता देब—एकजोड़ा पशमेर जुतो बुने रेखेछि से-ओ श्रीचरणेषु हबे।

रसिक। आहा, कृतज्ञता एकेइ बले। किन्तु नीरु, आमार पक्षे गलाबन्धइ यथेष्ट—आपादमस्तक नाइ हल, सेजन्ये उपयुक्त लोक पाओया याबे, जुतोटा ताँरइ जन्ये रेखे दे।

नीरबाला। आच्छा, तोमार वक्तृताओ तुमि रेखे दाओ।

रसिक। देखेछिस भाइ शैल, आजकाल नीरुरओ लज्जा देखा दियेछे—लक्षण खाराप।

शैलबाला। नीरु, तुइ करछिस की। आबार ए घरे एसेछिस? आज ये एखाने आमादेर सभा बसबे—एखनइ के एसे पड़बे, विपदे पड़बि।

रसिक। सेइ विपदेर स्वाद ओ एकबार पेयेछे, एखन बारबार विपदे पड़बार जन्ये छट्फट् करे बेड़ाच्छे।

दे सकती है; **यखनइ......पाबि**—जब जरूरत होगी तभी वापस पाएगी; **तार...... लागबे**—उस की बजाय भई मेरे लिए एक गुलूबन्द बुन दे, वरमाल्य की अपेक्षा वह बूढ़े आदमी के काम आएगा।

ता देब—सो तो (बुन) दूंगी; **पशमेर......हबे**—ऊन के जूते बुन रखे हैं वे भी श्रीचरणों में होंगे।

एकेइ बले—इसी को कहते हैं; **नाइ हल**—न सही; **सेजन्ये.........दे**—उसके लिए उपयुक्त आदमी मिल जाएगा, जूते उन्हींके लिए रहने दे।

आच्छा......दाओ—अच्छा, तुम अपनी वक्तृता भी रहने दो।

देखेछिस—देखती है; **नीरु......दियेछे**—नीरू को भी लज्जा लगने लगी है; **खाराप**—खराब।

तुइ......की—तू कर क्या रही है; **आबार......एसेछिस**—फिर इस कमरे में आई है; **एखाने**—यहाँ; **बसबे**—बैठेगी; **एखनइ.....पड़बि**—अभी कोई आ धमकेगा, विपद में पड़ जाएगी।

सेइ......बेड़ाच्छे—उसी विपद का स्वाद वह एक बार पा चुकी है, अब बारबार विपद में पड़ने के लिए छटपटाती फिर रही है।

नीरबाला। देखो रसिकदादा, तुमि यदि आमाके विरक्त कर ता हले गलाबन्ध पाबे ना बलछि। देखो देखि दिदि, तुमिओ यदि रसिकदार कथाय ओइ रकम करे हास, ता हले ओर आस्पर्धा आरओ बेड़े याबे।

रसिक। देखेछिस भाइ शैल, नीरु आजकाल ठाट्टाओ सइते पारछे ना, मन एत दुर्बल हये पड़ेछे। नीरुदिदि, कोनो कोनो समय कोकिलेर डाक श्रुतिकटु बले ठेके एइरकम शास्त्रे आछे, तोर रसिक-दादार ठाट्टाकेओ कि तोर आजकाल कुहुतान बले भ्रम हते लागल।

नीरबाला। सेइजन्येइ तो तोमार गलाय गलाबन्ध जड़िये दिते चाच्छि—तानटा यदि एकटु कमे।

शैलबाला। नीरु, आर झगड़ा करिसने—आय, एखनइ सबाइ एसे पड़बे। [नीर ओ शैलेर प्रस्थान

[पूर्णर प्रवेश

रसिक। आसुन पूर्णबाबु।

पूर्ण। एखनओ आर केउ आसेन नि?

रसिक। आपनि बुझि केवल एइ वृद्धटिके देखे हताश हये पड़ेछेन? आरओ सकले आसबेन पूर्णबाबु।

तुमि.....बलछि—तुम यदि मुझे तंग करोगे तो गुलूबन्द नहीं पाओगे कहे देती हूँ; **तुमिओ**—तुम भी; **कथाय......हास**—बातों पर इस तरह हँसोगी; **ता......याबे**—तो उनकी हिम्मत और भी बढ़ जाएगी।

ठाट्टाओ......ना—मज़ाक़ भी नहीं सह पाती; **एत......पड़ेछे**—इतना दुर्बल हो गया है; **कोनो कोनो**—किसी किसी; **डाक......ठेके**—बोली श्रुतिकटु लगती है; **एइरकम**—ऐसा; **हते लागल**—होने लगा।

सेइजन्येइ......कमे—इसीलिए तो तुम्हारे गले में गुलूबन्द लपेट देना चाहती हूँ, तान शायद कुछ घटे।

आर......ने—और झगड़ा मत कर; **आय**—आ; **एखनइ......पड़बे**—अभी सब आ धमकेंगे। **आसुन**—आइए।

एखनओ......नि—अभी तक और कोई नहीं आया।

आपनि बुझि—आप शायद; **एइ......पड़ेछेन**—इस वृद्ध को देख कर निराश हो गए हैं।

पूर्ण। हताश केन हब रसिकबाबु।

रसिक। ता केमन करे बलब बलुन। किन्तु घरे येइ ढुकलेन आपनार दुटि चक्षु देखे बोध हल तारा याके भिक्षा करे बेड़ाच्छे से व्यक्ति आमि नइ।

पूर्ण। चक्षुतत्त्वे आपनार एतदूर अधिकार हल की करे।

रसिक। आमार पाने केउ कोनोदिन ताकाय नि पूर्णबाबु, ताइ एइ प्राचीन वयस पर्यन्त परेर चक्षु पर्यवेक्षणेर यथेष्ट अवसर पेयेछि। आपनादेर मतो शुभादृष्ट हले दृष्टितत्त्व लाभ ना करे अनेक दृष्टिलाभ करते पारतुम। किन्तु, याइ बलुन पूर्णबाबु, चोख दुटिर मतो एमन आश्चर्य सृष्टि आर-किछु हय नि—शरीरेर मध्ये मन यदि कोथाओ प्रत्यक्ष वास करे से ओइ चोखेर उपरे।

पूर्ण। (सोत्साहे) ठिक बलेछेन रसिकबाबु। क्षुद्र शरीरेर मध्ये यदि कोथाओ अनन्त आकाश किंवा अनन्त समुद्रेर तुलना थाके से ओइ दुटि चोखे।

रसिक। निःसीमशोभासौभाग्यं नताङ्ग्या नयनद्वयं
अन्योऽन्यालोकनानन्दविरहादिव चञ्चलं।

बुझेछेन पूर्णबाबु।

पूर्ण। ना, किन्तु बोझबार इच्छा आछे।

हताश......हब—निराश क्यों होऊंगा।

ता......बलुन—सो मैं कैसे कहूँ, बताइए; **किन्तु......नइ**—लेकिन कमरे में आपने ज्योंही प्रवेश किया आपकी आँखों को देख कर लगा कि वे जिसकी भीख मांगती फिर रही हैं वह व्यक्ति मैं नहीं हूँ।

हल......करे—हुआ कैसे।

आमार......नि—मेरी ओर कभी किसीने नहीं ताका; **ताइ**—इसीलिए; **पेयेछि**—पाया है; **आपनादेर.....हले**—आपलोगों की भाँति अच्छा भाग्य होने पर; **करते पारतुम**—कर पाता; **याइ बलेन**—जो भी कहिए; **आर......नि**—और कुछ नहीं हुई; **कोथाओ**—कहीं भी।

ठिक बलेछेन—ठीक कहा है। **बुझेछेन**—समझे।

बोझबार......आछे—समझने की इच्छा है।

रसिक। आनताङ्गी बालिकार   शोभासौभाग्येर सार
नयनयुगल
ना देखिये परस्परे   ताइ कि विरहभरे
हयेछे चञ्चल।

पूर्ण। ना रसिकबाबु, ओ ठिक हल ना। ओ केवल वाक्-चातुरी। दुटो चोख परस्परके देखेते चाय ना।

रसिक। अन्य दुटो चोखके देखते चाय तो? सेइ रकम अर्थ करेइ निन ना। शेष दुटो छत्र बदले देओया याक––

प्रियचक्षु–देखादेखि   ये आनन्द, ताइ से कि
खुँजिछे चञ्चल।

पूर्ण। चमत्कार हयेछे रसिकबाबु।

प्रियचक्षु–देखादेखि   ये आनन्द, ताइ से कि
खुँजिछे चञ्चल।

अथच से बेचारा बन्दी––खाँचार पाखिर मतो केवल एपाशे ओपाशे छट्फट् करे––प्रियचक्षु येखाने, सेखाने पाखा मेले उड़े येते पारे ना।

रसिक। आबार देखादेखिर व्यापारखानाओ ये किरकम नि-दारुण ताओ शास्त्रे लिखछे––

हत्वा लोचनविशिखैर्गत्वा कतिचित् पदानि पद्माक्षी
जीवति युवा न वा किं भूयो भूयो विलोकयति।

ना......चञ्चल—परस्पर देख नहीं पाईं इसीसे क्या विरह से भर कर चञ्चल हो गईं हैं।

ओ.....ना—वह ठीक नहीं हुआ; **दुटो.....ना**—आँखें परस्पर देखना नहीं चाहतीं।

अन्य.....तो––अन्य आँखों को तो देखना चाहती हैं; **सेइ.....ना**—उसी तरह अर्थ कर लीजिए न; **शेष.....याक**––अन्त की दो पंक्तियाँ बदल दी जायँ।

खाँचार......करे—बस पिंजड़े के पक्षी की तरह इधर-उधर छटपटाती रहती हैं; **प्रियचक्षु......ना**—जहाँ प्रिय आँखें हैं वहाँ पंख पसारे उड़ कर नहीं जा पातीं।

किरकम.....लिखछे—कितना दारुण है वह भी शास्त्र में लिखा है।

बिँधिया दिया आँखिबाणे
याय से चलि गृहपाने,—
जनमे अनुशोचना;—
बाँचिल कि ना देखिबारे
चाय से फिरे बारे बारे
कमलवरलोचना।

पूर्ण। रसिकबाबु, बारे बारे फिरे चाय केवल काव्ये।

रसिक। तार कारण, काव्ये फिरे चाबार कोनो असुविधे नेइ। संसारटा यदि ओइ रकम छन्दे तैरि हत ता हले एखानेओ फिरे फिरे चाइत पूर्णबाबु—एखाने मन फिरे चाय, चक्षु फेरे ना।

पूर्ण। (सनिश्वासे) बड़ो विश्री जायगा रसिकबाबु। किन्तु ओटा आपनि बेश बलेछेन—

प्रियचक्षु-देखादेखि ये आनन्द, ताइ से कि
खुँजिछे चञ्चल।

रसिक। आहा पूर्णबाबु, नयनेर कथा यदि उठल ओ आर शेष करते इच्छे करे ना—

लोचने हरिणगर्वमोचने मा विदूषय नताङ्गि कज्जलैः
सायकः सपदि जीवहारकः किं पुनर्हि गरलेन लेपितः।

याय......गृहपाने—वह घर की ओर चली जाती है; **जनमे**—उत्पन्न होती है; **बाँचिल.....बारे**—बचा या नहीं यह देखने के लिए वह बार बार मुड़-मुड़ कर देखती है।

तार—उसका; **काव्ये......नेइ**—काव्य में मुड़ कर देखने में कोई असुविधा नहीं है; **संसारटा......चाइत**—संसार अगर उसी प्रकार के छन्द से बना होता तो यहाँ भी मुड़-मुड़ कर देखती; **एखाने......ना**—यहाँ मन मुड़ कर देखता है, आँखें नहीं लौटतीं।

विश्री जायगा—कुत्सित जगह; **किन्तु......बलेछेन**—लेकिन वह आपने खूब कहा है।

नयनेर......ना—नयनों की बात यदि छिड़ी तो फिर उसे बन्द करने की इच्छा नहीं होती।

हरिणगर्वमोचन लोचने
काजल दियो ना, सरले।
एमनि तो बाण नाश करे प्राण
की काज लेपिया गरले।

पूर्ण। थामुन रसिकबाबु। ओइ बुझि कारा आसछेन।

[चन्द्रबाबु ओ निर्मलार प्रवेश

चन्द्र। एइ-ये अक्षयबाबु।

रसिक। आमार सङ्गे अक्षयबाबुर सादृश्य आछे शुनले तिनि एवं ताँर आत्मीयगण विमर्ष हबेन। आमि रसिक।

चन्द्र। माप करबेन रसिकबाबु—हठात् भ्रम हयेछिल।

रसिक। माप करबार की कारण घटेछे मशाय। आमाके अक्षयबाबु भ्रम करे किछुमात्र असम्मान करेन नि। माप ताँर काछे चाइबेन। पूर्णबाबुते आमाते एतक्षण विज्ञानचर्चा करछिलुम चन्द्रबाबु।

चन्द्र। आमादेर कुमार-सभाय आमरा मासे एकदिन करे विज्ञान आलोचनार जन्ये स्थिर करब मने करछिलुम। आज की विषय निये आलोचना चलछिल पूर्णबाबु।

पूर्ण। ना, से किछुइ ना चन्द्रबाबु।

दियो ना—न देना, न लगाना; **एमनि तो**—यों ही तो; **करे**—करता है, **की......गरले**—विष का लेपन किसलिए।

थामुन—रुकिए; **ओइ......आसछेन**—वे शायद कोई आ रहे हैं।

शुनले—सुनने पर; **तिनि......हबेन**—वे तथा उनके अपने लोग असंतुष्ट होंगे।

माप करबेन—माफ कीजिए; **हयेछिल**—हो गया।

माप......मशाय—माफ करने की क्या बात हुई महाशय; **आमाके**—मुझे; **करेन नि**—नहीं किया; **माप......चाइबेन**—क्षमा उनसे माँगिएगा; **पूर्णबाबुते......करछिलुम**—पूर्णबाबू और मैं इतनी देर से विज्ञानचर्चा कर रहे थे।

करब—करूंगा; **मने करछिलुम**—सोच रहा था; **निये**—ले कर; **चलछिल**—चल रही थी।

ना......ना—नहीं, वह कुछ नहीं।

रसिक। चोखेर दृष्टि सम्बन्धे दु-चार कथा बलाबलि करा याच्छिल।

चन्द्र। दृष्टिर रहस्य भारि शक्त रसिकबाबु।

रसिक। शक्त बइकि। पूर्णबाबुरओ सेइ मत।

चन्द्र। समस्त जिनिसेर छायाइ आमादेर दृष्टिपटे उल्टो हये पड़े, सेइटेके ये केमन करे आमरा सोजाभाबे देखि, से-सम्बन्धे कोनो मतइ आमार सन्तोषजनक बले बोध हय ना।

रसिक। सन्तोषजनक हबे केमन करे। सोजा देखा, बाँका देखा, एइ-समस्त निये मानुषेर माथा घुरे याय। विषयटा बड़ो संकटमय।

चन्द्र। निर्मलार सङ्गे रसिकबाबुर परिचय हय नि। इनिइ आमादेर कुमार-सभार प्रथम स्त्रीसभ्य।

रसिक। (नमस्कार करिया) इनि आमादेर सभार सभा-लक्ष्मी। आपनादेर कल्याणे आमादेर सभाय बुद्धिविद्यार अभाव छिल ना, इनि आमादेर श्री दान करते एसेछेन।

चन्द्र। केवल श्री नय, शक्ति।

रसिक। एकइ कथा चन्द्रबाबु। शक्ति यखन श्रीरूपे आविर्भूता हन तखनइ ताँर शक्तिर सीमा थाके ना। की बलेन पूर्णबाबु।

कथा......याच्छिल—बातें चल रही थीं।

भारि शक्त—अत्यन्त कठिन है।

बइकि—निश्चय ही; **पूर्णबाबुरओ......मत**—पूर्णबाबू का भी वही मत है।

हये पड़े—हो जाती है; **सेइटेके**—उसको; **ये......करे**—किस प्रकार; **आमरा......देखि**—हमलोग सीधा देखते हैं; **कोनो मतइ**—कोइ भी मत।

हबे......करे—होगा कैसे; **सोजा......याय**—सीधा देखना, तिरछा देखना, इन सबों को ले कर मनुष्य का दिमाग चकरा जाता है।

हय नि—नहीं हुआ; **इनिइ**—ये ही।

इनि......एसेछेन—ये हमलोगों को श्री का दान करने आई हैं।

नय—नहीं।

एकइ कथा—एक ही बात है; **हन**—होती हैं; **तखनइ.....नइ**—तभी उनकी शक्ति की सीमा नहीं रहती।

[पुरुषवेशी शैलबालार प्रवेश

शैलबाला। माप करबेन चन्द्रबाबु, आमार कि आसते देरि हयेछे।

चन्द्र। (घड़ि देखिया) ना, एखनओ समय हय नि। अबला-कान्तबाबु, आमार भागनी निर्मला आज आमादेर सभार सभ्य हयेछेन।

शैलबाला। (निर्मलार निकट बसिया) देखुन, पुरुषेरा स्वार्थ-पर, मेयेदेर केवल निजेदेर सेवार जन्येइ विशेष करे बद्ध करे राखते चाय। चन्द्रबाबु ये आपनाके आमादेर सभार हितेर जन्ये दान करेछेन ताते ताँर महत्त्व प्रकाश पाय।

निर्मला। आमार मामार काछे देशेर काज एवं निजेर काज एकइ। आमि यदि आपनादेर सभार कोनो उपकार करते पारि ताते ताँरइ सेवा हबे।

शैलबाला। आपनि ये सौभाग्यक्रमे चन्द्रबाबुके भालो करे जानबार योग्यता लाभ करेछेन एते आपनि धन्य।

निर्मला। आमि ओँके जानब ना तो के जानबे।

शैलबाला। आत्मीय सब समय आत्मीयके जाने ना। आत्मीयताय छोटोके बड़ो करे तोले बटे, तेमनि बड़ोकेओ छोटो करे आने।

आमार.....हयेछे—क्या मुझे आने में देरी हो गई।

ना.....नि—नहीं, अभी भी समय नहीं हुआ है।

बसिया—बैठ कर; **देखुन......चाय**—देखिए, पुरुष स्वार्थी होते हैं, केवल अपनी सेवा के लिए ही वे विशेष रूप से स्त्रियों को बाँध कर रखना चाहते हैं; **ताते......पाय**—उससे उनका महत्त्व प्रकट होता है।

एकइ—एक ही है; **करते पारि**—कर सकूँ; **ताते.....हबे**—उससे उन्हींकी सेवा होगी।

आपनि......धन्य—आपने जो सौभाग्यवश चन्द्रबाबु को अच्छी तरह जानने की योग्यता प्राप्त की है इसलिए आप धन्य हैं।

आमि.....जानबे—मैं उन्हें न जानूंगी तो कौन जानेगा।

आत्मीयके.....ना—निकट-संबंधी को नहीं जानते; **आत्मीयताय.....आने**—आत्मीयता छोटे को बड़ा तो कर देती है पर उसी प्रकार बड़े को भी छोटा कर

चन्द्रबाबुके ये आपनि यथार्थभावे जेनेछेन ताते आपनार क्षमता प्रकाश पाय।

निर्मला। किन्तु, आमार मामाके यथार्थभावे जाना खुब सहज, ओँर मध्ये एमन एकटि स्वच्छता आछे।

शैलबाला। देखुन सेइजन्येइ तो ओँके ठिकमत जाना शक्त। दुर्योधन स्फटिकेर देयालके देयाल बले देखतेइ पान नि। सरल स्वच्छतार महत्त्व कि सकले बुझते पारे। ताके अवहेला करे। आड़म्बरेइ लोकेर दृष्टि आकृष्ट हय।

निर्मला। आपनि ठिक कथा बलेछेन। बाइरेर लोके आमार मामाके केउ चेनेइ ना। बाइरेर लोकेर मध्ये एतदिन परे आपनार काछे मामार कथा शुने आमार ये की आनन्द हच्छे से की बलब।

शैलबाला। आपनार भक्तिओ आमाके ठिक सेइरकम आनन्द दिच्छे।

चन्द्र। (उभयेर निकटे आसिया) अबलाकान्तबाबु, तोमाके ये बइटि दियेछिलेम सेटा पड़ेछ?

देती है; **जेनेछेन**—जान चुकी हैं; **ताते.....पाय**—उससे आपकी क्षमता प्रकट होती है।

ओँर......आछे—उनमें एक ऐसी विशुद्धता है।

देखुन......शक्त—देखिए इसीलिए तो उन्हें अच्छी तरह जानना कठिन है; **देयालके......नि**—दीवार को दीवार समझ ही नहीं पाए; **कि......पारे**—क्या सभी समझ सकते हैं; **ताके......करे**—उसकी लोग अवहेलना करते हैं; **आड़म्बरेइ......हय**—आडम्बर ही लोगों की दृष्टि आकृष्ट करता है।

आपनि......बलेछेन—आपने ठीक बात कही है; **बाइरेर......ना**—बाहर के लोग मेरे मामा को पहचानते ही नहीं; **बाइरेर......बलब**—बाहर के लोगों में इतने दिनों बाद आपसे मामा की बात सुन कर मुझे कैसा आनन्द हो रहा है क्या बताऊँ।

आपनार......दिच्छे—आपकी भक्ति भी मुझे ठीक उसी तरह आनन्द दे रही है।

आसिया—आ कर; **तोमाके......पड़ेछ**—तुम्हें जो पुस्तक दी थी वह पढ़ ली।

शैलबाला। पड़ेछि एवं तार थेकें समस्त नोट करे आपनार व्यवहारेर जन्य प्रस्तुत करे रेखेछि।

चन्द्र। आमार भारि उपकार हबे, आमि बड़ो खुशि हलुम अबलाकान्तबाबु। पूर्ण निजे आमार काछे ओइ बइटि चेये निये गियेछिलेन। किन्तु, ओँर शरीर भालो छिल ना बले किछुइ करे उठते पारेन नि। खाताटि तोमार काछे आछे?

शैलबाला। एने दिच्छि।

[प्रस्थान

रसिक। पूर्णबाबु, आपनाके केमन म्लान देखछि, असुख करेछे कि।

पूर्ण। ना, किछुइ ना। रसिकबाबु, यिनि गेलेन, एँरइ नाम अबलाकान्त?

रसिक। हाँ।

पूर्ण। आमार काछे ओँर व्यवहारटा तेमन भालो ठेकछे ना।

रसिक। अल्पवयस कि ना सेइजन्ये––

पूर्ण। महिलादेर सङ्गे किरकम आचरण करा उचित से शिक्षा ओँर विशेष दरकार।

तार थेकें—उसमें से; **आपनार......रेखेछि**—आपके उपयोग के लिए प्रस्तुत कर रखे हैं।

आमार......हलुम—मेरा बड़ा काम होगा, मुझे बड़ी खुशी हुई; **पूर्ण...... गियेछिलेन**—पूर्ण स्वयं मुझसे वह पुस्तक माँग कर ले गए थे; **किन्तु.....नि**—लेकिन उनका शरीर अच्छा नहीं था इसलिए कुछ कर नहीं सके; **खाताटि...... आछे**—कापी क्या तुम्हारे पास है।

एने दिच्छि—ला देता हूँ (देती हूँ)।

आपनाके......कि—आपको कुछ उदास देख रहा हूँ, अस्वस्थ हैं क्या।

ना......ना—नहीं, कुछ नहीं; **यिनि गेलेन**—जो गए; **एँरइ**—इन्हींका।

आमार....ना–मुझे तो उनका व्यवहार कुछ खास अच्छा नहीं मालूम होता।

अल्पवयस......सेइजन्ये—कम उम्र है न इसीलिए।

महिलादेर......दरकार—महिलाओं के प्रति कैसा आचरण करना उचित है उन्हें इस शिक्षा की विशेष आवश्यकता है।

रसिक। आमिओ सेटा लक्ष्य करे देखेछि। मेयेदेर सङ्गे उनि ठिक पुरुषोचित व्यवहार करते जानेन ना—केमन येन गाये-पड़ा भाव। ओटा हयतो अल्पवयसेर धर्म।

पूर्ण। आमादेरओ तो वयस खुब प्राचीन हय नि, किन्तु आमरा तो—

रसिक। ता तो देखछि, आपनि खुब दूरे दूरेइ थाकेन, किन्तु उनि हयतो सेटाके ठिक भद्रता बलेइ ग्रहण करेन ना। ओँर हयतो भय हच्छे आपनि ओँके अग्राह्य करेन।

पूर्ण। बलेन की रसिकबाबु। की करब बलुन तो। आमि तो भेबेइ पाइ ने, की कथा बलबार जन्ये आमि ओँर काछे अग्रसर हते पारि।

रसिक। भाबते गेले भेबे पाबेन ना। ना भेबे अग्रसर हबेन, तार परे कथा आपनि बेरिये याबे।

पूर्ण। ना रसिकबाबु, आमार एकटा कथाओ बेरोय ना। की बलब आपनिइ बलुन ना।

रसिक। एमन कोनो कथाइ बलबेन ना याते जगते युगान्तर

आमिओ.....देखेछि—मैंने भी यह लक्ष्य किया है; **करते.....ना**—करना नहीं जानते; **केमन......भाव**—कुछ कुछ मानो पीछे पड़ जाने का-सा भाव; **ओटा**—वह; **हयतो**—संभवतः।

उनि......ना—वे शायद उसे ठीक भद्रता के रूप में ग्रहण नहीं करतीं; **ओँर......करेन**—उन्हें शायद भय है कि आप उनकी अवज्ञा करते हैं।

की......तो—क्या करूँ बताइए तो; **आमि.....पारि**—मैं तो सोच ही नहीं पाता, क्या कहने के लिए मैं उनकी ओर अग्रसर होऊँ।

भाबते......ना—सोचने चले तो फिर सोच नहीं सकेंगे; **ना.....याबे**—बिना सोचे आगे बढ़िए, बस फिर बात अपने आप निकल आएगी।

आमार......ना—मेरी तो कोई बात ही नहीं निकलती; **की......ना**—क्या कहूँ आप ही बताइए न।

एमन......हबे—ऐसी कोई बात न कहें जिससे संसार में युगान्तर उपस्थित हो जाय;

उपस्थित हबे। गिये बलुन, आजकाल हठात् किरकम गरम पड़ेछे।

पूर्ण। तिनि यदि बलेन हाँ गरम पड़ेछे तार परे की बलब।

[विपिन ओ श्रीशेर प्रवेश

श्रीश। (चन्द्रबाबुके ओ निर्मलाके नमस्कार करिया निर्मलार प्रति) आपनादेर उत्साह घड़िर चेये एगिये चलछे। एइ देखुन, एखनओ साड़े-छटा बाजे नि।

निर्मला। आज आपनादेर सभाय आमार प्रथम दिन, सेइ-जन्ये सभा बसबार पूर्वेइ एसेछि––प्रथम सभ्य हबार संकोच भाङ्ते एकटु समय दरकार।

विपिन। किन्तु, आपनार काछे निवेदन एइ ये, आमादेर किछुमात्र संकोच करे चलबेन ना। आज थेके आपनि आमादेर भार निलेन; लक्ष्मीछाड़ा पुरुष सभ्यगुलोके अनुग्रह करे देखबेन शुनबेन एवं हुकुम करे चालाबेन।

रसिक। यान पूर्णबाबु, आपनिओ एकटा कथा बलुन गे।

पूर्ण। की बलब।

निर्मला। चालाबार क्षमता आमार नेइ।

श्रीश। आपनि कि आमादेर एतइ अचल बले मने करेन।

गिये......पड़ेछे—जा कर कहिए आजकल अकस्मात् कैसी गर्मी पड़ने लगी है।

तिनि......बलब––यदि वे कहें 'हां, गर्मी पड़ रही है', फिर क्या कहूंगा।

आपनादेर......चलछे––आपलोगों का उत्साह तो घड़ी से भी आगे चल रहा है। **एइ......नि**—यह देखिए अभी तक साढ़े छः नहीं बजे हैं।

सेइजन्ये—इसीलिए; **सभा......एसेछि**—सभा जुड़ने के पहले ही आई हूँ; **प्रथम......दरकार**—पहले पहल सदस्य होने का संकोच दूर होने में थोड़े समय की जरूरत होती है।

आज......निलेन––आज से आपने हमलोगों का भार लिया; **लक्ष्मीछाड़ा ......चालाबेन**—अभागे पुरुष सदस्यों को अनुग्रहपूर्वक देखेंगी-सुनेंगी तथा आदेश देती रहेंगी।

यान––जाइए; **आपनिओ......गे**––आप भी जा कर कोई बात कहिए।

आपनि......करेन––आप क्या हमलोगों को इतना जड़ समझती हैं।

विपिन। लोहार चेये अचल आर की आछे। किन्तु, आगुन तो लोहाके चालाच्छे––आमादेर मतो भारी जिनिसगुलोके चलनसइ करे तुलते आपनादेर मतो दीप्तिर दरकार।

रसिक। शुनछेन तो पूर्णबाबु ?

पूर्ण। आमि की बलब बलुन-ना।

रसिक। बलुन, लोहाके चालाते चाइलेओ आगुन चाइ, गलाते चाइलेओ आगुन चाइ।

विपिन। की पूर्णबाबु, रसिकबाबुर सङ्गे परिचय हयेछे ?

पूर्ण। हाँ।

विपिन। आपनार शरीर आज भालो आछे तो ?

पूर्ण। हाँ।

विपिन। अनेकक्षण एसेछेन नाकि।

पूर्ण। ना।

विपिन। देखेछेन एबारे शीतटा घोड़दौड़ेर घोड़ार मतो सजोरे दौड़े माघेर माझामाझि एकेबारे खप् करे थेमे गेल !

पूर्ण। हाँ।

श्रीश। एइ-ये पूर्णबाबु, गेल बारे आपनार शरीर खाराप छिल––एबारे बेश भालो बोध हच्छे तो ?

पूर्ण। हाँ।

लोहार......आछे––लोहे से ज्यादा अचल और क्या है; **आगुन.....चालाच्छे**––आग तो लोहे को चला रही है; **चलनसइ.......तुलते**––चालू करने के लिए।

शुनछेन––सुन रहे हैं।

लोहाके......चाइ––लोहे को चलाने के लिए भी आग चाहिए, गलाने के लिए भी आग चाहिए।

अनेकक्षण......नाकि––आए हुए क्या बहुत देर हो गई।

देखेछेन......गेल––देखा आपने इस बार ठंड घुड़दौड़ के घोड़े की भाँति जोर से दौड़ती माघ के बीचोंबीच धम्म-से रुक गई है।

गेल......छिल––पिछली बार आपका शरीर खराब था; **एबारे......तो**––इस बार तो अच्छे हैं न।

श्रीश। एतदिन कुमार-सभार ये की एकटा महत् अभाव छिल आज घरेर मध्ये ढुकेइ ता बुझते पेरेछि, सोनार मुकुटेर माझखानटिते केवल एकटि हीरे बसाबार अपेक्षा छिल––आज सेइटि बसानो हयेछे। की बलेन पूर्णबाबु।

पूर्ण। आपनादेर मतो एमन रचनाशक्ति आमार नेइ––आमि एत बानिये बानिये कथा बाँटते पारि ने, विशेषत महिलादेर सम्बन्धे।

श्रीश। आपनार अक्षमतार कथा शुने दुःखित हलेम पूर्णबाबु–– आशा करि क्रमे उन्नति लाभ करते पारबेन।

विपिन। (रसिकके जनान्तिके टानिया) दुइ वीर पुरुषे युद्ध चलुक, एखन आसुन रसिकबाबु, आपनार सङ्गे दुइ एकटा कथा आछे। देखुन, सेइ खाता सम्बन्धे आर कोनो कथा उठेछिल ?

रसिक। अपराध करा मानवेर धर्म आर क्षमा करा देवीर–– से कथाटा आमि प्रसङ्गक्रमे तुलेछिलेम।––

विपिन। ताते की बललेन।

रसिक। किछु ना बले विद्युतेर मतो चले गेलेन।

विपिन। चले गेलेन !

रसिक। किन्तु से विद्युते वज्र छिल ना।

विपिन। गर्जन ?

रसिक। ताओ छिल ना।

घरेर......पेरेछि––घर में घुसते ही यह समझ गया हूँ; **बसाबार......छिल**––बैठाने (जड़ने) की अपेक्षा थी; **आज......हयेछे**––आज उसे बैठाने (जड़ने) का काम हो गया।

आमि......ने––मैं ऐसे बना बना कर बातें नहीं बाँट पाता।

हलेम––हुआ; **आशा.....पारबेन**––आशा करता हूँ धीरे धीरे उन्नति करते जाएंगे। **दुइ......चलुक**––दो वीरों में युद्ध होता रहे।

ताते......बललेन––उसपर (उन्होंने) क्या कहा।

किछु......गेलेन––बिना कुछ बोले विद्युत् की भाँति चली गईं।

से......ना––उस विद्युत् में वज्र नहीं था।

ताओ......ना––वह भी नहीं था।

विपिन। तबे ?

रसिक। एक प्रान्ते किंवा अन्य प्रान्ते एकटु हयतो वर्षणेर आभास छिल।

विपिन। सेटुकुर अर्थ ?

रसिक। की जानि मशाय। अर्थओ थाकते पारे, अनर्थओ थाकते पारे।

विपिन। रसिकबाबु, आपनि की बलेन आमि किछु बुझते पारि ने।

रसिक। की करे बुझबेन—भारि शक्त कथा।

श्रीश। (निकटे आसिया) की कथा शक्त मशाय।

रसिक। एइ वृष्टि-वज्र-विद्युतेर कथा।

श्रीश। ओहे विपिन, तार चेये शक्त कथा यदि शुनते चाओ ता हले पूर्णर काछे याओ।

विपिन। शक्त कथा सम्बन्धे आमार खुब बेशि शख नेइ भाइ।

श्रीश। युद्ध करबार चेये सन्धि करबार विद्येटा ढेर बेशि दुरूह—सेटा तोमार आसे। दोहाइ तोमार, पूर्णके एकटु ठाण्डा करे

एक......छिल—एक हिस्से में अथवा दूसरे हिस्से में शायद थोड़ा-सा वर्षण का आभास था। **सेटुकुर अर्थ**—इसका अर्थ।

की जानि—क्या जानूँ; **अर्थओ......पारे**—अर्थ भी हो सकता है, अनर्थ भी हो सकता है।

आपनि......ने—आप क्या कहते हैं मैं कुछ समझ नहीं पाता।

की.....कथा—कैसे समझेंगे, बड़ी कठिन बात है।

आसिया—आ कर; **की......मशाय**—कौन बात कठिन है महाशय।

तार चेये—उससे; **यदि......याओ**—अगर सुनना चाहो तो पूर्ण के पास जाओ।

शक्त......नेइ—कठिन बात के लिए मेरे मन में बहुत अधिक शौक नहीं है।

युद्ध......आसे—युद्ध करने की अपेक्षा सन्धि करने की विद्या बहुत ज्यादा कठिन है और वह तुम्हें आती है;

एसो गे। आमि वरञ्च ततक्षण रसिकवाबुर सङ्गे वृष्टि-वज्र-विद्युतेर आलोचना करे निइ।

[विपिनेर प्रस्थान

रसिकवाबु, ओइ ये सेदिन आपनि याँर नाम नृपबाला बललेन, तिनि—तिनि—ताँर सम्बन्धे विस्तारित करे किछु बलुन। सेदिन चकितेर मध्ये ताँर मुखे एमन-एकटि स्निग्धभाव देखेछि, ताँर सम्बन्धे कौतूहल किछुतेइ थामाते पारछि ने।

रसिक। विस्तारित करे बलले कौतूहल आरओ बेड़े याबे। एरकम कौतूहल 'हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते'। आमि तो ताँके एतकाल धरे जेने आसछि, किन्तु सेइ कोमल हृदयेर स्निग्ध मधुर भावटि आमार काछे 'क्षणे क्षणे तन्नवतामुपैति'।

श्रीश। आच्छा, तिनि—आमि सेइ नृपबालार कथा जिज्ञासा करछि—

रसिक। से आमि बेश बुझतेइ पारछि।

श्रीश। ता तिनि—की आर प्रश्न करब। ताँर सम्बन्धे या-हय-किछु बलुन-ना—काल की बललेन, आज सकाले की करलेन, यत सामान्य हक आपनि बलुन—आमि शुनि।

दोहाइ......गे—दुहाई है तुम पूर्ण को जा ठंडा कर आओ; **करे निइ**—कर लूँ।

ओइ......बललेन—वही उस दिन जिनका नाम (आपने) नृपबाला बताया था; **तिनि**—वे; **ताँर.....बलुन**—उनके बारे में विस्तार से कुछ कहिए; **चकितेर मध्ये**—पलक मारते; **ताँर मुखे**—उनके मुख पर; **एमन**—ऐसा; **देखेछि**—देखा है; **किछुतेइ......ने**—किसी तरह रोक नहीं पाता।

विस्तारित......याबे—विस्तार से कहने पर कुतूहल और भी बढ़ जाएगा; **आमि......आसछि**—मैं तो उन्हें इतने दिनों से जानता आ रहा हूँ।

कथा......करछि—बात पूछ रहा हूँ।

से......पारछि—वह मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ।

की......करब—और क्या प्रश्न करूँ; **ताँर......ना**—उनके संबंध में जो भी हो कुछ बताइए न; **काल.....करलेन**—कल क्या कहती थीं, आज सबेरे क्या करती **यत......शुनि**—(चाहे) जितनी साधारण (बात) हो आप कहिए, मैं सुनूँ।

रसिक। (श्रीशेर हात धरिया) बड़ो खुशि हलुम श्रीशबाबु, आपनि यथार्थ भावुक बटेन——आपनि ताँके केवल चकितेर मध्ये देखे एटुकु की करे धरते पारलेन ये, ताँर सम्बन्धे तुच्छ किछुइ नेइ। तिनि यदि बलेन, 'रसिकदा, ओइ केरोसिनेर बातिटा एकटुखानि उसके दाओ तो', आमार मने हय येन एकटा नतुन कथा शुनलेम आदि कविर प्रथम अनुष्टुप छन्देर मतो। की बलब श्रीशबाबु, आपनि शुनले हयतो हासबेन, सेदिन घरे ढुके नृपबाला छुँचेर मुखे सुतो पराच्छेन, कोलेर उपर बालिशेर ओयाड़ पड़े रयेछे, आमार मने हल एक आश्चर्य दृश्य। कतबार कत दर्जिर दोकानेर सामने दिये गेछि, कखनो मुख तुले देखि नि किन्तु——

श्रीश। आच्छा रसिकबाबु, तिनि निजेर हाते घरेर समस्त काज करेन?

[शैलबालार प्रवेश

शैलबाला। रसिकदार सङ्गे की परामर्श करछेन।

रसिक। किछुइ ना, नितान्त सामान्य कथा निये आमादेर आलोचना चलछे, यतदूर तुच्छ हते पारे।

हात धरिया——हाथ पकड़ कर; **बड़ो......हलुम**——मुझे बहुत खुशी हुई; **आपनि......बटेन**——आप सचमुच भावुक हैं; **आपनि......नेइ**——उन्हें क्षण भर को ही देख कर इतना कैसे समझ पाए कि उनके संबंध में कुछ भी तुच्छ नहीं है। **तिनि......बलेन**——वे यदि कहें; **बातिटा**——बत्ती; **एकटुखानि**——ज़रा; **उसके दाओ**——उकसा दो; **आमार......शुनलेम**——मुझे लगता है जैसे मैंने कोई नई बात सुनी; **की बलब**——क्या कहूँ; **आपनि......हासबेन**——हो सकता है आप सुन कर हँसें; **सेदिन......दृश्य**——उस दिन कमरे में जा कर देखता हूँ नृपबाला सुई में धागा पिरो रही हैं, गोद में तकिये का खोल पड़ा हुआ है, मुझे लगा (जैसे यह) एक अपूर्व दृश्य है; **कतबार......नि**——कितनी बार कितने दर्जियों की दूकान के सामने से गुजरा हूँ, कभी आँख उठा कर नहीं देखा।

तिनि......करेन——वे क्या घर का सब काम अपने हाथों करती हैं।

किछुइ ना——कुछ भी नहीं; **नितान्त......पारे**——अत्यन्त साधारण बात ले कर हमलोगों की बातचीत चल रही है, जहाँ तक तुच्छ हो सकती है।

चन्द्र। सभा अधिवेशनेर समय हयेछे आर विलम्ब करा उचित हय ना। पूर्णबाबु, कृषिविद्यालय सम्बन्धे आज तुमि ये प्रस्ताव उत्थापन करबे बलेछिले सेटा आरम्भ करो।

पूर्ण। (दण्डायमान हइया घड़िर चेन नाड़िते नाड़िते) आज-आज—— काशि

रसिक। (पार्श्वे बसिया मृदुस्वरे) आज एइ सभा——

पूर्ण। आज एइ सभा——

रसिक। ये नूतन सौन्दर्य एवं गौरव लाभ करियाछे——

पूर्ण। ये नूतन सौन्दर्य एवं गौरव लाभ करियाछे——

रसिक। प्रथमे ताहारइ जन्य अभिनन्दन प्रकाश ना करिया थाकिते पारितेछि ना।

पूर्ण। प्रथमे ताहारइ जन्य अभिनन्दन प्रकाश ना करिया थाकिते पारितेछि ना।

रसिक। (मृदुस्वरे) बले यान पूर्णबाबु।

पूर्ण। ताहारइ जन्य अभिनन्दन प्रकाश ना करिया थाकिते पारितेछि ना।

रसिक। भय की पूर्णबाबु, बले यान।

पूर्ण। ये नूतन सौन्दर्य एवं गौरव (काशि)——ये नूतन सौन्दर्य (पुनराय काशि)——अभिनन्दन——

रसिक। (उठिया) सभापतिमशाय, आमार एकटा निवेदन

समय हयेछे——समय हो गया है; **आर.....ना**——और विलम्ब करना उचित नहीं; **ये......करो**——जो प्रस्ताव पेश करने को कहा था उसे आरम्भ करो।

दण्डायमान......नाड़िते——खड़े हो कर घड़ी की चैन को हिलाते हुए।

काशि——खाँसी।

पार्श्वे बसिया——बगल में बैठ कर।

लाभ करियाछे——प्राप्त किया है।

प्रथमे......ना——पहले उसके लिए अभिनन्दन प्रकट किए विना मैं नहीं रह पा रहा हूँ।

भय की——भय क्या है; **बले यान**——बोलते जाइए।

आछे। आज पूर्णबाबु सकल सभ्येर पूर्वेइ सभाय उपस्थित हयेछेन। उनि अत्यन्त असुस्थ, तथापि उत्साह संवरण करते पारेन नि। आज आमादेर सभाय प्रथम अरुणोदय, ताइ देखबार जन्ये पाखि प्रत्युषेइ नीड़ परित्याग करे बेरियेछे। किन्तु देह रुग्ण, ताइ पूर्णहृदयेर आवेग कण्ठे व्यक्त करबार शक्ति नेइ—अतएव ओँके आज आमादेर निष्कृति दान करते हबे। एवं आज नवप्रभातेर ये अरुणच्छटार स्तवगान करते उनि उठेछिलेन ताँर काछेओ एइ अवरुद्धकण्ठ भक्तेर हये आमि मार्जना प्रार्थना करि। पूर्णबाबु, आज वरञ्च आमादेर सभार कार्य बन्ध थाके से-ओ भालो, तथापि वर्तमान अवस्थाय आज आपनाके कोनो प्रस्ताव उत्थापन करते दिते पारि ने। सभापतिमशाय क्षमा करबेन, एवं आमादेर सभ्यके यिनि आपन प्रभा द्वारा अद्य सार्थकता दान करते एसेछेन क्षमा करा ताँदेर स्वजातिसुलभ करुण हृदयेर सहज धर्म।

चन्द्रबाबु। आमि जानि किछुकाल थेके पूर्णबाबु भालो नेइ, ए अवस्थाय आमरा ओँके क्लेश दिते पारि ना। विशेषत अबला-कान्तबाबु घरे बसे बसेइ आमादेर सभार काज अनेक दूर अग्रसर करे दियेछेन। ए पर्यन्त भारतवर्षीय कृषि सम्बन्धे गवर्मेण्ट थेके यतगुलि रिपोर्ट बाहिर हयेछे सबगुलि आमि ओँर काछे दियेछिलेम—तार थेके उनि जमिते सार देओया सम्बन्धीय अंशटुकु संक्षेपे संकलन करे

सकल......हयेछेन—सभी सदस्यों से पहले सभा में उपस्थित हुए हैं; **उनि**—वे; **असुस्थ**—अस्वस्थ; **करते......नि**—नहीं कर सके; **ताइ......बेरियेछे**—उसी को देखने के लिए पक्षी तड़के ही घोंसला छोड़ कर बाहर आया है; **ओँके**—उन्हें; **आज......हबे**—हमलोगों को छुटकारा देना होगा; **ताँर काछेओ**—उनके निकट भी; **हये**—हो कर; **आमि......करि**—मैं क्षमा याचना करता हूँ; **बन्ध......भालो**—बन्द रहे सो भी अच्छा; **कोनो......ने**—कोई प्रस्ताव उठाने नहीं दूंगा; **करबेन**—करेंगे; **यिनि**—जो; **करते एसेछेन**—करने आई हैं; **क्षमा करा**—क्षमा करना; **ताँदेर**—उनके।

आमि......नेइ—मैं जानता हूँ कुछ समय से पूर्णबाबू, अच्छे नहीं हैं; **ए......ना**—इस हालत में हमलोग उन्हें कष्ट नहीं दे सकते; **घरे......बसेइ**—घर में बैठे बैठे ही; **यतगुलि**—जितनी; **बाहिर हयेछे**—निकली हैं; **सबगुलि.....दियेछिलेम**—सभी मैंने उन्हें दीं थीं; **तार......रेखेछेन**—उससे उन्होंने खेत में खाद

रेखेछेन—सेइटि अवलम्बन करे उनि सर्वसाधारणेर सुबोध्य बांला भाषाय एकटि पुस्तिका प्रणयन करतेओ प्रस्तुत हयेछेन। इनि येरूप उत्साह ओ दक्षतार सङ्गे सभार कार्ये योगदान करेछेन सेजन्य ओँके प्रचुर धन्यवाद देओया उचित। विपिनबाबु यूरोपीय छात्रागार-सकलेर नियम ओ कार्यप्रणाली संकलनेर भार नियेछिलेन, एवं श्रीशबाबु स्वेच्छाकृत दानेर द्वारा लण्डन नगरे कत विचित्र लोक-हितकर अनुष्ठान प्रवर्तित हयेछे तार तालिका संग्रह ओ तत्सम्बन्धे एकटि प्रबन्ध रचनाय प्रतिश्रुत हयेछिलेन, बोध हय एखनओ ता समाधा करते पारेन नि। आमि एकटि परीक्षाय प्रवृत्त आछि—सकलेइ जानेन, आमादेर देशेर गोरुर गाड़ि एमनभाबे निर्मित ये तार पिछने भार पड़लेइ उठे पड़े एवं गोरुर गलाय फाँस लेगे याय, आबार कोनो कारणे गोरु यदि पड़े याय तबे बोझाइसुद्ध गाड़ि तार घाड़ेर उपर गिये पड़े—एरइ प्रतिकार करबार जन्ये आमि उपाय उद्भावने व्यस्त आछि—कृतकार्य हब बले आशा करि। आमरा मुखे गोजाति सम्बन्धे दया प्रकाश करि, अथच प्रत्यह सेइ गोरुर सहस्र अनावश्यक कष्ट नितान्त उदासीनभाबे निरीक्षण करे थाकि—आमार काछे एइरूप मिथ्या ओ शून्य भावुकता अपेक्षा लज्जाकर व्यापार जगते

देने से संबंधित अंश को संक्षेप में संगृहीत कर लिया है; **सेइटि......हयेछेन**—उसी का अवलंबन कर वे साधारण जनता के लिए सुबोध बंगला भाषा में एक पुस्तिका तैयार कर देने के लिए भी प्रस्तुत हैं; **इनि**—ये; **येरूप**—जिस प्रकार के; **देओया**—देना; **नियेछिलेन**—लिया था; **एकटि......हयेछिलेन**—एक निबंध लिखने का वचन दिया था; **बोध......ना**—लगता है वे अभी तक उसे पूरा नहीं कर सके हैं; **आमि......आछि**—मैं एक परीक्षण में लगा हुआ हूँ; **सकलेइ जानेन**—सभी जानते हैं; **गोरुर गाड़ि**—बैलगाड़ी; **एमनभाबे**—इस प्रकार से; **ये......पड़े**—कि उसके पीछे भार पड़ते ही वह उठ जाती है; **गलाय**—गले में; **फाँस......याय**—फंदा लग जाता है; **आबार......पड़े**—फिर किसी कारण से यदि बैल गिर जाय तो बोझा समेत गाड़ी उसकी गर्दन पर आ पड़ती है; **उद्भावने......आछि**—खोज निकालने में व्यस्त हूँ; **कृतकार्य......करि**—सफल होऊंगा (ऐसी) आशा करता हूँ; **प्रत्यह**—प्रति दिन; **निरीक्षण......थाकि**—देखते रहते हैं; **लज्जाकर......नेइ**—लज्जाजनक बात संसार में और कुछ भी नहीं है;

आर किछुइ नेइ—आमादेर सभा थेके यदि एर कोनो प्रतिकार करते पारि तबे आमादेर सभा धन्य हबे। आमि रात्रे गाड़ोयान-पल्लीते गिये गोरुर अवस्था सम्बन्धे आलोचना करेछि; गोरुर प्रति अनर्थक अत्याचार ये स्वार्थ ओ धर्म उभयेर विरोधी हिन्दु गाड़ोयानदेर ता बोझानो नितान्त कठिन बले बोध हय ना। ए-सम्बन्धे आमि गाड़ोयान-देर मध्ये एकटा पञ्चायेत करबार चेष्टाय आछि। श्रीमती निर्मला आकस्मिक अपघातेर आशु चिकित्सा एवं रोगिचर्या सम्बन्धे रामरतन डाक्तार महाशयेर काछ थेके नियमित उपदेश लाभ करछेन—भद्र-लोकदेर मध्ये सेइ शिक्षा व्याप्त करबार जन्ये तिनि दुइ-एकटि अन्तःपुरे गिये शिक्षादाने नियुक्त हयेछेन। एइरूपे प्रत्येक सभ्येर स्वतन्त्र ओ विशेष चेष्टाय आमादेर एइ क्षुद्र कुमारसभा साधारणेर अज्ञातसारे क्रमशइ विचित्र सफलता लाभ करते थाकबे ए-विषये आमार कोनो सन्देह नेइ।

श्रीश। ओहे विपिन, आमार काज तो आमि आरम्भओ करि नि।

विपिन। आमारओ ठिक सेइ अवस्था।

श्रीश। किन्तु करते हबे।

विपिन। आमाकेओ करते हबे।

श्रीश। किछुदिन अन्य समस्त आलोचना त्याग ना करले चलछे ना।

एर......हबे—इसका कोई प्रतिकार कर सकने पर हमलोगों की सभा धन्य होगी; **गाड़ोयान......गिये**—गाड़ीवानों के मुहल्ले में जा कर; **अनर्थक**—व्यर्थ; **ता......ना**—यह समझाना मुझे कुछ कठिन नहीं प्रतीत होता; **अपघात**—(आकस्मिक दुर्घटना से घायल होना); **आशु**—तत्काल, शीघ्र; **अज्ञातसारे**—अनजाने; **क्रमशइ**—क्रमशः; **लाभ......नेइ**—प्राप्त करती रहेगी इस बारे में मुझे कोई सन्देह नहीं है।

आमार......नि—अपना काम तो मैंने आरम्भ भी नहीं किया है।

आमारओ......अवस्था—मेरी भी ठीक वही अवस्था है।

आमाकेओ......हबे—मुझे भी करना है।

विपिन। आमिओ ताइ भावछि।

श्रीश। किन्तु अबलाकान्तबाबुके धन्य बलते हबे––उनि ये कखन आपनार काजटि करे याच्छेन किछु बोझबार जो नेइ।

विपिन। ताइ तो बड़ो आश्चर्य। अथच मने हय येन ओँर अन्यमनस्क हबार विशेष कारण आछे।

श्रीश। याइ, ओँर सङ्गे एकबार आलोचना करे आसि गे।

शैलर निकट गमन

पूर्ण। रसिकबाबु, आपनाके की बले धन्यवाद जानाब।

रसिक। किछु बलबेन ना, आमि एमनि बुझे नेब। किन्तु सकले आमार मतो नय पूर्णबाबु––आन्दाजे बुझबे ना, बला-कओयार दरकार।

पूर्ण। आपनि आमार अन्तरेर कथा बुझे नियेछेन रसिकबाबु––आपनाके पेये आमि बेँचे गेछि। आमार या कथा ता मुखे उच्चारण करतेओ संकोच बोध हय। आपनि आमाके परामर्श दिन की करते हबे।

रसिक। प्रथमे आपनि ओँर काछे गिये या हय एकटा किछु कथा आरम्भ करे दिन ना।

आमिओ......भावछि––मैं भी वही सोच रहा हूँ।

धन्य......हबे––धन्य कहना होगा; **उनि......नेइ**––वे कब अपना काम करते हैं, कुछ समझने का उपाय नहीं है।

अथच......आछे––वैसे लगता है उनके अन्यमनस्क होने का विशेष कारण है।

याइ......गे––चलूँ, एकबार उनसे विचार विमर्श कर आऊँ।

आपनाके......जानाब––आपको क्या कह कर धन्यवाद जताऊँ।

किछु......नेब––कुछ मत कहिए, मैं वैसे ही समझ लूँगा; **किन्तु......नय**––किन्तु सभी मेरे जैसे नहीं हैं; **आन्दाजे......दरकार**––अन्दाज से नहीं समझेंगे, कहने-सुनने की ज़रूरत है।

बुझे नियेछेन––समझ ली है; **आपनाके......गेछि**––आपको पा कर मैं बच गया हूँ; **आमार......हय**––मेरी जो बात है उसे मुख से उच्चारण करने में भी संकोच होता है; **आपनि......हबे**––आप मुझे परामर्श दीजिए क्या करना होगा।

प्रथमे......ना––पहले आप उनके पास जा कर जो भी हो कोई बात आरम्भ कर दीजिए न।

पूर्ण। ओइ देखुन ना, अवलाकान्तबाबु आबार ओँर काछे गिये बसेछेन––

रसिक। ता होक ना, तिनि तो ओँके चारि दिके घिरे दाँड़ान नि। अबलाकान्तके तो व्यूहेर मतो भेद करे येते हबे ना। आपनिओ एकपाशे गिये दाँड़ान ना।

पूर्ण। आच्छा, आमि देखि।

शैलबाला। (निर्मलार प्रति) आमाके एत करे वलबेन ना––आपनि आमार चेये ढेर बेशि काज करछेन।––किन्तु, बेचारा पूर्णबाबुर जन्ये आमार वड़ो दु:ख हय। आपनि आसबेन बलेइ उनि आज विशेष उत्साह करे एसेछिलेन––अथच सेटा व्यक्त करते ना पेरे उनि बोध हय अत्यन्त विमर्ष हये पड़ेछेन। आपनि यदि ओँके––

निर्मला। आपनादेर अन्यान्य सभ्यदेर थेके आमाके एकटु विशेषभावे पृथक करे देखछेन बले आमि बड़ो संकोच बोध करछि––आमाके सभ्य बले आपनादेर मध्ये गण्य करबेन, महिला बले स्वतन्त्र करबेन ना।

शैलबाला। आपनि ये महिला हये जन्मेछेन से सुविधाटुकु आमादेर सभा छाड़ते पारेन ना। आपनि आमादेर सङ्गे एक हये गेले

ओइ......ना––वह देखिए न; **आबार......बसेछेन**––फिर उनके पास जा बैठे हैं।

ता......नि––वही सही, (लेकिन) वे उन्हें चारों ओर से घेर कर तो खड़े नहीं हैं; **येते......ना**––जाना नहीं होगा; **आपनिओ......ना**––आप भी एक ओर जा कर खड़े हो जाइए।

आमि देखि––मैं देखता हूँ।

आमाके......करछेन––मुझे इतना बढ़ा चढ़ा कर न कहिए, आप मुझसे कहीं अधिक काम कर रही हैं। **आपनि......एसेछिलेन**––आप आएंगी इसीलिए वे आज विशेष उत्साह से आए थे; **सेटा......पड़ेछेन**––उसे व्यक्त नहीं कर पाने के कारण लगता है वे अत्यन्त दु:खित हो गए हैं।

स्वतन्त्र––अलग, पृथक्।

आपनि.....ना––आपने महिला के रूप में जन्म ग्रहण किया है उस सुविधा को हमारी सभा नहीं छोड़ सकतीं; **आपनि......हबे**––आपके हमलोगों में मिल कर

यत काज हबे, आमादेर थेके स्वतन्त्र हले तार चेये बेशि काज हबे। ये लोक गुणेर द्वारा नौकोके अग्रसर करे देबे ताके नौको थेके कतकटा दूरे थाकते हय। चन्द्रबाबु आमादेर नौकोर हाल धरे आछेन तिनिओ आमादेर थेके किछु दूरे एवं उच्चे आछेन। आपनाके गुणेर द्वारा आकर्षण करते हबे सुतरां आपनाके पृथक थाकते हबे। आमरा सब दाँड़िर दले बसे गेछि।

निर्मला। आपनाकेओ कर्मे एवं भावे एँदेर सकलेर थेके पृथक बोध हय। एकदिन मात्र देखेइ आमार दृढ़ विश्वास हच्छे ए सभार मध्ये आपनि आमार प्रधान सहाय हबेन।

शैलबाला। से तो आमार सौभाग्य। एइ ये आसुन पूर्णबाबु। आमरा आपनार कथाइ बलछिलेम। बसुन।

श्रीश। अबलाकान्तबाबु, आसुन, आपनार सङ्गे अनेक कथा बलबार आछे। (जनान्तिके लइया) आज सभार पुरातन सभ्य तिनटिके आपनारा दुजने लज्जा दियेछेन। ता ठिक हयेछे—पुरातनेर मध्ये प्राणसञ्चार करबार जन्येइ नूतनेर प्रयोजन।

शैलबाला। आबार नूतन चालाकाठे आगुन ज्वालाबार जन्ये पुरातन धराकाठेर दरकार।

एक हो जाने से जितना काम होगा उससे कहीं अधिक काम हमलोगों से आपके पृथक् रहने से होगा; **लोक**—आदमी, व्यक्ति; **गुणेर द्वारा**—रस्सी के द्वारा; **नौकोके......हय**—नौका को आगे बढ़ा देगा उसे नौका से कुछ दूर पर रहना पड़ता है; **आमादेर......आछेन**—हमलोगों की नौका के कर्णधार हैं वे भी हमलोगों से कुछ दूर तथा ऊँचे पर हैं; **आपनाके......हबे**—आपको (अपने) गुणों द्वारा आर्कषित करना होगा इसलिए आपको पृथक् रहना होगा; **आमरा......गेछि**—हमलोग सभी डाँड खेने वालों के दल में बैठ गए हैं।

आपनाकेओ......हय—आप भी कार्यों तथा भावों में इन सभी लोगों से भिन्न प्रतीत होते हैं; **देखेइ**—देख कर ही; **हच्छे**—हो रहा है; **सहाय हबेन**—सहायक होंगे।

अनेक......आछे—बहुत-सी बातें कहने को हैं; **तिनटिके......दियेछे**—तीनों को आप दोनों ने लज्जित कर दिया; **ता......हयेछे**—यह ठीक हुआ है।

चालाकाठे......दरकार—नई जलावन की लकड़ी को जलाने के लिए

श्रीश। आच्छा, से विचार परे हबे। किन्तु आमार सेइ रुमालटि? सेटि हरण करे आमार परकाल खुइयेछि, आबार रुमाल-टिओ खोओयाते पारि ने। (पकेट हइते बाहिर करिया) एइ आमि एक डजन रेशमेर रुमाल एनेछि, एइ बदल करे निते हबे। ए ये तार उचित मूल्य ता बलते पारि ने—तार उपयुक्त मूल्य दिते गेले चीन जापान उजाड़ करे दिते हय।

शैलबाला। मशाय, ए छलनाटुकु बोझबार मतो बुद्धि विधाता आमाके दियेछेन। ए उपहार आमार जन्ये आसेओ नि, याँर रुमाल हरण करेछेन आमाके उपलक्ष करे एगुलि—

श्रीश। अबलाकान्तबाबु, भगवान बुद्धि आपनाके यथेष्ट दियेछेन देखते पाच्छि, किन्तु दयार भागटा किछु येन कम बोध हच्छे—हतभाग्य-के रुमालटि फिरिये दिलेइ सेइ कलङ्कटुकु एकेबारे दूर हय।

शैलबाला। आच्छा, आमि दयार परिचय दिच्छि—किन्तु आपनि सभार जन्य ये प्रबन्ध लिखते प्रतिश्रुत, सेटा लिखे देओया चाइ।

श्रीश। निश्चय देब—रुमालटा फिरे दिलेइ काजे मन दिते

पहले से जलती हुई लकड़ी की ज़रूरत होती है।

परे हबे—बाद में होगा; **परकाल खुइयेछि**—भविष्यत् नष्ट किया है; **आबार......ने**—अब रुमाल नहीं गँवा सकता; **डजन**—दर्जन; **एनेछि**—लाया हूँ; **एइ......हबे**—इससे बदल लेना होगा; **ए......हय**—यह उसका उचित मूल्य है यह नहीं कह सकता, उसका उपयुक्त मूल्य देने चलूँ तो चीन जापान को निःशेष कर डालना पड़ेगा।

मशाय......दियेछेन—महाशय, इस छलना को समझ लेने लायक बुद्धि भगवान ने मुझे दी है; **ए......नि**—यह उपहार मेरे लिए आया भी नहीं; **याँर**—जिनका; **करेछेन**—किया है; **आमाके**—मुझे; **एगुलि**—ये सब।

दियेछेन—दी है; **देखते पाच्छि**—देख पा रहा हूँ; **दयार भागटा**—दया का अंश; **किछु......हच्छे**—मानो कुछ कम मालूम हो रहा है; **हतभाग्यके**—अभागे को; **फिरिये......हय**—लौटा देने पर वह कलंक एकदम दूर हो जाएगा।

दिच्छि—देता हूँ; **सभार जन्य**—सभा के लिए; **ये......चाइ**—जो निबंध लिखने के लिए प्रतिश्रुत हैं वह लिख जाना चाहिए।

निश्चय देब—निश्चय (लिख) दूंगा; **काजे......पारब**—काम में मन

पारब—तखन अन्य सन्धान छेड़े केवल सत्यानुसन्धान करते थाकब।

घरेर अन्यत्र

विपिन। बुझेछेन रसिकबाबु, आमि ताँर गानेर निर्वाचनचातुरी देखे आश्चर्य हये गेछि। गान ये तैरि करेछे तार कवित्व थाकते पारे, किन्तु एइ गानेर निर्वाचने ये कवित्व प्रकाश पेयेछे तार मध्ये भारि एकटु सौकुमार्य आछे।

रसिक। ठिक बलेछेन, निर्वाचनेर क्षमताइ क्षमता। लताय फुल तो आपनि फोटे, किन्तु ये लोक माला गाँथे, नैपुण्य एवं सुरुचि तो तारइ।

विपिन। आपनार ओ गानटा मने आछे?

तरी आमार हठात् डुबे याय
कोन् पाथारे कोन् पाषाणेर घाय।
नवीन तरी नतुन चले,
दिइ नि पाड़ि अगाध जले,
बाहि तारे खेलार छले किनार-किनाराय।
तरी आमार हठात् डुबे याय।
भेसेछिल स्रोतेर भरे
एका छिलेम कर्ण ध'रे
लेगेछिल पालेर 'परे मधुर मृदु बाय।
सुखे छिलेम आपन मने,

लगा सकूँगा; **तखन.......थाकब**—तब फिर बाकी सब खोज छोड़ कर केवल सत्य का अनुसन्धान करता रहूंगा।

हये गेछि—हो गया हूँ; **गान.....पारे**—जिसने गीत तैयार किया है (लिखा है) उसमें कवित्व हो सकता है।

लताय......फोटे—लता में फूल तो अपने आप खिलते हैं; **ये लोक**—जो आदमी; **गाँथे**—गूँथता है; **तारइ**—उसीका।

दिइ.....जले—अगाध जल में नहीं डाला है; **बाहि......किनाराय**—खेल के बहाने उसे किनारे चलाता हूँ; **भेसेछिल**—तिर रही थी; **भरे**—पर; **एका.....ध'रे**—पतवार पकड़े मैं अकेला था; **लेगेछिल**—लगी थी;

मेघ छिल ना गगनकोणे;
लागबे तरी कुसुमवने, छिलेम से आशाय।
तरी आमार हठात् डुबे याय।

रसिक। याक डुबे, की बलेन विपिनबाबु।

विपिन। याक गे, किन्तु कोथाय डुबल तार एकटु ठिकाना राखा चाइ। आच्छा रसिकबाबु, ए गानटा केन तिनि खाताय लिखे राखलेन।

रसिक। स्त्रीहृदयेर रहस्य विधाता बोझेन ना एइ रकम एकटा प्रवाद आछे, रसिकबाबु तो तुच्छ।

श्रीश। (निकटे आसिया) विपिन, तुमि चन्द्रबाबुर काछे एकबार याओ। वास्तविक, आमादेर कर्तव्ये आमरा ढिल दियेछि—ओँर सङ्गे एकटु आलोचना करले उनि खुशि हबेन।

विपिन। आच्छा। [प्रस्थान

श्रीश। हाँ, आपनि सेइ ये सेलाइयेर कथा बलछिलेन—उनि बुझि निजेर हाते समस्त गृहकर्म करेन।

रसिक। समस्तइ।

श्रीश। आपनि बुझि सेदिन गिये देखलेन ताँर कोले बालिशेर ओयाड़गुलो पड़े रयेछे आर तिनि—

रसिक। माथा निचु करे छुँचे सुतो पराच्छिलेन।

बाय—वायु; **छिलेम......आशाय**—इस आशा में था।

याक डुबे—डूब जाय।

डुबल—डूबी; **राखा चाइ**—रखना चाहिए; **केन......राखलेन**—उन्होंने कापी में क्यों लिख रखा है।

बोझेन ना—नहीं समझते।

ढिल दियेछि—ढिलाई की है; **ओँर......हबेन**—उनके साथ थोड़ा विचार-विमर्श करने से वे खुश होंगे।

सेलाइयेर......बलछिलेन—सिलाई की बात कह रहे थे; **उनि**—वे; **करेन**—करती हैं। **समस्तइ**—सभी।

बालिशेर ओयाड़गुलो—तकिये के गिलाफ। **माथा...करे**—सिर झुकाए।

श्रीश। छुँचे सुतो पराच्छिलेन। तखन स्नान करे एसेछेन बुझि ?

रसिक। वेला तखन तिनटे हबे।

श्रीश। वेला तिनटे। तिनि बुझि ताँर खाटेर उपर बसे—

रसिक। ना, खाटे नय, बारान्दार उपर मादुर विछिये—

श्रीश। बारान्दाय मादुर विछिये बसे छुँचे सुतो पराच्छिलेन—

रसिक। हाँ, छुँचे सुतो पराच्छिलेन। (स्वगत) आर तो पारा याय ना।

श्रीश। आमि येन छविर मतो स्पष्ट देखते पाच्छि—पा दुटि छड़ानो, माथा निचु, खोला चुल मुखेर उपर एसे पड़ेछे, विकेलवेलार आलो—

विपिन। (निकटे आसिया) चन्द्रबाबु तोमार सङ्गे तोमार सेइ प्रबन्धटा सम्बन्धे कथा कइते चान। [श्रीशेर प्रस्थान

रसिकबाबु—

रसिक। (स्वगत) आर कत बकव।

अन्य प्रान्ते

निर्मला। (पूर्णेर प्रति) आपनार शरीर आज बुझि तेमन भालो नेइ।

तखन......बुझि—उस समय स्नान करके आईं थीं शायद।

वेला......हबे—उस समय तीन बजा होगा।

ताँर......बसे—अपनी खाट पर बैठ कर।

बारान्दाय......बिछिये—बरामदे में चटाई बिछा कर।

आर......ना—अब और तो नहीं रहा जाता।

आमि.....पाच्छि—मैं मानो चित्र की भाँति स्पष्ट देख पा रहा हूँ; **पा.....छड़ानो**—दोनों पैर फैले हुए; **खोला......पड़ेछे**—खुले बाल मुख पर आ पड़े हैं; **बिकेलवेलार आलो**—तीसरे पहर का प्रकाश।

तोमार......चान—तुमसे तुम्हारे उस निबन्ध के संबंध में बातें करना चाहते हैं।

आर......बकब—और कितनी वकवास करूँ।

पूर्ण। ना, बेश आछे—हाँ, एकटु इये हयेछे बटे विशेष किछु नय—तबु एकटु इये बइ कि—तेमन बेश (काशि) आपनार शरीर बेश भालो आछे ?

निर्मला। हाँ।

पूर्ण। आपनि—जिज्ञासा करछिलुम ये आपनि—आपनि—आपनार इये किरकम बोध हय—ओइ ये—मिल्टनेर आरियोप्याजिटिका—ओटा किना आमादेर एम.ए. कोर्से आछे, ओटा आपनार बेश इये बोध हय ना ?

निर्मला। आमि ओटा पड़ि नि।

पूर्ण। पड़ेन नि ? (निस्तब्ध)।

इये हयेछे—आपनि—एबारे किरकम गरम पड़छे—आमि एकबार रसिकबाबु—रसिकबाबुर सङ्गे आमार एकटु दरकार आछे।

[निर्मलार निकट हइते प्रस्थान

घरेर अन्यत्र

विपिन। रसिकबाबु, आच्छा, आपनार कि मने हय ओ गानटा तिनि विशेष किछु मने करे लिखेछेन।

रसिक। हतेओ पारे। आपनि आमाके सुद्ध धोँका लागिये दिलेन ये। पूर्वे ओटा भाबि नि।

विपिन। तरी आमार हठात् डुबे याय
कोन् पाथारे कोन् पाषाणेर घाय।

आपनार......नेइ—आपका शरीर आज शायद उतना अच्छा नहीं है।

जिज्ञासा करछिलुम—पूछ रहा था।

इये—वो (ऐसा कुछ जो याद नहीं आ रहा है, इस अर्थ में इस अव्यय का प्रयोग होता है)।

किरकम......हय—कैसा लगता है।

आमि......नि—मैंने उसे पढ़ा नहीं है।

हतेओ पारे—हो भी सकता है; **आपनि......ये**—आपने तो मुझ तक को संदेह में डाल दिया; **पूर्वे......नि**—पहले यह नहीं सोचा था।

कोन्—किस; **पाथारे**—समुद्र में; **घाय**—आघात से;

आच्छा रसिकवाबु, एखाने तरी बलते ठिक की बोझाच्छे।

रसिक। हृदय बोझाच्छे तार आर सन्देह नेइ। तबे ओइ पाथारटा कोथाय आर पाषाणटा के सेइटेइ भाबबार विषय।

पूर्ण। (निकटे आसिया) विपिनबाबु, माप करबेन––रसिक-बाबुर सङ्गे आमार एकटि कथा आछे––यदि––

विपिन। बेश, बलुन, आमि याच्छि।

[रसिकेर निकट हइते प्रस्थान

पूर्ण। आमार मतो निर्बोध जगते नेइ रसिकबाबु।

रसिक। आपनार चेये ढेर निर्बोध आछे यारा निजेके बुद्धिमान बले जाने––यथा आमि।

पूर्ण। एकटु निराला पाइ यदि आपनार सङ्गे अनेक कथा आछे, सभा भेङे गेले आज रात्रे एकटु अवसर करते पारेन?

रसिक। बेश कथा।

पूर्ण। आज दिव्य ज्योत्स्ना आछे, गोलदिघिर धारे––की बलेन।

रसिक। (स्वगत) की सर्वनाश।

श्रीश। (निकटे आसिया) ओः, पूर्णबाबु कथा कच्छेन बुझि। आच्छा एखन थाक्। रात्रे आपनार अवसर हबे रसिकबाबु?

रसिक। ता हते पारे।

एखाने......बोझाच्छे––यहाँ तरी (नौका) कहने से ठीक क्या मतलब है।

तार......नेइ––इसमें और सन्देह नहीं; **तबे......विषय**––पर वह समुद्र कहाँ है और पाषाण कौन है यही सोचने की बात है।

आमि याच्छि––मैं जाता हूँ।

आपनार......आमि––आपसे भी अधिक नासमझ लोग हैं जो अपनेको बुद्धिमान समझते हैं, जैसे मैं।

एकटु......यदि––अगर थोड़ा एकान्त पाऊँ।

बेश कथा––अच्छी बात है।

दिव्य ज्योत्स्ना––ग़ज़ब की चांदनी।

कथा......बुझि––बातें कर रहे हैं शायद; **एखन थाक्**––अभी रहने दें।

ता......पारे––सो हो सकता है।

श्रीश। ता हले कालकेर मतो––की बलेन। काल देखलेन तो घरेर चेये पथे जमे भालो।

रसिक। जमे बइ कि। (स्वगत) सर्दि जमे, काशि जमे, गलार स्वर दइयेर मतो जमे याय।

[श्रीशेर प्रस्थान

पूर्ण। आच्छा रसिकबाबु, आपनि हले की बले कथा आरम्भ करतेन।

रसिक। हयतो बलतुम––सेदिन बेलुन उड़ेछिल, आपनादेर बाड़िर छाद थेके देखते पेयेछिलेन कि।

पूर्ण। तिनि यदि बलतेन, हाँ––

रसिक। आमि बलतुम, मनके ओड़बार अधिकार दियेछेन बलेइ ईश्वर मानुषेर शरीरे पाखा देन नि––शरीरके बद्ध रेखे विधाता मनेर आग्रह केवल बाड़िये दियेछेन––

पूर्ण। बुझेछि रसिकबाबु––चमत्कार––एर थेके अनेक कथार सृष्टि हते पारे।

विपिन। (निकटे आसिया) पूर्णबाबुर सङ्गे कथा हच्छे?

ता.....मतो––तो फिर कल की तरह; **की बलेन**––क्या कहते हैं; **काल...... भालो**––कल (आपने) देख तो लिया घर की बजाय रास्ते में अच्छी जमती है।

जमे बइकि––जरूर जमती है; **सर्दि**––जुकाम; **काशि**––खाँसी; **गलार......याय**––गले की आवाज़ दही की भाँति जम जाती है।

आपनि......करतेन––आप होते तो क्या कह कर बात शुरू करते।

हयतो बलतुम––संभवतः कहता; **सेदिन......कि**––उस दिन बैलून उड़ा था आपके घर की छत से दिखाई पड़ा था क्या।

तिनि.....हाँ––अगर वे कहतीं, हाँ।

आमि बलतुम––मैं कहता; **मनके......नि**––मन को उड़ने का अधिकार दिया है इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य के शरीर में पंख नहीं दिए; **रेखे**––रख कर; **मनेर......दियेछेन**––मन का आग्रह और भी बढ़ा दिया है।

एर......पारे––इससे बहुत-सी बातों की सृष्टि हो सकती है।

थाक् तबे, आमादेर सेइ ये एकटा कथा छिल सेटा आज रात्रे हबे, की बलेन।

रसिक। सेइ भालो।

विपिन। ज्योत्स्नाय रास्ताय बेड़ाते बेड़ाते दिव्यि आरामे—की बलेन।

रसिक। खूब आराम। (स्वगत) किन्तु बेयारामटा तार परे।

अन्यत्र

शैलबाला। (निर्मलार प्रति) ता बेश, आपनि यदि इच्छा करेन आमिओ ओइ विषयटार आलोचना करे देखब। डाक्तारि आमि अल्प अल्प चर्चा करेछि—बेशि नय—किन्तु आमि योगदान करले आपनार यदि उत्साह हय आमि प्रस्तुत आछि।

पूर्ण। (निकटे आसिया) सेदिन बेलुन उड़ेछिल आपनि कि छादेर उपर थेके देखते पेयेछिलेन।

निर्मला। बेलुन?

पूर्ण। हाँ, ओइ बेलुन (सकले निरुत्तर)। रसिकबाबु बलछिलेन आपनि बोध हय देखे थाकबेन—आमाके माप करबेन—आपनादेर आलोचनाय आमि भङ्ग दिलुम—आमि अत्यन्त हतभाग्य।

थाक् तबे—तब रहने दें; **आमादेर......हबे**—हमलोगों की वह जो एक बात थी आज रात में होगी।

सेइ भालो—वही अच्छा।

ज्योत्स्नाय....आरामे—चांदनी में सड़क पर टहलते टहलते खूब आराम से।

बेयारामटा......परे—रोग उसके बाद।

आपनि......देखब—आप यदि चाहें तो मैं भी उस विषय में विवेचना कर देखूंगा (देखूंगी); **डाक्तारि**—डाक्टरी; **आमि......करेछि**—मैंने थोड़ी-सी शिक्षा पाई है; **बेशि नय**—अधिक नहीं; **आमि.....करले**—मेरे शामिल होने से।

बलछिलेन—कह रहे थे; **आपनि......थाकबेन**—आपने संभवतः देखा होगा; **आमाके......करबेन**—मुझे माफ करेंगी; **भङ्ग दिलुम**—बाधा दी; **हतभाग्य**—अभागा।

पञ्चम अङ्क

प्रथम दृश्य

अक्षयेर बासा

अक्षय ओ पुरबाला

अक्षय। देवी, यदि अभय दाओ तो एकटि प्रश्न आछे।

पुरबाला। की शुनि।

अक्षय। श्रीअङ्गेर कृशतार तो कोनो लक्षण देखछि ने!

पुरबाला। श्रीअङ्ग तो कृश हबार जन्ये पश्चिमे बेड़ाते याय नि।

अक्षय। तबे कि विरहवेदना बले जिनिसटा महाकवि कालि-दासेर सङ्गे सहमरणे मरेछे।

पुरबाला। तार प्रमाण तुमि। तोमारओ तो स्वास्थ्येर विशेष व्याघात हय नि देखछि।

अक्षय। हते दिल कइ। तोमार तिन भग्नी मिले अहरह आमार कृशता निवारण करे रेखेछिल—विरह ये काके बले सेटा आर कोनो-मतेइ बुझते दिले ना।

बासा—निवासस्थान।

की शुनि—क्या है सुनूँ।

श्रीअङ्गेर......ने—(तुम्हारे) श्रीअंगों की कृशता का तो कोई लक्षण नहीं देख रहा हूँ।

श्रीअङ्ग.....नि—श्रीअंग कृश (दुबला) होने के लिए तो पश्चिम में घूमने गए नहीं थे।

तबे......मरेछे—तब क्या विरह-वेदना नामक वस्तु महाकवि कालिदास के साथ ही सती हो गई।

तार......तुमि—उसके प्रमाण तुम हो; **तोमारओ......देखछि**—तुम्हारे स्वास्थ्य में भी तो विशेष व्याघात हुआ नहीं देखती।

हते......कइ—होने कहाँ दिया; **विरह......ना**—विरह किसे कहते हैं वह किसी प्रकार जानने ही नहीं दिया।

गान

विरहे मरिब बले छिल मने पण।
के तोरा बाहुते बाँधि करिलि वारण।
भेबेछिनु अश्रुजले, डुबिब अकूल-तले
काहार सोनार तरी करिल तारण।

प्रिये, काशीधामे बुझि पञ्चशर त्रिलोचनेर भये एगोते पारेन ना।

पुरबाला। ता हते पारे किन्तु कलकाताय तो ताँर यातायात आछे।

अक्षय। ता आछे—कोम्पानिर शासन तिनि मानेन ना, आमि तार प्रमाण पेयेछि।

[नृपबाला ओ नीरबालार प्रवेश

नीरबाला। दिदि।

अक्षय। एखन दिदि बइ आर कथा नेइ, अकृतज्ञ! दिदि यखन विच्छेद-दहने उत्तरोत्तर तप्तकाञ्चनेर मतो श्री धारण करछिलेन तखन तोमादेर क'टिके सुशीतल करे रेखेछिल के।

नीरबाला। शुनछ दिदि। एमन मिथ्ये कथा! तुमि यतदिन छिले ना आमादेर एकबार डेकेओ जिज्ञासा करेन नि—केवल चिठि लिखेछेन आर टेबिलेर उपर दुइ पा तुले दिये बइ हाते करे पड़ेछेन।

विरह......पण—विरह में मर जाऊंगा ऐसा मन में संकल्प था; **के......वारण**—कौन थीं तुम जिन्होंने बाहुओं में बाँध कर वारण कर दिया; **भेबेछिनु**—सोचा था; **डुबिब**——डुबूंगा; **काहार......तारण**—किसकी सोने की नौका ने तार दिया।

एगोते......ना—आगे नहीं बढ़ पाते।

ता.....आछे—सो हो सकता है, लेकिन कलकत्ते में तो उनका आना-जाना है।

ता......पेयेछि—सो तो है, कम्पनी का शासन वे नहीं मानते उसका प्राण मैंने पाया है।

एखन......नेइ—अब दीदी के अलावा और कोई बात ही नहीं; **तखन......के**—उस समय तुम कइयों को किसने सुशीतल कर रखा था।

शुनछ—सुन रही हो; **डेकेओ......नि**—बुला कर पूछा तक नहीं; **दुइ.....पड़ेछेन**—दोनों पैर रख कर हाथ में किताब लिये पढ़ते रहे; **तुमि......येन**

तुमि एसेछ, एखन आमादेर निये गान हबे, ठाट्टा हबे, देखाबेन येन——

नृपबाला। दिदि, तुमिओ तो भाइ एतदिन आमादेर एकखानिओ चिठि लेख नि।

पुरबाला। आमार कि समय छिल भाइ। माके नियेे दिनरात व्यस्त थाकते हयेछिल।

अक्षय। यदि बलते 'तोदेर भग्नीपतिर ध्याने निमग्न छिलुम' ता हले कि लोके निन्दे करत।

नीरबाला। ता हले भग्नीपतिर आस्पर्धा आरओ बेड़े येत। मुखुज्येमशाय, तुमि तोमार बाइरेर घरे याओ ना। दिदि एतदिन परे एसेछेन, आमरा कि ओँके नियेे एकटु गल्प करते पाब ना।

अक्षय। नृशंसे, विरहदावदग्ध तोर दिदिके आबार विरहे ज्वालाते चास? तोदेर भग्नीपतिरूप घनकृष्ण मेघ मिलनरूप मुषलधारावर्षण-द्वारा प्रियार चित्तरूप लता-निकुञ्जे आनन्दरूप किसलयोद्‌गम करे प्रेमरूप वर्षाय कटाक्षरूप विद्युत्——

नीरबाला। एवं बकुनिरूप भेकेर कलरव——

[शैलबालार प्रवेश

अक्षय। एसो एसो——उत्तमाधममध्यमा एइ तिन श्याली ना हले आमार——

——तुम आगई हो, अब हमलोगों को ले कर गाना होगा, मजाक होगा, ऐसा दिखाएंगे मानो।

तुमिओ.....नि——तुमने भी तो हमें इतने दिन में एक भी चिठ्टी नहीं लिखी।

आमार......छिल——मुझे क्या फुर्सत थी; **माके......हयेछिल**——माँ को ले कर रात दिन व्यस्त रहना पड़ता था।

यदि......करत——अगर कहती 'तुमलोगों के बहनोई के ध्यान में निमग्न थी' तो क्या लोग निन्दा करते।

आस्पर्धा.....येत——स्पर्धा और भी बढ़ जाती; **तुमि......ना**——तुम अपने बाहर वाले कमरे में जाओ न; **दिदि......ना**——दीदी इतने दिनों बाद आई हैं, हमलोगों क्या उन्हें ले कर थोड़ी-सी बातचीत भी नहीं कर पाएंगी।

तोर......चास——अपनी दीदी को फिर विरह में जलाना चाहती है।

बकुनि——बकबक; **भेक**——मेढ़क।

नीरबाला। उत्तममध्यम हय ना।

शैलबाला। (नृप ओ नीरर प्रति) तोरा भाइ एकटु या तो, आमादेर कथा आछे।

अक्षय। कथाटा की बुझते पारछिस तो नीरु? हरिनाम-कथा नय।

नीरबाला। आच्छा, तोमार आर बकते हबे ना।

[नृप ओ नीरर प्रस्थान

शैलबाला। दिदि, नृप-नीरर जन्ये मा दुटि पात्र ता हले स्थिर करेछेन?

पुरबाला। हाँ, कथा एकरकम ठिक हये गेछे। शुनेछि छेले दुटि मन्द नय--तारा मेये पछन्द करलेइ पाकापाकि हये याबे।

शैलबाला। यदि पछन्द ना करे?

पुरबाला। ता हले तादेर अदृष्ट मन्द।

अक्षय। एवं आमार श्याली दुटिर अदृष्ट भालो।

शैलबाला। नृप नीरु यदि पछन्द ना करे?

अक्षय। ता हले ओदेर रुचिर प्रशंसा करब।

पुरबाला। पछन्द आबार ना करबे की? तोदेर सब बाड़ा-

उत्तममध्यम—विलक्षण प्रहार; **हय ना**—नहीं होता।

एकटु......आछे—ज़रा जा तो, हमें बातें करनी हैं।

कथाटा......नीरु—बात क्या है समझ तो रही है नीरु; **नय**—नहीं।

आच्छा.....ना—अच्छा, तुम्हें और बकबक नहीं करनी होगी।

नृप......करेछेन—तो नृप और नीर के लिए माँ ने दो पात्र ठीक किए हैं।

हाँ......गेछे—हाँ, बात एक तरह से ठीक हो गई है; **शुनेछि......नय**—सुना है लड़के बुरे नहीं है; **तारा......याबे**—उनके लड़की पसन्द करते ही बात पक्की हो जाएंगी। **यदि......करे**—अगर पसन्द न करें।

ता......मन्द—तो फिर उनका भाग्य ख़राब है।

एवं......भालो—और मेरी दोनों सालियों का भाग्य अच्छा है।

ओदेर—उनकी; **करब**—करूंगा।

पछन्द......की—पसन्द न करेगी का क्या मतलब; **तोदेर......बाड़ाबाड़ि**—

बाड़ि, स्वयंवरार दिन गेछे। मेयेदेर पछन्द करबार दरकार हय ना—स्वामी हलेइ ताके भालोबासते पारे।

अक्षय। नइले तोमार वर्तमान भग्नीपतिर की दुर्दशाइ हत शैल !

[जगत्तारिणीर प्रवेश

जगत्तारिणी। बाबा अक्षय, छेले दुटिके ता हले तो खबर दिते हय। तारा तो आमादेर बाड़िर ठिकाना जाने ना।

अक्षय। बेश तो मा, रसिकदादाके पाठिये देओया याक।

जगत्तारिणी। पोड़ा कपाल। तोमार रसिकदादार येरकम बुद्धि। तिनि काके आनते काके आनबेन ठिक नेइ।

पुरबाला। ता मा, तुमि किछु भेब ना। छेले दुटिके आनबार व्यवस्था करे देब।

जगत्तारिणी। मा पुरी, तुइ एकटु मनोयोग ना करले हबे ना। आजकालकार छेले, तादेर सङ्गे की रकम व्याभार करते हय ना-हय आमि किछुइ बुझि ने।

तुमलोगों की ज्यादती है; **दिन गेछे**—दिन गए; **मेयेदेर......ना**—लड़कियों को पसंद करने की ज़रूरत नहीं होती; **स्वामी......पारे**——स्वामी होते ही उसे प्यार कर सकती है।

नइले—नहीं तो; **की......हत**—न जाने कैसी दुर्दशा होती।

छेले.....हय—तो फिर दोनों लड़कों को खबर देनी होगी; **तारा...... ना**—वे तो हमलोगों के मकान का पता नहीं जानते।

पाठिये......याक—भेज दिया जाय।

पोड़ा—जला हुआ; **पोड़ा कपाल**—दुर्भाग्य; **येरकम**—जैसी; **तिनि ......नेइ**—वे किसकी जगह किसको ले आएँ कुछ ठीक नहीं।

किछु......ना—कुछ चिन्ता न करो; **छेले......देब**—दोनों लड़कों को बुला लाने की व्यवस्था कर दूंगी।

मा पुरी—बेटी पुरी (पुरबाला); **तुइ......ना**—तुम थोड़ा ध्यान न देगी तो नहीं होगा; **आजकालकार......ने**—आजकल के लड़के, उनके साथ कैसा व्यवहार करना होता है, कैसा नहीं करना होता है मैं कुछ भी नहीं समझती।

अक्षय। (जनान्तिके) पुरीर हातयश आछे। पुरी ताँर मार जन्ये ये जामाइटि जुटियेछेन, पसार खुब बेड़े गेछे। आजकालकार छेले की करे वश करते हय से विद्ये––

पुरबाला। (जनान्तिके) मशाय बुझि आजकालकार छेले।

जगत्तारिणी। मा, तोमरा परामर्श करो, कायेत्‌दिदि एसे बसे आछेन, आमि ताँके विदाय करे आसि।

शैलबाला। मा, तुमि एकटु विवेचना करे देखो––छेले दुटिके एखनओ तोमरा केउ देख नि, हठात्––

जगत्तारिणी। विवेचना करते करते आमार जन्म शेष हये एल, आर विवेचना करते पारि ने––

अक्षय। विवेचना समयमत एर पर करलेइ हबे, एखन काजटा आगे हये याक।

जगत्तारिणी। बलो तो बाबा, शैलके बुझिये बलो तो।

[प्रस्थान

पुरबाला। मिथ्ये तुइ भाबछिस शैल––मा यखन मनस्थिर

हात......आछे––हाथ में यश है; **ताँर......गेछे**––अपनी माँ के लिए जो दामाद जुटाया है उससे सम्मान खूब बढ़ गया है; **की......विद्ये**––कैसे वश में किया जाता है वह विद्या।

मशाय......छेले––श्रीमान शायद आजकल के लड़के हैं।

कायेत्‌दिदि––कायस्थ दीदी; **एसे......आछेन**––आ कर बैठी हैं; **आमि ......आसि**––मैं उन्हें विदा कर आऊँ।

मा......देखो––माँ, तुम जरा सोच कर देखो; **छेले......नि**––दोनों लड़कों को अभी तुममें से किसी ने देखा भी नहीं है।

विवेचना......ने––विचारते-विचारते मेरा तो जीवन समाप्त होने को आया, और विचार नहीं कर पाऊंगी।

समयमत......हबे––बाद में समयानुसार कर लेने से ही हो जाएगा; **एखन......याक**––अभी पहले काम हो जाय।

बुझिये......तो––समझा कर बताओ तो।

मिथ्ये......शैल––तू व्यर्थ चिन्ता कर रही है शैल; **मा......ना**––माँ ने

करेछेन ओँके आर केउ टलाते पारबे ना। प्रजापतिर निर्बन्ध आमि मानि भाइ। यार सङ्गे यार हबार, हाजार विवेचना करे मलेओ, से हबेइ।

अक्षय। से तो ठिक कथा—नइले यार सङ्गे यार हये थाके तार सङ्गे ना हये आर एकजनेर सङ्गे हत।

पुरबाला। की ये तर्क कर तोमार अर्धेक कथा बोझाइ याय ना।

अक्षय। तार कारण आमि निर्बोध।

पुरबाला। याओ, एखन स्नान करते याओ, माथा ठाण्डा करे एसो गे।

[प्रस्थान। रसिकेर प्रवेश

शैलबाला। रसिकदादा, शुनेछ तो सब। मुशकिले पड़ा गेछे।

रसिक। मुशकिल किसेर। कुमार-सभारओ कौमार्य रये गेल, नृप-नीर ओ पार पेले, सब दिक रक्षा हल।

शैलबाला। कोनो दिक रक्षा हय नि।

रसिक। अन्तत एइ बुड़ोर दिकटा रक्षा हयेछे—दुटो अर्वाचीनेर

जब तय कर लिया है, तो उन्हें कोई नहीं डिगा सकता; **प्रजापतिर......भाइ**—मैं तो ब्रह्मा का विधान मानती हूँ भाई; **यार......हबेइ**—जिसके साथ जिसका (संबध) होना होता है हजार सोच कर मरने पर भी वह हो कर रहेगा।

नइले......हत—नहीं तो जिसके साथ जिसका संबंध होता उसके साथ न हो कर और किसी के साथ होता।

की......ना—न जाने क्या तर्क करते हो, तुम्हारी आधी बात भी समझ में नहीं आती।

निर्बोध—मूर्ख।

याओ......गे—जाओ, अब स्नान करने जाओ, दिमाग ठंडा कर आओ।

शुनेछ......सब—सब सुन लिया है न। **मुशकिले.....गेछे**—मुश्किल में पड़ गए हैं।

मुशकिल किसेर—मुश्किल कैसी; **कुमार-सभारओ......हल**—कुमार-सभा का कौमार्य भी रह गया, नृप और नीर भी पार हो गईं, सब तरफ रक्षा हुई।

कोनो.....नि—किसी भी ओर रक्षा नहीं हुई।

अन्तत......हयेछे—कम से कम इस बूढ़े की तरफ (बूढ़े की) रक्षा हुई है;

सङ्गे मिशे आमाके रात्रे रास्ताय दाँड़िये श्लोक आओड़ाते हबे ना।

शैलबाला। मुखुज्येमशाय, तुमि ना हले रसिकदादाके केउ शासन करते पारे ना—उनि आमादेर कथा मानेन ना।

अक्षय। ये-वयसे तोमादेर कथा वेदवाक्य बले मानतेन, से-वयस पेरियेछे किना, ताइ लोकटा विद्रोह करते साहस करछे। आच्छा, आमि ठिक करे दिच्छि। चलो तो रसिकदा, आमार बाइरेर घरटाते बसे तामाक निये पड़ा याक।

द्वितीय दृश्य

विपिनेर बासा

विपिन ओ गुरुदास

तानपुरा हस्ते विपिन अत्यन्त बेसुरो गलाय सा रे गा मा साधितेछेन

विपिन। भाइ गुरुदास, तुमि तो ओस्ताद मानुष, आमार एइ उपकारटि तोमार करे दितेइ हबे। एइ खातार सब गानगुलिइ तोमाके सुर बसिये दिते हबे। येटा गाइले ओटा खासा हयेछे। यदि कष्ट ना हय तो आर एकबार—आगे ओइ गानेर कथा देखेइ मजे

दुटि......ना—दो नौजवानों के साथ मिल कर रात में सड़क पर खड़े हो कर श्लोकों की आवृत्ति नहीं करनी होगी।

तुमि......हले—तुम्हारे बिना; केउ......ना—कोई नियन्त्रण नहीं कर पाता; उनि......ना—वे हमलोगों की बात नहीं मानते।

ये......करछे—जिस उम्र में तुमलोगों की वात वेदवाक्य समझ कर मान लेते वह उम्र पार हो गई है न, इसीलिए (यह) आदमी विद्रोह करने का साहस करता है; आमि......दिच्छि—मैं ठीक किए देता हूँ; आमार......याक—मेरे बाहर के कमरे में बैठ कर हुक्का ले कर जमा जाय।

बेसुरो गलाय—बेसुरे गले से।

आमार......हबे—मेरा यह उपकार तुम्हें करना ही पड़ेगा; सब......हबे—तुम्हें सभी गीत सुरों में बाँध देने होंगे; येटा......हयेछे—जो अभी (तुम) गा रहे थे वह बढ़िया बैठा है; ना हय—न हो तो; आर—फिर; कथा—शब्द; देखेइ—देख कर ही; मजे गियेछिलुम—डूब गया था;

गियेछिलुम, एखन देखि कथाटि मानस-सरोवरेर पद्म, आर तार उपरे गानटि बसेछे येन वीणापाणि स्वयं। भाइ आर-एकबार—

गुरुदास। गान

तोमाय चेये आछि बसे पथेर धारे सुन्दर हे।
जमल धुला प्राणेर वीणार तारे तारे सुन्दर हे।
नाइ ये कुसुम, माला गाँथब किसे कान्नारइ गान वीणाय एनेछि से,
दूर हते ताइ शुनते पाबे अन्धकारे सुन्दर हे।
दिनेर परे दिन केटे याय सुन्दर हे।
मरे हृदय कोन् पिपासाय, सुन्दर हे।
शून्य घाटे आमि की ये करि, रङिन पाले कबे आसबे तरी—
पाड़ि देब कबे सुधारसेर पारावारे सुन्दर हे।

[भृत्येर प्रवेश

भृत्य। एकटि बाबु एसेछेन।
विपिन। बाबु? की रकम बाबु रे।
भृत्य। बुड़ो लोकटि।
विपिन। माथाय टाक आछे?
भृत्य। आछे।
विपिन। (तानपुरा राखिया) निये आय, एखनइ निये आय।

एखन देखि—अब देखता हूँ।

तोमाय......धारे—पथ के किनारे तुम्हारे लिए टकटकी लगाए बैठा हूँ; **जमल......तारे**—प्राणों की वीणा के तार-तार में धूल जम गई है; **नाइ...... किसे**—फूल नहीं हैं, माला कैसे गूथूंगा; **कान्नारइ**—क्रन्दन का ही; **वीणाय**—वीणा में; **एनेछि**—लाया हूँ; **दूर......अन्धकारे**—तुम उसी को दूर से अन्धकार में सुन पाओगे; **मरे......पिपासाय**—हृदय किस प्यास में मरा जा रहा है; **करि**—करूँ; **रङिन......तरी**—रंगीन पाल की नौका कब आएगी; **पाड़ि देब**—डाल दूंगा।

एकटि......एसेछेन—कोई बाबू आए हैं।

बुड़ो लोकटि—बूढ़े आदमी हैं।

माथाय......आछे—सिर गंजा है।

निये आय—ले आ; **एखनइ**—अभी;

ओरे तामाक दिये या। बेहाराटा कोथाय गेल, पाखा टानते बले दे। आर देख्, चट करे गोटाकतक मिठे पानेर दोना किने आन् तो रे। देरि करिस ने, आर आधसेर बरफ निये आसिस, बुझेछिस?

[भृत्येर प्रस्थान

(पदशब्द शुनिया) रसिकबाबु, आसुन।

[वनमालीर प्रवेश

विपिन। रसिकबाबु—ए ये सेइ वनमाली!

वृद्ध। आज्ञे हाँ, आमार नाम श्रीवनमाली भट्टाचार्य।

विपिन। से परिचय अनावश्यक। आमि एकटु विशेष काजे आछि।

वनमाली। मेयेदुटिके आर राखा याय ना—पात्रओ अनेक आसछे—

विपिन। शुने खुशि हलेम—दिये फेलुन, दिये फेलुन—

वनमाली। किन्तु आपनादेरइ ठिक उपयुक्त हत—

विपिन। देखुन वनमालीबाबु, एखनओ आपनि आमार सम्पूर्ण परिचय पान नि—यदि एकबार पान ता हले आमार उपयुक्तता सम्बन्धे आपनार भयानक सन्देह हबे।

वनमाली। ता हले आमि उठि, आपनि व्यस्त आछेन, आर-एक समय आसब।

दिये या—दे जा; **बेहाराटा......दे**—बेयरा कहाँ गया, पंखा खींचने को कह दे; **चट करे**—चट-से; **गोटाकतक......तो**—कुछ मीठे पान के दोने खरीद ला; **देरि......ने**—देर न कर; **निये आसिस**—ले आ; **बुझेछिस**—समझा।

आसुन—आइए। **ए......सेइ**—यह तो वही। **आज्ञे हाँ**—जी हाँ। **मेयेदुटिके......आसछे**—उन दोनों लड़कियों को अब और नहीं रखा जा सकता, पात्र भी बहुत-से आ रहे हैं।

शुने......हलेम—सुन कर खुश हुआ; **दिये फेलुन**—दे डालिए। **किन्तु......हत**—लेकिन असल में आपलोगों के ही उपयुक्त होतीं। **देखुन**—देखिए; **एखनओ**—अभी तक; **पान नि**—नहीं पाया है।

विपिन। (तानपुरा तुलिया लइया) सारेगा रेगामा गामापा
[श्रीशेर प्रवेश

श्रीश। की हे, विपिन, ए की। कुस्ति छेड़े दिये गान धरेछ? गुरुदास ये!

विपिन। ओस्तादजि, आज छुटि। की करब बलो, गान ना शिखले तो आर तोमार संन्यासीदले आमल पाओया याबे ना। गुरुदासके गुरु मेनेछि—ओर काछे नवीन संन्यास-व्रतेर दीक्षा निच्छि।

श्रीश। से किरकम।

विपिन। रस भरे उठले तबेइ तो त्याग सहज हय। मेघ यखन जले भारी हय तखनइ जल वर्षण करे।

श्रीश। राखो तोमार नतुन फिलसफि, कुमार-सभार सेइ लेखाटाय हात दिते पेरेछ?

विपिन। ना भाइ, सेटाते एखनओ हात दिते पारि नि। तोमार लेखाटि हये गेछे नाकि।

श्रीश। ना, आमिओ हात दिइ नि। (कियत्क्षण चुप करिया थाकिया) ना भाइ भारि अन्याय हच्छे। क्रमेइ आमरा आमादेर संकल्प थेके येन दूरे चले याच्छि।

विपिन। अनेक संकल्प ब्याङाचिर लेजेर मतो, परिणतिर सङ्गे सङ्गे आपनि अन्तर्धान करे। किन्तु यदि लेजटुकुइ थेके येत, आर

ए की—यह क्या; **कुस्ति.....धरेछ**—कुश्ती छोड़ कर गान शुरू कर दिया है।

छुटि—छुट्टी; **की......बलो**—क्या करूँ बताओ; **ना शिखले**—न सीखने पर (सीखे बिना); **आमल......ना**—प्रश्रय नहीं मिलेगा; **मेनेछि**—माना है; **निच्छि**—ले रहा हूँ।

राखो......फिसलफि—रहने दो अपनी नई फिलासफी; **कुमार-सभार...... पेरेछ**—कुमार-सभा के उस लेख में हाथ लगा पाए हो।

सेटाते—उसमें; **एखनओ**—अभी तक; **तोमार......नाकि**—तुम्हारा लेख हो गया है क्या।

ना.....नि—नहीं, मैंने भी हाथ नहीं लगाया; **हच्छे**—हो रहा है; **क्रमेइ**—क्रमशः; **थेके**—से; **येन......याच्छि**—मानो दूर चले जा रहे हैं।

ब्याङाचिर......मतो—मेढ़की की पूँछ की भाँति; **यदि......येत**—यदि

ब्याङ्टा येत शुकिये, से किरकम हत। एकसमये एकटा संकल्प करेछिलेम बलेइ ये सेइ संकल्पेर खातिरे निजेके शुकिये मारते हबे आमि तो तार माने बुझि ने।

श्रीश। आमि बुझि। अनेक संकल्प आछे यार काछे निजेके शुकिये माराओ श्रेय। अफला गाछेर मतो आमादेर डाले पालाय प्रतिदिन येन अतिरिक्त परिमाण रससञ्चार हच्छे एवं सफलतार आशा प्रतिदिन येन दूर हये याच्छे। आमि भुल करेछिलुम भाइ विपिन—सब बड़ो काजेइ तपस्या चाइ, निजेके नाना भोग थेके वञ्चित ना करले, नाना दिक थेके प्रत्याहार करे ना आनते पारले, चित्तके कोनो महत् काजे सम्पूर्णभावे नियुक्त करा याय ना—एबार थेके रसचर्चा एकेबारे परित्याग करे कठिन काजे हात देब—एइरकम प्रतिज्ञा करेछि।

विपिन। तोमार कथा मानि। किन्तु, सब तृणेइ तो धान फले ना—शुकोते गेले केवल नाहक शुकिये मराइ हबे, फल फलबे ना। किछुदिन थेके आमार मने हच्छे आमरा ये संकल्प ग्रहण करेछि से संकल्प आमादेर द्वारा सफल हबे ना—अतएव आमादेर स्वभावसाध्य अन्य कोनोरकम पथ अवलम्बन कराइ श्रेय।

श्रीश। ए कोनो काजेर कथा नय। विपिन तोमार तम्बुरा फेलो—

सिर्फ पूँछ रह जाती; **आर......हत**—और मेढ़क सूख जाता, तो कैसा होता; **एकसमये......ने**—किसी समय एक संकल्प किया था इसीलिए उस संकल्प के लिए अपने आपको सुखा कर मार डालना होगा, मैं तो इसका अर्थ नहीं समझता।

आमि बुझि—मैं समझता हूँ; **अनेक......श्रेय**—बहुत-से संकल्प हैं, जिनके लिए अपनेको सुखा मारना भी श्रेय है; **अफला......मतो**—न फलने वाले वृक्ष की भाँति; **डाले पालाय**—शाखा-प्रशाखाओं में; **येन......याच्छे**—मानो दूर होती जा रही है; **आमि......करेछिलुम**—मैंने भूल की थी; **चाइ**—चाहिए; **ना......पारले**—न ला सकने पर।

मानि—मानता हूँ; **शुकोते......ना**—सूखने चले तो व्यर्थ ही सूख कर मरना होगा, फल नहीं फलेगा; **कराइ**—करना ही।

ए......नय—यह कोई काम की बात नहीं; **तम्बुरा फेलो**—तम्बूरा पटको।

विपिन। आच्छा, फेललुम, ताते पृथिवीर कोनो क्षति हबे ना।

श्रीश। चन्द्रबाबुर बासाय आमादेर सभा तुले निये याओया याक––

विपिन। उत्तम कथा।

श्रीश। आमरा दुजने मिले रसिकबाबुके एकटु संयत करे राखब।

विपिन। तिनि एकला आमादेर दुजनके असंयत करे ना तोलेन।

गुरुदास। संयमचर्चा यदि आरम्भ करेन ता हले आमाके आर दरकार नेइ।

विपिन। दरकार आरओ बेशि। रौद्र यत प्रखर हबे, जलेर प्रयोजन ततइ बाड़बे। एइ दुःसमये तुमि आमाके त्याग कोरो ना––सकाल-सन्ध्याय येन दर्शन पाइ। सेइ गानटा यदि एर मध्ये तैरि हये याय तो आज सन्धेवेलाय––की बल?

गुरुदास। आच्छा याइ तबे।

[प्रस्थान। भृत्येर प्रवेश

भृत्य। एकटि बुड़ो बाबु एसेछेन।

विपिन। बुड़ो बाबु? ज्वालाले देखछि। वनमाली आबार एसेछे।

श्रीश। वनमाली? से ये एइ खानिकक्षण हल आमार काछेओ एसेछिल।

फेललुम––पटक दिया; **ताते......ना**––उससे पृथ्वी (संसार) का कोई नुकसान नहीं होगा।

बासाय––वासस्थान पर; **तुले......याक**––उठा ले जायी जाय।

आरओ बेशि––और भी अधिक है; **ततइ बाड़बे**––उतना ही बढ़ेगा; **आमाके**––मुझे।

एकटि......एसेछेन––कोई बूढ़े बाबू आए हैं।

ज्वालाले देखछि––मार डाला, देखता हूँ; **आबार एसेछे**––फिर आया है।

से......एसेछिल––वह तो कुछ देर हुई मेरे पास भी आया था।

विपिन। ओरे, बुड़ोके विदाय करे दे।

श्रीश। तुमि विदाय करले आबार आमार घाड़ेर उपर गिये पड़बे। तार चेये डेके आनुक, आमरा दुजने मिले विदाय करे दिइ। (भृत्येर प्रति) बुड़ोके निये आय।

[भृत्येर प्रस्थान। रसिकेर प्रवेश

विपिन। ए की। ए तो वनमाली नय, ए ये रसिकबाबु।

रसिक। आज्ञे हाँ—आपनादेर आश्चर्य चेनबार शक्ति—आमि वनमाली नइ। 'धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली'—

श्रीश। ना रसिकबाबु, ओ-सब नय, रसालाप आमरा बन्ध करे दियेछि।

रसिक। आः, बाँचियेछेन।

श्रीश। अन्य सकल प्रकार आलोचना परित्याग करे एखन थेके आमरा एकान्तमने कुमार-सभार काजे लागब।

रसकि। आमारओ सेइ इच्छे।

श्रीश। वनमाली बले एकजन बुड़ो, कुमारटुलिर नीलमाधव चौधुरीर दुइ कन्यार सङ्गे आमादेर विवाहेर प्रस्ताव निये उपस्थित हयेछिल, आमरा ताके संक्षेपे विदाय करे दियेछि—ए-सकल प्रसङ्गओ आमादेर काछे असंगत बोध हय।

रसिक। आमार काछेओ ठिक ताइ। वनमाली यदि दुइ वा

बुड़ोके......दे—बूढ़े को विदा कर दे।

तुमि......पड़बे—तुम्हारे विदा करने पर वह फिर मेरे सर पर सवार हो जाएगा; **तार......आनुक**—उससे तो अच्छा है, बुला लाए; **आमरा......दिइ**—हम दोनों मिल कर उसे विदा कर दें; **बुड़ोके......आय**—बूढ़े को ले आ।

आपनादेर......शक्ति—आपलोगों में पहचानने की अद्भुत शक्ति है।

ओ......दियेछि—वह-सब नहीं, हमलोगों ने रसालाप बन्द कर दिया है।

बाँचियेछेन—बचा दिया।

आमारओ......इच्छे—मेरी भी वही इच्छा है।

ततोधिक कन्यार विवाहेर प्रस्ताव निये आमार काछे उपस्थित हतेन तबे बोध हय ताँके निष्फल हये फिरते हत।

विपिन। रसिकबाबु, किछु जलयोग करे येते हबे।

रसिक। ना मशाय, आज थाक्। आपनादेर सङ्गे दुटो-एकटा विशेष कथा छिल, किन्तु कठिन प्रतिज्ञार कथा शुने साहस हच्छे ना।

विपिन। (साग्रहे) ना ना, ताइ बले कथा थाकले बलबेन ना केन।

श्रीश। आमादेर यतटा ठाओराच्छेन ततटा भयंकर नइ। कथाटा कि विशेष करे आमार सङ्गे।

विपिन। ना, सेदिन ये रसिकबाबु बलछिलेन आमारइ सङ्गे ओँर दुटो-एकटा आलोचनार विषय आछे।

रसिक। काज नेइ, थाक्।

श्रीश। बलेन तो आज रात्रे गोलदिघिर धारे—

रसिक। ना श्रीशबाबु, माप करबेन।

श्रीश। विपिन भाइ, तुमि एकटु ओ-घरे याओ ना, बोध हय तोमार साक्षाते रसिकबाबु—

रसिक। ना ना, दरकार की—

ततोधिक—उससे भी अधिक; **हतेन**—होते; **फिरते हत**—लौटना पड़ता।

किछु......हबे—कुछ जलपान करके जाना होगा।

आज थाक्—आज रहने दें।

ना......ना—नहीं नहीं, इसीलिए क्या बात रहने पर भी बात नहीं करेंगे।

आमादेर......नइ—हमलोगों को जितना ठहरा रहे हैं हम उतने भयंकर नहीं हैं; **कथाटा......सङ्गे**—बात क्या विशेष रूप से मुझसे (करनी) है।

सेदिन—उस दिन; **बलछिलेन**—कह रहे थे; **आमारइ......आछे**—मेरे ही साथ उन्हें एक-दो विषयों पर बातचीत करनी है।

काज......थाक्—जरूरत नहीं, रहने दीजिए।

बलेन—कहें; **धारे**—किनारे।

तुमि......ना—तुम जरा उस घर में जाओ न; **बोध......साक्षाते**—लगता है तुम्हारे सामने।

विपिन। तार चेये रसिकबाबु, तेतालार घरे चलुन—श्रीश एखाने एकटु अपेक्षा करबेन एखन।

रसिक। ना, आपनारा दुजनेइ बसुन, आमि उठि।

विपिन। से कि हय। किछु खेये येते हबे।

श्रीश। ना, आपनाके किछुतेइ छाड़छि ने। से हबे ना।

रसिक। तबे कथाटा बलि। नृपबाला नीरबालार कथा तो पुर्वेइ आपनारा शुनेछेन—

श्रीश। शुनेछि बइकि—ता नृपबालार सम्बन्धे यदि किछु—

विपिन। नीरबालार कोनो विशेष संवाद—

रसकि। ताँदेर दुजनेर सम्बन्धे विशेष चिन्तार कारण हये पड़ेछे।

उभये। असुख नय तो?

रसिक। तार चेये बेशि। ताँदेर विवाहेर सम्बन्ध—

श्रीश। बलेन की रसिकबाबु। विवाहेर तो कोनो कथा शोना याय नि—

रसिक। किच्छु ना—हठात् मा काशी थेके एसे दुटो अकाल-कुष्माण्डेर सङ्गे मेये दुटिर विवाह स्थिर करेछेन—

तेतालार......चलुन—तीन तल्ले के कमरे में चलिए; **श्रीश......एखन**—श्रीश अभी यहाँ थोड़ी प्रतीक्षा करेंगे।

ना......उठि—नहीं, आप दोनों बैठें, मैं उठता हूँ।

से......हय—यह कैसे होगा; **किछु......हबे**—कुछ खा कर जाना होगा।

ना......ने—नहीं, आपको किसी भी तरह नहीं छोड़ूंगा; **से......ना**—यह नहीं होगा। **तबे......बलि**—तो फिर बात कहूँ।

ताँदेर......पड़ेछे—उन दोनों के ही सम्बन्ध में विशेष चिन्ता का कारण आ पड़ा है। **असुख......तो**—बीमारी तो नहीं है।

तार......बेशि—उससे भी बढ़ कर; **ताँदेर**—उन लोगों का।

कोनो—कोई; **शोना......नि**—सुनी नहीं गई।

किच्छु ना—कुछ नहीं; **थेके**—से; **एसे**—आ कर; **मेये दुटिर**—दोनों लड़कियों का।

विपिन। ए तो किछुतेइ हते पारे ना रसिकबाबु।

रसिक। मशाय, पृथिवीते येटा अप्रिय सेइटेरइ सम्भावना बेशि। फुलगाछेर चेये आगाछाइ बेशि सम्भवपर।

विपिन। किन्तु मशाय, आगाछा उत्पाटन करते हबे—

श्रीश। फुलगाछ रोपण करते हबे—

रसिक। ता तो बटेइ, किन्तु करे के मशाय।

श्रीश। आमरा करब। की बल विपिन।

विपिन। निश्चयइ।

रसिक। किन्तु, की करबेन।

विपिन। यदि बलेन तो सेइ छेले दुटोके पथेर मध्ये—

रसिक। बुझेछि, सेटा मने करलेओ शरीर पुलकित हय। किन्तु विधातार वरे अपात्र जिनिसटा अमर—दुटो गेले आबार दशटा आसबे।

विपिन। एदेर दुटोके यदि छले बले किछुदिन ठेकिये राखते पारि ता हले भाबबार समय पाओया याबे।

रसिक। भाबबार समय संकीर्ण हये एसेछे। एइ शुक्रबारे तारा मेये देखते आसबे।

विपिन। एइ शुक्रबारे?

श्रीश। से तो परशु।

ए......ना—यह तो किसी भी तरह नहीं हो सकता।

येटा—जो; **सेइटेरइ**—उसी की; **आगाछाइ**—व्यर्थ के पौधे ही।

उत्पाटन......हबे—उखाड़ना होगा।

ता......मशाय—सो तो होगा ही, किन्तु करेगा कौन महाशय।

आमरा करब—हमलोग करेंगे। **की करबेन**—क्या करेंगे।

सेटा......करलेओ—वह मन में लाने पर भी (उसका ध्यान करते ही); **दुटो......आसबे**—दो के जाने पर फिर दस आएंगे।

एदेर दुटोके—इन दोनों को; **किछुदिन......याबे**—कुछ दिन अटकाए रख सकें तो सोचने का समय मिल जाएंगा।

एइ......आसबे—इसी शुक्रवार को वे लड़की देखने आएंगे।

परशु—परसों।

रसिक। आज्ञे पर्शुइ तो बटे। शुक्रवारके तो पथेर मध्ये ठेकिये राखा याय ना।

श्रीश। आच्छा आमार एकटा प्ल्यान माथाय एसेछे।

रसिक। कि रकम शुनि।

श्रीश। सेइ छेलेदुटोके बाड़िर केउ चेने?

रसिक। केउ ना।

श्रीश। तारा बाड़ि चेने?

रसिक। ताओ ना।

श्रीश। ता हले विपिन यदि सेदिन तादेर कोनोरकम करे आटके राखते पारे तो आमि तादेर नाम निये नृपबालाके—

विपिन। जानइ तो भाइ, आमार कोनोरकम कौशल माथाय आसे ना। तुमि इच्छे करले कौशले छेलेदुटोके भुलिये राखते पारबे—आमि वरञ्च निजेके तादेर नामे चालिये दिये नीरबालाके—

रसिक। किन्तु मशाय, ए स्थले तो गौरवे बहुवचन खाटबे ना। दुटि छेले आसबार कथा आछे, आपनादेर एक जनके दुजन बले चालानो आमार पक्षे कठिन हबे—

श्रीश। ओ, ता बटे।

विपिन। हाँ, से-कथा भुलेछिलेम।

शुक्रवारके......ना—शुक्रवार को तो रास्ते में अटकाया नहीं जा सकता। **प्ल्यान**—प्लान (plan); **माथाय एसेछे**—दिमाग में आया है। **बाड़िर......चेने**—घर का कोई पहचानता है। **केउ ना**—कोई नहीं। **तारा......चेने**—वे (दोनों) मकान पहचानते हैं। **ताओ ना**—सो भी नहीं।

आटके......पारे—अटका कर रख सके; **आमि......निये**—मैं उनलोगों का नाम ले कर।

जानइ तो—तुम तो जानते ही हो; **भुलिये**—भुला कर; **चालिये**—चला कर। **ए......ना**—इस स्थान पर 'गौरवे बहुवचन' लागू नहीं होगा; **दुटि...... आछे**—दो लड़कों के आने की बात है; **आपनादेर......हबे**—आपमें से एक को दो कह कर चलाना मेरे लिए कठिन होगा।

ता बटे—सो तो है। **से......भुलेछिलेम**—यह बात भूल गया था।

श्रीश। ता हले तो आमादेर दुजनकेइ येते हय। किन्तु—

रसिक। से-दुटोके भुल रास्ताय चालान करे दिते आमिइ पारब। किन्तु आपनारा—

विपिन। आमादेर जन्ये भावबेन ना रसिकबाबु।

श्रीश। आमरा सब-तातेइ प्रस्तुत आछि।

रसिक। आपनारा महत् लोक—-ए-रकम त्यागस्वीकार—-

श्रीश। विलक्षण। एर मध्ये त्यागस्वीकार किछुइ नेइ।

विपिन। ए तो आनन्देर कथा।

रसिक। ना ना, तबु तो मने आशङ्का हते पारे ये, की जानि निजेर फाँदे यदि निजेइ पड़ते हय।

श्रीश। किछु ना मशाय, कोनो आशङ्काय डराइ ने।

विपिन। आमादेर याइ घटुक तातेइ आमरा सुखी हब।

रसिक। ए तो आपनादेर महत्त्वेर कथा, किन्तु आमार कर्तव्य आपनादेर रक्षा करा। आमि आपनादेर कथा दिच्छि, एइ शुक्रवारेर दिनटा आपनारा कोनोमते उद्धार करे दिन, तार परे कखनो आपनादेर आर विरक्त करब ना।

ता......हय—तब तो हम दोनों को ही जाना होगा।

से......पारब—उन दोनों को गलत रास्ते पर तो मैं ही भेज सकता हूँ।

आमादेर......ना—हमलोगों के लिए चिन्ता नहीं करेंगे।

आमरा......आछि—हमलोग सब कुछ के लिए प्रस्तुत हैं।

आपनारा—आपलोग; **महत्**—उदार; **ए-रकम**—ऐसा।

एर मध्ये—इसमें; **किछुइ नेइ**—कुछ भी नहीं है।

तबु......ये—तो भी मन में आशंका तो हो ही सकती है कि; **की......हय**—क्या जानें कहीं अपने फंदे में आप ही न पड़ जाएँ।

कोनो......ने—किसी आशङ्का से नहीं डरते।

आमादेर......हब—हमलोगों पर चाहे जो बीते हम उसीमें सुखी होंगे।

आपनादेर......करा—आपलोगों की रक्षा करना; **ता......दिच्छि**—खैर मैं आपलोगों को वचन देता हूँ; **एइ......ना**—इस शुक्रवार के दिन को आपलोग किसी तरह पार लगा दें, उसके बाद फिर कभी आपलोगों को तंग नहीं करूंगा।

श्रीश। आमादेर विरक्त करबेन ना एइ कथा शुने दुःखित हलेम रसिकबाबु।

रसिक। आच्छा, करब।

विपिन। आमरा कि निजेर स्वाधीनतार जन्येइ केवल व्यस्त। आमादेर एतइ स्वार्थपर मने करेन?

रसिक। माप करबेन—आमार भुल धारणा छिल।

श्रीश। आपनि याइ बलेन, फस करे भालो पात्र पाओया बड़ो शक्त।

रसिक। सेइजन्येइ तो एतदिन अपेक्षा करे शेषे एइ विपद। विवाहेर प्रसङ्गमात्रइ आपनादेर काछे अप्रिय तबु देखुन आपनादेर सुद्ध—

विपिन। सेजन्ये किछु संकोच करबेन ना—

श्रीश। आपनि ये आर कारओ काछे ना गिये आमादेर काछे एसेछेन, सेजन्ये अन्तरेर सङ्गे धन्यवाद दिच्छि।

रसिक। आमि आर आपनादेर धन्यवाद देब ना। सेइ कन्या दुटिर चिरजीवनेर धन्यवाद आपनादेर पुरस्कृत करबे।

विपिन। ओरे पाखाटा टान्।

श्रीश। रसिकबाबुर जन्ये जलखाबार आनबे बलेछिले—

एइ......हलेम—यह बात सुन कर दुःखी हुआ।

आपनि......शक्त—आप चाहे जो कहें, चट से कोई अच्छा पात्र मिलना बहुत मुश्किल है।

सेइजन्येइ......विपद—इसीलिए तो इतने दिन प्रतीक्षा करने के बाद अंत में यह संकट (आया); **विवाहेर.....अप्रिय**—विवाह का प्रसंग मात्र ही आपलोगों के लिए अप्रिय है।

सेजन्ये......ना—इसके लिए कुछ संकोच नहीं करेंगे।

आपनि......दिच्छि—आप जो और किसी के पास न जा कर हमलोगों के पास आए हैं इसके लिए आन्तरिक धन्यवाद देता हूँ।

आपनादेर—आपलोगों को; **देब ना**—नहीं दूंगा; **करबे**—करेंगी।

ओरे......टान्—अरे, पंखा खींच।

रसिकबाबुर....बलेछिले—रसिकबाबु के लिए जलपान मँगाओगे, कह रहे थे।

विपिन। से एल बले ततक्षण एक ग्लास बरफ-देओया जल खान—

श्रीश। जल केन, लेमनेड आनिये दाओ ना। (पकेट हइते टिनेर बाक्स बाहिर करिया) एइ निन रसिकबाबु, पान खान।

विपिन। ओ दिके हाओया पाच्छेन? एइ ताकियाटा निन ना।

श्रीश। आच्छा रसिकबाबु, नृपबाला बुझि खुब विषण्ण हये पड़ेछेन—

विपिन। नीरबालाओ अवश्य खुब—

रसिक। से आर बलते।

श्रीश। नृपबाला बुझि कान्नाकाटि करछेन?

विपिन। आच्छा, नीरबाला ताँर माके केन एकटु भालो करे बुझिये बलेन ना—

रसिक। (स्वगत) ओइ रे शुरु हल। आमार लेमनेडे काज नेइ। (प्रकाश्ये) माप करबेन, आमाय किन्तु एखनइ उठते हच्छे।

श्रीश। बलेन की।

विपिन। से कि हय।

से......खान—बस, आया ही समझो, तब तक एक ग्लास बरफ का पानी पीजिए।

केन—क्यों; **आनिये......ना**—मँगा दो न; **एइ निन**—यह लीजिए; **खान**—खाइए।

ओ......पाच्छेन—उधर हवा पा रहे हैं; **एइ......ना**—यह तकिया लीजिए न।

बुझि......पड़ेछेन—शायद बहुत दुखी हो गई हैं।

से......बलते—क्या वह भी बताना होगा।

कान्नाकाटि करछेन—रो-धो रही हैं।

ताँर......ना—अपनी माँ को जरा अच्छी तरह समझा कर क्यों नहीं कहतीं।

ओइ.....हल—उफ़ शुरू हो गया; **आमार......नेइ**—मुझे लेमनेड की आवश्यकता नहीं। **माप करबेन**—माफ कीजिएगा; **आमार......हच्छे**—मुझे लेकिन अभी ही (तुरन्त) उठना पड़ रहा है।

रसिक। सेइ छेलेदुटोके भुल ठिकाना दिये आसते हबे, नइले—

श्रीश। बुझेछि, ता हले एखनइ यान।

विपिन। ता हले आर देरि करबेन ना।

तृतीय दृश्य

चन्द्रबाबुर बाड़ि

निर्मला वातायनतले आसीन। चन्द्रबाबुर प्रवेश

चन्द्रबाबु। (स्वगत) बेचारा निर्मला बड़ो कठिन व्रत ग्रहण करेछे। आमि देखछि कदिन धरे ओ चिन्ताय निमग्न हये रयेछे; स्त्रीलोक, मनेर उपर एतटा भार कि सह्य करते पारबे। (प्रकाश्ये) निर्मल।

निर्मला। (चमकिया) की मामा।

चन्द्रबाबु। सेइ लेखाटा निये बुझि भावछ। आमार बोध हय अधिक ना भेवे मनके दुइ-एकदिन विश्राम दिले लेखार पक्षे सुविधा हते पारे।

निर्मला। (लज्जित हइया) आमि ठिक भावछिलुम ना मामा। आमार एतक्षण सेइ लेखाय हात देओया उचित छिल, किन्तु एइ कदिन

सेइ......हबे—उन दोनों लड़कों को गलत पता दे आना होगा; **नइले**—नहीं तो।

बुझेछि—समझ गया; **ता......यान**—तो फिर अभी ही (तुरन्त) जाइए।

ता......ना—तो फिर अब और देरी न कीजिए।

कदिन धरे—कई दिनों से; **चिन्ताय......रयेछे**—चिन्ता में डूबी रहती है।

चमकिया—चौंक कर।

सेइ......भावछ—शायद उसी निबन्ध को ले कर चिन्ता कर रही हो; **ना भेवे**—चिन्ता न करके; **दिले**—देने पर; **लेखार......पारे**—निबन्ध लिखने में सुविधा हो सकती है।

आमि......मामा—मैं ठीक चिन्ता नहीं कर रही थी मामा; **आमार......छिल**—मेरा अबतक उस निबंध में हाथ लगा देना उचित था; **किन्तु......करेछे**—लेकिन इन कई दिनों से गर्मी पड़ने लगी है, दक्षिण पवन बहना शुरू हो गया है;

थेके गरम पड़े दक्षिणे हाओया दिते आरम्भ करेछे, किछुतेइ येन मन बसाते पारछि ना—भारि अन्याय हच्छे, आज आमि येमन करे होक—

चन्द्रबाबु। ना ना, जोर करे चेष्टा कोरो ना। आमार बोध हय निर्मल, बाड़िते केउ सङ्गिनी नेइ, नितान्त एकला काज करते तोमार श्रान्ति बोध हय। काजे दुइ-एक जनेर सङ्ग एवं सहायता ना हले—

निर्मला। अबलाकान्तबाबु आमाके कतकटा सहाय्य करबेन बलेछेन—आमि ताँके रोगीशुश्रूषा सम्बन्धे सेइ इंराजि बइटा दियेछि, तिनि एकटा अध्याय आज लिखे पाठाबेन बलेछेन—बोध हय एखनइ पाओया याबे, ताइ आमि अपेक्षा करे बसे आछि।

चन्द्रबाबु। ओइ छेलेटि बड़ो भालो—

निर्मला। खुब भालो—चमत्कार—

चन्द्रबाबु। एमन अध्यवसाय, एमन कार्यतत्परता—

निर्मला। आर एमन सुन्दर नम्रस्वभाव।

चन्द्रबाबु। भालो प्रस्तावमात्रेइ ताँर उत्साह देखे आमि आश्चर्य हयेछि।

निर्मला। ता छाड़ा, ताँके देखबामात्र ताँर मनेर माधुर्य मुखे एवं चेहाराय केमन स्पष्ट बोझा याय।

किछुतेइ......ने—किसी तरह मन बैठा (लगा) नहीं पाती; **भारि......हच्छे**—बड़ी ज्यादती हो रही है; **आज......होक**—आज मैं जैसे भी हो।

जोर......ना—जबर्दस्ती चेष्टा न करो; **बाड़िते......हय**—घर में कोई संगिनी नहीं है, तुम्हें एकदम अकेले काम करने में थकान मालूम होती है; **काजे..... हले**—काम में दो-एक आदमियों का साथ तथा सहायता न होने पर।

आमाके......बलेछेन—मुझे कुछ सहायता करने को कहा है; **बोध...... आछि**—लगता है अभी मिल जाएगा, इसीलिए मैं प्रतीक्षा किए बैठी हुई हूँ।

ओइ......भालो—वह लड़का बहुत ही अच्छा है।

भालो......हयेछि—अच्छे प्रस्तावों में उनका उत्साह देख मैं चकित हो गया हूँ।

ता छाड़ा—इसके अलावा; **ताँके देखबामात्र**—उनको देखने मात्र से ही।

चन्द्रबाबु। एत अल्पकालेर मध्येइ ये कारओ प्रति एत गभीर स्नेह जन्माते पारे ता आमि कखनो मने करि नि—आमार इच्छा करे ओइ छेलेटिके निजेर काछे रेखे ओर सकलप्रकार लेखापड़ाय एवं काजे सहायता करि।

निर्मला। ता हले आमारओ भारि उपकार हय, अनेक काज करते पारि। आच्छा, एरकम प्रस्ताव करे एकबार देखोइ ना।—ओइ-ये बेहारा आसछे। बोध हय तिनि लेखाटा पाठिये दियेछेन। रामदीन, चिठि आछे? एइ दिके निये आय।

[बेहारार प्रवेश ओ चन्द्रबाबुर हाते चिठि प्रदान

मामा, सेइ प्रबन्धटा निश्चय तिनि आमाके पाठियेछेन, ओटा आमाके दाओ।

चन्द्रबाबु। ना फेनि, एटा आमार चिठि।

निर्मला। तोमार चिठि! अबलाकान्तबाबु बुझि तोमाकेइ लिखेछेन। की लिखछेन।

चन्द्रबाबु। ना, एटा पूर्णर लेखा।

निर्मला। पूर्णबाबुर लेखा? ओः।

चन्द्रबाबु। पूर्ण लिखछेन—'गुरुदेव, आपनार चरित्र महत्, मनेर बल असामान्य; आपनार मतो बलिष्ठप्रकृति लोकेइ मानुषेर

कारओ प्रति—किसी के भी प्रति; **जन्माते......नि**—उत्पन्न हो सकता है मैंने कभी नहीं सोचा; **निजेर......रेखे**—अपने पास रख कर; **लेखापड़ाय**—लिखने-पढ़ने में; **करि**—करूँ।

ता......पारि—तब तो मेरा भी बड़ा उपकार हो, बहुत काम कर सकूंगी; **आच्छा......ना**—अच्छा, एक बार ऐसा प्रस्ताव करके देख ही लो न; **ओइ......आसछे**—वह लो बेयरा आ रहा है; **बोध......दियेछेन**—लगता है उन्होंने निबंध भेज दिया है; **एइ......आय**—इधर ले आ; **सेइ......दाओ**—वह निबंध उन्होंने निश्चय ही मेरे पास भेजा है, वह मुझे दो।

एटा......चिठि—यह मेरी चिट्ठी है।

बुझि......लिखेछेन—शायद तुम्हीं को लिखा है; **की लिखछेन**—क्या लिखते हैं।

लोकेइ—मनुष्य ही; **क्षमार चक्षे......पारेन**—क्षमा की दृष्टि से देख

दुर्बलता क्षमार चक्षे देखिते पारेन इहाइ मने करिया अद्य एइ चिठि-खानि आपनाके लिखिते साहसी हइतेछि।'

निर्मला। हयेछे की। बोध हय पूर्णबाबु चिरकुमार-सभा छेड़े देबेन ताइ एत भूमिका करछेन। लक्ष्य करे देखेछ बोध हय पूर्णबाबु आजकाल कुमार-सभार कोनो काजइ करे उठते पारेन ना।

चन्द्रबाबु। 'देव, आपनि ये-आदर्श आमादेर सम्मुखे धरियाछेन ताहा अत्युच्च, ये-उद्देश्य आमादेर मस्तके स्थापन करियाछेन ताहा गुरुभार—से-आदर्श एवं सेइ उद्देश्येर प्रति एकमुहूर्तेर जन्य भक्तिर अभाव हय नाइ, किन्तु माझे माझे शक्तिर दैन्य अनुभव करिया थाकि ताहा चरणसमीपे सविनये स्वीकार करितेछि!'

निर्मला। आमार बोध हय, सकल बड़ो काजेइ मानुष माझे माझे आपनार अक्षमता अनुभव करे हताश हये पड़े—शान्त मन एक-एकबार विक्षिप्त हये याय, किन्तु से कि बराबर थाके।

चन्द्रबाबु। 'सभा हइते गृहे फिरिया आसिया यखन कार्ये हात दिते याइ, तखन सहसा निजेके एकक मने हय, उत्साह येन आश्रयहीन लतार मतो लुण्ठित हइया पड़िते चाहे।' निर्मल, आमरा तो ठिक एइ कथाइ बलछिलेम।

सकते हैं; **इहाइ......हइतेछि**—यही सोच कर आज आपको यह चिट्ठी लिखने का साहस कर रहा हूँ।

हयेछे की—हुआ क्या है; **छेड़े देबेन**—छोड़ देंगे; **ताइ......करछेन**—इसीलिए इतनी भूमिका बाँध रहे हैं; **देखेछ**—देखा है न; **कोनो......ना**—कोई भी काम नहीं कर पाते।

ताहा—वह; **हय नाइ**—नहीं हुआ; **करिया थाकि**—करता रहता हूँ; **करितेछि**—कर रहा हूँ।

से......थाके—वह क्या बराबर रहता है।

सभा......याइ—सभा से घर लौट कर जब काम में हाथ लगाने चलता हूँ; **तखन......हय**—तब सहसा अपनेको अकेला अनुभव करता हूँ; **येन**—मानो; **हइया**—हो कर; **पड़िते चाहे**—गिर जाना चाहता है; **आमरा......बलछिलेम**—हमलोग भी तो ठीक यही बात कह रहे थे।

निर्मला। पूर्णबाबु या लिखेछेन सेटा सत्य--मानुषेर सङ्ग ना हले केवलमात्र संकल्प निये उत्साह जागिये राखा शक्त।

चन्द्रबाबु। 'आमार धृष्टता मार्जना करिबेन, किन्तु अनेक चिन्ता करिया ए कथा स्थिर बुझियाछि, कुमारव्रत साधारण लोकेर जन्य नहे--ताहाते बल दान करे ना, बल हरण करे। स्त्री पुरुष परस्परेर दक्षिण हस्त--ताहारा मिलित थाकिले तबेइ सम्पूर्णरूपे संसारेर सकल काजेइ उपयोगी हइते पारे।' तोमार की मने हय निर्मल। (निर्मला निरुत्तर) अक्षयबाबुओ एइ कथा निये सेदिन आमार सङ्गे तर्क करछिलेन, ताँर अनेक कथार उत्तर दिते पारि नि।

निर्मला। ता हते पारे। बोध हय कथाटार मध्ये अनेकटा सत्य आछे।

चन्द्रबाबु। 'गृहस्थसन्तानके संन्यासधर्मे दीक्षित ना करिया गृहाश्रमके उन्नत आदर्शे गठित कराइ आमार मते श्रेष्ठ कर्तव्य।'

निर्मला। ए कथाटा किन्तु पूर्णबाबु बेश बलेछेन।

चन्द्रबाबु। आमिओ किछुदिन थेके मने करछिलेम कुमारव्रत ग्रहणेर नियम उठिये देब।

निर्मला। आमारओ बोध हय उठिये दिले मन्द हय ना; की बल, मामा। अन्य केउ कि आपत्ति करबेन। अबलाकान्तबाबु, श्रीशबाबु--

---

या......सत्य—जो लिखा है वह सत्य है; **ना हले**—न होने पर; **निये**—ले कर; **जागिये राखा**—जगाए रखना; **शक्त**—सख्त है।

मार्जना करिबेन—क्षमा करेंगे; **चिन्ता करिया**—सोच विचार कर; **बुझियाछि**—समझ गया हूँ; **साधारण......नहे**—साधारण लोगों के लिए नहीं है; **ताहाते......ना**—वह शक्ति प्रदान नहीं करता; **ताहारा......थाकिले**—वे युक्त रहने पर; **तबेइ**—तभी; **हइते पारे**—हो सकते हैं; **ताँर......नि**—उनकी बहुत-सी बातों का उत्तर नहीं दे पाया।

ता......पारे—सो हो सकता है; **बोध.....मध्ये**—लगता है (इस) बात में।

आमिओ......करछिलेम—मैं भी कुछ दिनों से सोच रहा था; **उठिये देब**—उठा दूंगा (हटा दूंगा)।

मन्द....ना—बुरा नहीं होगा; **अन्य....करबेन**—क्या अन्य कोई आपत्ति करेंगे।

चन्द्रबाबु। आपत्तिर कोनो कारण नेइ।

निर्मला। तबु एकबार अबलाकान्तबाबुदेर मत निये देखा उचित।

चन्द्रबाबु। मत तो नितेइ हबे।

(पत्रपाठ) 'ए पर्यन्त याहा लिखिलाम सहजे लिखियाछि, एखन याहा बलिते चाहि ताहा लिखिते कलम सरितेछे ना।'

निर्मला। मामा, पूर्णबाबु हयतो कोनो गोपनीय कथा लिखछेन, तुमि चेँचिये पड़छ केन।

चन्द्रबाबु। ठिक बलेछ फेनि।

आपन मने पाठ

की आश्चर्य! आमि कि सकल विषयेइ अन्ध! एतदिन तो आमि किछुइ बुझते पारि नि। निर्मल, पूर्णबाबुर कोनो व्यवहार कि कखनो तोमार काछे—

निर्मला। हाँ, पूर्णबाबुर व्यवहार आमार काछे माझे माझे अत्यन्त निर्बोधेर मतो ठेकेछिल।

चन्द्रबाबु। अथच पूर्णबाबु खुब बुद्धिमान। ता, हले तोमाके खुले बलि—पूर्णबाबु विवाहेर प्रस्ताव करे पाठियेछेन—

आपत्तिर......नेइ—आपत्ति का कोई कारण नहीं।

तबु—फिर भी; **मत......उचित**—मत ले कर देखना उचित है।

मत......हबे—मत तो लेना ही होगा।

ए......लिखियाछि—यहाँ तक जो लिखा है सहज ही लिखा है; **एखन......ना**—अब जो कहना चाहता हूँ वह लिखते कलम बढ़ नहीं रही है।

हयतो......केन—संभवत: कोई गोपनीय बात लिख रहे हैं, तुम चीख कर क्यों पढ़ रहे हो।

ठिक बलेछ—ठीक कहती हो।

सकल......अन्ध—सभी विषयों में अन्धा हूँ; **एतदिन......नि**—इतने दिन तो मैं कुछ भी नहीं समझ सका; **कोनो**—कोई; **कखनो**—कभी।

निर्बोधेर......ठेकेछिल—नासमझ की तरह लगा था।

खुले बलि—खोल कर कहूँ, खुलासा कहूँ।

निर्मला। तुमि तो ताँर अभिभावक नओ—तोमार काछे प्रस्ताव—

चन्द्रबाबु। आमि ये तोमार अभिभावक, एइ पड़े देखो।

निर्मला। (पत्र पड़िया रक्तिममुखे) ए हतेइ पारे ना।

चन्द्रबाबु। आमि ताँके की बलब।

निर्मला। बलो कोनोमते हतेइ पारे ना।

चन्द्रबाबु। केन निर्मल, तुमि तो बलछिले कुमारव्रत पालनेर नियम सभा हते उठिये दिते तोमार आपत्ति नेइ।

निर्मला। ताइ बलेइ कि ये प्रस्ताव करबे ताकेइ—

चन्द्रबाबु। पूर्णबाबु तो ये-से नय, अमन भालो छेले—

निर्मला। मामा, तुमि ए-सब विषये किछुइ बोझ ना, तोमाके बोझाते पारबओ ना—आमार काज आछे।

[प्रस्थानोद्यम

मामा, तोमार पकेटे ओटा की उँचु हये आछे।

चन्द्रबाबु। (चमकिया उठिया) हाँ हाँ भुले गियेछिलेम, बेहारा आज सकाले तोमार नामे लेखा एकटा कागज आमाके दिये गेछे—

तुमि......नओ—तुम तो उनके अभिभावक नहीं हो।

आमि ये—मैं जो; **तोमार**—तुम्हारा; **एइ......देखो**—लो, यह पढ़ देखो।

ए......ना—यह तो हो ही नहीं सकता।

आमि......बलब—मैं उन्हें क्या कहूँगा।

बलो—कहो; **कोनोमते**—किसी भी प्रकार।

बलछिले—कह रही थी; **हते**—से; **उठिये......नेइ**—उठा देने में तुम्हें आपत्ति नहीं है।

ताइ......ताकेइ—तो क्या इसीलिए जो प्रस्ताव करेगा उसीसे।

तो......नय—तो ऐसे-वैसे नहीं हैं; **अमन......छेले**—ऐसा अच्छा लड़का।

तुमि......ना—तुम इन सब विषयों में कुछ नहीं समझते; **तोमाके......ना**—तुम्हें समझा भी नहीं सकूंगी; **आमार......आछे**—मुझे काम है; **तोमार......आछे**—तुम्हारी पाकेट में वह क्या उठा हुआ है।

भुले गियेछिलेम—भूल गया था; **बेहारा......गेछे**—बेयरा आज सवेरे तुम्हारे नाम लिखा हुआ एक कागज मुझे दे गया था।

निर्मला। (ताड़াताड़ि कागज लइया) देखो देखि मामा, की अन्याय, अबलाकान्तबाबुर लेखाटा सकालेइ एसेछे, आमाके दाओ नि! आमि भावछिलेम तिनि हयतो भुलेइ गेछेन। भारि अन्याय।

चन्द्रबाबु। अन्याय हयेछे बटे। किन्तु, एर चेये ढेर बेशि अन्याय भुल आमि प्रतिदिनइ करे थाकि फेनि—तुमिइ तो आमाके प्रत्येक बार माप करे प्रश्रय दियेछ।

निर्मला। ना, ठिक अन्याय नय—आमिइ अबलाकान्तबाबुर प्रति मने मने अन्याय करछिलेम, भावछिलेम—एइ-ये, रसिकबाबु आसछेन। आसुन रसिकबाबु, मामा एइखानेइ आछेन।

[रसिकेर प्रवेश

चन्द्रबाबु। एइ-ये रसिकबाबु एसेछेन, भालोइ हयेछे।

रसिक। आमार आसातेइ यदि भालो हय चन्द्रबाबु, ता हले आपनादेर पक्षे भालो अत्यन्त सुलभ। यखनइ बलबेन तखनइ आसब, ना बललेओ आसते राजि आछि।

चन्द्रबाबु। आमरा मने करछि आमादेर सभा थेके चिरकुमार व्रतेर नियमटा उठिये देब—आपनि की परामर्श देन।

रसिक। आमि खुब निःस्वार्थभावेइ परामर्श दिते पारब,

ताड़ाताड़ि.....लइया—झटपट कागज ले कर; **देखो देखि**—देखो तो सही; **सकालेइ एसेछे**—सबेरे ही आया है; **आमाके......नि**—मुझे नहीं दिया; **आमि...... गेछेन**—मैं सोच रही थी वे शायद भूल ही गए।

अन्याय......बटे—अन्याय तो ज़रूर हुआ है; **एर.....बेशि**—इससे भी बढ़ कर; **भुल**—भूल; **प्रतिदिनइ**—प्रतिदिन ही; **करे थाकि**—करता रहता हूँ; **तुमिइ तो**—तुम्हीं तो; **आमाके**—मुझे; **माप करे**—माफ करके; **दियेछ**—दिया है।

भावछिलेम—सोच रही थी; **आसछेन**—आ रहे हैं; **आसुन**—आइए; **एइखानेइ आछेन**—यहीं हैं।

एसेछेन—आए हैं; **भालोइ हयेछे**—अच्छा ही हुआ।

आमार......हय—मेरे आने से ही यदि शुभ हो जाय; **ता......सुलभ**—तो आपलोगों के लिए शुभ अत्यन्त सुलभ है; **यखनइ......आछि**—जब बुलाएंगे तभी आ जाऊंगा, बिना बुलाए भी आने को राजी हूँ।

कारण, ए-व्रत राखुन वा उठिये दिन आमार पक्षे दुइ-इ समान आमार परामर्श एइ ये उठिये दिन, नइले से कोन्‌दिन आपनिइ उठे याबे। आमादेर पाड़ार रामहरि माताल रास्तार माझखाने एसे सकलके डेके बलेछिल, बाबासकल, आमि स्थिर करेछि एइखानटातेइ आमि पड़ब। स्थिर ना करलेओ से पड़त, अतएव स्थिर कराटाइ तार पक्षे भालो हयेछिल।

चन्द्रबाबु। ठिक बलेछेन रसिकबाबु, ये-जिनिस बलपूर्वक आसबेइ ताके बलप्रकाश करते ना दिये आसते देओयाइ भालो। आसछे रविवारेर पूर्वेइ एइ प्रस्तावटा सकलेर काछे एकबार तुलते चाइ।

रसिक। आच्छा, शुक्रवारेर सन्ध्यावेलाय आपनारा आमादेर ओखाने याबेन, आमि सकलके संवाद दिये आनाब।

चन्द्रबाबु। रसिकबाबु, आपनार यदि समय थाके ता हले आमादेर देशे गोजातिर उन्नति सम्बन्धे एकटा प्रस्ताव आपनाके--

रसिक। विषयटा शुने खुब औत्सुक्य जन्माच्छे, किन्तु समय खुब ये बेशि--

निर्मला। ना रसिकबाबु, आपनि ओ घरे चलुन, आपनार सङ्गे

राखुन......देन—रक्खें या उठा दें; **आमार......समान**—मेरे लिए दोनों ही बराबर हैं; **नइले......याबे**—नहीं तो चाहे जिस दिन अपने आप ही उठ जाएगा; **पाड़ार**—मुहल्ले का; **माताल**—नशेबाज, पियक्कड़; **रास्तार......पड़ब**—रास्ते के बीच आ कर सब को पुकार कर बोला, मैंने तय किया है मैं यहीं गिरूंगा; **बाबा**—(पुत्र स्थानीय लोगों के लिए स्नेह संबोधन); **सकल**—सभी; **स्थिर...... पड़त**—तय न करने पर भी वह गिरता; **कराटाइ**--करना ही; **तार......हयेछिल**--उसके लिए अच्छा हुआ।

आसबेइ—आएगी ही; **करते......भालो**—न करने दे कर (किए बिना ही) आने देना अच्छा; **आसछे......चाइ**—अगले रविवार के पहले ही एक बार यह प्रस्ताव सब के सामने रखना चाहता हूँ।

आपनारा......याबेन—आपलोग हमारे यहाँ आएँ; **आमि......आनाब**-- मैं सभी को खबर दे कर बुलवा लूंगा।

आपनि......चलुन—आप उस कमरे में चलें;

अनेक कथा कबार आछे। मामा, तोमार लेखाटा शेष करो, आमरा थाकले व्याघात हबे।

रसिक। ता हले चलेन।

निर्मला। (चलिते चलिते) अबलाकान्तबाबु आमाके ताँर सेइ लेखाटा पाठिये दियेछेन। आमार अनुरोध ये तिनि मने करे रेखेछिलेन सेजन्ये आपनि ताँके आमार धन्यवाद जानाबेन।

रसिक। धन्यवाद ना पेलेओ आपनार अनुरोध रक्षा करेइ तिनि कृतार्थ।

चतुर्थ दृश्य

अक्षयेर बासा

जगत्तारिणी, पुरबाला ओ अक्षय

जगत्तारिणी। बाबा अक्षय, देखो तो, मेयेदेर निये आमि की करि। नेपो बसे बसे काँदछे, नीर रेगे अस्थिर, से बले से कोनोमतेइ बेरोबे ना। भद्रलोकेर छेलेरा आज एखनइ आसबे, तादेर एखन की बले फेराब। तुमिइ बापु ओदेर शिखिये पड़िये बिबि करे तुलेछ, एखन तुमिइ ओदेर सामलाओ। [प्रस्थान

आपनार......आछे—आपसे बहुत-सी बातें करनी हैं; **तोमार......हबे**—अपना निबंध समाप्त करो, हमलोगों के रहने से विघ्न होगा।

आमार......जानाबेन—मेरा अनुरोध उन्होंने याद रखा इसके लिए आप उन्हें मेरा धन्यवाद जता दें।

धन्यवाद......कृतार्थ—धन्यवाद न पाने पर भी वे आपके अनुरोध की रक्षा करके ही कृतार्थ हैं।

बाबा—बेटा (स्नेह संबोधन); **मेयेदेर......करि**—लड़कियों को ले कर मैं क्या करूँ; **बसे......काँदछे**—बैठी बैठी रो रही है; **रेगे अस्थिर**—गुस्से से आगबबूला; **से......ना**—वह कहती है वह किसी तरह बाहर नहीं आएगी; **भद्रलोकेर......आसबे**—भले घर के लड़के आज अभी आएंगे; **तादेर......फेराब**—उनको क्या कह कर लौटाऊंगी; **तुमिइ......तुलेछ**—बापू, तुमने ही उन्हें पढ़ा-लिखा कर मेम बना डाला है; **एखन......सामलाओ**—अब तुम्हीं उनलोगों को संभालो।

पुरबाला। सत्यि, आमि ओदेर रकम देखे अवाक हये गेछि, ओरा की मने करेछे ओरा——

अक्षय। बोध हय आमाके छाड़ा आर काउके ओरा पछन्द करछे ना; तोमारइ सहोदरा किना, रुचिटा तोमारइ मतो।

पुरबाला। ठाट्टा राखो, एखन ठाट्टार समय नय। तुमि ओदेर एकटु बुझिये बलबे कि ना बलो। तुमि ना बलले ओरा शुनबे ना।

अक्षय। एत अनुगत! एकेइ बले भग्नीपतिव्रता श्याली। आच्छा, आमार काछे एकबार पाठिये दाओ——देखि।

[पुरबालार प्रस्थान

[नृपबाला ओ नीरबालार प्रवेश

नीरबाला। ना, मुखुज्येमशाय, से कोनोमतेइ हबे ना।

नृपबाला। मुखुज्येमशाय, तोमार दुटि पाये पड़ि, आमादेर यार-तार सामने ओ-रकम करे बेर कोरो ना।

अक्षय। फाँसिर हुकुम हले एकजन बलेछिल आमाके बेशि उँचुते चड़ियो ना, आमार माथाघोरा व्यामो आछे। तोदेर ये ताइ हल। बिये करते याच्छिस एखन देखा दिते लज्जा करले चलबे केन।

सत्यि......गेछि—सचमुच मैं तो उनका ढंग देख कर अवाक हो गई हूँ; **ओरा......करेछे**—वे क्या सोचती हैं कि वे।

बोध......मतो—लगता है मेरे अलावा वे और किसीको पसन्द नहीं करती, तुम्हारी सहोदरा हैं, रुचि तुम्हारी-सी ही है।

ठाट्टा......नय—मज़ाक रहने दो, अभी मज़ाक का समय नहीं है; **तुमि...... बलो**—तुम उन्हें जरा समझाओगे बुझाओगे या नहीं, बताओ; **तुमि......ना**—तुम्हारे कहे बिना वे नहीं सुनेंगी।

एत——इतनी; **एकेइ बले**—इसी को कहते हैं; **पाठिये दाओ**——भेज दो।

से......ना——यह किसी प्रकार नहीं होगा।

तोमार......ना——तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, हमलोगों को इस तरह जिस-तिस के सामने मत निकालो।

फाँसिर......आछे——फाँसी का हुक्म होने पर एक आदमी ने कहा था मुझे ज्यादा ऊँचे मत चढ़ाना, मुझे चक्कर आ जाने का रोग है; **तोदेर......हल**—तुमलोगों का वही हुआ; **बिये......केन**—विवाह करने जा रही हो अब दर्शन देने में लज्जा करने से कैसे काम चलेगा।

नीरबाला। के बलले आमरा बिये करते याच्छि।

अक्षय। अहो, शरीरे पुलक सञ्चार हच्छे। किन्तु हृदय दुर्बल एवं दैव बलवान, यदि दैवात् प्रतिज्ञा भङ्ग करते हय—

नीरबाला। ना, भङ्ग हबे ना।

अक्षय। हबे ना तो? तबे निर्भये एसो; युवक दुटोके देखा दिये आधपोड़ा करे छेड़े दाओ—हतभागारा बासाय फिरे गिये मरे थाकुक।

नीरबाला। अकारणे प्राणिहत्या करबार जन्ये आमादेर एत उत्साह नेइ।

अक्षय। जीवेर प्रति की दया! किन्तु सामान्य व्यापार निये गृहविच्छेद करबार दरकार की। तोदेर मा दिदि यखन धरे पड़ेछेन एवं भद्रलोक दुटि यखन गाड़िभाड़ा करे आसछे तखन एकबार मिनिट-पाँचेकेर मतो देखा दिस, तार परे आमि आछि—तोदेर अनिच्छाय कोनोमतेइ विवाह दिते देब ना।

नीरबाला। कोनोमतेइ ना?

अक्षय। कोनोमतेइ ना।

[पुरबालार प्रवेश

पुरबाला। आय, तोदेर साजिये दिइ गे।

के......याच्छि—किसने कहा, हम विवाह करने जा रही हैं।

हच्छे—हो रहा है; **प्रतिज्ञा......हय**—प्रतिज्ञा भंग करनी पड़े।

ना......ना—नहीं, भंग नहीं होगी।

हबे......तो—नहीं होगी न; **तबे......एसो**—तब बेखटके आओ; **युवक...... दाओ**—दोनों युवकों को दर्शन दे कर अधजला करके छोड़ दो; **हतभागारा...... थाकुक**—अभागे घर पहुँच कर मरते रहें।

अकारणे......नेइ—अकारण प्राणीहत्या करने के लिए हमारा इतना उत्साह नहीं है।

सामान्य......निये—साधारण-सी बात ले कर; **करबार......की**—करने की क्या जरूरत; **तोदेर......पड़ेछेन**—तुमलोगों की माँ दीदी जब पीछे पड़ गई हैं; **यखन**—जब; **आसछे**—आ रहे हैं; **तखन......दिस**—तब एक बार पाँच मिनट के लिए दर्शन दे देना; **तार......आछि**—बस फिर मैं हूँ; **तोदेर......ना**—तुमलोगों की अनिच्छा रहने पर मैं किसी भी तरह विवाह नहीं होने दूंगा।

आय......गे—चल तुझे (बहुवचन) सजा दें (प्रसाधन कर दें)।

नीरबाला। आमरा साजब ना।

पुरबाला। भद्रलोकेर सामने एइरकम वेशेइ बेरोबि ? लज्जा करबे ना ?

नीरबाला। लज्जा करबे बइकि दिदि—किन्तु सेजे बेरोते आरओ बेशि लज्जा करबे।

अक्षय। उमा तपस्विनीवेशे महादेवेर मनोहरण करेछिलेन; शकुन्तला यखन दुष्मन्तेर हृदय जय करेछिल, तखन तार गाये एकखानि बाकल छिल, कालिदास बलेन से-ओ किछु आँट हये पड़ेछिल, तोमार बोनेरा सेइ सब पड़े सेयाना हये उठेछे, साजते चाय ना।

पुरबाला। से-सब हल सत्ययुगेर कथा। कलिकालेर दुष्मन्त महाराजारा साज-सज्जातेइ भोलेन।

अक्षय। यथा—

पुरबाला। यथा तुमि। येदिन तुमि देखते एले, मा बुझि आमाके साजिये देन नि ?

अक्षय। आमि मने मने भावलेम, साजेओ यखन एके सेजेछे तखन सौन्दर्य ना जानि कत शोभा हबे।

आमरा......ना—हम सिंगार नहीं करेंगी।

एइरकम......बेरोबि—इसी वेश में निकलेगी; **लज्जा......ना**—लज्जा नहीं आएगी।

बइकि—अवश्य; **किन्तु......ना**—किन्तु सज कर निकलने में और भी ज्यादा लज्जा आएगी।

दुष्मन्त—दुष्यन्त; **तखन......छिल**—उस समय उनके शरीर पर बस एक वल्कल था; **बलेन**—कहते हैं; **से......पड़ेछिल**—वह भी कुछ ओछा हो गया था; **तोमार......उठेछे**—तुम्हारी बहनें वही सब पढ़ कर सयानी (चालाक) हो गई हैं; **साजते......ना**—सजना नहीं चाहतीं।

से....हल—वह सब हुई; **साज....भोलेन**—साज सज्जा से ही मोहित होते हैं।

येदिन......एले—जिस दिन तुम देखने आए थे; **मा......नि**—माँ ने शायद मुझे सजाया नहीं था।

आमि......भावलेम—मैंने मन ही मन सोचा; **साजेओ......सेजेछे**—सज्जा में भी जब ये जँच रही हैं।

पुरबाला। आच्छा, तुमि थामो। नीरु, आय।

नीरबाला। ना भाइ दिदि—

पुरबाला। आच्छा, साज नाइ करलि, चुल तो बाँधते हबे।

अक्षय। गान

अलके कुसुम ना दियो,
शुधु शिथिल कबरी बाँधियो।
काजलविहीन सजल नयने
हृदयदुयारे घा दियो।
आकुल आँचले पथिकचरणे
मरणेर फाँद फाँदियो।
ना करिया वाद मने याहा साध
निदया नीरवे साधियो।

पुरबाला। तुमि आबार गान धरले? आमि कखन की करि बलो देखि। तादेर आसबार समय हल—एखन आमार खाबार तैरि करा बाकि आछे।

[नृपबाला ओ नीरबालाके लइया प्रस्थान

[रसिकेर प्रवेश

अक्षय। पितामह भीष्म, युद्धेर समस्तइ प्रस्तुत?

रसिक। समस्तइ। वीर पुरुष दुटिओ समागत।

थामो—चुप रहो, रुको; **आय**—आ।

आच्छा......हबे—अच्छा, सिंगार न किया सही, बाल तो बांधने होंगे।

ना दियो—न देना; **शुधु**—केवल; **दुयारे**—दरवाजे पर; **घा दियो**—आघात करना; **मरणेर......फाँदियो**—मरण का फंदा डालना; **ना......साधियो**—बिना वाद-विवाद किए मन में जो साध (कामना) हो, हे निष्ठुरे, उसे चुपचाप साधना (पूरी करना)।

तुमि......धरले—तुमने फिर गीत छेड़ा; **आमि......देखि**—मैं कब क्या करूँ, बताओ तो सही; **तादेर......हल**—उनलोगों के आने का समय हो गया है; **एखन......आछे**—अभी मुझे जलपान तैयार करना बाकी है।

लइया—ले कर।

अक्षय। एखन केवल दिव्यास्त्र दुटि साजते गेछेन। तुमि ता हले सेनापतिर भार ग्रहण करो, आमि एकटु अन्तराले थाकते इच्छा करि।

रसिक। आमिओ प्रथमटा एकटु आड़ाल हइ।

[रसिक ओ अक्षयेर प्रस्थान। श्रीश ओ विपिनेर प्रवेश

श्रीश। विपिन, तुमि तो आजकाल संगीतविद्यार उपर चीत्कारशब्दे डाकाति आरम्भ करेछ—किछु आदाय करते पारले?

विपिन। किछु ना। संगीतविद्यार द्वारे सप्तसुर अनवरत पाहारा दिच्छे, सेखाने कि आमार ढोकबार जो आछे। किन्तु ए-प्रश्न केन तोमार मने उदय हल।

श्रीश। आजकाल माझे माझे कविताय सुर बसाते इच्छे करे। सेदिन बइये पड़छिलुम—

केन सारादिन धीरे धीरे
बालु निये शुधु खेल तीरे।
चले याय वेला, रेखे मिछे खेला
झाँप दिये पड़ो कालो नीरे।
अकूल छानिये या पास ता निये
हेसे केँदे चलो घरे फिरे।

एखन....गेछेन—अभी बस दोनों दिव्यास्त्र सजने गए हैं; **थाकते**—रहने की।

डाकाति.....करेछ—डकैती आरम्भ की है; **किछु......पारले**—कुछ वसूल कर सके (सीख सके)।

पाहारा दिच्छे—पहरा देते हैं; **सेखाने......आछे**—वहाँ क्या मेरे प्रवेश करने का कोई उपाय है; **किन्तु......हल**—लेकिन तुम्हारे मन में यह प्रश्न कैसे उदय हुआ।

सुर......करे—सुर में बाँधने की इच्छा होती है; **सेदिन......पड़छिलुम**—उस दिन किताब में पढ़ रहा था।

केन—क्यों; **बालु......तीरे**—बालू ले कर केवल तीर पर खेल करते हो; **चले......नीरे**—वेला बीतती जा रही है, व्यर्थ के खेल को छोड़ कर काले नीर में कूद पड़ो; **अकूल......फिरे**—अकूल को छान कर जो कुछ पा जाओ उसी को ले कर हंसते-रोते घर लौट चलो।

मने हच्छिल एर सुरटा येन जानि, किन्तु गाबार जो नेइ।

विपिन। जिनिसटा मन्द नय हे—तोमार कवि लेखे भालो। ओहे, ओर परे आर किछु नेइ? यदि शुरु करले तबे शेष करो।

श्रीश।

नाहि जानि मने की बासिया
पथे बसे आछे के आसिया।
ये फुलेर बासे अलस वातासे
हृदय दितेछे उदासिया
येते हय यदि चलो निरवधि
सेइ फुलवन तलाशिया।

विपिन। वा:, बेश! किन्तु श्रीश, शेल्फेर काछे तुमि की खुँजे बेड़ाच्छ।

श्रीश। सेइ-ये सेदिन ये बइटाते नाम लेखा देखेछिलाम, सेइटे—

विपिन। ना भाइ, आज ओ-सब नय।

श्रीश। की-सब नय।

विपिन। ताँदेर कथा निये कोनोरकम—

मने......नेइ—लगता था जैसे इसका सुर जानता होऊँ, लेकिन गाने का उपाय नहीं।

जिनिसटा......नय—चीज तो बुरी नहीं है; **लेखे**—लिखता है; **ओर...... नेइ**—उस के बाद क्या और कुछ नहीं है; **करले**—किया; **तबे**—तो फिर।

नाहि......बासिया—नहीं जानता (कि उसे) क्या अच्छा लगा है; **पथे...... आछे**—पथ में बैठा है; **के**—कौन; **आसिया**—आ कर; **बासे**—सुगन्धि से; **वातासे**—हवा से; **दितेछे उदासिया**—उदास बना रहा है; **येते हय**—जाना हो; **निरवधि**—निरन्तर; **तलाशिया**—तलाश करते हुए।

शेल्फेर......बेड़ाच्छ—तुम शेल्फ के पास क्या खोजते फिर रहे हो।

सेइ......देखेछिलाम—वही उस दिन जिस किताब में नाम लिखा हुआ देखा था; **सेइटे**—वही, उसीको।

ओ-सब नय—वह सब नहीं।

की-सब नय—क्या सब नहीं।

ताँदेर......कोनोरकम—उनलोगों की बात ले कर किसी भी प्रकार।

श्रीश। की आश्चर्य विपिन। ताँदेर कथा निये आमि कि एमन कोनो आलोचना करते पारि याते—

विपिन। राग कोरो ना भाइ—आमि निजेर सम्बन्धेइ बलछि, एइ घरेइ आमि अनेक समय रसिकबाबुर सङ्गे ताँदेर विषये येभावे आलाप करेछि आज सेभावे कोनो कथा उच्चारण करतेओ संकोच बोध हच्छे—बुझछ ना—

श्रीश। केन बुझब ना। आमि केवल एकखानि बइ खुले देखबार इच्छे करेछिलुम मात्र—एकटि कथाओ उच्चारण करतुम ना—

विपिन। ना, आज ताओ ना। आज ताँरा आमादेर सम्मुखे बेरोबेन, आज आमरा येन तार योग्य थाकते पारि।

श्रीश। विपिन, तोमार सङ्गे—

विपिन। ना भाइ, आमार सङ्गे तर्क कोरो ना, आमि हारलुम—किन्तु बइटा राखो।

[रसिकेर प्रवेश

रसिक। एइ-ये, आपनारा एसे एकला बसे आछेन—किछु मने करबेन ना—

श्रीश। किछु ना। एइ घरटि आमादेर सादर सम्भाषण करे नियेछिल।

रसिक। आपनादेर कत कष्टइ देओया गेल।

एमन कोनो—ऐसी कोई; **करते पारि**—कर सकता हूँ; **याते**—जिससे। **राग......ना**—गुस्सा मत करो; **बलछि**—कह रहा हूँ।

केन......ना—समझूंगा क्यों नहीं; **बइ......मात्र**—किताब खोल कर देखने भर की इच्छा की थी; **करतुम ना**—न करता।

ताओ ना—वह भी नहीं; **ताँरा......बेरोबेन**—वे हमलोगों के सामने आएंगी; **आमरा......पारि**—हम जिसमें उसके योग्य रह सकें।

कोरो ना—न करो; **हारलुम**—हार गया।

आपनारा......आछेन—आपलोग आ कर अकेले बैठे हैं; **किछु......ना**—बुरा न मानिएगा।

किछु ना—कुछ नहीं; **सम्भाषण......नियेछिल**—संवर्धना कर ली थी। **आपनादेर......गेल**—आपलोगों को कितना कष्ट दे डाला।

श्रीश। कष्ट आर दिते पारलेन कइ। एकटा कष्टेर मतो कष्ट स्वीकार करबार सुयोग पेले कृतार्थ हतुम।

रसिक। या होक, अल्पक्षणेर मध्ये चुके याबे एइ एक सुविधे, तार परेइ आपनारा स्वाधीन। भेबे देखुन देखि, यदि एटा सत्यकार व्यापार हत ता हलेइ 'परिणामे बन्धनभयम्।' विवाह जिनिसटा मिष्टान्न दियेइ शुरु हय किन्तु सकल समय मधुरेण समाप्त हय ना। आच्छा, आज आपनारा दुःखितभाबे ए-रकम चुपचाप करे बसे आछेन केन बलुन देखि। आमि बलछि, आपनादेर कोनो भय नेइ। आपनारा वनेर विहङ्ग, दुटिखानि सन्देश खेयेइ आबार वने उड़े याबेन, केउ आपनादेर बाँधबे ना। 'नात्र व्याधशराः पतन्ति परितो नैवात्र दावानलः'—दावानलेर परिवर्ते डाबेर जल पाबेन।

श्रीश। आमादेर से दुःख नय रसिकबाबु, आमरा भाबछि, आमादेर द्वारा कतटुकु उपकारइ वा हच्छे। भविष्यतेर समस्त आशङ्का तो दूर करते पारछि ने।

रसिक। विलक्षण! या करछेन ताते आपनारा दुटि अबलाके चिरकृतज्ञतापाशे बद्ध करछेन—अथच निजेरा कोनोप्रकार पाशेइ बद्ध हच्छेन ना।

कष्ट......कर—कष्ट दे ही कहाँ सके; **एकटा......हतुम**—कोई कष्ट कहलाने लायक कष्ट स्वीकार करने का सुयोग पाने पर (हम) कृतार्थ होते।

या होक—जो हो; **चुके याबे**—समाप्त हो जाएगा; **एइ......सुविधे**—यही एक सुविधा है; **तार परेइ**—इसके बाद ही; **आपनारा**—आपलोग; **भेबे......देखि**—सोच कर तो देखिए; **यदि......हत**—यदि यह सचमुच की बात होती; **ता हलेइ**—तो फिर; **मिष्टान्न......हय**—मिठाई से शुरू होता है; **बसे ......केन**—क्यों बैठे हैं; **कोनो**—कोई; **नेइ**—नहीं है; **दुटिखानि......याबेन**—दो सन्देश (मिठाई) खा कर ही फिर वन में उड़ जाइएगा; **केउ......ना**—आपलोगों को कोई बांधेगा नहीं; **परिवर्ते**—बदले में; **डाबेर......पाबेन**—डाभ (हरे नारियल) का पानी पाएंगे।

भाबछि—सोच रहे हैं; **कतटुकु.....हच्छे**—ऐसा कितना उपकार हो रहाहै; **भविष्यतेर......ना**—भविष्य की सभी आशंकाओं को तो दूर कर नहीं पा रहे हैं।

या......ताते—जो कर रहे हैं उसीसे; **करछेन**—कर रहे हैं; **अथच...... ना**—फिर भी स्वयं किसी भी पाश (बंधन) में नहीं बँध रहे हैं।

जगत्तारिणी। (नेपथ्ये, मृदुस्वरे) आः, नेपो, की छेलेमानुषि करछिस। शिग्‌गिर चोखेर जल मुछे घरेर मध्ये या। लक्ष्मी मा आमार—केँदे चोख लाल करले कि रकम छिरि हबे भेबे देख् देखि।—नीर, या ना। तोदेर सङ्गे आर पारि ने बापु। भद्रलोकदेर कतक्षण बसिये राखबि। की मने करबेन।

श्रीश। ओइ शुनछेन रसिकबाबु, ए असह्य। एर चेये राजपुतदेर कन्याहत्या भालो।

विपिन। रसिकबाबु, एँदेर एइ संकट थेके सम्पूर्ण रक्षा करबार जन्ये आपनि आमादेर या बलबेन आमरा तातेइ प्रस्तुत आछि।

रसिक। किछु ना, आपनादेर आर अधिक कष्ट देब ना। केवल आजकेर दिनटा उत्तीर्ण करे दिये यान तार परे आपनादेर आर किछुइ भावते हबे ना।

श्रीश। भावते हबे ना? की बलेन रसिकबाबु। आमरा कि पाषाण। आज थेकेइ आमरा विशेषरूपे एँदेर जन्य भावबार अधिकार पाव।

की......करछिस—कैसा बचपना कर रही है; **शिग्‌गिर......या**—जल्दी से आँखों के आँसू पोंछ कर कमरे में जा; **लक्ष्मी मा आमार**—रानी बेटी मेरी (दुलार से लड़कियों को माँ संबोधन करते हैं); **केँदे.....देखि**—रो कर आँखें लाल करने से कैसी श्री (रूप) होगी सोच कर तो देख; **तोदेर......बापु**—बापू, अब तुमसे पार नहीं पा सकती; **भद्रलोकदेर......राखबि**—भद्रलोगों को कितनी देर बैठा रखेगी; **की......करबेन**—क्या सोचेंगे।

ओइ शुनछेन—वह सुन रहे हैं; **एर चेये**—इसकी अपेक्षा (इससे तो)।

एँदेर......आछि—इस संकट से इन लोगों की पूरी तरह रक्षा करने के लिए आप हमलोगों से जो भी कहें हम उसके लिए तैयार हैं।

किछु......ना—कुछ नहीं, आपलोगों को और अधिक कष्ट नहीं दूंगा; **केवल......ना**—केवल आज का यह दिन पार कर दीजिए उसके बाद आपलोगों को और कुछ भी चिन्ता नहीं करनी होगी।

भावते......ना—चिन्ता नहीं करनी होगी; **की बलेन**—क्या कहते हैं; **आमरा कि**—हमलोग क्या; **थेकेइ**—से ही; **एँदेर......पाव**—इनलोगों के लिए चिन्ता करने का अधिकार पाएंगे।

विपिन। एमन घटनार पर आमरा यदि एँदेर सम्बन्धे उदासीन हइ तबे आमरा कापुरुष।

श्रीश। एखन थेके एँदेर जन्ये भाबा आमादेर पक्षे गर्बेर विषय —गौरवेर विषय।

रसिक। ता बेश, भावबेन, किन्तु बोध हय भाबा छाड़ा आर कोनो कष्ट करते हबे ना।

श्रीश। आच्छा रसिकबाबु, आमादेर कष्ट स्वीकार करते दिते आपनार एत आपत्ति हच्छे केन।

विपिन। एँदेर जन्ये यदिइ आमादेर कोनो कष्ट करते हय सेटा ये आमरा सम्मान बले ज्ञान करब।

श्रीश। दुदिन धरे, रसिकबाबु, बेशि कष्ट पेते हबे ना बले आपनि क्रमागतइ आमादेर आश्वास दिच्छेन एते आमरा वास्तविक दु:खित हयेछि।

रसिक। आमाके माप करबेन—आमि आर कखनो एमन अविवेचनार काज करब ना, आपनारा कष्ट स्वीकार करबेन।

श्रीश। आपनि कि एखनओ आमादेर चिनलेन ना।

रसिक। चिनेछि बइकि, सेजन्ये आपनारा किछुमात्र चिन्तित हबेन ना।

ता......भावबेन—बहुत अच्छा, चिन्ता कीजिएगा; **किन्तु......ना**—लेकिन लगता है चिन्ता करने के सिवा और कोई कष्ट नहीं करना होगा।

करते दिते—करने देने में; **आपनार......केन**—आपको इतनी आपत्ति क्यों हो रही है।

एँदेर......करब—इनलोगों के लिए यदि हमलोगों को कष्ट उठाना पड़े तो उसे हमलोग सम्मान (की बात) समझेंगे।

दुदिन धरे—दो दिनों से; **बेशि......हयेछि**—अधिक कष्ट नहीं पाना होगा कह कर आप बराबर हमलोगों को भरोसा दिला रहे हैं इससे हमलोग सचमुच दु:खित हुए हैं।

आपनि......ना—आपने क्या अभी तक हमलोगों को नहीं पहचाना।

चिनेछि......ना—पहचाना क्यों नहीं, उसके लिए आपलोग जरा भी चिन्तित न हों।

[कुण्ठित नृपबाला ओ नीरबालार प्रवेश

श्रीश। (नमस्कार करिया) रसिकबाबु, आपनि एँदेर बलुन आमादेर येन मार्जना करेन।

विपिन। आमरा यदि भ्रमेओ ओँदेर लज्जा वा भयेर कारण हइ तबे तार चेये दुःखेर विषय आमादेर पक्षे आर किछुइ हते पारे ना, सेजन्ये यदि क्षमा ना करेन तबे—

रसिक। विलक्षण! क्षमा चेये अपराधिनीदेर अपराध आरओ बाड़ाबेन ना। एँदेर अल्प वयस, मान्य अतिथिदेर किरकम सम्भाषण करा उचित ता यदि एँरा हठात् भुले गिये नतमुखे दाँड़िये थाकेन ता हले आपनादेर प्रति असद्भाव कल्पना करे एँदेर आरओ लज्जित करबेन ना। नृपदिदि नीरदिदि, की बल भाइ। यदिओ एखनओ तोमादेर चोखेर पाता शुकोय नि तबु एँदेर प्रति तोमादेर मन ये विमुख नय से कथा कि जानाते पारि।

नृप ओ नीरु लज्जित निरुत्तर

ना, एकटु आड़ाले जिज्ञासा करा दरकार।

(जनान्तिके) भद्रलोकदेर एखन की बलि बलो तो भाइ। बलब कि, तोमरा यत शीघ्र पार विदाय हओ।

आपनि......करेन—आप इनलोगों से कहिए कि हमलोगों को क्षमा करें।

आमरा......ना—हमलोग भूल से भी यदि इनलोगों की लज्जा अथवा भय के कारण हों तब उससे बढ़ कर दुःख की बात हमलोगों के लिए और कुछ भी नहीं हो सकती; **सेजन्ये......तबे**—उसके लिए यदि क्षमा न करेंगी तो फिर।

क्षमा......ना—क्षमा माँग कर अपराधिनियों का अपराध और न बढ़ाएँ; **एँदेर**—इनका; **मान्य......गिये**—सम्मान्य अतिथियों की कैसे अभ्यर्थना करनी चाहिए उसे यदि ये अकस्मात् भूल कर; **नतमुखे......ना**—नतशिर खड़ी रहें तो अपने प्रति असद्भाव की कल्पना कर इनको और अधिक लज्जित न करें; **की......भाइ**—क्या कहती हो भाई; **यदिओ......पारि**—यद्यपि अभी तक तुमलोगों की आँखों की पलकें सूखी नहीं हैं फिर भी इनलोगों के प्रति तुमलोगों का मन प्रतिकूल नहीं है, क्या यह बात जता सकता हूँ।

ना......दरकार—नहीं, जरा ओट में पूछना जरूरी है।

भद्रलोकदेर.....भाइ—भद्रलोगों से अब क्या कहूँ बताओ तो भाई; **बलब..... हओ**—कह दूँ क्या, तुमलोग जितनी जल्दी हो सके विदा हो जाओ।

नीरबाला। (मृदुस्वरे) रसिकदादा, की बक तार ठिक नेइ, आमरा कि ताइ बलेछि, आमरा कि जानतुम एँरा एसेछेन।

रसिक। (श्रीश ओ विपिनेर प्रति) एँरा बलछेन--

सखा, की मोर करमे लेखि--
तापन बलिया तपने डरिनु,
चाँदेर किरण देखि।

एर उपरे आपनादेर आर किछु बलबार आछे?

नीरबाला। (जनान्तिके) आः रसिकदादा, की बलछ तार ठिक नेइ। ओ कथा आमरा कखन बललुम।

रसिक। (श्रीश ओ विपिनेर प्रति) एँदेर मनेर भावटा आमि सम्पूर्ण व्यक्त करते पारि नि बले एँरा आमाके भर्त्सना करछेन। एँरा बलते चान चाँदेर किरण बललेओ यथेष्ट बला हय ना—तार चेये आरओ यदि--

नीरबाला। (जनान्तिके) तुमि अमन कर यदि ता हले आमरा चले याब।

रसिक। सखि, न युक्तम् अकृतसत्कारम् अतिथिविशेषम् उज्झित्वा स्वच्छन्दतो गमनम्।

(श्रीश ओ विपिनेर प्रति) एँरा बलछेन एँदेर यथार्थ मनेर

की......नेइ--क्या बकते हो उसका ठीक नहीं; **आमरा......बलेछि**--हमलोगों ने क्या यह कहा है; **आमरा......एसेछेन**--हमलोग क्या जानती थीं कि ये आए हैं।

एँरा बलछेन—ये कहती हैं; **की......लेखि**—मेरे भाग्य में न जाने क्या लिखा है; **तापन......देखि**--चाँद की किरण देख कर जलाने वाला सूर्य समझ कर डरती रही; **एर......आछे**—इस पर आपलोगों को और कुछ कहना है।

ओ......बललुम--भला वह बात हमलोगों ने कब कही।

एँदेर......करछेन--इन लोगों के मन के भाव को पूरी तरह से मैं व्यक्त नहीं कर सका इसलिए ये लोग मेरी भर्त्सना कर रही हैं; **एँरा......ना**--ये कहना चाहती हैं चाँद की किरण कहने पर भी यथेष्ट कहना नहीं हुआ; **तार......यदि**--उसकी अपेक्षा और भी यदि।

तुमि......याब—तुम यदि इस तरह से करोगे तो हमलोग चली जाएंगी।

भावटि यदि आपनादेर काछे व्यक्त करे बलि, ता हले एँरा लज्जाय ए घर थेके चले याबेन।

नीरबाला ओ नृपबालार प्रस्थानोद्यम

श्रीश। रसिकबाबुर अपराधे आपनारा निर्दोषदेर साजा देबेन केन। आमरा तो कोनोप्रकार प्रगल्भता करि नि।

नृपबाला ओ नीरबालार न ययौ न तस्थौ भाव

विपिन। (नीरके लक्ष्य करिया) पूर्वकृत कोनो अपराध यदि थाके तो क्षमा-प्रार्थनार अवकाश कि देबेन ना।

रसिक। (जनान्तिके) एइ क्षमाटुकुर जन्य बेचारा अनेकदिन थेके सुयोग प्रत्याशा करछे।

नीरबाला। (जनान्तिके)अपराध की हयेछे ये क्षमा करते याव।

रसिक। (विपिनेर प्रति) इनि बलछेन आपनार अपराध एमन मनोहर ये, ताके इनि अपराध बले लक्ष्यइ करेन नि। किन्तु, आमि यदि सेइ खाताटि हरण करते साहसी हतेम तबे सेटा अपराध हत—आइनेर विशेष धाराय एइरकम लिखछे।

विपिन। ईर्षा करबेन्न ना रसिकबाबु। आपनारा सर्वदाइ अपराध करबार सुयोग पान एवं सेजन्ये दण्डभोग करे कृतार्थ हन, आमि दैवक्रमे एकटा अपराध करबार सुयोग पेयेछिलुम—किन्तु एतइ अधम ये दण्डनीय बलेओ गण्य हलेम ना, क्षमा पाबार योग्यताओ लाभ करलेम ना।

बलि—कहूँ; **ता.....याबेन**—तो लज्जा के मारे ये लोग इस कमरे से चली जाएंगी। **साजा......केन**—सजा क्यों देंगी; **करि नि**—नहीं की।

एइ......करछे—इसी क्षमा के लिए बेचारा बहुत दिनों से सुयोग की प्रत्याशा कर रहा था।

अपराध......याब—अपराध ही क्या हुआ है जो क्षमा करने जाऊँ।

इनि बलछेन—ये कह रही हैं; **एमन**—ऐसा; **ये**—कि; **ताके**—उसे; **साहसी हतेम**—साहस करता; **तबे......हत**—तो वह अपराध होता; **आइनेर**—कानून की; **धाराय**—धारा में; **एइरकम लिखछे**—ऐसा ही लिखा है।

पान—पाते हैं; **पेयेछिलुम**—पाया था; **एतइ**—इतना; **गण्य......ना**—गण्य नहीं हुआ; **पाबार......ना**—पाने की योग्यता भी प्राप्त नहीं की।

रसिक। विपिनबाबु, एकेबारे हताश हबेन ना। शास्ति अनेक समय विलम्बे आसे किन्तु निश्चित आसे। फस् करे मुक्ति ना पेतेओ पारेन।

[भृत्येर प्रवेश

भृत्य। जलखाबार तैरि।

[नृपबाला ओ नीरबालार प्रस्थान

श्रीश। आमरा कि दुर्भिक्षेर देश थेके आसछि रसिकबाबु। जलखाबारेर जन्ये एत ताड़ा केन।

रसिक। मधुरेण समापयेत्।

श्रीश। (निश्वास फेलिया) किन्तु समापनटा तो मधुर नय। (जनान्तिके विपिनेर प्रति) किन्तु विपिन, एँदेर तो प्रतारणा करे येते पारब ना।

विपिन। (जनान्तिके) ता यदि करि तबे आमरा पाषण्ड।

श्रीश। (जनान्तिके) एखन आमादेर कर्तव्य की।

विपिन। (जनान्तिके) से कि आर जिज्ञासा करते हबे।

रसिक। आपनारा देखछि भय पेये गेछेन। कोनो आशङ्का नेइ, शेषकाले येमन करेइ होक आमि आपनादेर उद्धार करबइ।

श्रीश ओ विपिन आहारे प्रवृत्त हइल

शास्ति—दण्ड; **विलम्बे आसे**—विलम्ब से आता है; **फस्......पारेन**—हो सकता है झट से मुक्ति न भी मिले।

जलखाबार तैरि—जलपान तैयार है।

थेके—से; **आसछि**—आ रहे हैं; **एत......केन**—इतनी शीघ्रता क्यों।

निश्वास फेलिया—निश्वास ले कर; **समापनटा**—समाप्ति; **एँदेर......ना**—इनलोगों से छल करके तो जा नहीं सकेंगे।

ता......पाषण्ड—ऐसा यदि करें तो हमलोग पाखण्डी हैं।

एखन......की—अब हमलोगों का कर्तव्य क्या है।

से......हबे—क्या वह अभी पूछना होगा।

आपनारा......गेछेन—देख रहा हूँ आपलोग भयभीत हो गए हैं; **कोनो......नेइ**—कोई आशङ्का नहीं; **शेषकाले......करबइ**—अन्त में जैसे भी हो मैं आपलोगों का उद्धार करूँगा ही (अवश्य बचाऊंगा)।

[घरेर अन्यदिके अक्षय ओ जगत्तारिणीर प्रवेश

जगत्तारिणी। देखले तो बावा, केमन छेले दुटि।

अक्षय। मा, तोमार पछन्द भालो, ए कथा तो आमि अस्वीकार करते पारि ने।

जगत्तारिणी। मेयेदेर रकम देखले तो बाबा, एखन कान्ना-काटि कोथाय गेछे तार ठिक नेइ।

अक्षय। ओइ तो ओदेर दोष। किन्तु मा, तोमाके निजे गिये आशीर्वाद करे छेलेदुटिके देखते हच्छे।

जगत्तारिणी। से कि भालो हबे अक्षय। ओरा कि पछन्द जानियेछे।

अक्षय। खुब जानियेछे। एखन तुमि निजे एसे आशीर्वाद करे गेलेइ चटपट स्थिर हये याय।

जगत्तारिणी। ता बेश, तोमरा यदि बल, ता याब, आमि ओदेर मार वयसी, आमार लज्जा किसेर।

[पुरबालार प्रवेश

जगत्तारिणी। की आर बलब पुरो, एमन सोनार चाँद छेले।

देखले......दुटि—देख तो लिया बेटा, दोनों लड़के कैसे हैं।

पछन्द—पसन्द।

मेयेदेर......तो—लड़कियों का ढंग देखा न; **एखन......नेइ**—अब रोना धोना कहाँ चला गया इसका ठीक नहीं।

ओइ......दोष—उनमें वही तो दोष है; **तोमाके.....गिये**—तुम्हें स्वयं जा कर; **देखते हच्छे**—देखना होगा।

ओरा—उन्होंने; **जानियेछे**—जताया है।

एखन.....याय—अब तुम्हारे स्वयं आ कर आशीर्वाद कर जाने से ही चटपट स्थिर हो जाएगा।

ता......किसेर—तो फिर ठीक है, यदि तुमलोग कहते हो, तो जाऊँगी, मैं (उनकी) माँ की उम्र की हूँ, मुझ लज्जा किस बात की।

की......पुरो—अब और क्या कहूँ पुरो; **एमन......छेले**—लड़के ऐसे सोने के चाँद हैं।

पुरबाला। ता जानतुम। नीर-नृपर अदृष्टे कि खाराप छेले हते पारे।

अक्षय। तादेर वड़दिदिर अदृष्टेर आँच लेगेछे आर कि।

पुरबाला। आच्छा, थामो। याओ देखि, तादेर सङ्गे एकटु आलाप करो गे; किन्तु शैल गेल कोथाय।

अक्षय। से खुशि हये दरजा बन्ध करे पुजोय बसेछे।

(श्रीश ओ विपिनेर निकट आसिया) व्यापारटा की। रसिकदा, आज-काल तो खुब खाओयाच्छ देखछि। प्रत्यह याके दुवेला देखछ ताके हठात् भुले गेले?

रसिक। एँदेर नूतन आदर, पाते या पड़छे तातेइ खुशि हच्छेन, तोमार आदर पुरोनो हये एल, तोमाके नतुन करे खुशि करि एमन साध्य नेइ भाइ।

अक्षय। किन्तु शुनेछिलेम, आजकेर समस्त मिष्टान्न एवं ए परिवारेर अनास्वादित मधु उजाड़ करे नेबार जन्ये दुटि अख्यात-

---

ता जानतुम—सो (मैं) जानती थी; **अदृष्टे**—भाग्य में; **कि......पारे**—क्या खराब लड़के हो सकते हैं।

तादेर......कि—उनलोगों की बड़ी दीदी के भाग्य की आँच लगी है और क्या।

थामो—चुप रहो, रुको; **याओ**—जाओ; **तादेर......गे**—उनलोगों के साथ बातचीत करो; **गेल कोथाय**—गई कहाँ।

से......बसेछे—वह खुश हो कर दरवाज़ा बन्द करके पूजा करने बैठी है।

आसिया—आ कर; **व्यापारटा की**—बात क्या है; **खायोआच्छ**—खिला रहे हो; **देखछि**—देख रहा हूँ; **प्रत्यह......गेले**—जिसे रोज दोनों वेला देखते हो उसे अकस्मात् भूल गए।

एँदेर—इनलोगों का; **पाते......हच्छेन**—थाल में जो आ रहा है उसीमें खुश हो रहे हैं; **हये एल**—हो आया; **तोमाके....भाइ**—तुम्हें नये सिरे से खुश करूँ ऐसी सामर्थ्य नहीं है भाई।

शुनेछिलेम—सुना था; **आजकेर**—आज का; **ए परिवारेर**—इस परि-वार का; **उजाड़......जन्ये**—निःशेष कर ले जाने के लिए;

नामा युवकेर अभ्युदय हबे––एँरा ताँदेरइ अंशे भाग बसाच्छेन नाकि। ओहे रसिकदा, भुल कर नि तो ?

रसिक। भुलेर जन्येइ तो आमि विख्यात। बड़ोमा जानेन ताँर बुड़ो रसिककाका याते हात देबेन तातेइ गलद हबे।

अक्षय। बल की रसिकदादा। करेछ की। से दुटि छेलेके कोथाय पाठाले।

रसिक। भ्रमक्रमे ताँदेर भुल ठिकाना दियेछि।

अक्षय। से बेचारादेर की गति हबे।

रसिक। विशेष अनिष्ट हबे ना। ताँरा कुमारटुलिते नील-माधव चौधुरिर बाड़िते एतक्षणे जलयोग समाधा करेछेन। वनमाली भट्टाचार्य ताँदेर तत्त्वावधानेर भार नियेछेन।

अक्षय। ता येन बुझलुम, मिष्टान्न सकलेरइ पाते पड़ल, किन्तु तोमारइ जलयोग किछु कटु रकम हबे। एइवेला भ्रम संशोधन करे नाओ। श्रीशबाबु, विपिनबाबु, किछु मने करो ना, एर मध्ये एकटु पारिवारिक रहस्य आछे।

एँरा......नाकि—ये लोग उन्हीं लोगों के अंश में हिस्सा बँटा रहे हैं क्या; **भुल..... तो**–भूल तो नहीं की।

भुलेर......विख्यात—मैं तो भूल के लिए ही विख्यात हूँ; **बड़ोमा**—बड़ी माँ (जगत्तारिणी); **जानेन**—जानती हैं; **ताँर......हबे**—उनके बूढ़े रसिककाका जिसमें हाथ देंगे उसमें भूल होगी।

बल की—क्या कहते हो; **करेछ की**—क्या किया है; **से......पाठाले**—उन दोनों लड़कों को कहाँ भेजा।

भ्रमक्रमे—भूल से; **ताँदेर.....दियेछि**—उनलोगों को गलत पता दे दिया।

ताँरा—वे; **बाड़िते**—मकान में; **एतक्षणे......करेछेन**—अबतक जलपान समाप्त कर चुके हैं; **ताँदेर.......नियेछेन**—उनकी देखरेख का भार लिया है।

ता......बुझलुम—सो तो समझा; **मिष्टान्न......पड़ल**—मिठाई सभी के थाल में पड़ी; **तोमारइ**—तुम्हारी ही; **किछु......हबे**—कुछ कटु प्रकार का होगा; **एइवेला.....नाओ**—अब भ्रम निवारण कर लो; **किछु.....आछे**—कुछ खयाल न करना, इसमें कुछ पारिवारिक रहस्य है।

श्रीश। सरलप्रकृति रसिकबाबु से-रहस्य आमादेर निकट भेद करेइ दियेछेन। आमादेर फाँकि दिये आनेन नि।

विपिन। मिष्टान्नेर थालाय आमरा अनधिकार आक्रमण करि नि, शेष पर्यन्त तार प्रमाण दिते प्रस्तुत आछि।

अक्षय। बल की विपिनबाबु। ता हले चिरकुमार-सभाके चिरजन्मेर मतो काँदिये एसेछो? जेनेशुने, इच्छापूर्वक?

रसिक। ना ना, तुमि भुल करछ अक्षय।

अक्षय। आबार भुल? आज कि सकलेरइ भुल करबार दिन हल नाकि?

गान

भुले भुले आज भुलमय।
भुलेर लताय बातासेर भुले,
फुले फुले होक फुलमय।
आनन्द ढेउ भुलेर सागरे
उछलिया होक कूलमय।

रसिक। ए की, बड़ोमा आसछेन ये।

अक्षय। आसबारइ तो कथा। उनि तो कुमारटुलिर ठिकानाय याबेन ना।

से......दियेछेन—वह रहस्य हमलोगों के निकट प्रकट कर दिया है; **आमादेर......नि**—हमलोगों को भुलावे में डाल कर नहीं लाए हैं।

शेष......आछि—अन्त तक उसका प्रमाण देने को (हमलोग) तैयार हैं।

चिरजन्मेर......एसेछो—जन्म (जीवन) भर के लिए रुला आए हो; **जेनेशुने**—सोच समझ कर। **भुल करछ**—भूल कर रहे हो।

आबार भुल—फिर भूल; **आज......नाकि**—आज क्या सभी के भूल करने का दिन है।

भुले......भुलमय—भूलों से आज का दिन भूलमय हो गया है; **भुलेर...... फुलमय**—भूल की लता हवा की भूल से फुलों से लद जायँ; **ढेउ**—लहर; **भुलेर सागरे**—भूल के सागर में; **उछलिया....कूलमय**—उद्वेलित हो कर किनारे को छा ले।

ए......ये—यह क्या, वड़ी माँ आ रही हैं।

आसबारइ......कथा—आने की ही तो बात है; **उनि......ना**—वे तो

जगत्तारिणीर प्रवेश। श्रीश ओ विपिनेर भूमिष्ठ हइया प्रणाम। दुइजनके दुइ मोहर दिया जगत्तारिणीर आशीर्वाद। जनान्तिके अक्षयेर सहित जगत्तारिणीर आलाप।

अक्षय। मा बलछेन, तोमादेर आज भालो करे खाओया हल ना समस्तइ पाते पड़े रइल।

श्रीश। आमरा दुबार चेये निये खेयेछि।

विपिन। येटा पाते पड़े आछे, ओटा तृतीय किस्ति।

श्रीश। ओटा ना पड़े थाकले आमादेरइ पड़े थाकते हत।

जगत्तारिणी। (जनान्तिके) ता हले तोमरा ओँदेर बसिये कथावार्ता कओ बाछा, आमि आसि।

[प्रस्थान

रसिक। ना, ए भारि अन्याय हल।

अक्षय। अन्यायटा की हल।

रसिक। आमि ओँदेर बार बार करे बले एसेछि ये, ओँरा केवल आज आहारटि करेइ छुटि पाबेन, कोनोरकम बधबन्धनेर आशङ्का नेइ। किन्तु—

कुमारटोली के पते पर नहीं जाएंगी; **भूमिष्ठ हइया**—जमीन पर लेट कर; **दिया**—दे कर।

मा......रइल—माँ कह रही हैं, तुमलोगों का आज अच्छी तरह खाना नहीं हुआ, सब थाली में ही पड़ा रह गया।

आमरा......खेयेछि—हमलोगों ने दो बार माँग कर खाया है।

येटा......किस्ति—जो थाली में पड़ा हुआ है वह तीसरी किश्त है।

ओटा......हत—वह न पड़ा रहता तो हमलोगों को ही पड़ा रहना पड़ता।

ता......कओ—तो फिर तुमलोग उनलोगों को बैठा कर बातचीत करो; **बाछा**—(स्नेह संबोधन) वत्स; **आमि आसि**—मैं चलती हूँ (वैसे 'आसि' का अर्थ 'आती हूँ' है, प्रियजन से मिल कर जाने पर बंगाल में 'जाना' नहीं कहते)।

ए......हल—यह भारी अन्याय हुआ।

अन्यायटा......हल—अन्याय क्या हुआ।

आमि......नेइ—मैं उनलोगों से बारबार कहता आया हूँ कि आज वे केवल आहार करके ही छुटी पा जाएंगे, किसी प्रकार के बन्धन की आशंका नहीं है।

श्रीश। ओर मध्ये किन्तुटा कोथाय रसिकबाबु, आपनि अत चिन्तित हच्छेन केन।

रसिक। बलेन की श्रीशबाबु, आपनादेर आमि कथा दियेछि यखन––

विपिन। ता बेश तो, एमनइ की महाविपदे फेलेछेन।

श्रीश। मा आमादेर ये आशीर्वाद करे गेलेन आमरा येन तार योग्य हइ।

रसिक। ना ना, श्रीशबाबु, से कोनो काजेर कथा नय। आपनारा ये दाये पड़े भद्रतार खातिरे––

विपिन। रसिकबाबु, आमादेर प्रति अविचार करबेन ना—दाये पड़े––

रसिक। दाय नय तो की मशाय। से किछुतेइ हबे ना। आमि वरञ्च सेइ छेलेदुटोके वनमालीर हात छाड़िये कुमारटुलि थेके एखनओ फिरिये आनब, तबु––

श्रीश। आपनार काछे की अपराध करेछि रसिकबाबु।

रसिक। ना ना, ए तो अपराधेर कथा हच्छे ना। आपनारा

कोथाय––कहाँ है; **आपनि......केन**—आप इतने चिन्तित क्यों हो रहे हैं।

आपनादेर......यखन—आपलोगों को मैंने जब वचन दिया है।

ता......फेलेछेन––अच्छा तो ठीक तो है, (आपने) ऐसे किस बड़े संकट में डाल दिया।

मा......हइ––माँ हमलोगों को आशीर्वाद जो दे गई हैं हमलोग जिसमें उसके योग्य हों।

से......नय––वह कोई काम की बात नहीं है; **आपनारा......खातिरे**—आपलोग जो फेर में पड़ कर, भद्रता की वज़ह से।

अविचार......ना––अन्याय नहीं करेंगे; **दाये पड़े**—फेर में पड़ कर।

दाय......मशाय—फेर नहीं तो क्या महाशय; **से......ना**––वह किसी तरह नहीं होगा; **हात छाड़िये**––हाथ से छुड़ा कर; **थेके**––से; **एखनओ.....आनब**—अभी लौटा लाऊँगा।

आपनार......करेछि––(हमने) आपके निकट क्या अपराध किया है।

ए......ना—यह तो अपराध की बात नहीं हो रही है;

भद्रलोक, कौमार्यव्रत अवलम्बन करेछेन——आमार अनुरोधे पड़े परेर उपकार करते एसे शेषकाले——

विपिन। शेषकाले निजेर उपकार करे फेलब एटुकु आपनि सह्य करते पारबेन ना——एमनि हितैषी बन्धु।

श्रीश। आमरा येटाके सौभाग्य बले स्वीकार करछि——आपनि तार थेके आमादेर वञ्चित करते चेष्टा करछेन केन।

रसिक। शेषकाले आमाके दोष देबेन ना।

विपिन। निश्चय देब यदि ना आपनि स्थिर हये शुभकर्मे सहायता करेन।

रसिक। आमि एखनओ सावधान करछि——

गतं तद्गाम्भीर्यं तटमपि चितं जालिकशतैः
सखे हंसोत्तिष्ठ त्वरितममुतो गच्छ सरसः।
से गाम्भीर्य गेल कोथा, नदीतट हेरो होथा
जालिकेरा जाले फेले घिरे——
सखे हंस, ओठो ओठो, समय थाकिते छोटो
हेथा हते मानसेर तीरे।

श्रीश। किछुतेइ ना। ता, आपनार संस्कृत श्लोक छुँड़े मारलेओ सखा हंसरा किछुतेइ एखान थेके नड़छेन ना।

करते एसे——करने के लिए आ कर।

शेषकाले......ना——अन्त में अपना उपकार कर लेंगे, क्या इतना भी आप सहन नहीं कर सकेंगे।

आमरा......केन——हमलोग जिसे सौभाग्य मान कर स्वीकार कर रहे हैं, आप उससे हमलोगों को वञ्चित करने की चेष्टा क्यों कर रहे हैं।

शेषकाले......ना——अन्त में मुझे दोष न दीजिएगा।

आमि......करछि——मैं अब भी सवाधान करता हूँ।

से——वह; **गेल कोथा**——गया कहाँ; **हेरो**——देखो; **होथा**——वहाँ; **जालिकेरा......घिरे**——मछुए जाल डाले घिर रहे हैं; **ओठो**——उठो; **समय...... छोटो**——समय रहते भागो; **हेथा हते**——यहाँ से।

किछुतेइ ना——किसी तरह भी नहीं; **ता......ना**——सो आपके संस्कृत श्लोक फेंक कर मारने पर भी हंस-बन्धु किसी भी तरह यहाँ से नहीं हिलेंगे।

रसिक। स्थान खाराप बटे, नड़बार जो नेइ। आमि तो अचल हये बसे आछि—हाय हाय—

अयि कुरङ्गि तपोवनविभ्रमात्
उपगतासि किरातपुरीमिमाम्।

[भृत्येर प्रवेश

भृत्य। चन्द्रबाबु एसेछेन।

अक्षय। एइखानेइ डेके निये आय।

[भृत्येर प्रस्थान

रसिक। एकेबारे दारोगार हाते चोर दुटिके समर्पण करे देओया होक।

[चन्द्रबाबुर प्रवेश

चन्द्रबाबु। एइ-ये, आपनारा एसेछेन। पूर्णबाबुकेओ देखछि।

अक्षय। आज्ञे ना, आमि पूर्ण नइ, तबु अक्षय बटे।

चन्द्रबाबु। अक्षयबाबु। ता बेश हयेछे, आपनाकेओ दरकार छिल।

अक्षय। आमार मतो अदरकारि लोकके ये-दरकारे लागाबेन तातेइ लागते पारि—बलुन की करते हबे।

चन्द्रबाबु। आमि भेबे देखेछि, आमादेर सभा थेके कुमार-

स्थान......नेइ—जरूर यह स्थान खराब है, हिलने का उपाय नहीं; **हये**—हो कर; **बसे आछि**—बैठा हूँ।

एसेछेन—आए हैं।

एइखानेइ......आय—यहीं बुला ले आ।

एकेबारे......होक—सीधे दारोगा के हाथों में दोनों चोरों को समर्पण कर दिया जाय।

आपनारा एसेछेन—आपलोग आए हैं; **पूर्णबाबुकेओ देखछि**—पूर्णबाबू को भी देख रहा हूँ।

आज्ञे......बटे—जी नहीं, मैं पूर्ण नहीं हूँ, फिर भी अक्षय ज़रूर हूँ (यहाँ 'पूर्ण' और 'अक्षय' शब्द में श्लेष है)।

ता......छिल—यह बहुत अच्छा हुआ, आपकी भी ज़रूरत थी।

आमार......हबे—मेरे जैसे ग़ैरज़रूरी आदमी को जिस ज़रूरी काम में लगाएँ उसीमें लग सकता हूँ, कहिए क्या करना होगा।

व्रतेर नियम ना ओठाले सभाके अत्यन्त संकीर्ण करे राखा हच्छे। श्रीशबाबु विपिनबाबुके एइ कथाटा एकटु भालो करे बोझाते हबे।

अक्षय। भारि कठिन काज, आमार द्वारा हबे किना सन्देह।

चन्द्रबाबु। एकबार एकटा मतके भालो बले ग्रहण करेछि बलेइ सेटाके परित्याग करबार क्षमता दूर करा उचित नय। मतेर चेये विवेचनाशक्ति बड़ो। श्रीशबाबु, विपिनबाबु——

श्रीश। आमादेर अधिक बला बाहुल्य——

चन्द्रबाबु। केन बाहुल्य। आपनारा युक्तितेओ कर्णपात करबेन ना?

विपिन। आमरा आपनारइ मते——

चन्द्रबाबु। आमार मत एकसमय भ्रान्त छिल से कथा स्वीकार करछि, आपनारा एखनओ सेइ मतेइ।

रसिक। एइ-ये पूर्णबाबु आसछेन। आसुन आसुन।

[पूर्णर प्रवेश

चन्द्रबाबु। पूर्णबाबु, तोमार प्रस्तावमते आमादेर सभा थेके कुमारव्रत तुले देबार जन्येइ आज आमरा एखाने मिलित हयेछि। किन्तु, श्रीशबाबु एवं विपिनबाबु अत्यन्त दृढ़प्रतिज्ञ, एखन ओँदेर बोझाते पारलेइ——

रसिक। ओँदेर बोझाते आमि त्रुटि करि नि चन्द्रबाबु——

आमि......देखेछि—मैंने सोच कर देखा है; **ना ओठाले**—नहीं हटाने पर; **संकीर्ण......हच्छे**——संकीर्ण बना कर रखा जा रहा है; **एइ......हबे**——यह बात ज़रा अच्छी तरह समझानी होगी।

आमार......किना—मेरे द्वारा होगा या नहीं।

करेछि—किया है; **बलेइ**—इसीलिए; **सेटाके**——उसे; **करा**——करना; **नय**—नहीं; **मतेर चेये**—मत की अपेक्षा।

आमादेर......बाहुल्य—हमलोगों से अधिक कहना व्यर्थ है।

आपनारा.......मतेइ—आपलोग क्या अब भी उसी मत के हैं।

आसछेन—आ रहे हैं; **आसुन**——आइए।

तुले.......हयेछि——हटा देने के लिए ही हमलोग यहाँ एकत्र हुए हैं; **एखन ......पारलेइ**——अब उनलोगों को समझा सकने पर ही।

चन्द्रबाबु। आपनार मतो वाग्मी यदि फल ना पेये थाकेन ता हले—

रसिक। फल या पेयेछि—ता 'फलेन परिचीयते'।

चन्द्रबाबु। की बलछेन भालो बुझते पारछि ने।

अक्षय। ओहे रसिकदा, चन्द्रबाबुके खुब स्पष्ट करे बुझिये देओया दरकार। आमि दुटि प्रत्यक्ष प्रमाण एखनइ एने उपस्थित करछि।

श्रीश। पूर्णबाबु, भालो आछेन तो?

पूर्ण। हाँ।

विपिन। आपनाके एकटु शुकनो देखाच्छे।

पूर्ण। ना, किछु ना।

श्रीश। आपनादेर परीक्षार आर तो देरि नेइ।

पूर्ण। ना।

[नृपबाला ओ नीरबालाके लइया अक्षयेर प्रवेश

अक्षय। (नृपबाला ओ नीरबालार प्रति) इनि चन्द्रबाबु, इनि तोमादेर गुरुजन, एँके प्रणाम करो।

नृप ओ नीरर प्रणाम

चन्द्रबाबु, नूतन नियमे आपनादेर सभाय एइ दुटि सभ्य बाड़ल।

चन्द्रबाबु। बड़ो खुशि हलेम। एँरा के।

अक्षय। आमार सङ्गे एँदेर सम्बन्ध खुब घनिष्ठ। एँरा आमार दुटि श्याली। श्रीशबाबु एवं विपिनबाबुर सङ्गे एँदेर सम्बन्ध

आपनार......हले—आपके जैसा वाक्पटु यदि फल न पा सके (सफल न हो) तो। **फल......पेयेछि**—जो फल पाया है।

एखनइ......करछि—अभी ला कर उपस्थित करता हूँ।

भालो......तो—अच्छे तो हैं।

आपनाके.......देखाच्छे—आप कुछ उदास दीखते हैं।

आपनादेर......नेइ—आपलोगों की परीक्षा में अब तो देरी नहीं है।

लइया—ले कर। **इनि**—ये; **एँके**—इन्हें।

एइ......बाड़ल—ये दो सदस्य बढ़ गए।

बड़ो......हलेम—अत्यन्त आनन्दित हुआ; **एँरा के**—ये कौन हैं।

एँदेर—इनलोगों का; **श्याली**—साली; **आरओ**—और भी; **एँदेर......**

शुभलग्ने आरओ घनिष्ठतर हबे। एँदेर प्रति दृष्टि करलेइ बुझबेन, रसिकबाबु एइ युवक दुटिर ये मतेर परिवर्तन करियेछेन से केवलमात्र वाग्मितार द्वारा नय।

चन्द्रबाबु। बड़ो आनन्देर कथा।

पूर्णबाबु। श्रीशबाबु, बड़ो खुशि हलुम। विपिनबाबु, आपनादेर बड़ो सौभाग्य। आशा करि अबलाकान्तबाबुओ वञ्चित हन नि, ताँरओ एकटि——

[निर्मलार प्रवेश

चन्द्रबाबु। निर्मला, शुने खुशि हबे, श्रीशबाबु एवं विपिनबाबुर सङ्गे एँदेर विवाहेर सम्बन्ध स्थिर हये गेछे। ता हले कुमारव्रत उठिये देओया सम्बन्धे प्रस्ताव उत्थापन कराइ बाहुल्य।

निर्मला। किन्तु अबलाकान्तबाबुर मत तो नेओया हय नि——ताँके एखाने देखछि ने——

चन्द्रबाबु। ठिक कथा, आमि सेटा भुलेइ गियेछिलुम, तिनि आज एखनओ एलेन ना केन।

रसिक। किछु चिन्ता करबेन ना, ताँर परिवर्तन देखले आपनारा आरओ आश्चर्य हबेन।

अक्षय। चन्द्रबाबु, एबारे आमाकेओ दले नेबेन। सभाटि ये-रकम लोभनीय हये उठल, एखन आमाके ठेकिये राखते पारबेन ना।

बुझबेन——इनलोगों को देखने से ही समझ जाएंगे; **रसिकबाबु......नय**——रसिकबाबू ने जो इन दो नवयुवकों का मत बदलवाया है वह केवल वाक्पटुता द्वारा नहीं। **वञ्चित......नि**——वञ्चित नहीं हुए।

शुने......हबे——सुन कर आनन्दित होओगी; **हये गेछे**——हो गया है।

नेओया......नि——नहीं लिया गया; **ताँके......ने**——उन्हें यहाँ नहीं देख रही हूँ।

आमि......केन——मैं वह भूल ही गया था, वे आज अभी तक क्यों नहीं आए।

करबेन ना——न करें; **ताँर**——उनका; **देखले**——देखने पर।

एबारे......नेबेन——इस बार मुझे भी दल में ले लीजिएगा; **सभाटि.....ना**——सभा जसी लोभनीय हो उठी है, अब (आप) मुझे रोक कर नहीं रख सकेंगे।

चन्द्रबाबु। आपनाके पाओया आमादेर सौभाग्य।

अक्षय। आमार सङ्गे सङ्गे आर एकटि सभ्यओ पाबेन। आजकेर सभाय ताँके किछुतेइ उपस्थित करते पारलेम ना। एखन तिनि निजेके सुलभ करबेन ना, वासरघरे भूतपूर्व कुमारसभाटिके साध्यमते पिण्डदान करे तार परे यदि देखा देन। एइबार अवशिष्ट सभ्यटि एलेइ आमादेर चिरकुमार-सभा सम्पूर्ण समाप्त हय।

[शैलबालार प्रवेश

शैलबाला। (चन्द्रबाबुके प्रणाम करिया) आमाके क्षमा करबेन।

श्रीश। एकी, अबलाकान्तबाबु—

अक्षय। आपनारा मत परिवर्तन करेछेन, इनि वेश परिवर्तन करेछेन मात्र।

रसिक। शैलजा भवानी एतदिन किरातवेश धारण करे छिलेन, आज इनि आबार तपस्विनीवेश ग्रहण करलेन।

चन्द्रबाबु। निर्मला, आमि किछुइ बुझते पारछि ने।

निर्मला। अन्याय! भारि अन्याय! अबलाकान्तबाबु—

अक्षय। निर्मला देवी ठिक बलेछेन—अन्याय। किन्तु, से विधातार अन्याय। एँर अबलाकान्त हओयाइ उचित छिल, किन्तु, भगवान एँके विधवा शैलबाला करे की मङ्गल साधन करछेन से रहस्य आमादेर अगोचर।

शैलबाला। (निर्मलार प्रति) आमि अन्याय करेछि, से

आपनाके......सौभाग्य—आपको पाना हमलोगों का सौभाग्य है।

आर......पाबेन—एक और सदस्य पाएंगे; **आजकेर......ना**—आज की सभा में उन्हें किसी भी तरह उपस्थित नहीं कर सका; **बासरघरे**—वासर गृह में। **तार......देन**—उसके बाद यदि दर्शन दें (तो संभव है); **एलेइ**—आते ही।

आमाके—मुझे।

आमि......ने—मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूँ।

ठिक बलेछेन—ठीक कहती हैं; **हओयाइ**—होना ही।

अन्यायेर प्रतिकार आमार द्वारा कि हबे? आशा करि काले समस्त संशोधन हये याबे।

पूर्ण। (निर्मलार निकटे आसिया) एइ अवकाशे आमि आपनार काछे क्षमा प्रार्थना करि, चन्द्रबाबुर पत्रे आमि ये स्पर्धा प्रकाश करेछिलुम से आमार पक्षे अन्याय हयेछिल—आमार मतो अयोग्य—

चन्द्रबाबु। किछु अन्याय हय नि पूर्णबाबु, आपनार योग्यता यदि निर्मला ना बुझते पारेन तो से निर्मलारइ विवेचनार अभाव।

[निर्मलार नतमुखे निरुत्तरे प्रस्थान

रसिक। (पूर्णेर प्रति जनान्तिके) भय नेइ पूर्णबाबु, आपनार दरखास्त मञ्जुर—प्रजापतिर आदालते डिक्री पेयेछेन—काल प्रत्युषेइ जारि करते बेरोबेन।

श्रीश। (शैलबालार प्रति) बड़ो फाँकि दियेछेन।

विपिन। सम्बन्धेर पूर्वेइ परिहासटा करे नियेछेन।

शैलबाला। परे ताइ बले निष्कृति पाबेन ना।

विपिन। निष्कृति चाइ ने।

रसिक। एइबारे नाटक शेष हल—एइखाने भरतवाक्य उच्चारण करे देओया याक—

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु।।

पेयेछेन—पाई है; **काल......बेरोबेन**—कल सबेरे ही जारी करने निकलिएगा।

बड़ो.....दियेछेन—बड़ा चकमा दिया है।

करे नियेछेन—कर लिया है।

परे......ना—तो इससे भविष्य के लिए छुटकारा नहीं पा गए।

चाइ ने—नहीं चाहता।

करे......याक—कर दिया जाय।

बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के तीन नाटकों का यह संग्रह (नाटच-सप्तक, खण्ड १) नागराक्षरों में प्रकाशित हो रहा है। बँगला गीतों में आए हुए शब्द हू-ब-हू वैसे ही हिन्दी में लिखे गए हैं। लेकिन बँगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से उसमें अन्तर है। बँगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण के लिये उन विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। पाठकों के सुभीते के लिए बँगला उच्चारण की कुछ विशेषताओं पर नीचे प्रकाश डालने की चेष्टा की जा रही है :

(१) बँगला में 'अ' का उच्चारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। वह 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है, जैसे अंग्रेज़ी के 'not' में 'o'। बँगला में लिखते हैं 'खाब', लेकिन पढ़ते हैं 'खाबो'-जैसा।

(२) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बँगला में काफ़ी स्वतन्त्रता है। यह लचीलापन हिन्दी में नहीं है। दीर्घ ई और ऊ अगर पद के आदि में हों तो उनका उच्चारण प्राय: ह्रस्व-जैसा होता है, जैसे, 'ईश्वर' का उच्चारण 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(३) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच-जैसा होता है, जैसे बँगला 'एक' में 'ए' का उच्चारण हिन्दी के 'ऐसा' में 'ऐ' के समान होता है।

(४) ऐकार का उच्चारण 'ओइ' जैसा होता है। जैसे, 'ऐकतान'—ओइकतान।

(५) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है, जैसे, हिमांशु—हिमांग्शु, बांला—बांग्ला।

(६) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्राय: हलन्त उच्चरित होता है, जैसे, आमार—आमार्, आँधार—आँधार्। लेकिन कविता में छन्दानुरोध से 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है, जैसे, 'बकुल-बागान' में 'बकुल' का उच्चारण बकुल (ो) जैसा भी हो सकता है।

(७) बँगला में 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में बराबर 'ख' होगा, जैसे, क्षिति—खिति; क्षमा—खमा। लेकिन अन्यत्र 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' होगा, जैसे, लक्षण—लक्खण।

(८) बँगला में 'ण' और 'न' दोनों का उच्चारण सदा 'न' ही होता है।

(९) बँगला में 'ब' और 'व' का अन्तर नहीं है। ये दोनों ही 'ब' पढ़े जाते हैं। तत्सम शब्दों के लिखने में भले ही 'व' को 'व' ही लिखा जाय लेकिन उसका उच्चारण 'ब' होता है। जैसे लिखा तो 'विवश' जाता है लेकिन पढ़ा 'बिबश' जाएगा।

(१०) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पड़े और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिये बँगला में 'ओय' लिखते हैं, जैसे, 'तिवारी' का 'तिओयारी'; 'हवा' का 'हाओया'। यहाँ 'ओया' का उच्चारण 'वा' ही होगा।

(११) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है, जैसे, यात्रा—जात्रा; योग—जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढ़ेंगे। जैसे, नियम—नियम; नयन—नयन; समय—समय।

(१२) बँगला में तीनों सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यञ्जन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है, जैसे, स्तब्ध—स्तब्ध; स्निग्ध—स्निग्ध।

(१३) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व हो कर मकार का लोप कर देता है, जैसे, छद्म—छद्दँ; पद्म—पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नहीं होता, जैसे, स्मरण—सँरण; स्मृति—सृँति।

(१४) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व हो कर यकार-वकार का लोप कर देगा, जैसे, भृत्य—भृत्त; नित्य—नित्त; वाद्य—वाद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है, जैसे, द्वार—दार; ज्वाला—जाला।

(१५) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त में रहने पर भी जकार हो जाता है, जैसे, सूर्य्य—सूर्ज्ज; धैर्य्य—धैर्ज्ज।

(१६) प्रस्तुत संग्रह में 'व' के बदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढ़ना चाहिए, जैसे, पाओया—पावा; खाओया—खावा, याओया—जावा।

बँगला व्याकरण संबंधी कुछ ज्ञातव्य बातें

ऊपर बँगला शब्दों की उच्चारण-संबंधी मुख्य विशेषताओं पर हम प्रकाश डाल चुके। अब बँला व्याकरण की चर्चा करने जा रहे हैं। व्याकरण की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त कर लेना पाठकों के लिये अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

(क) क्रियारूप

बँगला में क्रिया के विभिन्न रूप हैं। क्रिया के इन विविध रूपों में जो अपरिवर्तित अंश है वही धातु है। धातु-निर्णय का सहज उपाय यह है कि उत्तम पुरुष के

वर्त्तमान काल के धातुरूप के अन्तिम 'इ' को हटा देने से जो रूप रह जाता है वही धातु है, जैसे, आमि याइ (मैं जाता हूँ)। इसमें 'याइ' का 'इ' हटाने पर 'या' रह जाता है। 'या' धातु है। इसी प्रकार 'आमि कराइ' में 'करा' धातु है।

बँगला भाषा के दो रूप हैं: (१) साधु और (२) चलित। 'लिखा', 'शुना' साधु रूप है और 'लेखा' 'शोना' चलित रूप। क्रियापद 'कहियाछे' साधु रूप है और 'कयेछे' चलित रूप है। सर्वनामों के विषय में भी यही बात है। अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में कोई भेद नहीं है। बोलने में चलित रूप का प्रयोग होता है और लिखने में साधु रूप का। वैसे आजकल के लेखक लिखने में भी चलित रूप का ही प्रयोग करते हैं।

सकर्मक और अकर्मक के अलावा बँगला में क्रिया के दो भेद और हैं: समापिका और असमापिका।

धातु में जिस विभक्ति के योग से समापिका क्रियापद बनता है उसे 'तिङ' कहते हैं और उस क्रियापद को 'तिङन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से तिङन्त पद करे, करेन, करिस, करि आदि। इसी प्रकार जिस प्रत्यय के योग से असमापिका क्रियापद अथवा विशेष्य-विशेषण बने, उसे 'कृत' कहते हैं और उस पद को 'कृदन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से कृदन्त पद (असमापिका क्रिया) करिते (करते), करिया (करके), करते, क'रे आदि।

प्रेरणार्थक धातु (णिजन्त धातु) बनाने के लिये बँगला के धातुरूप में 'आ' प्रत्यय लगाते हैं, जैसे, कर् से णिजन्त धातु 'करा' होगा।

बँगला में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया नहीं बदलती, जैसे, मेयेरा याच्छे (लड़कियाँ जा रही हैं); छेलेरा याच्छे (लड़के जा रहे हैं)।

क्रिया के तीन काल हैं: भूत, भविष्यत् और वर्तमान। लेकिन बँगला की क्रिया का काल-विभाग हिन्दी की तरह नहीं होता।

बँगला के क्रियापद में वचन-भेद नहीं होता। जैसे, से याइतेछे (वह जा रहा है), ताहारा याइतेछे (वे लोग जा रहे हैं)।

पुरुष तीन प्रकार के हैं: प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष के गौरवार्थक और सामान्य दो रूप हैं, जैसे, तिनि करेन (वे करते हैं), से करे (वह करता है)। मध्यम पुरुष के गौरवार्थक, सामान्य और तुच्छ तीन रूप हैं, जैसे, आपनि करेन (आप करते हैं), तुमि कर (तुम करते हो) तथा तुइ करिस (तू करता है)। उत्तम पुरुष का केवल एक रूप है, जैसे, आमि करि (मैं करता हूँ)।

बँगला के काल-भेद तथा उनके नामों की जानकारी भी उपयोगी होगी। बँगला व्याकरणों में दो प्रकार से उनके नाम दिए हुए हैं। नित्यप्रवृत्त, विशुद्ध,

अद्यतन, अनद्यतन, परोक्ष, भूत-सामीप्य, वर्तमान-समीप्य आदि नाम संस्कृत व्याकरण के अनुकरण पर रखे गए हैं। सहज तरीके से समझने के लिये उनका नामकरण निम्नलिखित ढँग से किया जाता है :

नाम	उदाहरण (साधु)
नित्यवृत वर्तमान	करे (करता है)।
घटमान ,,	करितेछे (कर रहा है)।
पुराघटित ,,	करियाछे (किया है)।
अनुज्ञा ,,	कर (करो)।
साधारण अतीत	करिल (किया)।
नित्यवृत्त ,,	करित (करता)।
घटमान ,,	करितेछिल (कर रहा था)।
पुराघटित ,,	करियाछिल (किया था)।
साधारण भविष्यत्	करिबे (करेगा)।
अनुज्ञा ,,	करिओ (करना)।

क्रिया की विभक्तियाँ

(चलित)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	छे	छेन	छ	छिस	छि
पुराघटित ,,	एछे	एछेन	एछ	एछिस	एछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण ,,	ले	लेन	ले	लि	लाम
नित्यवृत्त ,,	त	तेन	ते	तिस	ताम
घटमान ,,	छिल	छिलेन	छिले	छिलि	छिलाम
पुराघटित ,,	एछिल	एछिलेन	एछिले	एछिलि	एछिलाम
साधारण भविष्यत्	बे	बेन	बे	बि	ब (बो)
अनुज्ञा ,,	बे	बेन	ओ	इस	—

(साधु)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	इतेछे	इतेछेन	इतेछ	इतेछिस	इतेछि
पुराघटित ,,	इयाछे	इयाछेन	इयाछ	इयाछिस	इयाछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	इल	इलेन	इले	इलि	इलाम
नित्यवृत्त ,,	इत	इतेन	इते	इतिस	इताम
घटमान ,,	इतेछिल	इतेछिलेन	इतेछिले	इतेछिलि	इते-छिलाम
पुराघटित ,,	इयाछिल	इयाछिलेन	इयाछिले	इयाछिलि	इया-छिलाम
साधारण भविष्यत्	इबे	इबेन	इबे	इबि	इब
अनुज्ञा ,,	इबे	इबेन	इओ (इयो)	इस	—

क्रिया की इन विभक्तियों के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है :

'काट्' (काटना) धातु के नित्यवृत्त वर्तमान का चलित और साधु रूप इस प्रकार होगा :

चलित	साधु
काटे, काटेन, काट, काटिस, काटि	चलित-जैसा ही होगा

घटमान अतीत का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप—काटछिल, काटछिलेन, काटछिले, काटछिलि तथा काटछिलाम।

साधु रूप—काटितेछिल, काटितेछिलेन, काटितेछिले, काटितेछिलि तथा काटितेछिलाम।

साधारण भविष्यत् का रूप इस प्रकार होगा :

चलित रूप—काटबे, काटबेन, काटबे, काटबि, काटबो।

साधु रूप—काटिबे, काटिबेन, काटिबे, काटिबि, काटिबो। इसी प्रकार अन्य रूप भी समझे जा सकते हैं।

बहुत लोग 'लाम' के स्थान पर 'लुम' अथवा 'लेम' का प्रयोग करते हैं, जैसे, 'काटलाम' (काटा) के बदले 'काटलुम' अथवा 'काटलेम' लिखते हैं।

इसी प्रकार 'ताम' के बदले 'तुम' अथवा 'तेम' का प्रयोग करते हैं, जैसे, 'काटताम' (काटता) के स्थान पर 'काटतुम' अथवा 'काटतेम' लिखते हैं।

साधारण अतीत में सकर्मक क्रिया में 'ले' तथा अकर्मक क्रिया में 'ल' लगाते हैं। यह चलित रूप में होता है, जैसे, करले (किया), खेले (खाया), दिले (दिया) तथा गेल (गया), शुल (सोया), दौड़ल (दौड़ा)। वैसे इसका व्यतिक्रम भी देखा जाता है। बहुत लोग 'करल' (किया), 'बलल' (बोला) आदि लिखते हैं।

(ख) कारक

बँगला में कारक सात हैं : कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध तथा अधिकरण।

कारक की कई विभक्तियों को मूल विभक्ति कहा जा सकता है। वैसे प्रयोग में आने वाली कई विभक्तियाँ मुख्यतः कर्ता, कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण सूचक हैं, जैसे, के, र, ते क्रमशः कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं। प्रत्येक कारक की अलग विभक्तियाँ नहीं हैं। निम्नलिखित कई विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न कारकों में प्रयुक्त होती हैं :

विभक्ति	कारकों के नाम
ए, य, ते, ये	कर्ता, करण, सम्प्रदान, अधिकरण
रा, एरा	कर्ता (बहुवचन)
दिगके, दिके, देर	कर्म, सम्प्रदान (बहुवचन)
के, रे	कर्म, सम्प्रदान (एकवचन)
एर (येर), र, कार	सम्बन्ध (एकवचन)
दिगेर, देर	सम्बन्ध (बहुवचन)
देर	कर्म (बहुवचन)
एते	अधिकरण (एकवचन)

बहुत स्थानों पर पद योग करने से कारक निष्पन्न होता है, जैसे, बाड़ी थेके (घर से), पेन्सिल दिये (पेन्सिल से), मानुषेर द्वारा (मनुष्य से) आदि। द्वारा, दिये आदि करणकारक-सूचक हैं तथा थेके, अपादानकारक-सूचक। लेकिन द्वारा, दिया आदि को अव्यय मानना उचित है। इनका प्रयोग विभक्ति के बाद भी मिलता है, जैसे, मन्त्रेर द्वारा (मन्त्र से)। इसमें 'एर' सम्बन्ध कारक की विभक्ति है और उसके बाद 'द्वारा' का प्रयोग हुआ है।

टा और टि का प्रयोग, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है, जैसे, छेलेटा (लड़का), कविताटि (कविता)। इसमें अर्थ ज्यों का त्यों है। टा का प्रयोग प्रायः अनादरसूचक है और 'टि' का प्रयोग बहुत-कुछ आदरसूचक।

गुला, गुलो, गुलि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। इनसे बहुवचन सूचित होता है। 'गुला' 'गुलो' अनादरसूचक हैं और 'गुलि' आदरसूचक। लोकगुला (लोग), जिनिसगुलो (वस्तुएँ), मेयेगुलि (लड़कियाँ)।

'खाना', 'खानि' का प्रयोग केवल पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। 'खाना' अनादरसूचक है और 'खानि' आदरसूचक, जैसे, मुखखानि (मुख), कागजखाना (काग़ज़)।

'गण', 'रा', 'एरा' (येरा) का प्रयोग साधारणतः व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तुओं के लिये होता है, जैसे, देवगण, छेलेरा (लड़के)।

'ए', 'ये', 'ते', 'ये' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है: अकारान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्द हो तो 'ए' का प्रयोग होता है, जैसे, मानुषे, विद्युते। आकारान्त अथवा एकारान्त शब्द हो तो 'य' और 'ते' का व्यवहार होता है, जैसे, छेलेय, सेवाय। अगर इनसे भिन्न स्वरान्त शब्द हो तो 'ते' का व्यवहार होता है, जैसे, छुरिते। एकाक्षर शब्द अथवा अन्त में दो स्वर आएँ तो 'ये' का प्रयोग होता है, जैसे, गाये (शरीर में), दइये (दही में)।

विभिन्न कारकों में विभक्ति के प्रयोग

कर्ता कारक :

साधारणतः कर्ता, एकवचन में कोई विभक्ति नहीं होती, जैसे, राम खाच्छे (राम खा रहा है)।

कर्तृवाच्य के प्रयोग से कभी-कभी कर्ता में 'ए' विभक्ति लगती है, जैसे, लोके बले (लोग कहते हैं)।

कर्ता अनिर्दिष्ट होने पर अथवा कर्ता में करण या अधिकरण का भाव रहने पर ए, य, ते, ये, योग करते हैं, जैसे, पोकाय केटेछे (कीड़े ने काटा है), वेदे बले (वेद में कहा गया है), वृष्टिते भासिये दिले (वर्षा से बहा दिया)।

एकजातीय कर्ता का भाव बताते समय 'ए' का प्रयोग होता है, जैसे, पण्डिते पण्डिते तर्क चलेछे (पण्डितों में तर्क हो रहा है)।

बहुवचन में गण, रा, एरा (येरा) का प्रयोग होता है, जैसे, पण्डितेरा बलेन (पण्डित लोग कहते हैं)। आदरसूचक या समूहबोधक कर्ता होने पर रा के बदले एरा का प्रयोग होता है, जैसे, बउएरा (बहुएँ)। गुलो, गुला, गुलि का प्रयोग बहुवचन में होता है, जिस पर पहले ही प्रकाश डाला जा चुका है।

कर्म कारक :

एकवचन में साधारणतः कोई विभक्ति नहीं होती, जैसे, डाक्तार डाक (डॉक्टर को बुलाओ)। वैसे इसका कोई निर्दिष्ट नियम नहीं है; कभी विभक्ति का लोप होता है, कभी नहीं होता, जैसे, भगवानके डाक (भगवान को पुकारो)।

कर्मपद प्राणिवाचक अथवा व्यक्ति का नाम हो तो 'के' विभक्ति का प्रयोग होता है और अप्राणिवाचक या क्षुद्र प्राणिवाचक शब्दों में 'के' का प्रयोग नहीं होता। पद्य में रे, ए, य का प्रयोग होता है, जैसे, गुरुरे डाकिया (गुरु को पुकार कर), गुरुजने कर नति (गुरुजन को प्रणाम करो)। बहुवचन होने पर गणके, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है, जैसे, देवगणके, ताहादिगके आदि।

द्विकर्मक क्रिया के गौण कर्म में के, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। मुख्य कर्म में विभक्ति नहीं लगाते, जैसे, छेलेके दुध दाओ (लड़के को दूध दो)।

कर्मवाच्य के प्रयोग में कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति लगती है, जैसे, रामके बला हय नाइ (राम से कहा नहीं गया है)।

कर्म-कर्तृवाच्य के प्रयोग में भी कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति होती है, जैसे, तोमाके कृश देखाइतेछे (तुम दुबले दीखते हो)।

करण कारक :

करण कारक में साधारणतः द्वारा, दिया विभक्ति होती है और कभी-कभी इन दोनों के बदले 'हइते' विभक्ति प्रयुक्त होती है। कभी-कभी 'ए' विभक्ति भी होती है।

'द्वारा' और 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों में होता है। सम्बन्ध-विभक्ति के बाद भी 'द्वारा' का प्रयोग होता है। व्यक्ति-वाचक शब्दों के बहुवचन में 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग नहीं होता, जैसे, भृत्येर द्वारा, अश्वेर द्वारा, किन्तु साबान दिया (साबुन से)।

केवल व्यक्तिवाचक शब्दों में कर्म-विभक्ति के बाद 'दिया' अथवा 'दिये' का व्यवहार होता है, जैसे, चाकरदिगके दिये (नौकरों से), चाकरके दिये (नौकर से)।

केवल जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के बाद ए, य, ते, ये, जोड़ा जाता है, जैसे, सेवाय तुष्ट (सेवा से तुष्ट), ए गाड़ि गरुते चले (यह गाड़ी बैल से चलती है)।

सम्प्रदान कारक :

सम्प्रदान कारक की विभक्ति प्रायः कर्म कारक के समान है, जैसे, दरिद्रके धन दाओ (दरिद्र को (के लिये) धन दो)।

कभी-कभी ए, य, ते, का भी व्यवहार होता है, जैसे, सत्पात्रे, देवसेवाय आदि।

अपादान कारक :

इस कारक की विभक्तियाँ हइते, (ह'ते) थेके, अपेक्षा आदि हैं, जैसे, गृह हइते (गृह से), तिन दिन थेके (तीन दिनों से)।

कभी-कभी 'दिया' का भी व्यवहार होता है, जैसे, ताहार मुख दिया एमन कथा बाहिर हइबे ना (उसके मुँह से ऐसी बात नहीं निकलेगी)।

'निकट' आदि शब्दों में अपादान कारक की विभक्ति विकल्प से लोप होती है, जैसे, आमि ताहार निकट ए कथा शुनियाछि (मैंने उससे ऐसी बात सुनी है)।

तुलना करते समय सम्बन्ध कारक की विभक्ति के वाद अपेक्षा, चेये, चाइते आदि लगाते हैं, जैसे, तोमार चेये वृद्ध (तुमसे अधिक वृद्ध)।

कभी-कभी सप्तमी की 'ए' विभक्ति भी अपादान में प्रयुक्त होती है, जैसे, मेघे वृष्टि हय (मेघ से वृष्टि होती है)।

सम्बन्ध कारक :

र, एर, इस कारक की विभक्तियाँ हैं। साधारणतः शब्दों के अन्त में 'र' का योग करने से सम्बन्ध कारक सूचित होता है। 'एर' का योग शब्दों में उस समय होता है जब उनका रूप एकवचन का हो तथा वे अकारान्त, व्यञ्जनान्त, एकाक्षर शब्द हों अथवा उनके अन्त में दो स्वर हों, जैसे, मायेर (माँ का), जामाइयेर (दामाद का); 'र' विभक्ति का उदाहरण—दयार (दया का), चुरिर (चोरी का)।

'र' विभक्ति का प्रयोग उस हालत में भी होता है जब मनुष्य के नाम का उच्चारण अकारान्त हो, जैसे, अमूल्यर (अमूल्य का); लेकिन शिव का शिवेर होगा क्योंकि शिव के उच्चारण में व हलन्त की तरह उच्चरित होता है।

विशेषण-पदों में केवल 'र' का योग करते हैं,जैसे,भालर जन्य (अच्छे के लिये)।

समय अथवा अवस्थान-वाचक शब्दों में 'कार' योग करते हैं, जैसे, आजि-कार (आज का), उपरकार (ऊपर का)।

व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तु के सूचक बहुवचन शब्दों में देर, दिगेर, गणेर का योग करते हैं, जैसे, छेलेदेर (लड़कों का), जन्तुदिगेर (जन्तुओं का)। व्यक्ति, जन्तु तथा पदार्थवाचक बहुवचन में गुलार, गुलोर, गुलिर, सकलेर, समहेर आदि का प्रयोग होता है, जैसे, मेयेगुलिर (लड़कियों का), जिनिसगुलोर (वस्तुओं का), प्राणि सकलेर (प्राणियों का), इत्यादि।

अधिकरण कारक :

ए, य, ते, ये, अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं।

अधिकरण दो प्रकार के हैं : कालबोधक और आधारसूचक। क्रिया जब किसी काल में समाप्त होती है तब उसे कालवाचक अधिकरण कहते हैं और जब

किसी स्थान पर समाप्त होती है तब वहाँ आधार-अधिकरण का भाव आ जाता है। 'प्रभाते आमरा बेड़ाइया थाकि' (सबेरे हमलोग टहला करते ह)—यह कालवाचक अधिकरण का उदाहरण है।

आधार-अधिकरण तीन तरह के हैं—ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक। उदाहरणार्थ :

ऐकदेशिक—ऋषि वने थाकितेन (ऋषि वन में रहते थे)।

वैषयिक—आमि विद्याय आपनार निकट बालक (विद्या में मैं आपके निकट बालक हूँ)।

अभिव्यापक—तिले तैल आछे (तिल में तेल है)।

कालवाचक शब्द के बाद कभी-कभी विभक्ति योग नहीं करते, जैसे, एक समय आमि बिश क्रोश हाँटिते पारिताम (एक समय था जब मैं बीस कोस पैदल चल सकता था); ए समय से कोथाय (इस समय वह कहाँ है)। लेकिन अगर विशेषण पद कालवाचक शब्द के पहले न हो तो विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है, जैसे, दिने घुमाइओ ना (दिन में न सोना)।

क्रिया गमनार्थक होने पर कभी-कभी अधिकरण की विभक्ति नहीं लगती, जैसे, काशी पाठाओ (काशी भेजो), कलिकाता याइब (कलकत्ते जाऊँगा)।

बहुवचन में गण, गुला, गुलो, गुलि, सकल आदि के बाद विभक्ति का योग होता है। जैसे, कथागुलिते (बातों में), जीवगणे (जीवों में)।

(ग) सर्वनाम

बँगला में सर्वनाम के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं :

पुरुषवाचक सर्वनाम—आमि (मैं), तुमि (तुम), से (वह) इत्यादि।

निर्देशक या निर्णयसूचक सर्वनाम—ताहा (तद्); इहा (यह); उहा (वह) इत्यादि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम—कि (क्या), के (कौन) आदि।

सापेक्ष या समुच्चयी सर्वनाम—ये

अनिर्देश या अनिश्चयसूचक सर्वनाम—केह, केउ (कोई) आदि।

आत्मवाचक सर्वनाम—निजे, आपनि, स्वयं आदि।

साकल्यवाचक सर्वनाम—उभय, सकल, सब आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं : उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष, जिसे हिन्दी में अन्य-पुरुष कहते हैं।

कर्ताकारक के एकवचन में इन पुरुषों के निम्नलिखित रूप हैं :

	सामान्य	तुच्छ	गौरवार्थ
उत्तम पुरुष	आमि (मैं)		
मध्यम पुरुष	तुमि (तुम)	तुइ (तू)	आपनि (आप)
प्रथम पुरुष	से, ताहा, ता (वह)		तिनि (वे)
	ये, याहा, या (जो)		यिनि (जो)
	के (कौन), कि (क्या)		के, किनि (कौन)
	ए, इहा (यह)		इनि (ये)
	ओ, उहा (वह)		उनि (वे)

व्यक्तिबोधक—तिनि, यिनि, के (किनि), इनि, आपनि, तुमि, तुइ, आमि ।

व्यक्ति अथवा जन्तुवाचक—से, ये, के ।

व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक—ए, ओ ।

पदार्थ अथवा क्षुद्र जन्तुवाचक—ताहा (ता), याहा (या), कि, इहा, उहा ।

वचन और कारक-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन होता है, लेकिन स्त्रीलिंग और पुंलिंग-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन नहीं होता ।

याहाते, ताहाते आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण की तरह होता है ।

से, ये, कि, ए, ओ का प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है, जैसे, से दिन (उस दिन) ।

कारकों की विभक्ति-सहित सर्वनामों के रूप

उत्तम पुरुष :

आमि (मैं)

(पुंलिंग और स्त्रीलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आमि, मुइ	आमरा, मोरा
कर्म	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरके, मोदिगके, मोदिगेरे, मोदेर
करण	आमाद्वारा, आमार द्वारा, आमाके दिया, आमा-हइते (ह'ते), आमा-कर्तृक	आमादिग (-दिगेर) द्वारा, दिया, कर्तृक; आमादेर दिया, द्वारा

	एकवचन	बहुवचन
सम्प्रदान	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरे मोदेर, मोदेरे, मोदिगके
अपादान	आमा हइते, आमा ह'ते	आमादेर (आमादिग) हइते
सम्बन्ध	आमार, मोर (मझु), मम	आमादिगेर, आमादेर, मोदेर
अधिकरण	आमाय, आमाते, मोते	आमादिगेते, आमादिगेर, सकले, मोदिगे

मध्यम पुरुष :

तुमि (तुम)

(स्त्रीलिंग और पुंलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तुमि, तुइ	तोमरा, तोरा
कर्म	तोमाके, तोमार, तोके, तोरे तोर	तोमादिगके, तोदेर, तोदिगके
करण	तोमाद्वारा, तोमाकर्तृक, तोर द्वारा	तोमादिगेर द्वारा, तोदेर द्वारा
सम्प्रदान	(कर्म कारक के समान रूप होता है)	
अपादान	तोमा हइते, तोर हइते	तोमादेर हइते, तोदेर हइते
सम्बन्ध	तोमार, तोर, तव	तोमादिगेर, तोमादेर, तोदेर
अधिकरण	तोमाते, तोमाय, तोके, तोय	तोमादिगते, तोमादेर सकले, तोमादिगते

तुइ (तू) शब्द का व्यवहार तीन अर्थों में होता है :

(१) तुच्छार्थ में—निर्लज्ज तुइ क्षत्रिय समाजे (क्षत्रिय समाज में तू निर्लज्ज है)।

(२) स्नेह-वात्सल्य में—तुइ आमार नयनमणि (तू मेरे नयनों की मणि है)।

(३) देवतादि के संबोधन में—तुइ कि बुझिबि श्यामा मरमेर वेदना (श्यामा (माँ काली), तू मर्म-वेदना को क्या समझेगी)।

करण और अपादान का अलग रूप नहीं है। कर्म अथवा संबंध कारक के रूपों में दिया, द्वारा, हइते योग करने से इन दोनों कारकों का रूप प्राप्त हो जाता है।

आपनि (आप)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आपनि	आपनारा	आपनि	आपनारा
आपनाके	आपनादिके, -देर	आपनाके	आपनादिगके
आपनार	आपनादेर	आपनार	आपनादिगेर, -देर
आपनाते	——	आपनाते	——

प्रथम पुरुष :

तिनि (वे)

	चलित रूप		साधु रूप	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तिनि	ताँरा	तिनि	ताँहारा
कर्म, सम्प्रदान	ताँके	ताँदिके, ताँदेर	ताँहाके	ताँहादिगके
सम्बन्ध	ताँर	ताँदेर	ताँहार	ताँहादिगेर ताँहादेर
अधिकरण	ताँते	——	ताँहाते	——

यिनि (जो) का रूप तिनि की तरह ही होता है।

उपर्युक्त क्रम से अर्थात् पहली पंक्ति में कर्ता, द्वितीय में कर्म-सम्प्रदान, तृतीय में सम्बन्ध और चतुर्थ में अधिकरण कारक के अन्य सर्वनामों के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

इनि (ये)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
इनि	एँरा	इनि	इँहारा
एँके	एँदिके, एँदेर	इँहाके	इँहादिगके
एँर	एँदेर	इँहार	इँहादिगेर, इँहादेर
एँते	——	इँहाते	——

उनि (वे)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उनि	ओँर	उनि	उँहारा
ओँके	ओँदिके, ओँदेर	उँहाके	उँहादिगके
ओँर	ओँदेर	उँहार	उँहादिगेर, उँहादेर
ओँते	—	उँहाते	—

से (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
से, ता	तारा	से, ताहा	ताहारा
ताके	तादिके, तादेर	ताहाके	ताहादिगके
तार	तादेर	ताहार	ताहादिगेर, ताहादेर
ताते (ताय)	—	ताहाते (ताय)	—

ये, याहा (जो) का रूप से, ताहा (वह)-जैसा होगा।

के (कौन)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
के, किनि	काँरा	के, किनि	काँहारा
काके	कादिके, कादेर	काहाके	काहादिगके
कार	कादेर	काहार	काहादिगेर, काहादेर
काते, किसे	—	काहाते	—

ए, इहा (यह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ए	एरा	ए, इहा	इहारा
एके	एदिके, एदेर	इहाके	इहादिगके
एर	एदेर	इहार	इहादिगेर, इहादेर
एते	—	इहाते	—

ओ, उहा (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ओ	ओरा	ओ, उहा	उहारा
ओके	ओदिके, ओदेर	उहाके	उहादिगके
ओर	ओदेर	उहार	उहादिगेर, उहादेर
ओते	—	उहाते	—

ए, इहा, इनि से निकटस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है और ओ, उहा, उनि से दूरस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है।

'ताय' (उसको, उसमें) का प्रयोग प्रायः पद्य में होता है।

'किसे' केवल पदार्थवाचक है।

'किनि' का प्रयोग साधु और चलित दोनों रूपों में प्रायः अप्रचलित हो गया है।









